# THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180622

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—552—7-7-66—10,000

**OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY**

Call No. H83 K453 Accession No. H1806

Author ત્રિવેદી, ચંદ્રા ટંકારાયણ

Title મૂલનાથ ૩૫-યાત્રા

This book should be returned on or before the date last marked below.

॥ श्रीः ॥

# भूतनाथ

उपन्यास

अथवा

## भूतनाथ की जीवनी

( पहला खंड )

( भाग १ से ३ तक )

लेखक

**बाबू देवकीनन्दन खत्री**

सर्वोदय साहित्य मन्दिर
हनुमान गंज, हैदराबाद (दक्षिण)

**लहरी बुक डिपो**

*पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता*

काशी

रतों में खूबसूरत हैं। इन दोनों की अवस्था इनकी बातचीत से जानी जायगी अस्तु आइये और छिप कर सुनिये कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं।

औरत०। वास्तव में हमलोग बहुत दूर निकल आये।

मर्द०। हमें किसी का डर भी नहीं है।

औरत०। है तो ऐसा ही परन्तु घोड़ों की तरफ से जरा सा खुटका होता है, क्योंकि हम दोनों के मरे हुए घोड़े अगर कोई जान पहिचान का आदमी देख लेगा तो जरूर इसी प्रान्त में हमलोगों को खोजेगा।

मर्द०। फिर भी कोई चन्ता नहीं क्योंकि उन घोड़ों को भी हम लोग कम से कम दो कोस पीछे छोड़ आये हैं।

औरत०। बेचारे घोड़े अगर मर न जाते तो हम लोग और भी कुछ दूर आगे निकल गये होते।

मर्द०। यह गर्मी का जमाना, इतनी कड़ाके की धूप, और इस तेजी के साथ इतना लम्बा सफर करने पर भी घोड़े जिन्दा रह जायँ तो बड़े ही ताज्जुब की बात है !!

औरत०। ठीक है, अच्छा यह बताइये कि अब हम लोगों को क्या करना होगा ?

मर्द०। इसके सिवाय और किसी बात की जरूरत नहीं है कि हमलोग किसी दूसरे राज्य की सरहद में जा पहुँचें। ऐसा हो जाने पर फिर हमें किसी का डर न रहेगा क्योंकि हमलोग किसी का खून करके नहीं भागे हैं, न किसी की चोरी की है, और न किसी के साथ अन्याय वा अधर्म करके भागे हैं,। बल्कि एक अन्यायी हाकिम के हाथ से अपना धर्म बचाने के लिये भागे हैं। ऐसी अवस्था में किसी न्यायी राजा के राज्य में पहुंच जाते ही हमारा कल्याण होगा।

औरत०। निःसन्देह ऐसा ही है। फिर आपने क्या विचार किया है ? किसके राज्य में जाने का इरादा है ?

मर्द०। मुझे तो राजा सुरेन्द्रसिंह का राज्य बहुत ही पसन्द है, वह बड़ा धर्मात्मा और न्यायी है तथा उसका राज्य भी बहुत दूर नहीं है, यहां से केवल तीन ही चार कोस और आगे निकल चलने पर हम उसकी सरहद में पहुँच जायँगे।

औरत० । वाह वाह ! तो इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है ! फिर आप यहां क्यों अटके हुए हैं ! आगे बढ़ चलिये, जहां इतनी तकलीफ उठाई तहाँ थोड़ी और सही !!

मर्द० । मैं भी इसी खयाल में हूँ मगर अपने नौकरों का इन्तजार कर रहा हूँ क्योंकि उन्हें अपने से मिलने के लिये यही ठिकाना बताया हुआ है ।

औरत० । अब राजा सुरेन्द्रसिंह की सरहद इतनी नजदीक है और रास्ता आपका देखा हुआ है तो ऐसी अवस्था में यहां ठहर नौकरों इन्तजार करना मेरी राय में तो ठीक नहीं है ।

मर्द० । तुम्हारा कहना ठीक है और नौगढ़ का रास्ता भी मेरा देखा हुआ है परन्तु रात का समय है और इस तरफ जङ्गल बहुत ही घना और भयानक है तथा रास्ता भी पथरीला और पेचीला है, सम्भव है कि रास्ता भूल जाऊं और किसी दूसरी तरफ जा निकलूँ । यदि मैं अकेला होता तो कोई गम न था मगर तुमको साथ लेकर रात्रि के समय भयानक जानवरों से भरे हुए ऐसे घने जंगल में घुसना उचित नहीं जान पड़ता । मगर देखो तो सही ( गर्दन उठा कर और गौर से नीचे की तरफ देख कर ) वे शायद हमारे ही आदमी तो आ रहे हैं ? मगर गिनती में कम मालूम होते हैं !

औरत० । ( गौर से देख कर ) ये तो केवल तीन ही चार आदमी हैं ! शायद कोई और हों !!

मर्द० । देखो वे लोग भी इसी पहाड़ी के ऊपर चले आ रहे हैं, अगर ये कोई और हैं तो इनका यहाँ आकर तुम्हें देख लेना अच्छा न होगा इसलिए मैं जरा आगे बढ़ कर देखता हूँ कि ये कौन हैं ।

इतना कह कर वह नौजवान उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ बढ़ा जिधर से वे लोग आ रहे थे । पहाड़ी से नीचे उतरने और कुछ ही दूर आगे बढ़ने पर उन लोगों का सामना हो गया । यद्यपि रात का समय था और केवल चाँदनी ही का सहारा था तथापि सामना होते ही एक ने दूसरे को पहिचान लिया । हमारे नौजवान को मालूम हो गया कि ये हमारे दुश्मन के आदमी हैं और उन लोगों को निश्चय हो गया कि हमारे मालिक को इसी नौजवान के गिरफ्तारी की जरूरत है ।

ये लोग जो दूर से गिनती में तीन चार मालूम पड़ते थे वास्तव में छः आदमी थे जो हर तरह से मजबूत और लड़ाई के सामान से दुरुस्त थे। ढाल तलवार के अलावे सभों के कमर में खञ्जर और हाथ में नेजा था। उन सभों में से एक ने आगे बढ़ कर नौजवान से कहा, "बड़ी खुशी की बात है कि आप स्वयम् हम लोगों के सामने चले आये। कल से हमलोग आपकी खोज में परेशान हो रहे हैं! बल्कि सच तो यों है कि ईश्वर ही ने हम लोगों को यहाँ तक पहुँचा दिया और यहाँ आपका सामना हो गया। क्षमा कीजियेगा, आप हमारे अफसर और हाकिम रह चुके हैं इसलिये हम लोग आपके साथ बेअदबी नहीं करना चाहते मगर क्या करें मालिक के हुक्म से लाचार हैं जिसका नमक खाते हैं। इस बात को हम लोग खूब जानते हैं कि आप बिल्कुल बेकसूर हैं और आप पर व्यर्थ ही जुल्म किया जा रहा है, परन्तु.....

नौजवान०। ठीक है ठीक है, मेरे प्यारे गुलाबसिंह! मैं तुम्हें अभी तक वैसा ही समझता हूँ और प्यार करता हूँ क्योंकि तुम वास्तव में नेक हो और मुझसे मुहब्बत रखते हो। तुम बेशक मुझे गिरफ्तार करने के लिए आये हो और मालिक के नमक का हक अदा किया चाहते हो अस्तु मैं खुशी से तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम मुझे गिरफ्तार करके अपने मालिक के पास ले चलो, परन्तु क्षत्रियों का धर्म निबाहने के लिए मैं गिरफ्तार न हो कर तुमसे लड़ाई अवश्य करूँगा, इसी तरह तुम्हें भी मेरा मुलाहिजा न करना चाहिये।

गुलाब०। ठीक है, बेशक ऐसा ही चाहिए, परन्तु.....(कुछ सोच कर) मेरा हाथ आपके ऊपर कदापि न उठेगा! मुझे अपने जालिम मालिक की तरफ से बदनामी उठानी मंजूर है परन्तु आप ऐसे बहादुर और धर्मात्मा के आगे लज्जित होना स्वीकार नहीं है, हाँ मैं अपने साथियों को ऐसा करने के लिये मजबूर न करूँगा, वे लोग जो चाहें करें।

यह सुनते ही गुलाबसिंह के साथियों में से एक आदमी बोल उठा, "नहीं नहीं, कदापि नहीं, हम लोग आपके विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकते और आपकी ही आज्ञा का पालन करना अपना धर्म समझते हैं। सज्जनों और धर्मात्माओं की आज्ञा पालने का नतीजा कभी भी बुरा नहीं होता!"

इसके साथ ही गुलाबसिंह के बाकी के साथी भी बोल उठे, "बेशक ऐसा

ही है, बेशक ऐसा ही है !"

गुलाब०। ( प्रसन्नता से ) ईश्वर की कृपा है कि मेरे साथी लोग भी मेरी इच्छानुसार चलने के लिये तैयार हैं ! ( नौजवान से ) तो अब आप ही आज्ञा कीजिये कि हमलोग क्या करें ? क्योंकि मैं अब भी अपने को आपका दास ही समझता हूँ।

नौजवान०। मेरे प्यारे गुलाबसिंह, शाबाश ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारे ऐसे नेक और बहादुर आदमी का साथ बड़े भाग्य से होता है। मैं तुम्हें अपने आधीन पाकर बहुत ही प्रसन्न था और मेरी अब भी यही इच्छा थी कि ईश्वर तुम्हें मेरा साथी बनाये मगर क्या करूँ लाचार हूँ क्योंकि आज मेरा वह समय नहीं है। आज मुसीबत के फन्दे में फँस जाने से मैं इस योग्य नहीं रहा कि तुम्हारे ऐसे बहादुरों का साथ.....( लम्बी सांस लेकर ) अस्तु ईश्वर की मर्जी, जो कुछ वह करता है अच्छा ही करता है, कदाचित् इसमें भी मेरी कुछ भलाई ही होगी। (कुछ सोच कर) मैं तुम्हें क्या बताऊँ कि क्या करो ? तुम्हारे मालिक ने बेशक धोखा खाया कि मेरी गिरफ्तारी के लिये तुम्हें भेजा, इतने दिनों तक साथ रहने पर भी उसने तुम्हें और मुझे नहीं पहिचाना। मुझे इस समय कुछ भी नहीं सूझता कि तुम्हें क्या नसीहत करूँ और किस तरह उस दुष्ट का नमक खाने से रोकूँ।

गुलाब०। ( कुछ सोच कर ) खैर कोई चिन्ता नहीं, जो होगा देखा जायगा। इस समय मैं आपका साथ कदापि न छोड़ूँगा और इस मुसीबत में आपको अकेले भी न रहने दूँगा। जो कुछ आप पर बीतेगी उसे मैं भी सहूँगा। ( अपने साथियों से ) भाइयो ! अब तुम लोग जहाँ चाहे जाओ और जो मुनासिब समझो करो, मैं तो अब इनके दुःख सुख का साथी बनता हूँ। यद्यपि ये ( नौजवान ) उम्र में मुझसे बहुत छोटे हैं परन्तु मैं इन्हें अपना पिता समझता हूँ और पिता ही की तरह इन्हें मानता हूँ, अस्तु जो कुछ पुत्र का धर्म है मैं उसे निबाहूँगा। मैं इनको गिरफ्तार करने की आज्ञा पाकर बहुत प्रसन्न था और सोचे हुए था कि इसी बहाने से इन्हें ढूँढ़ निकालूँगा और सामना होने पर इनकी सेवा स्वीकार करूँगा।

गुलाबसिंह की बातें सुन कर उनके साथियों ने जवाब दिया, "ठीक है, जो

कुछ उचित था आपने किया, परन्तु आप हम लोगों का तिरस्कार क्यों कर रहे हैं ? क्या हम लोग आपकी सेवा करने योग्य नहीं हैं ? या हम लोगों को आप बेईमान समझते हैं ?"

गुलाब० । नहीं नहीं, ऐसा कदापि नहीं है, मगर बात यह है कि जो कोई मुसीबत में पड़ा हो उसका साथ देने वाले को भी मुसीबत झेलनी पड़ती है, अस्तु मुझ पर भी जो कुछ बीतेगी उसे झेल लूँगा, पर तुम लोगों को जान बूझ कर क्यों मुसीबत में डालूँ। इसी ख़याल से कहता हूँ कि जहाँ जी में आवे जाओ और जो कुछ मुनासिब समझो करो।

गुलाबसिंह के साथी० । नहीं नहीं, ऐसा कदापि न होगा और हम लोग आपका साथ न छोड़ेंगे। आप आज्ञा दें कि अब हम लोग क्या करें ?

गुलाब० । ( कुछ सोच कर ) अच्छा, अगर तुम लोग हमारा साथ देना ही चाहते हो तो जो कुछ हम कहते हैं उसे करो। यहाँ से इसी समय चले जाओ और ( नौजवान की तरफ बता कर ) इनके मकान में जिसे राजा साहब ने जब्त कर लिया है रात के समय जिस तरह सम्भव हो घुस कर जहाँ तक दौलत हाथ लगे और उठा सको निकाल कर ले आओ और पिपलिया घाटी में जहाँ का पता तुम लोगों को मालूम है हमसे मिलो, अगर वहाँ हमसे मुलाकात न हो तो ठिक कर हमारा इन्तजार करो।

गुलाबसिंह की बात सुन कर उसके साथियों ने "जो आज्ञा" कह कर सलाम किया और वहाँ से चले गये। उनके जाने बाद गुलाबसिंह ने नौजवान से कहा, "इस समय इन लोगों को बिदा कर देना ही मैंने उचित जाना। यद्यपि ये लोग मेरे साथ रहने में प्रसन्नता प्रगट करते हैं परन्तु कुछ टेढ़ा काम लेकर जाँच कर लेना जरूरी है।"

नौजवान० । ठीक है, तुम्हारे ऐसे होशियार आदमी के लिए यह कोई नई बात नहीं है।

गुलाब० । अच्छा अब यह बताइये कि आपको मुझ पर विश्वास है या नहीं ? या इस विषय में आपको कुछ जाँच करने का आवश्यकता है ?

नौजवान० । नहीं नहीं, मुझे कुछ जाँच करने की जरूरत नहीं है, मुझे तुम पर पूरा पूरा विश्वास और भरोसा है, मैं तुमसे मिल कर बहुत ही प्रसन्न हुआ।

ऐसी अवस्था में और यकायक सामना हो जाने पर भी मुझे किसी तरह का खुटका नहीं हुआ था।

गुलाब०। ईश्वर आपका मङ्गल करे! अब कृपा कर यह बतलाइये कि आप मुझे अकेले क्यों दिखाई देते हैं और आपका इरादा क्या है?

नौजवान०। मैं अकेला नहीं हूँ, मेरी स्त्री मेरे साथ है (हाथ का इशारा करके) इस पहाड़ी के ऊपर उसे अकेला छोड़ आया हूँ। हम दोनों आदमी वहाँ बैठे बैठे अपने नौकरों का इन्तजार कर रहे थे कि यकायक तुम लोगों पर निगाह पड़ी, अस्तु उसे उसी जगह छोड़ कर तुम लोगों का पता लगाने के लिये मैं नीचे उतर आया था, अब तुम मेरे साथ वहाँ चलो और उससे मिलो, वह तुम्हें देख कर बहुत ही प्रसन्न होगी, इस आफत में भी वह तुम्हें बराबर याद करती रही।

गुलाब०। चलिए शीघ्र चलिये।

गुलाबसिंह को साथ लेकर नौजवान उस तरफ रवाना हुआ जहां अपनी स्त्री को अकेला छोड़ आया था।

यह गुलाबसिंह क्षत्री खानदान का एक बहादुर और ताकतवर आदमी था। यह बहुत ही नेक रहमदिल और धर्म का सच्चा पक्षपाती था, साथ ही इसके बदमाशों की चालबाजियों को खूब समझता था और अच्छे लोगों में से बेईमानों और दगाबाजों को छाँट निकालने में भी विचित्र कारीगर था। वह उस नौजवान और उसकी स्त्री से सच्ची मुहब्बत और हमदर्दी रखता था, जिसका बहुत बड़ा सबब यह था कि उस स्त्री के पिता ने बड़े सङ्कट के समय में गुलाबसिंह की सच्ची सहायता की थी और इसको अपने लड़के की तरह मानता था।

इस जगह पर हम इस नौजवान और इसकी सुशीला स्त्री का नाम भी खोल देना उचित समझते हैं मगर इस बात को अभी न खोलेंगे कि ये दोनों कौन हैं या इनके इस तरह बेसरोसामान भागने का सबब क्या है।

नौजवान का नाम प्रभाकरसिंह था और स्त्री का नाम इन्दुमति। प्रभाकरसिंह की शादी इन्दुमति के साथ भये हुए आज एक वर्ष और सात महीने हो चुके हैं।

प्रभाकर और गुलाबसिंह आपुस में बातचीत करते इन्दुमति की तरफ रवाना

हुए और बहुत जल्द वहाँ जा पहुँचे जहाँ इन्दुमति चिन्ता निमग्न बैठी हुई अपने पति का इन्तजार कर रही थी। पति को देख कर वह प्रसन्नता के साथ उठ खड़ी हुई और जब उसने गुलाबसिंह को पहिचाना तो बहुत खुश हो कर बोली:—

इन्दु०। मैं पहिले ही कहती थी कि गुलाबसिंह को हम लोगों के विषय में बड़ी ही चिन्ता होगी और वे जरूर हमारी सुध लेंगे!

गुलाब०। बेशक ऐसा ही है। इसी लिये जिस समय राजा साहब ने आप लोगों की गिरफ्तारी का काम मेरे सुपुर्द किया तो मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ और.....

गुलाबसिंह अपनी बात पूरी न करने पाये थे कि लगभग चालीस या पचास गज की दूरी पर से सीटी बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही तीनों चौंक पड़े और उसी तरफ देखने लगे। बेचारी इन्दु को दुश्मन का ध्यान आ गया और वह डरी हुई आवाज से बोली, "यहाँ तक भाग आने पर भी हम लोगों का खुटका न गया, इसी से मैं कहती थी कि जहाँ तक जल्द हो सके नौगढ़ की सरहद में हमें पहुँच जाना चाहिये!"

गुलाब०। (इन्दु से) डरो मत, हम दोनों क्षत्रियों के रहते किसी की मजाल नहीं कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ पहुँचा सके। इसके अतिरिक्त इस बात को भी समझ रक्खो कि आज दिन सिवाय बेईमान राजा साहब के और कोई तुम्हारा दुश्मन नहीं है और उनकी तरफ से इस काम के लिए मैं ही भेजा गया हूँ, ऐसी अवस्था में किसी वास्तविक दुश्मन का ध्यान लाना वृथा है, हाँ चोर डाकू में से यदि कोई हो तो मैं नहीं कह सकता!

इन्दु०। खैर पेड़ों की आड़ में तो हो जाइये।

गुलाब०। हाँ इसके लिए कोई हर्ज नहीं।

इतने ही में पुनः सीटी की अवाज आई, मगर अबकी दफे की आवाज कुछ अजीब ढङ्ग की थी। मालूम होता था कि कोई बँधे हुए इशारे के साथ झिरनी की आवाज देकर सीटी बजा रहा है। इस आवाज को सुन कर गुलाबसिंह हँस पड़ा और इन्दू तथा प्रभाकरसिंह की तरफ देख के बोला, "बस मालूम हो गया, डरने की कोई जरूरत नहीं, क्योंकि यह मेरे एक दोस्त की बजाई हुई सीटी है। मैं अभी जरूरी बातों से छुट्टी पाकर थोड़ी ही देर में आप लोगों से

कहने वाला था कि यहाँ मेरे एक दोस्त का मकान है जिनसे मिल कर आप बहुत प्रसन्न होंगे और उनसे आपको सहायता भी पूरी मिल सकती है। मैं अब इस सीटी का जवाब देता हूँ। बहुत अच्छा हुआ जो अकस्मात वे खुद यहाँ आ पहुँचे। मालूम होता है कि मेरा यहाँ आना उन्हें मालूम हो गया!

इतना कह कर गुलाबसिंह ने भी कुछ अजीब ढङ्ग से सीटी बजाई अर्थात उस सीटी का जवाब दिया।

प्रभा०। भला अपने इस अनूठे दोस्त का नाम तो बता दो!

गुलाब०। आज कल इन्होंने अपना नाम भूतनाथ रख छोड़ा है।

प्रभा०। (कुछ सोच कर) यह नाम तो कई दफे मेरे कानों में पड़ चुका है और एक दफे ऐसा भी सुन चुका हूँ कि इस नाम का एक आदमी बड़ा ही भयानक है जिसके रहन सहन का किसी को कुछ पता नहीं लगता।

गुलाब०। ठीक है, आपने ऐसा ही सुना होगा, परन्तु वह केवल दुष्टों और पापियों के लिए भयानक है.....

गुलाबसिंह इससे ज्यादे कुछ कहने न पाया था कि वह सीटी बजाने वाला अर्थात भूतनाथ वहाँ आ पहुँचा। प्रभाकरसिंह को सलाम करने बाद भूतनाथ गुलाबसिंह के गले मिला और इसके बाद चारो आदमी पत्थर की चट्टानों पर बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगे :—

गुलाब०। (भूतनाथ से) यहाँ यकायक आपका इस तरह आ पहुँचना बड़े आश्चर्य की बात है!!

भूत०। आश्चर्य काहे को है! यह तो मेरा ठिकान ही ठहरा, या यों कहिये कि यह दिन रात का मेरा रास्ता ही है।

गुलाब०। ठीक है मगर फिर भी आपका घर यहाँ से आधे घण्टे की दूरी पर होगा, ऐसी अवस्था में क्या जरूर है कि आप दिन रात इसी पहाड़ी पर दिखाई दें?

भूत०। (हँस कर) हाँ सो तो सच है मगर आप जो यहाँ आ पहुँचे तो फिर क्या किया जाय, आखिर मुलाकात करना भी तो जरूरी ठहरा!

गुलाब०। (हँसी के साथ) बस तो सीधे यही क्यों नहीं कहते कि मेरा यहाँ आना आपको मालूम हो गया।

भूत०। बेशक आपका आना मुझे मालूम हो गया बल्कि और भी कई बातें मालूम हुई हैं जिनसे आप लोगों को होशियार कर देना जरूरी है। (प्रभाकरसिंह की तरफ देखकर) अभी तक दुश्मनों से आपका पीछा नहीं छूटा, खाली गुलाबसिंह ही आपकी गिरफ्तारी के लिए नहीं भेजे गये बल्कि इनको भेजने के बाद आपके राजा साहब ने और भी बहुत से आदमी आप लोगों को पकड़ने के लिए भेजे जो इस समय इस पहाड़ी के इधर उधर आ गये हैं और आपके आदमियों को भी उन लोगों ने गिरफ्तार कर लिया है जिनका शायद आप इन्तजार करते होंगे।

प्रभा०। (ताज्जुब में आ कर) आपकी जुबानी तो बहुत सी बातें मालूम हुईं! मुझे इन सब बातों की कुछ खबर न थी। आप तो इस तरह बयान कर रहे हैं जैसे कोई जादूगर आइने के अन्दर जमाने भर का हाल देख देख कर सभा में बयान करता हो!

गुलाब०। यही तो इनमें एक अनूठी बात है जिससे बड़े बड़े नामी ऐयार दँग रहा करते हैं इनसे किसी भेद का छिपा रहना बहुत ही कठिन है (भूतनाथ से) अच्छा तो मेरे प्यारे दोस्त! मैं शंभूसिंह और इन्दुमति को आपके सुपुर्द करता हूँ। जिससे इनका कल्याण हो सो कीजिये। यह बात आपसे छिपी हुई नहीं है कि मैं इन्हें कैसा मानता हूँ।

भूतनाथ०। मैं सब जानता हूँ और इसीलिये यहाँ आया भी हूँ, अस्तु अब विशेष बातचीत करने का मौका नहीं है, आप लोग उठिये और मेरे पीछे पीछे आइये।

प्रभा०। (उठते हुए) मुझे अपने लिए कुछ भी फिक्र नहीं है, केवल बेचारी इन्दु के लिए मुझे नामर्दों की तरह भागने और अदने अदने आदमियों से छिप कर चलने.....

भूत०। (बात काट कर) मैं खूब जानता हूँ, आपकी और आपके पुरुखों की बहादुरी मुझसे छिपी हुई नहीं है, मगर क्या कीजियेगा, समय पर सब कुछ करना पड़ता है, आँख रहते भी टटोलना पड़ता है!

सब कोई उठ कर भूतनाथ के पीछे रवाना हुए।

जो कुछ हाल हम ऊपर बयान कर चुके हैं इसमें कई घण्टे गुजर गये। अब

पिछले पहर की रात बीत रही है, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, इन चारो के पैरों के तले दबने वाले सूखे पत्तों की चरमराहट के सिवाय और किसी ... की आवाज सुनाई नहीं देती। भूतनाथ इन तीनों को साथ लिये हुए एक अनूठे और अनजान रास्ते से बात की बात में पहाड़ी के नीचे उतर आया और इसके बाद दक्षिण की तरफ जाने लगा। जङ्गल में लगभग आधे कोस के जाने बाद ये लोग पुनः एक पहाड़ के नीचे पहुँचे। इस जगह का जङ्गल बहुत ही घना तथा रास्ता घूमघूमौवा और पथरीली था। भूतनाथ इस तरह घूमता और चक्कर देता हुआ पेचीली पगडण्डियों पर जाने लगा कि कोई अनजान आदमी उसकी नकल नहीं कर सकता था अथवा यों समझना चाहिये कि भूतनाथ के मकान का रास्ता ही ऐसा पेचीला और भयानक था कि एक दो दफे का जानकार आदमी भी धोखे में आ कर भटक सकता था। किसी अनजान का जाना तो बहुत ही कठिन बात है।

कुछ ऊपर चढ़ने के बाद घूमता फिरता भूतनाथ एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ पत्थरों के बड़े बड़े ढोंकों के अन्दर छिपी हुई एक गुफा थी। इन तीनों को लिए हुए भूतनाथ उस गुफा के अन्दर घुसा। आगे आगे भूतनाथ, उसके पीछे गुलाबसिंह, उसके बाद इन्दुमति और सब के पीछे प्रभाकरसिंह जाने लगे। कुछ दूर गुफा के अन्दर जाने बाद भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और उसकी रोशनी के सहारे अपने साथियों को ले जाने लगा। लगभग पचीस गज के जाने बाद एक चौमुहानी मिली अर्थात् एक रास्ता सीधी तरफ चला गया था, दूसरा बाईं तरफ, और तीसरी सुरङ्ग दाहिनी तरफ चली गई थी, तथा चौथा रास्ता वह था जिधर से ये लोग आये थे। यहाँ तक तो रास्ता खुलासा था मगर आगे का रास्ता बहुत ही बारीक और तङ्ग था जिसमें दो आदमी बराबर से मिल कर नहीं चल सकते थे।

यहाँ पर आकर भूतनाथ अटक गया और मोमबत्ती की रोशनी में आगे की तीनों सुरंगों को बता कर अपने साथियों से बोला, "हमारे मकान में जाने वाले को इस दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसना चाहिये। सामने अथवा बाईं तरफ वाली सुरंग में जाने वाला किसी तरह जीता नहीं बच सकता।"

इतना कह कर भूतनाथ दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसा और कुछ दूर

जाने बाद उसने मोमबत्ती बुझा दी

लगभग दो सौ कदम चले जाने बाद यह सुरंग खतम हुई और इसका दूसरा मुहाना नजर आया। सब के पहिले भूतनाथ सुरंग से बाहर हुआ, उसके बाद गुलाबसिंह, और उसके पीछे इन्दुमती बाहर हुई, मगर प्रभाकरसिंह न निकले। तीनों आदमी घूम कर उनका इन्तजार करने लगे कि शायद पीछे रह गये हों मगर कुछ देर तक इन्तजार करने बाद भी वे नजर न आये। इन्दुमति का कलेजा उछलने लगा, उसकी दाहिनी भुजा फड़क उठी, और उसकी आँखों में आँसू डबडबा आये। भूतनाथ ने इन्दुमति और गुलाबसिंह को कहा, "तुम जरा इसी जगह दम लो मैं सुरंग में घुस कर प्रभाकरसिंह का पता लगाता हूँ।" इतना कह कर भूतनाथ पुनः उसी सुरंग में घुस गया।

## दूसरा बयान

प्रभाकरसिंह पीछे पीछे चले आ रहे थे, यकायक कैसे और कहाँ गायब हो गये? क्या उस सुरंग में कोई दुश्मन छिपा हुआ था जिसने उन्हें पकड़ लिया? या उन्होंने खुद हमें धोखा देकर हमारा साथ छोड़ दिया? इत्यादि तरह तरह की बातें सोचती हुई इन्दु बहुत ही परेशान हुई, मगर इस आशा ने कि अभी अभी भूतनाथ उनका पता लगा के सुरंग से लौटता ही होगा, उसे बहुत कुछ सम्हाला और वह एक दम सुरंग की तरफ टकटकी लगाये खड़ी देखती रही, परन्तु थोड़ी ही देर में उसकी यह आशा भी जाती रही जब उसने भूतनाथ को अकेले ही लौटते देखा और दुःख के साथ भूतनाथ ने बयान किया कि—उनसे तो मुलाकात नहीं हुई! मेरी समझ में नहीं आता कि क्या भेद है और उन्होंने हमारा साथ क्यों छोड़ा? क्योंकि अगर किसी छिपे हुए दुश्मन ने हमला किया होता तो कुछ मुँह से आवाज तो आई होती या चिल्लाते तो सही!

गुलाब०। नहीं भूतनाथ, ऐसा तो नहीं हो सकता! प्रभाकरसिंह पर हम भागने का इलजाम तो नहीं लगा सकते!!

भूत०। जी तो मेरा भी नहीं चाहता कि उनके विषय में ऐसा कहूँ परन्तु घटना ऐसी विचित्र हो गई है कि मैं किसी तरफ अपनी राय पक्की कर नहीं सकता। हाँ इन्दुमति कदाचित् इस विषय में कुछ कह सकती हों!

इतना कह कर भूतनाथ ने इन्दु की तरफ देखा मगर इन्दु ने कुछ जवाब न दिया, सिर झुकाये जमीन को देखती ही रही, मानों उसने कुछ सुना ही नहीं। अबकी दफे गुलाबसिंह ने उसे सम्बोधन किया जिससे वह चौंकी और एकदम फूट फूट कर रोने और कहने लगी, "बस मेरे लिए दुनिया इतना ही थी! मालूम हो गया कि मेरी बदकिस्मती मेरा साथ न छोड़ेगी। मैं व्यर्थ ही की आशा में पड़ कर दुःखी हुई और उन्हें भी दुःख दिया। मेरे ही लिए उन्हें इतना कष्ट भोगना पड़ा और मुझ अभागिनी के कारण उन्हें जंगल की खाक छाननी पड़ी। हाय! क्या अब मैं इस दुनिया में रह कर उनके पुनः दर्शन की आशा कर सकती हूँ? या इसी समय अपने दुःखान्त नाटक का अन्तिम पर्दा गिरा कर निश्चिन्त हो जाऊँ?"

इत्यादि इसी ढंग की बातें करती हुई इन्दु प्रलापावस्था को लाँघ कर बेहोश हो गई और जमीन पर गिर पड़ी।

गुलाबसिंह और भूतनाथ को उसके विषय में बड़ी ही चिन्ता हुई और वे उसे होश में लाकर समझाने बुझाने तथा शान्त करने की चिन्ता करने लगे।

भूतनाथ का यह स्थान कुछ विचित्र ढंग का था। इसमें भूतनाथ की कोई कारीगरी न थी, इसे प्रकृति ही ने कुछ अनूठा और सुन्दर बनाया हुआ था इसके विषय में अगर भूतनाथ की कुछ कारीगरी थी तो केवल इतनी ही कि उसने इसे खोज निकाला था जिसका रास्ता बहुत ही कठिन और भयानक था। जिस जगह इन्दुमति भूतनाथ और गुलाबसिंह खड़े हैं वहाँ से यदि आप दिन के समय आँख उठा कर चारो तरफ देखिये तो आपको मालूम होगा कि लगभग चौदह या पन्द्रह बिगहे के चौचक जमीन चारो तरफ के ऊँचे ऊँचे और सरसब्ज पहाड़ों से सुन्दर और सोहावने सरोवर के जल की तरह घिरी हुई है। जिस तरह चारो तरफ के पहाड़ों पर खुशरंग फूल पत्तों की बहुतायत दिखाई दे रही है उसी तरह यह जमीन भी नर्म घास की बदौलत सब्ज मखमली फर्श का नमूना बन रही है और जगह जगह पर पहाड़ से गिरे हुए छोटे छोटे चश्मे भी बह रहे हैं। यद्यपि आज कल पहाड़ों के लिये सरसब्जी का मौसिम नहीं है मगर यहां पर कुछ ऐसी कुदरती तरावट है कि जिसके सबब से 'पतझड़' के मौसिम का कुछ पता ही नहीं लगता या यों समझ सकते हैं कि बर्सात के मौ

सिम में आज कल से कहीं बढ़ चढ़ कर खूबी खूबसूरती और सरसब्जी नजर आती होगी।

इस स्थान में किसी तरह की इमारत बनी हुई न थी मगर चारो तरफ के पहाड़ों में सुन्दर और सुहावनी गुफाओं तथा कन्दराओं की इतनी बहुतायत थी कि सैकड़ों आदमी बड़ी खुशी और आराम के साथ यहाँ गुजारा कर सकते थे। इन्हीं गुफाओं में भूतनाथ तथा उसके तीस चालीस संगी साथियों का डेरा था और इन्हीं गुफाओं में उसके जरूरत की सब चीजें और हर्बे इत्यादि रहा करते थे तथा उसके पास जो कुछ दौलत थी वह भी कहीं इन्हीं जगहों में हागा जिसका ठीक ठीक पता उसके साथियों को भी न था। भूतनाथ का कथन है कि ऐसे ऐसे कई स्थान उसके कब्जे में हैं और इस बात का कोई निश्चय नहीं है कि कब या कितने दिनो तक वह किस स्थान में अपना डेरा रखता है या रक्खेगा।

सुबह की सुफेदी अच्छी तरह फैल चुकी थी जब भूतनाथ और गुलाबसिंह के उद्योग से इन्दुमति होश में आई। यद्यपि वह खुद खोह के बाहर होकर प्रभाकरसिंह की खोज में जान तक देने के लिए तैयार थी और ऐसा करने के लिए वह जिद्द भी कर रही थी मगर भूतनाथ और गुलाबसिंह ने उसे बहुत समझा बुझा कर ऐसा करने से बाज रक्खा और वादा किया कि बहुत जल्द उसके पति का पता लगा कर उनके दुश्मनों को नीचा दिखावेंगे।

ये सब बातें हो ही रही थीं कि भूतनाथ के कई आदमी गुफाओं और कन्दराओं में से निकल कर वहाँ आ पहुँचे जिन्हें भूतनाथ ने अपनी ऐयारी भाषा में कुछ समझा बुझा कर बिदा किया, इसके बाद एक स्वच्छ और प्रशस्त गुफा में जो उसके खास डेरे के बगल में थी इन्दुमति का डेरा दिला कर और गुलाबसिंह को उसके पास छोड़ कर वह भी उन दोनों से बिदा हुआ और अपने एक शागिर्द को साथ लेकर उसी सुरंग की राह अपनी इस दिलचस्प पहाड़ी के बाहर हो गया।

जब भूतनाथ सुरंग से बाहर हुआ तो सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। उसे जरूरी कामों अथवा नहाने धोने खाने पीने का कुछ भी फिक्र न थी, वह केवल प्रभाकरसिंह का पता लगाने की धुन में था।

यह वह जमाना था जब चुनार की गद्दी पर महाराज शिवदत्त को बैठे दो

वर्ष का जमाना हो चुका था। उसके ऐयाशी की चर्चा घर घर में फैल रही थी और बहुत से नालायक तथा लुच्चे शोहदे उसकी जात से फायदा उठा रहे थे। उधर जमानिया में दारोगा साहब की बदौलत तरह तरह की साजिशें हो रही थीं और उनकी कुमेटी का दौरदौरा खूब अच्छी तरह तरक्की कर रहा था * अस्तु इस समय खड़े होकर सोचते हुये भूतनाथ का ध्यान एक दफे जमानिया की तरफ और दूसरी दफे चुनारगढ़ की तरफ गया।

सुरंग से बाहर निकल कर एक घने पेड़ के नीचे भूतनाथ बैठ गया और उसने अपने शागिर्द से जिसका नाम भोलासिंह था कहा :—

भूत०। भोलासिंह! मुझे इस बात का शक होता है कि किसी दुश्मन ने इस खोह का रास्ता देख लिया और मौका पाकर उसने प्रभाकरसिंह को पकड़ लिया है।

भोला०। मगर गुरुजी, यह बात मेरे चित्त में तो नहीं बैठती। क्या प्रभाकरसिंह इतने कमजोर थे कि आपके पीछे पीछे आते समय एक आदमी ने उन्हें पकड़ लिया और उनके मुँह से आवाज तक न निकली? क्योंकि यह तो सम्भव ही न था कि बहुत से आदमी आपके पीछे पीछे जाते और आपको आहट भी न मिलती!

भूत०। तुम्हारा कहना बहुत ही ठीक है और इन्हीं बातों को सोच कर मैं कह रहा हूँ कि दुश्मन के आने का शक होता है, यह नहीं कहता कि निश्चय होता है। अस्तु जो कुछ हो, मैं प्रभाकरसिंह का पता लगाने के लिए जाता हूँ और तुमको इसी जगह छोड़ कर ताकीद कर जाता हूँ कि जब तक मैं लौट कर न आऊँ तब तक तुम सूरत बदले हुये यहीं पर रहो और चारो तरफ घूम फिर कर टोह लो कि किसी दुश्मन ने इस सुरंग का पता तो नहीं लगा लिया है। अगर ऐसा हुआ होगा तो कोई न कोई यहाँ आता जाता तुम्हें जरूर दिखाई देगा। यदि कोई जरूरत पड़े तो तुम निःसन्देह अपने डेरे पर (सुरंग के अन्दर) चले जाना मैं इसके लिये तुम्हें मना नहीं करता मगर जो कुछ मेरा मतलब है उसे तुम जरूर अच्छी तरह समझ गये होवोगे।

भोला०। जी हाँ मैं अच्छी तरह समझ गया, जहाँ तक हो सकेगा मैं इस

* इसका खुलासा हाल 'चन्द्रकान्ता सन्तति' में लिखा जा चुका है।

काम को होशियारी के साथ करूँगा, आप जहाँ इच्छा हो जाइये और इस तरफ से बेफिक्र रहिये।

भूत०। अच्छा तो अब मैं जाता हूँ।

इतना कह कर भूतनाथ भोलासिंह से बिदा हुआ और उसी घूमघुमौवे रास्ते से होता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर गया, और इधर भोलासिंह एक देहाती ब्राह्मण की सूरत बन जङ्गल में इधर उधर घूमने लगा।

ठीक दोपहर का समय था, धूप खूब कड़ाके की पड़ रही थी और गर्मागर्म लू के झपेटे बदन को झुलसा रहे थे। ऐसे समय में भूतनाथ का शागिर्द भोलसिंह गर्मी से परेशान होगर एक घने पेड़ के नीचे बैठा आराम कर रहा था। यह स्थान यद्यपि उस सुरंग से लगभग दो ढाई सौ कदम की दूरी पर होगा परन्तु यहाँ से घूमघुमौवे रास्ते और जङ्गली पेड़ों तथा लताओं की झाड़ियों के कारण बहुत ध्यान देने पर भी उस सुरंग का मुहाना दिखाई नहीं देता था। भोलासिंह बैठा कुछ सोच रहा था कि यकायक उसके कान में कुछ आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई।

हमारे पाठकों में से जो महाशय जंगल की हवा खा चुके हैं या पहाड़ों की सैर कर चुके हैं उन्हें यह बात जरूर मालूम होगी कि जगल में सन्नाटे के समय मुसाफिरों के बात चीत करते हुए चलने की आहट बहुत दूर दूर तक के लोगों को मिल जाती है, यहाँ तक कि आध कोस की दूरी पर भी यदि दो चार आदमी बातचीत करते करते जाते हों तो ऐसा मालूम होगा कि थोड़ी ही दूर पर कुछ आदमी बातें कर रहे हैं, परन्तु शब्द साफ साफ सुनाई न देंगे साथ ही इसके इस बात का पता लगना भी जरा कठिन होगा कि ये बातचीत करते हुए जाने वाले आदमी किधर और कितनी दूर होंगे। अस्तु जब भोलासिंह को आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई तो ठीक ठीक पता लगाने और जाँच करने की नीयत से वह उस पेड़ के ऊपर चढ़ गया और चारो तरफ गौर से देखने लगा मगर कुछ पता न लगा और न कोई आदमी ही दिखाई पड़ा। लाचार वह पेड़ के नीचे उतर आया और उसी आहट की सीध पर खूब गौर करता हुआ उत्तर की तरफ चल पड़ा जिधर के जंगली पेड़ बहुत घने और गुञ्जान थे।

कुछ दूर तक चले जाने पर भी भोलासिंह को किसी आदमी का तो पता न

लगा मगर एक छोटे से पेड़ के नीचे बेहोश प्रभाकरसिंह पड़े जरूर दिखाई दिए। यद्यपि उसने आज रात के समय प्रभाकरसिंह को देखा न था क्योंकि उस घाटी में जहाँ भूतनाथ का डेरा था पहुँचने के पहिले ही वह गायब हो चुके थे परन्तु प्रभाकरसिंह एक अमीर बहादुर और नामी आदमी थे इसलिये भोलासिंह उन्हें पहिचानता जरूर था और कई दफे ऐयारी की धुन में शहर में घूमते हुए उसने प्रभाकरसिंह को देखा भी था। इसके अतिरिक्त आज भूतनाथ ने उसे यह भी बता दिया था कि जिस समय प्रभाकरसिंह हमारे साथ से गायब हुए हैं उस समय उनकी पोशाक फलाने ढंग की थी तथा उनके पास अमुक अमुक हर्बे थे। इन सब कारणों से भोलसिंह को उनके पहिचानने में किसी तरह की दिक्कत न हुई और वह उन्हें ऐसी अवस्था में पड़े हुए देखते ही चौंक पड़ा। वह उनके पास बैठ गया तथा गौर से देखने लगा किसी उन्हें किसी तरह की चोट आई है या कोई आदमी जान से मार कर छोड़ गया है। किसी तरह की चोट का पता तो न लगा मगर इतना मालूम हो गया कि मरे नहीं हैं बल्कि बेहोश पड़े हैं।

भोलासिंह ने अपने ऐयारी के बटुए में से लखलखा निकाला और सुँघाने लगा। थोड़ी ही देर में प्रभाकरसिंह होश में आ गये और उन्होंने अपने सामने एक देहाती ब्राह्मण को बैठे देखा।

प्रभा०। आप कौन हैं? कृपा कर अपना परिचय दीजिये। मैं आपका बड़ा ही कृतज्ञ हूँ क्योंकि आज निःसन्देह आपने मेरी जान बचाई!

भोला०। मैं एक गरीब देहाती ब्राह्मण हूँ, इस राह से जा रहा था कि यकायक आपको इस तरह पड़े हुये देखा, फिर जो कुछ बन सका किया।

प्रभा०। (सिर हिला कर) नहीं कदापि नहीं, आप ब्राह्मण भले ही हों परन्तु देहाती और गरीब नहीं हो सकते, आप जरूर कोई ऐयार हैं।

भोला०। यह शक आपको कैसे हुआ?

प्रभा०। यद्यपि मैं ऐयारी नहीं जनता परन्तु ऐसे मौके पर आपको पहिचान लेना कोई कठिन काम नहीं क्योंकि आपने बहुत उम्दा लखलखा सुँघा कर मेरी बेहोशी दूर की है, उसकी खूशबू अभी तक मेरे दिमाग में गूँज रही है। क्या कोई आदमी जो ऐयारी नहीं जानता हो ऐसा लखलखा बना सकता है! आप ही बताइये?

भोला० । आपका कहना ठीक है, मगर मैं.....

प्रभा० । ( बात काट कर ) नहीं नहीं, इसमें कुछ सोचने और बात बनाने की जरूरत नहीं है, मैं आपसे मिल कर बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि मुझे निश्चय है कि आप जरूर मेरे दोस्त भूतनाथ के ऐयार हैं जिनसे सिवाय भलाई के बुराई की आशा हो ही नहीं सकती ।

भोला० । (कुछ सोच कर) बात तो बेशक ऐसी ही है, मैं जरूर भूतनाथ का ऐयार हूँ और वे आपका पता लगाने के लिए गये हैं मगर यह तो बताइये कि आप यकायक गायब क्यों हो गये और आपकी ऐसी दशा किसने की है ?

प्रभा० । मैं यह सब हाल तुमसे बयान करूँगा और यह भी बताऊँगा कि क्योंकर मेरी जान बच गई, मगर इस समय नहीं क्योंकि दुश्मनों के हाथ से तकलीफ उठाने के कारण मैं बहुत ही कमजोर हो रहा हूँ और अब मुझमें ज्यादा बात करने की भी ताकत नहीं है, अस्तु जिस तरह हो सके मुझे अपने डेरे पर ले चलो, वहीं सब कुछ सुन लेना और उसी समय इन्दु तथा गुलाबसिंह को भी मेरा हाल मालूम हो जायगा । यद्यपि मुझमें चलने की ताकत नहीं है मगर तुम्हारे मोढ़े का सहारा लेकर धीरे धीरे वहाँ तक पहुँच ही जाऊँगा ।

भोला० । अच्छी बात है, मैं तो आपको अपनी पीठ पर लाद कर भी ले जा सकता हूँ ।

प्रभा० । ठीक है मगर इसकी कोई जरूरत नहीं है, अच्छा अब अपना नाम तो बता दो ।

भोला० । मेरा नाम भोलासिंह है ।

इतना कह के भोलासिंह उठ खड़ा हुआ और उसने हाथ का सहारा दे कर प्रभाकरसिंह को उठाया । वह बहुत ही सुस्त और कमजोर मालूम हो रहे थे इस लिए भोलासिंह उन्हें टेकाता और सहारा देता हुआ बड़ी कठिनता से सुरंग के मुहाने पर ले आया । वहाँ पर प्रभाकरसिंह ने बैठ कर कुछ देर तक सुस्ताने की इच्छा प्रगट की अस्तु उन्हें बैठा कर भोलासिंह भी उनके पास बैठ गया । इस समय दिन पहर भर के लगभग रह गया होगा ।

आह ! यहाँ पर भोलासिंह ने बेढब धोखा खाया । यह जो प्रभाकरसिंह उसके साथ भूतनाथ की घाटी में जा रहे हैं वह वास्तव में असली प्रभाकरसिंह नहीं हैं

बल्कि उनके दुश्मनों में से एक ऐयार हैं जिसका खुलासा हाल आगे के किसी बयान में मालूम होगा उसे तथा भूतनाथ और उसके ऐयारों को धोखा दिया चाहता है और इन्दुमति पर भी कब्जा कर लेने की धुन में है। यद्यपि भोलासिंह भी ऐयार और बुद्धिमान है मगर साथ ही इसके उसे भाँग का बहुत बड़ा शौक है। सुबह दोपहर और शाम तीनों वक्त की छाने बिना उसका जी नहीं मानता। इतने पर भी बस नहीं, कभी कभी वह नशे की कमी समझ कर दो चार दम गाँजे की भी लगा लिया करता है और यही सबब है कि वह कभी कभी बेढक धोखा खा जाता है उस पर से यह ऐयार है भी बड़ा ही मक्कार है जो उसके साथ जा रहा है। देखा चाहिये दोनों में क्योंकर निपटती है। भोलासिंह तो खुश है कि हमने प्रभाकरसिंह को खोज निकाला, और यह ऐयार सोच रहा है कि अब इन्दुमति पर कब्जा करना कौन बड़ी बात है।

कुछ देर के बाद दोनों आदमी उठ खड़े हुए और भोलासिंह उस नकली प्रभाकर को साथ लिए सुरंग के अन्दर चला गया।

# तीसरा बयान

बेचारी इन्दुमति बड़े ही संकट में पड़ गई है। प्रभाकरसिंह का इस तरह यकायक गायब हो जाना उसके लिए बड़ा ही दुःखदाई हो गया है। इस समय उसके आगे दुनिया अन्धकार हो रही है। उसे कहीं भी किसी तरह का सहारा नहीं सूझता। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता कि अब उसका भविष्य कैसा होगा। उसे न तो तनोबदन की सुध है और न नहाने धोने की फिक्र। वह सिर झुकाकर अपने प्यारे पति की चिन्ता में डूबी हुई है। गुलाबसिंह उसके पास बैठे हुए तरह तरह की बातों से उसे सन्तोष दिलाना चाहते हैं मगर किसी तरह भी उसके चित्त को शान्ति नहीं होती और वह अपने धुन की दो चार बातें कह कर चुप हो जाया करती है। हाँ जब जब उसके कान में ये शब्द पड़ जाते हैं कि भूतनाथ का उद्योग कदापि वृथा नहीं हो सकता' वह जरूर प्रभाकरसिंह को खोज निकालेंगे और यहाँ अपने साथ ले ही कर आवेंगे। तब तब वह चौंक पड़ती है। आशा के फेर में पड़ कर उसका ध्यान सुरंग के मुहाने की तरफ जा पड़ता है और कुछ देर के लिए उधर ही की टकटकी बँध जाती।

इस बीच में इन्दु ने कई दफे गुलाबसिंह से कहा, "तुम मुझे साथ लेकर इस सुरंग के बाहर निकलो, मैं खुद मर्दाना भेष बना कर उनका पता लगाऊँगी।" मगर गुलाबसिंह ने ऐसा करना स्वीकार न किया जिससे उसका चित्त और भी दुःखी हो गया और उसने रोते ही कलपते बची हुई रात और अगला दिन बिता दिया। अन्त में दिन बीत जाने पर सन्ध्या के समय जब सूर्य भगवान अस्त हो रहे थे लाचार होकर गुलाबसिंह ने इन्दु से वादा किया कि अगर कल तक भूतनाथ लौट कर न आ जायंगे तो मैं तुम्हें साथ लेकर सुरंग के बाहर निकल चलूँगा और फिर जैसा तुम कहोगी वैसा ही करूँगा।

गुलाबसिंह के इस वादे से इन्दु को कुछ थोड़ी सी ढाढ़स मिल गई और उसने साहस करके अपने को सम्हाला, इसके बाद गुलाबसिंह से बोली, "इस समय मैं स्नान इत्यादि तो कुछ भी न करूँगी हाँ यदि तुम आज्ञा दो तो मैं थोड़ी देर के लिये नीचे उतर कर मैदान में टहलूँ और कुछ दिल बहलाऊँ।" गुलाबसिंह ने उसकी इस बात को भी गनीमत समझा और घूमने फिरने की इजाजत दे दी।

इन्दुमति का घूमने फिरने के लिये गुलाबसिंह से आज्ञा ले लेना केवल इसी अभिप्राय से न था कि वह अपना दिल बहलावे बल्कि उसका असल मतलब यह था कि वह अकेले में बैठ कर या घूम फिर कर इस विषय पर विचार करे कि अब उसे क्या करना चाहिये, क्योंकि वह गुलाबसिंह की समझानें बुझाने वाली बातों से दुःखी हो गई थी। उनका हरदम पास बैठे रह कर दिलसा देना या ढाढ़स बँधाना उसे बहुत बुरा मालूम हुआ और इस बहाने से उसने अपना पीछा छुड़ाया।

उदास और पति की जुदाई से व्याकुल इन्दुमति गुलाबसिंह के पास से उठी और धीरे धीरे चल कर नीचे वाले सरसब्ज मैदान में पहुँच कर टहलने लगी। उधर गुलाबसिंह भी दिन भर का भूखा प्यासा जरूरी कामों से निपटने और कुछ खाने पीने की फिक्र में लगा।

धीरे धीरे घूमती फिरती इन्दु मति उस सुरंग के मुहाने के पास आ पहुँची जो यहाँ आने का रास्ता था और पहाड़ी के पास एक पत्थर की साफ चट्टान पर बैठ कर सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिये। उसका मुँह सुरंग की

तरफ था और इस आशा से वह बराबर उसी तरफ देख रही थी कि प्रभाकरसिंह को लिये हुये भूतनाथ अब आता ही होगा। उसी समय नकली प्रभाकरसिंह को लिये हुये भोलासिंह वहाँ आ पहुँचा और सुरंग के बाहर निकलते ही इन्दु की निगाह उन पर पड़ी तथा उन दोनों ने भी इन्दु को देखा।

इस समय भोलसिंह अपनी असली सूरत में था और उसे भूतनाथ के साथ जाते हुए इन्दु ने देखा भी था इसलिए वह जानती थी कि वह भूतनाथ का ऐयार है अस्तु निगह पड़ते ही उसे विश्वास हो गया कि भूतनाथ ने मेरे पति को भोलासिंह के साथ यहाँ भेज दिया है और जरूर पीछे पीछे वह ( भूतनाथ ) खुद भी आता होगा।

नकली प्रभाकर और भोलासिंह सुरंग से निकल कर पाँच कदम भी आगे न बढ़े होंगे कि प्रभाकरसिंह को देखते ही इन्दुमति पगलियों की तरह दौड़ती हुई उनके पास पहुँची और उनके पैरों पर गिर पड़ी।

हाय ! बेचारी इन्दु को क्या खबर थी कि यह वास्तव में मेरा पति नहीं है बल्कि कोई मक्कार उनकी सूरत बन मुझे धोखा देने के लिए यहां आया है। तिस पर भोलासिंह के साथ रहने से उसे इस बात पर शक करने का मौका भी न दिया। वह उसे पति ही समझ कर उसके पैरों पर गिर पड़ी और वियोग के दुःख को दूर करती हुई प्रसन्नता ने उसे गद्गद् कर दिया। कण्ठ रुद्ध हो जाने के कारण वह कुछ बोल न सकी केवल गरम गरम आंसू गिराती रही। भोलासिंह भी चुपचाप खड़ा आश्चर्य के साथ उसकी इस अवस्था को देखता रहा।

नकली प्रभाकर ने इन्दुमति से कुछ न कह कर भोलासिंह से कहा, "भाई भोलासिंह ! अब तो मैं बिलकुल ही थक गया हूँ ! मेरी कमजोरी अब मुझे एक कदम भी आगे नहीं चलने देती। इन्दु से मिलने का उत्साह मुझे यहां तक सम्हाल कर ले आया यही गनीमत है नहीं तो दुश्मनों के दिए हुए जहर की बदौलत मैं बिल्कुल ही कमजोर हो गया हूँ। इत्तफाक की बात है कि इन्दु मुझे इसी जगह मिल गई। अब मैं कुछ देर तक सुस्ताये बिना एक कदम भी आगे नहीं चल सकता अस्तु तुम जाओ गुलाबसिंह को भी खुशखबरी देकर इसी जगह बुला लाओ तब तक मैं भी अच्छी तरह आराम कर लूँ।"

"बहत अच्छा !! कह कर भोलासिंह वहां से चला गया। यहां से गुलाब-

सिंह का डेरा सैकड़ों कदम की दूरी पर था, तमाम मैदान पार करने के बाद पहाड़ी पर चढ़ कर वह गुफा थी जिसमें गुलाबसिंह का डेरा था, अस्तु वहां तक जाने और आने में घड़ी भर से भी ज्यादा देर लग सकती थी तथापि भोलासिंह दौड़ा दौड़ा जाकर गुलाबसिंह से मिला और उन्हें प्रभाकरसिंह के आने की खुश-खबरी सुनाई। उस समय गुलाबसिंह रसोई बनाने की फिक्र में थे मगर यह खबर सुनते ही उन्होंने सब काम छोड़ दिया और प्रभाकरसिंह से मिलने के लिये भोलासिंह के साथ चल पड़े।

जिस समय गुलाबसिंह को साथ लिए हुए भोलासिंह सुरंग के मुहाने पर पहुँचा तो वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। न तो प्रभाकरसिंह दिखाई पड़े और न इन्दुमति ही नजर आई। ऐसी अवस्था देख भोलासिंह सन्नाटे में आ गया और अब उसे मालूम हुआ कि उसने धोखा खाया। वह घबड़ा कर चारों तरफ देखने के बाद यह कहता हुआ जमीन पर बैठ गया--"हाय! मैंने बुरा धोखा खाया! प्रभाकरसिंह के साथ ही साथ इन्दुमति को भी हाथ से दे बैठा!!"

## चौथा बयान

अब हम यहाँ पर कुछ हाल प्रभाकरसिंह का लिखना जरूरी समझते हैं। पहिले बयान में हम लिख आये हैं कि प्रकारसिंह इन्दुमति और गुलाबसिंह को लेकर भूतनाथ अपनी घाटी में गया तो रास्ते में सुरंग के अन्दर से यकायक प्रभाकरसिंह गायब हो गए। अस्तु इसी जगह से हम उनका हाल लिखना शुरू करते हैं।

जब भूतनाथ उन लोगों को साथ लिए सुरंग में गया और कुछ दूर जाने बाद चौमुहाने पर पहुँचा तो रास्ते का हाल बता कर कुछ आगे चलने बाद भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा दी और उसे यही खयाल रहा कि हमारे तीनों मेहमान हमारे पीछे पीछे चले आ रहे हैं, मगर वास्तव में ऐसा न था। चौमुहाने से थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने बाद किसी ने प्रभाकरसिंह के दाहिने मोढ़े पर अपना हाथ रक्खा जो सब के पीछे पीछे आ रहे थे। प्रकारसिंह ने चौंक कर पीछे की तरफ देखा मगर अन्धकार में कुछ भी दिखाई न दिया, हाँ एक हलकी सी आवाज यह सुनाई पड़ी कि--ठहरो और जरा मेरी बात सुन कर तब आगे बढ़ो।

ठहरें या न ठहरें भूतनाथ को रोकें अथवा चुप रहें, इत्यादि सोचते हुए प्रभाकरसिंह कुछ ही देर रुके थे कि उनके कान में पुनः एक बारीक आवाज आई, "घबड़ाओ मत, जरा सा रुक कर सुनते जाओ कि अब तुम कैसी आफत में फंसा चाहते हो और उससे छुटकारा पाने की क्या तदबीर है।"

इन शब्दों ने प्रभाकरसिंह को और भी रोक लिया और वे कुछ ठिठके से रह कर सोचने लगे कि क्या करना चाहिये। इतने ही में पिछली तरफ रोशनी मालूम हुई जो चौराहे पर थी जिसे यह लोग छोड़ कर कुछ दूर आगे बढ़ आये थे। उस रोशनी में दो औरतें दिखाई पड़ीं और यह भी मालूम पड़ा कि जिसने प्रभाकरसिंह के मोढ़े पर हाथ रख कर उन्हें रोका था वह भी एक औरत ही है जो अब कुछ पीछे हट कर इन्हें पुनः अपनी तरफ बुला रही है।

यद्यपि इस कार्रवाई में बहुत थोड़ी देर लगी तथापि इसी बीच में उस अनूठी और पेचीली सुरङ्ग में गुलाबसिंह और इन्दुमति को लिए हुए भूतनाथ इतना आगे बढ़ गया था कि न तो वह इन दोनों की बातें ही सुन सका और न चौमुहाने वाली रोशनी ही पर उसकी निगाह पड़ी। कुछ वर्तमान और कुछ भविष्य को सोचते हुए प्रभाकरसिंह अटके और उन औरतों से जो कम उम्र नाजुक और सुन्दर थीं डरना व्यर्थ समझ कर चौमुहाने की तरफ मुड़ कर उस औरत की तरफ चले जिसने इन्हें रोका था।

इन तीनों औरतों का नखसिख बयान करने और इनकी खूबसूरती के बारे में लिखने की यहाँ कुछ जरूरत नहीं है। यहाँ उतना ही कहना काफी है जितना कह आये हैं अर्थात् ये तीनों कमउम्र थीं, नाजुक थीं, सुन्दर थीं और भड़कीली पोशाक पहिरे हुए थीं।

जब चौमुहाने पर पहुँचे तो उन दोनों औरतों में से एक ने जो पहिले ही से वहाँ खड़ी थी प्रभाकरसिंह का हाथ पकड़ लिया और कहा—"भूतनाथ ने जरूर आप को कहा होगा कि चौमुहाने से उसके घर का रास्ता छोड़ कर बाकी दोनों तरफ जाना खतरनाक है, मगर नहीं, वह बिल्कुल झूठा है। आप जरा इधर आइये और देखिये मैं आपको कैसा अनूठा तमाशा दिखाती हूँ!"

इतना कह कर दोनों बल्कि तीनों औरतें प्रभाकरसिंह को सुरंग के उस रास्ते में ले चलीं जिधर जाने के लिए भूतनाथ ने मना किया था। हम नहीं

कह सकते कि क्या सोच समझ कर प्रभाकरसिंह ने इन औरतों की बात मान ली और भूतनाथ की नसीहत पर कुछ भी ध्यान न दिया अथवा भूतनाथ का साथ छोड़ दिया। क्या सम्भव है कि वे इन तीनों औरतों को पहिले से पहिचानते हों?

लगभग पन्द्रह या बीस कदम जाने के बाद उस तीसरी औरत ने जिसके हाथ में रोशनी थी नखरे के साथ हाथ से मोमबत्ती गिरा दी जिससे अन्धकार हो गया मगर उसने यही जाहिर किया कि यह बात धोखे में उससे हो गई। इसके बाद उस औरत ने इनका हाथ भी छोड़ दिया। प्रभाकरसिंह अटक कर कुछ सोचने लगे और बोले—"जो हुआ सो हुआ, अब रोशनी करो तो मैं तुम्हारे साथ आगे बढ़ूँगा नहीं तो पीछे की तरफ मुड़ जाऊँगा।" मगर उनकी इस बात का किसी ने भी जवाब न दिया। आश्चर्य के साथ प्रभाकरसिंह ने पुनः पुकारा मगर फिर जवाब न मिला, मानों वहां कोई था ही नहीं।

आश्चर्य और चिन्ता के शिकार प्रभाकरसिंह कुछ देर तक खड़े सोचने के बाद अफसोस करते हुए पीछे की तरफ लौटे मगर अपने ठिकाने न पहुँच सके। आठ ही दस कदम पीछे हटे थे कि दीवार से टकरा कर खड़े हो गए और सोचने लगे, "हैं! यह क्या मामला है! अभी अभी तो हमलोग इधर से आ रहे हैं, फिर यह दीवार कैसी! रास्ता क्योंकर बन्द हो गया! क्या अब इस तरफ का रास्ता बन्द ही हो गया! क्या अब हम वहां न पहुँच सकेंगे जहां इन्दुमति को लिये हुये भूतनाथ गये हैं!" इत्यादि।

वास्तव में पीछे फिरने का रास्ता बन्द हो गया था मगर अन्धेरे में इस बात का पता नहीं लग सकता था कि यह कोई दीवार बीच में आ पड़ी है या किसी तरह के तख्ते या दर्वाजे ने बगल से निकल कर रास्ता बन्द कर दिया है अथवा क्या है! जो हो, प्रभाकरसिंह को निश्चय हो गया कि अब पीछे की तरफ लौटाना असम्भव है अस्तु यही अच्छा होगा कि आगे की तरफ बढ़ें, शायद कहीं उजाले की सूरत दिखाई दे तब जान बचे। आह! मैं इन औरतों को ऐसा नहीं समझता था और इस बात का स्वप्न में भी गुमान नहीं होता था कि ये मेरे साथ दगा करेंगी।

लाचार प्रभाकरसिंह अन्धेरे में अपने दोनों हाथों को फैला कर टटोलते

हुये आगे की तरफ बढ़े मगर बहुत धीरे धीरे जाने लगे जिसमें किसी तरह का धोखा न हो। रास्ता पेचीला और ऊँचा नीचा था तथा आगे की तरफ से तङ्ग भी होता जाता था। अढ़ाई तीन सौ कदम जाने के बाद रास्ता इतना तङ्ग हो गया कि एक आदमी से ज्यादा के चलने की जगह न थी। कुछ आगे बढ़ने पर रास्ता खतम हुआ और एक बन्द दर्वाजे पर हाथ पड़ा। धक्का देने से वह दर्वाजा खुल गया और प्रभारसिंह ने चौकठ के अन्द पैर रक्खा। दो ही कदम जाने बाद वह दर्वाजा पुनः बन्द हो गया और साथ ही इसके आस्मान की मुफेदी पर भी प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ी जो उनके सामने की तरफ बढ़ती हुई मालूम पड़ती थी लगभग पचीस या तीस कदम जाने बाद प्रभाकरसिंह खोह के बाहर निकले और तब उन्होंने अपने को एक सरसब्ज पहाड़ की ऊँचाई पर किसी गुफा के बाहर खड़े पाया।

इस समय सवेरा हो चुका था और पूरब तरफ पहाड़ की चोटी के पीछे सूरज की लालिमा दिखाई दे रही थी। प्रभाकरसिंह ने अपने को एक ऐसे स्थान में पाया जिसे एक सुन्दर और सुहावनी घाटी कह सकते हैं। यह घाटी त्रिकोण अर्थात् तीन तरफ से पहाड़ के अन्दर दबी हुई थी और जमीन के बीचोबीच में एक सुन्दर बंगला बना हुआ था जो इस जगह से जहाँ प्रभाकरसिंह खड़े थे लगभग चौथाई कोस की दूरी पर पहाड़ के नीचे की तरफ था। प्रभाकरसिंह वहाँ पहुँचने के लिये रास्ता तलाश करने लगे मगर सुर्बाते से उतर जाने के लायक कोई पगडण्डी नजर न आई, तथापि प्रभाकरसिंह हतोत्साह न हुए और किसी न किसी तरह से उद्योग करके नीचे की तरफ उतरने ही लगे। वह सोच रहे थे कि देखें हमारा दिन कैसा कटता है, किस ग्रहदशा के फेर में पड़ते हैं, किसका सामना पड़ता है, और खाने पीने के लिए क्या चीज मिलती है तथा यहाँ से निकलने का रास्ता ही क्योंकर मिलता है। उस बंगले तक पहुँचने में प्रभाकरसिंह को दो घण्टे से ज्यादा देर लगी। पहाड़ की चोटियों पर धूप अच्छी तरह फैल चुकी थी मगर बंगले के पास अभी धूप का निशान भी नहीं था।

बंगले के दर्वाजे पर दो जवान लड़के पहरा दे रहे थे जिन्होंने प्रभाकरसिंह को रोका और पूछा, "तुम यहाँ क्योंकर आये?"

इसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने क्रोध में आ कर कहा, "जिस तरह हम आये

हैं वह जरूर तुम्हें मालूम होगा और जरूर वे तीनों कम्बख्त औरतें भी इसी बंगले के भीतर होंगी जिन्होंने मुझे धोखा देकर गुमराह किया है ! तुम जाओ और उन्हें इत्तला दो कि प्रभाकरसिंह आ पहुँचे !"

उन दोनों पहरे वालों ने प्रभाकरसिंह की बात का कुछ भी जवाब न दिया। प्रभाकरसिंह गुस्से में आकर और कुछ कहा ही चाहते थे कि उनकी निगाह एक मौलसिरी के पेड़ के ऊपरी हिस्से पर जा पड़ी जो इस बंगले के पूरब और दक्षिण के कोने पर बड़ी खूबसूरती के साथ खड़ा था। इस बंगले के चारों कोनों पर चार मौलसिरी के बड़े बड़े दरख्त थे जो इस समय खूब ही हरे भरे थे और उनके फूलों से वहाँ की जमीन ढक रही थी तथा उनकी खुशबू से प्रभाकरसिंह का दिमाग मोअत्तर हो रहा था। जिस मौलसिरी के पेड़ के ऊपर प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ी उसके ऊपरी हिस्से में रेशमी डोर के साथ एक हिंडोला लटक रहा था जो झुकी हुई डालियों की आड़ में छिपा हुआ था मगर जब हवा के झपेटों से उनकी डालियाँ हिलतीं और इधर उधर हटतीं थीं तो उस हिंडोले पर एक सुन्दर औरत बैठी हुई दिखाई देती थी और इसी पर प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ी थी। गौर से देखने पर प्रभाकरसिंह को इन्दुमति का गुमान हुआ और वे दौड़ कर उस पेड़ के नीचे जा खड़े हुए।

प्रभाकरसिंह ने सर उठा कर पुनः उस औरत को देखा, इस आशा से कि यह इन्दुमति है या नहीं इस बात का निश्चय कर ले, मगर प्रभाकरसिंह का खयाल गलत निकला क्योंकि वास्तव में वह इन्दुमति न थी, हाँ इन्दुमति से उसकी सूरत रुपये में बारह आना जरूर मिलती जुलती थी, यहाँ तक कि यदि यह औरत केवल अपने दोनों होंठ और टुड्डी हाथ से या कपड़े से ढाँक कर प्रभाकरसिंह की तरफ देखती होती तो दोपहर की चमचमाती हुई रोशनी में और हाथ भर की दूरी से भी वे इसे न पहिचान सकते और यही कहते कि यह जरूर मेरी इन्दुमति है।

इस समय वह औरत प्रभाकरसिंह की तरफ देख रही थी। जब वे उस पेड़ के नीचे आये तब उसने हाथ के इशारे से उन्हें भाग जाने को कहा जिसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने कहा, "तुम इस बात का गुमान भी न करो कि तुम्हारा हाल जाने बिना मैं यहाँ से चला जाऊँगा !"

औरत० । ( अपने माथे पर हाथ रख कर ) बात तो यह है कि आप अब यहाँ से जा नहीं सकते और न आपको निकल जाने का रास्ता ही मिल सकता है।

प्रभा० । तुम्हारे इस कहने से तो निश्चय होता है कि तुम्हारी जुबानी मुझे यहाँ का सच्चा हाल मालूम हो जायगा और मैं अपने दुश्मनों से बदला ले सकूँगा।

औरत० । नहीं, क्योंकि एक तो मुझे यहाँ का पूरा पूरा हाल मालूम नहीं, दूसरे अगर कुछ मालूम भी है तो उसके कहने का मौका मिलना कठिन है क्योंकि अगर कुछ कहने की कोशिश करूँगी तो मेरी ही तरह आप भी कैद कर लिए जायँगे।

प्रभा० । तो क्या तुम कैदी हो ?

औरत० । ( आंचल से आँसू पोंछ कर ) जी हाँ !!

प्रभा० । तुम्हें यहाँ कौन ले आया ?

औरत० । मेरी बदकिस्मती !

प्रभा० । तुम्हारा क्या नाम है ?

औरत० । तारा।

प्रभा० । ( ताज्जुब से ) तुम्हारे बाप का क्या नाम है ?

औरत० । (रो कर) वही जो आपकी इन्दुमति के बाप का नाम है !! अफसोस ! आपने मुझे अभी तक नहीं पहिचाना !!

इतना कह के वह और भी खुल कर रोने लगी जिससे प्रभाकरसिंह का दिल बेचैन हो गया और उन्होंने पहिचान लिया कि यह बेशक उनकी साली है। वह चाहते थे कि पेड़ पर चढ़ कर उसे नीचे उतारें और अच्छी तरह बात करें मगर इसी बीच में कई आदमियों ने उन्हें आकर घेर लिया। बँगले के दर्वाजे पर पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने प्रभाकरसिंह को जब उस औरत से बातचीत करते देखा तब तेजी के साथ वहाँ से चले गये और इसके थोड़ी ही देर बाद कई आदमियों ने आकर प्रभाकरसिंह को घेर लिया।

## पाँचवाँ बयान

सन्ध्या का समय था जब नकली प्रभाकर इन्दुमति को बहका कर और धोखा देकर भूतनाथ की विचित्र घाटी से उसी सुरंग की राह ले भागा जिधर से वे

लोग गये थे। उस समय इन्दुमति की वैसी ही सूरत थी जैसी कि हम पहिले बयान में लिख आये हैं अर्थात् मर्दानी सूरत में तीर कमान और ढाल तलवार लगाये हुए थी। सम्भव था कि नकली प्रभाकर को उसके पहिचानने में धोखा होता परन्तु नहीं, उसका इन्दुमति से कुछ ऐसा सम्बन्ध था कि उसने उसके पहिचानने में जरा भी धोखा न खाया बल्कि इन्दुमति को ही हर तरह से धोखे में डाल दिया। इन्दुमति ने भी प्रभाकरसिंह को वैसे ही ढंग और पोशाक में पाया जैसा छोड़ा था परन्तु यदि वह विह्वल दुःखित और घबड़ाई हुई न होती तो उसके लिए नकली प्रभाकरसिंह को पहिचान लेना कुछ कठिन न था।

सुरङ्ग के बाहर होने बाद आस्मान की तरफ देख कर इन्दुमति को इस बात का ख्याल हुआ कि रात हुआ ही चाहती है। वह सोचने लगी कि इस भयानक जंगल से क्योंकर पार होंगे और रात कहाँ पर आराम से बिता सकेंगे, साथ ही उसे यकायक इस तौर पर गुलाबसिंह को छोड़ना और भूतनाथ की घाटी से निकल भागना भी ताज्जुब में डाल रहा था। पूछने पर भी प्रभाकरसिंह ने उसको ठीक ठीक सबब नहीं बताया था हाँ बताने का वादा किया था, मगर इससे उसकी बेचैनी दूर नहीं हुई थी। उसका जी तरह तरह के खुटकों में पड़ा हुआ था और यह जानने के लिए वह बेचैन हो रही थी कि गुलाबसिंह ने उनका क्या नुकसान किया था जो उसको भी छोड़ दिया गया।

सुरंग के मुहाने से थोड़ी दूर आगे जाने बाद इन्दुमति ने प्रभाकरसिंह से कहा, "आपकी चाल इतनी तेज है कि मैं अपका साथ नहीं दे सकती।"

नकली प्रभा०। ( धीमी चाल कर के ) अच्छा लो मैं धीरे धीरे चलता हूँ, मगर जहाँ तक जल्द हो सके यहाँ से निकल ही चलना चाहिये।

इन्दु०। आखिर इसका सबब क्या है, कुछ बताओ भी तो सही!

नकली प्रभा०। अभी नहीं, थोड़ी देर के बाद इसका सबब बताऊँगा।

इन्दु०। यही कहते कहते तो यहाँ तक आ पहुँचे! अच्छा यही बताओ कि हम लोगों को कहाँ जाना होगा और कितना बड़ा सफर करना पड़ेगा?

नकली प्रभा०। कुछ नहीं थोड़ी ही दूर और चलना पड़ेगा, उसके बाद सवारी तैयार मिलेगी जिस पर चढ़ कर हम लोग निकल जायँगे।

सवारी का नाम सुन इन्दुमति चौंकी और उसने पुनः नकली प्रभाकर से

पूछा, "ऐसे मुसीबत के जमाने में यकायक आपको सवारी कैसे मिल गई ?"

नकली प्रभा० । इसका जवाब भी आगे चल कर देंगे ।

प्रभाकरसिंह की इस बात ने इन्दुमति को और भी तरद्दुद में डाल दिया। वह चलते चलते रुक कर खड़ी हो गई और इस बीच में नकली प्रभाकरसिंह जो आगे आगे जा रहे थे कई कदम निकल गये ।

हम नहीं कह सकते कि अब यकायक इन्दुमति के जी में क्या आया कि वह प्रभाकरसिंह के साथ जाते जाते एक दम रुक हो नहीं गई बल्कि जब प्रभाकरसिंह अपनी तेजी और जल्दबाजी में पीछे की सुध न कर के इन्दुमति से कुछ आगे बढ़ गये तो दाहिनी तरफ हट कर वह एक गुञ्जान पेड़ पर चढ़ गई और छिप कर इन्तजार करने लगी कि देखें अब जमाना क्या दिखाता है ।

नकली प्रभाकरसिंह जब दो सौ कदम से भी ज्यादे आगे बढ़ गया तब उसे मालूम हुआ कि उसके पीछे इन्दुमति नहीं है । वह घबड़ा कर पीछे की तरफ लौटा और "इन्दुमति, इन्दुमति" कह कर कुछ ऊँचे स्वर से पुकारने लगा ।

इन्दुमति पेड़ पर चढ़ कर छिपी हुई उसकी आवाज सुन रही थी, मगर उसे खूब याद था कि उसके प्यारे पति ने आवश्यकता पड़ने पर भी कभी उसे 'इन्दुमति' कह कर नहीं पुकारा । यह एक ऐसी बात थी जो केवल उन दोनों पति पत्नी ही से सम्बन्ध रखती थी। कोई तीसरा आदमी इसके जनाने का अधिकारी न था ।

नकली प्रभाकरसिंह इन्दु को पुकारता हुआ उससे भी ज्यादे पीछे हट गया जहाँ इन्दु छिपी हुई थी और इस बीच में उसने तीन दफे जफील ( सीटी ) भी बुलाई, साथ ही इसके यह भी उसके मुँह से निकल पड़ा, "कम्बख्त ठिकाने पहुँच कर गायब हो गई !" और यह बात इन्दुमति ने भी सुन ली ।

जफील की आवाज से वहाँ कई आदमी और भी आ पहुँचे तथा नकली प्रभाकरसिंह के साथी बन गए जिन्हें देख इन्दुमति को विश्वास हो गया कि जो कुछ उसने यहाँ आकर सोचा था वही ठीक निकला, वास्तव में उसने पूरा धोखा खाया, और अब वह बेतरह दुश्मनों के काबू में पड़ी हुई है ।

इन्दुमति को खोजने वाले अब कई आदमी हो गये और वे इधर उधर फैल कर पेड़ों की आड़ तथा झुरमुट में उसे खोजने लगे ।

तिथि के अनुसार रात की पहिली कालिमा (अन्धेरी) बीत चुकी थी और चन्द्रदेव उदय होकर धीरे धीरे ऊँचे उठने लगे थे जिससे इन्दु घबड़ा गई और मन में सोचने लगी कि यह तो बड़ा अन्धेर हुआ चाहता है। एक छिपे हुए इन्दु को यह इन्दु अपना सा किया चाहता है! अब मैं क्या करूँ?

प्रभाकरसिंह के साथ ही साथ जमाने ने भी उसे बहुत कुछ सिखला दिया था। तलवार चलाना और तीर का निशाना लगाना वह बखूबी जानती थी, बल्कि तीरन्दाजी में उसे एक तरह का घमण्ड था और इस समय उसके पास यह सामान मौजूद भी था जैसा कि हम ऊपर इशारा कर चुके हैं कि—इस समय इसकी पोशाक और सूरत वैसी ही थी जैसी कि हम पहिले बयान में दिखा चुके हैं।

जब कई दुश्मनों ने इन्दुमति को घेर लिया और चाँदनी भी फैल कर वहाँ की हर एक चीजों को दिखाने लगी तब उसे विश्वास हो गया कि अब वह किसी तरह छिपी रह नहीं सकती, लोग जरूर उसे देख लेंगे और गिरफ्तार करें लेंगे। अतएव उसने कमान पर तीर चढ़ाया और सम्भल कर बैठ गई, सोच लिया कि जब तक तरकस में एक भी तीर मौजूद रहेगा किसी को अपने पास फटकने न दूँगी।

इसी बीच में मौका पाकर उसने नकली प्रभाकरसिंह को अपने तीर का निशाना बनाया। इन्दु के हाथ से निकला हुआ तीर नकली प्रभाकरसिंह के पैर में लगा और वह "हाय" करके बैठ गया। उसके साथी उसके चारो तरफ जमा हो गये और बोले, "बेशक वह इसी जगह कहीं है और यह तीर उसी ने मारा है! अब उसे हम जरूर पकड़ लेंगे! तीर पूरब तरफ से आया है!!"

एक और तीर आया और वह एक आदमी की पीठ को छेद कर छाती की तरफ से पार निकल गया।

अब तो उन लोगों में खलबली पड़ गई और खोजने की हिम्मत जाती रही बल्कि जान बचाने की फिक्र पड़ गई, मगर इस खयाल से कि तीर 'पूरब' तरफ से आया है और मारने वाला भी उसी तरफ किसी पेड़ पर छिपा हुआ होगा दोनो जख्मियों को छोड़ कर बाकी में लोग इन्दु की तरफ झपटे और चाँदनी की मदद से बहुत जल्द उस पेड़ को घेर लिया जिस पर इन्दु छिपी हुई थी।

अब इन्दु ने अपने को जाहिर कर दिया और जरा ऊँची आवाज में उसने दुश्मनों से कहा, "हाँ हाँ, बेशक मैं इसी पेड़ पर हूँ, मगर याद रक्खो कि तुम

लोगों को अपने पास आने न दूँगी बल्कि देखते ही देखते इस दुनिया से उठा दूँगी !"

इतना कह कर उसने उस पेड़ के नीचे के और भी एक आदमी को तीर से घायल किया। इसी समय ऊपर की तरफ से आवाज आई, "शाबाश इन्दु शाबाश !! इन लोगों की बातचीत से मैं पहिचान गया कि तू इन्दुमति है !"

यह बोलने वाला भी उसी पेड़ पर था जिस पर इन्दु थी मगर उससे ऊपर की एक ऊँची डाल पर बैठा हुआ था जिसकी आवाज सुन कर इन्दुमति घबड़ा गई और सोचने लगी कि यह कोई उसका दुश्मन तो नहीं है। उसने पूछा, "तू कौन है और यहाँ कब से बैठा हुआ है ?"

जवाब०। मैं तुमसे थोड़ी देर पहिले यहाँ आया हूँ बल्कि यों कहना चाहिये कि दूर से तुम लोगों को आते देख कर इस पेड़ पर चढ़ बैठा था। मैं तुम्हारा पक्षपाती हूँ और मेरा नाम भूतनाथ है। तुम तीर कमान मुझको दो, मैं अभी तुम्हारे दुश्मनों को जहन्नुम में पहुँचा देता हूँ।

इन्दु०। बस बस बस, मैं ऐसी बेवकूफ नहीं हूँ कि इस समय तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लूँ और अपना तीर कमान जिससे मैं अपनी रक्षा कर सकती हूँ तुम्हारे हवाले करके अपने को तुम्हारी दया पर छोड़ दूँ। यद्यपि मैं औरत हूँ और मेरी कमान कड़ी नहीं है तथा मेरे फेंके तीर दूर तक नहीं जाते, तथापि मेरा निशाना नहीं चूक सकता और मैं नजदीक के दुश्मनों को बच कर नहीं जाने दे सकती। खैर तुम जो कोई भी होवो, समझ रक्खो कि इस समय मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास न करूँगी और तुम्हें कदापि नीचे न उतरने दूँगी, जरा भी हिलोगे तो मैं तीर मार कर तुम्हें दूसरी दुनिया में पहुँचा दूँगी !

इतने ही में नीचे कोलाहल बढ़ा और इन्दुमति ने तीर मार कर और एक आदमी को गिरा दिया। फिर ऊपर से आवाज आई—"शाबाश इन्दु शाबाश ! तू मुझे नीचे उतरने दे, फिर देख मैं तेरे दुश्मनों से कैसा बदला लेता हूँ !!"

इन्दु०। कदापि नहीं, मैं अपने दुश्मनों से आप समझ लूँगी।

आवाज०। और जब तुम्हारे तीर खतम हो जायँगे तब तुम क्या करोगी।

इन्दु०। मेरे तीरों की गिनती दुश्मनों की गिनती से बहुत ज्यादा है, तुम इसकी चिन्ता न करो और चुपचाप बैठे रहो।

आवाज०। नहीं इन्दु नहीं, तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे दुश्मन यहाँ बहुत ज्यादा हैं, थोड़ी देर में वे इकट्ठे हो जायँगे और तब तुम्हारे तीरों की गिनती कुछ काम न करेगी।

इन्दु०। ऐसी अवस्था में तुम्हीं क्या कर सकते हो जो एक औरत का मुकाबला कर के नीचे नहीं उतर सकते! खबरदार! व्यर्थ का बकवाद करके मेरा समय नष्ट न करो!!

फिर नीचे कोलाहल बढ़ा और इन्दुमति के तीर ने पुनः एक आदमी का काम तमाम किया। इन्दु के ऊपर की तरफ बैठा हुआ आदमी नीचे उतरने लगा और बोला, "खबरदार इन्दु, मुझ पर तीर न चलाइयो और सच जानियो कि मैं भूतनाथ हूँ और अब नीचे उतरे बिना नहीं रह सकता!!"

इन्दु०। मैं जरूर तीर मारूँगी और भूतनाथ के नाम का मुलाहजा न करूंगी।

इतना कह कर इन्दु ने उसकी तरफ तीर सीधा किया मगर घबड़ा कर दिल में सोचने लगी कि कहीं वह भूतनाथ ही न हो। उसी समय किसी हर्बे की चमक उसकी आँखों में पड़ी और उसकी तेज अक्ल ने तुरत समझ लिया कि यह बरछी है जिससे कुछ आगे बढ़ कर वह जरूर मुझ पर हमला करेगा, अस्तु दिल कड़ा करके इन्दु ने उस पर तीर चला ही दिया जो कि उसके मोढ़े में लगा, मगर इस चोट को सह कर और कुछ नीचे उतर कर उसने इन्दु पर बरछी का वार किया, साथ ही इन्दु का दूसरा तीर पहुँचा जो कि न मालूम कहाँ लगा कि वह लुढ़क कर जमीन पर आ रहा और बेहोश हो गया। परन्तु उसका बर्छी का वार भी खाली नहीं गया। इन्दु के जंघे में कुछ चोट आई, खून का तरारा बह चला और दर्द से वह बेचैन हो गई। कुशल हुआ कि वह बखूबी इन्दु के पास नहीं पहुँचा था अन्दाज से कुछ दूर ही था इसलिये बर्छी की चोट भी पूरी न बैठी, अगर कुछ और नजदीक आ गया होता तो इन्दु भी पेड़ पर न ठहर सकती जरूर नीचे गिर पड़ती।

इन्दु जनाना थी मगर उसका दिल मर्दाना था। यद्यपि इस समय वह दुश्मनों से घिरी हुई थी और बचने की आशा बहुत कम थी तथापि उसने अपने दिल को खूब सँभाला और दुश्मनों को अपने पास फटकने न दिया। पेड़ पर से जिस आदमी ने इन्दु को जख्मी किया था इन्दु के हाथ से जख्मी

होकर उसके गिरने के साथ ही नीचे वालों में खलबली पड़ गई। सभों ने गौर के साथ उसे देखना और पहिचानना चाहा। एक ने कहा, "यह तो भूतनाथ है!" दूसरे ने कहा "फिर इन्दु ने इसे क्यों मारा?"

इत्यादि बातें होने लगीं जो इन्दु के दिल में तरह तरह का खुटका पैदा करने वालीं थीं मगर उसने उनकी कुछ भी परवाह न की और दुश्मनों पर तीर का वार करने लगी। ग्यारह दुश्मनों में से सात को उसने जख्मी किया जिसमें उसके ग्यारह तीर खर्च हुए मगर चार दुश्मनों ने बड़ी चालाकी से अपने को बचाया और सर पर ढाल रख के इन्दु को पकड़ने के लिये पेड़ पर चढ़ने लगे। इन्दु ने पुनः तीर मारना आरम्भ किया मगर इसका कोई अच्छा नतीजा न निकला क्योंकि उसके चलाये हुए तीर सब ढाल पर टक्कर खा के बेकार हो जाते थे।

अब इन्दु का कलेजा धड़कने लगा। वह जख्मी हो चुकी थी और उसका तरकस भी खाली हो चला था। पेड़ पर चढ़ने वाले बड़े ही कट्टर और लड़ाके आदमी थे जिन्होंने इन्दु के तीरों की कुछ भी परवाह न की और उसके पास पहुँच कर उसे गिरफ्तार करने पर ही तुल गये ऐसी हालत देख इन्दु ने भी अपने को उनके हाथ में फँसाने की बनिस्बत जान दे देना ही अच्छा समझा। वह लुढ़क कर पेड़ पर से नीचे गिर पड़ी और सख्त चोट खाकर बेहोश हो गई।

जब इन्दु होश में आई और उसने आंखें खोलीं तो अपने को एक सुन्दर मसहरी पर पड़े पाया और सामने कई लौंडियों को खिदमत के लिये हाजिर देख कर ताज्जुब करने लगी।

## छठवाँ बयान

आँख खुलने पर इन्दु ने एक ऐसी औरत को भी अपने सामने इज्जत के साथ बैठे देखा जिसे सब हकीमिनजी के नाम से सम्बोधन करती थीं और जिसके विषय में जाना गया कि वह इन्दुमति का इलाज कर रही है।

इसमें कोई शक नहीं कि इन्दुमति को गहरी चोट लगी थी और उसे करवट बदलना भी कठिन हो रहा था। इस पर भी उसे इस बात का दुःख था कि वह जीती बच गई और दुश्मनों के हाथ में फँस गई, परन्तु इस समय जितनी औरतें वहां मौजूद थीं सभी खूबसूरत, कमसिन, खुशदिल, हँसमुख और हमदर्द

मालूम होती थीं। सभी को इस बात की फिक्र थी कि इन्दुमति शीघ्र अच्छी हो जाय और उसे किसी तरह की तकलीफ न रहे सभी प्यार के साथ उसकी खिदमत करती थीं, दिल बहलाने की बातें करती थीं, और कई उसके पास बैठी सर पर हाथ फेरती हुई प्रेम से पूछतीं कि कहो बहिन मिजाज कैसा है? अब तुम किसी बात की चिन्ता न करो, यह घर तुम्हारे दुश्मनों का नहीं है बल्कि दोस्तों का है जो कि बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जायगा और यह भी मालूम हो जायगा कि दुश्मनों के हाथों से तुम किस तरह छुड़ा ली गईं। जरा तुम्हारी तबीयत अच्छी हो जाय तो मैं सब रामकहानी कह सुनाऊँगी, तुम किसी तरह की चिन्ता न करो! इत्यादि।

इन सब बातों से मालूम होता था कि वे सब की सब लौंडी ही न थीं बल्कि अच्छे खानदान की लड़कियाँ थीं और दो एक तो ऐसी थीं जो बराबरी का (बल्कि उससे भी बढ़ कर होने का) दावा रखती थीं।

यह सब कुछ था परन्तु इन्दुमति को इस बात का ठीक पता नहीं लगता था कि वह वास्तव में दुश्मनों की मेहमान है या दोस्तों की। यद्यपि उसकी हर तरह से खिदमत होती थी, उसकी खातिरदारी की जाती थी, उसे भरोसा दिलाया जाता था और जिसमें वह खुश हो वही करने के लिए सब तैयार रहती थीं, यह सब कुछ था मगर फिर भी उसके दिल को भरोसा नहीं होता था।

इसी तरह समय बीतता गया और इन्दु की तबीयत सम्भलती गई। उसे होश में आये आज तीसरा दिन है, दर्द में भी बहुत कमी है और वह दस बीस कदम टहल भी सकती है। आज ही उसने कुछ थोड़ा बहुत भोजन भी किया है और इस फिक्र में तकिए का सहारा लगाए बैठी है कि आज किसी न किसी तरह इस बात का निश्चय जरूर करूँगी कि वास्तव में मैं किसके कब्जे में हूँ।

उसकी खातिर करने वालियों में दो औरतें ऐसी थीं जिन पर इन्दु को भरोसा हो गया था और जिन्हें इन्दु सब से बढ़ कर, उच्च कुल की, नेक और होनहार समझती थी। एक का नाम कला और दूसरी का नाम विमला था। सब से ज्यादे ये ही दोनों इन्दु के साथ रहा भी करती थीं।

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है। चिन्तानिमग्न इन्दु अपनी चारपाई पर लेटी हुई तरह तरह की बातें सोच रही थी। उसी के पास दो चारपाइयाँ

और बिछी हुई थीं जो कला और विमला के सोने के लिए थीं। कला चारपाई पर नहीं बल्कि इन्दु के पास उसकी चारपाई का ढासना लगाए बैठी थी मगर विमला अभी तक यहाँ आई न थी। कई सायत तक सन्नाटा रहने बाद इन्दु ने बातचीत शुरू की।

इन्दु०। कला, कुछ समझ में नहीं आता कि तू मुझसे यहाँ का भेद क्यों छिपाती है और साफ साफ क्यों नहीं कहती कि यह किसका मकान है।

कला०। बहिन। मैं जो तुमसे कह चुकी कि यह तुम्हारे दुश्मन का मकान नहीं है बल्कि दोस्त का है तो फिर क्यों तरद्दुद करती हो ?

इन्दु०। तो क्या मैं अपने दोस्त का नाम नहीं सुन सकती ? आखिर नाम छिपाने का सबब ही क्या है !

कला०। छिपाने का सबब केवल इतना ही है कि यहाँ का हाल सुन कर जितना तुम्हें आनन्द होगा उतना ही बल्कि उससे ज्यादे दुःख होगा और हकीमिनजी का हुक्म है कि अभी तुम्हें कोई ऐसी बात न कही जाय जिससे रञ्ज हो।

इन्दु०। यह कोई बात नहीं है, और अगर है भी तो हकीमिनजी का केवल नखरा और तुम लोगों का बहाना !!

कला०। अगर तुम ऐसा ही समझती हो तो लो आज मैं वह सब हाल कह दूँगी मगर शर्त यह है कि सिवाय विमला के और किसी को भी मालूम न हो कि मैंने तुमसे कुछ कहा था।

इन्दु०। नहीं नहीं, मैं कसम खाकर कहती हूँ कि अपनी जुबान से किसी से भी कुछ न कहूँगी।

कला०। अच्छा तो कुछ और रात जाने दो और विमला को भी आ जाने दो।

इतने ही में विमला ने भी चौकठ के अन्दर पैर रक्खा।

इन्दु०। लो विमला भी आ गई !

कला०। अच्छा हुआ मगर जरा सन्नाटा हो जाने दो।

विमला०। ( कला के पास बैठ कर ) क्या बात है ?

कला०। ( धीरे से ) ये यहाँ का हाल जानने के लिये बेताब हो रही हैं।

विमला०। इनका बेताब होना उचित ही है मगर ( इन्दु की तरफ देख के ) आप दुरुस्त हो जातीं तब इसे पूछतीं तो अच्छा था, नहीं तो.....

इन्दु० । यही हठ तो और भी उत्तण्ठित करता है !

विमला० । सुनने से आपको जितनी खुशी होगी उससे ज्यादे रञ्ज होगा ।

इन्दु० । बला से, जो होगा देखा जायगा ! मगर (उदासी से) तुमसे तो मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि .....

विमला० । ( इन्दु का हाथ प्रेम से दबा कर) बहिन ! मैं तुमसे कोई बात नहीं छिपाऊँगी, कहूँगी और जरूर कहूँगी ।

इन्दु० । तो फिर कहो ।

विमला० । अच्छा सुनो मगर किसी के सामने इस हाल को कभी न दोहराना ।

इन्दु० । नहीं कदापि नहीं ।

बिमला० । अच्छा खैर.....यह बताओ कि तुम्हें अपना मायका ( बाप का घर ) छोड़े कितने दिन हुए ?

इन्दु० । (कुछ सोच के) लग भग एक वर्ष और सात महीने के हुए होंगे । शादी भई और मायका छूटा । तब से आज तक दुःख ही दुःख उठाती रही । मैं अपनी माँ और दो मौसेरी बहिनों को फूट फूट कर रोती हुई छोड़कर पति के साथ रवाने हुई थी, वह दिन कभी भूलने वाला नहीं ।

इतना सुनते ही कला और विमला की आँखों में आँसू डबडबा आये ।

बिमला० । ( आँसू पोंछ कर ) मुझे भी वह दिन नहीं भूलने का !

इन्दु० । (आश्चर्य से) बहिन तुम्हें वह दिन कैसे याद है, तुम वहाँ कहाँ थीं ।

विमला० । मैं थी और जरूर थी, बल्कि हम दोनों बहिनें ( कला की तरफ इशारा करके ) वहाँ थीं ।

इन्दु० । सो कैसे, कुछ कहो भी तो ।

विमला० । बस इतना ही तो असल भेद है, सब बातें इसी से सम्बन्ध रखती हैं ( धीरे से ) तुम्हारी वे दोनों मौसेरी बहिनें हम दोनों कला और बिमला के नाम से आज साल भर से यहाँ निवास करती हैं । यद्यपि देखने में हम हर तरह से सुख भोग रही हैं मगर वास्तव में हमारे दुःख का कोई पारावार नहीं ।

इन्दु० । (बड़े ही आश्चर्य से) यह तो तुम ऐसी बात कहती हो कि जिसका स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता ! यद्यपि तुम दोनों की उम्र वही होगी, चाल-ढाल बातचीत सब उसी ढंग की है, मगर सूरत शक्ल में जमीन आस्मान का फर्क

है। ओह! नहीं, यह कैसे हो सकता है! मुझे कैसे विश्वास हो सकता है?

विमला०। (मुस्कुरा कर) हम दोनों की सूरत शक्ल में किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा है! मैं सहज ही में विश्वास दिला दूंगी कि जो कुछ कहती हूँ वह बाल बाल सच है। अच्छा ठहरो, मैं तुम्हें अभी बता देती हूँ।

इतना कह कर विमला उठी और उसने इस कमरे के कुल दर्वाजे बन्द कर दिये।

इन्दु जब से यहाँ आई है तब से इसी कमरे में है, उसे इसके बाहर का हाल कुछ भी मालूम नहीं है, वह नहीं जानती कि इस कमरे के बाहर कोठड़ी है या दालान, बारहदरी है या सायबान, पहाड़ है या बियाबान। होश में आने के बाद उसमें अभी बाहर निकलने की ताकत ही नहीं आई, हाँ, इसके भीतर की तरफ दो कोठड़ी एक पायखाना और एक नहाने का घर है जिन्हें इन्दु जरूर जानती है, क्योंकि इन कोठड़ियों से उसे वस्ता पड़ चुका है।

विमला इन्दु के पास से उठ कर दर्वाजा बन्द करने के बाद उसी नहाने वाली कोठड़ी में चली गई और थोड़ी ही देर में लौट कर मुसकुराती हुई इन्दु के पास आ कर बोली, "लो अब तुम मुझे गौर से देखो और पहिचानो कि मैं कौन हूँ?"

यद्यपि इन्दु बीमार कमजोर और हतोत्साह थी तथापि विमला की नवीन सूरत देखते ही चौंकी और उठ कर उसके गले से लिपट गई।

विमला०। बस समझ लो कि इसी तरह कमला भी सूरत बदले हुए है। हम दोनों बहिनें एक साथ एक ही अनुष्ठान साधन के लिए सूरत बदल कर अहदशा के दिन काट रही हैं। जब तक कम्बख्त भूतनाथ से बदला न ले लेंगी तब तक...

इन्दु०। (विमला को छोड़ कर) अहा मुझे कब आशा थी कि इस तरह अपनी बहिन जमना और सरस्वती को देखूँगी, मगर भूतनाथ.....

कला०। (विमला से) बस बहिन! अब बातें पीछे करो पहिले अपनी सूरत बदलो और उस झिल्ली * को चढ़ा कर विमला बन जाओ, दर्वाजे खोल दो और आराम से बातें करो।

* इस झिल्ली को वैसी ही समझना चाहिये जैसी चन्द्रकान्ता चौथे हिस्से के आखीर में चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा ने उतार कर दिखाई थी।

विमला उठी और पुनः उसी कमरे में जाकर अपनी सूरत पहिले जैसी बना कर लौट आई। काम केवल इतना ही था कि एक अद्भुत झिल्ली जो अपने चेहरे से उतारी थी फिर चढ़ा कर जैसी की तैसी बन बैठी। कला ने कमरे के दर्वाजे खोल दिए और आराम के साथ बैठ कर फिर तीनों बातचीत करने लगीं।

इन्दु०। बहिन! तुमसे मिल कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुई मगर अब तुम अपना हाल कह जाओ और यह बताओ कि यह मकान किसका है, मेरी मौसी का या मेरी माँ का?

विमला०। दोनों में किसी का भी नहीं।

इन्दु०। (ताज्जुब से) तो क्या तुम दोनों लावारिस हो गईं? कोई तुम्हारा मालिक नहीं रहा?

विमला०। रहा और नहीं भी रहा!

इन्दु०। सो कैसे? यह तो मैं जानती हूँ कि दयारामजी के मरने से तुम दोनों विधवा हो गईं क्योंकि अभाग्यवश दोनों बहिनें एक ही के साथ ब्याही गई थीं मगर फिर भी हम लोगों के माँ बाप ऐसे गये गुजरे नहीं कि हम लोग लावारिस समझे जायँ।

बिमला०। (अपनी आँखों से आँसू पोंछ कर) नहीं लावारिस तो नहीं हैं मगर अभागी और दैव की सताई हुई जरूर हैं। हम दोनों बहिनों को मालूम हो गया है कि हमारे निर्दोष पति को गदाधरसिंह ने मारा है, और बस यही जान लेना हमारी इस अवदशा का कारण है।

इन्दु०। (चौंक कर) कौन गदाधरसिंह?

विमला०। वही जो हमारे ससुर का ऐयार और हमारे पति का दिली दोस्त कहलाता है।

इन्दु०। (बड़े ही आश्चर्य से) यह बात तबीयत में नहीं जमती। ऐयारी के फन में यह बिल्कुल ही बिरुद्ध है। ऐयार चाहे कैसा ही बेईमान क्यों न हो मगर मालिक के साथ ऐसा फरेब कभी नहीं करेगा और गदाधरसिंह तो एक नेक ऐयार गिना जाता है, एक दफे मैंने भी उसकी सूरत देखी है।

विमला०। बहिन! बेशक ऐसा ही है। यद्यपि अभी किसी को इस बात की खबर नहीं है, यहाँ तक कि मेरे माँ बाप और ससुर को भी इस बात का विश्वास

नहीं हो सकता मगर मुझे जो कुछ पता लगा है वह यही है और बहुत ठीक भी है।

कला०। और इतना भी मैं जरूर कहूँगी कि मेरे ससुर को भी इस बात का शक जरूर हो गया है, खास करके तब से जब से कि गदाधरसिंह ने अपना काम या हमारे यहाँ का रहना एक प्रकार से छोड़ दिया है, यद्यपि हमारे ससुर इस विचार को प्रगट नहीं करते।

विमला०। इस समय वही गदाधरसिंह तुम्हारा रक्षक बना है और भूतनाथ के नाम से तुम्हारे साथ दोस्ती दिखलाता है, मगर हम दोनों कब उस पर विश्वास करने लगीं।

इन्दु०। ( चौंक के ) हैं !! क्या वही गदाधरसिंह भूतनाथ बना है ?

विमला०। हाँ वही भूतनाथ है जिसके फन्दे से बचा कर मैं तुमको यहाँ ले आई।

कला०। बहिन ! हम दोनों वे बातें जानती हैं जो अभी दुनिया में किसी को भी मालूम नहीं है, या अगर मालूम है भी तो केवल दो ही चार आदमियों को।

विमला०। मैं भी भूतनाथ को वह मजा चखाऊँगी कि उसे नानी याद आ जायगी और वह समझ जायगा कि दुनिया में औरतें कहाँ तक कर सकती हैं।

इन्दु०। तुम्हारी बातों ने तो मुझे पागल बना दिया ! मैं वे बातें सुन रही हूँ जिनके सुनने की कभी आशा न थी। तो क्या तुम यह भी कहोगी कि गुलाबसिंह ने भी हम लोगों के साथ दगा की और जान बूझ कर हम दोनों को भूतनाथ के हवाले कर दिया ?

विमला०। कौन गुलाबसिंह ?

इन्दु०। वही गुलाबसिंह, भानुमती वाला !

विमला०। ( कुछ सोच कर ) इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती क्योंकि अभी तक मैंने तुम्हारी जुबानी तुम्हारा कुछ भी हाल नहीं सुना है। मैं नहीं जानती कि तुम क्योंकर घर से निकलीं, तुम पर क्या आफतें आईं, और गुलाबसिंह ने तुम्हारे साथ क्या क्या सलूक किया। तथापि गुलाबसिंह पर शक करने की इच्छा नहीं होती क्योंकि वह बड़ा नेक और ईमानदार आदमी है तथा हमारे घर के कई एहसान भी उसके ऊपर हैं यदि वह माने। यों तो आदमी का ईमान बिगड़ते कुछ देर नहीं लगती क्योंकि आदमी का शैतान हर दम आदमी के साथ रहता है।

इन्दु०। ठीक है, अच्छा मैं भी अपना हाल कह सुनाऊँगी मगर पहिले यह सुन लूँ कि मैं क्योंकर यहाँ आई और क्योंकर तुमने मुझे दुश्मनों के हाथ से बचाया।

विमला०। हाँ हाँ, मैं कहती हूँ सुनो। अच्छा यह बताओ कि तुम उन दुश्मनों को जानती हो जिनके हाथ फँसी थीं?

इन्दु०। नहीं बिल्कुल नहीं।

विमला०। वे महाराज शिवदत्त के आदमी थे।

इन्दु०। ओफ ओह!! जिसके खौफ से हम लोग भागे हुए थे! मगर अभी अभी तुम कह चुकी हो कि मैंने तुम्हें भूतनाथ के हाथ से बचाया है।

विमला०। हाँ बेशक वैसा भी कह सकते हैं क्योंकि भूतनाथ तो हम लोगों का सब से बड़ा दुश्मन ठहरा मगर इधर तुम शिवदत्त ही के आदमियों के हाथ में फँसी थीं। इत्तफाक से हम लोग भी उसी समय वहां जा पहुँचे और लड़-भिड़ कर उन लोगों के हाथ से तुम्हें छुड़ा लाये, बस यही तो मुख्तसर हाल है।

इन्दु०। (आश्चर्य से) तुममें इतनी ताकत कहां से आ गई कि उन लोगों से लड़ कर मुझे छुड़ा लाईं?

विमला०। (मुस्कुराती हुई) हां इस समय मुझमें इतनी ताकत है। मेरे पास दो ऐयार हैं तथा बीस पचीस सिपाही भी रखती हूँ।

इन्दु०। तो ये सब तुम्हारे बाप या ससुर के नौकर होंगे? जरूरत पड़ने पर तुम्हें उनसे इजाजत लेनी पड़ती होगी?

विमला०। (एक लम्बी सांस लेकर) नहीं बहिन! ऐसा नहीं है। हम दोनों अपने घर और ससुराल से मञ्जिलों दूर पड़े हुए हैं। हम लोगों की किसी को कुछ खबर ही नहीं बल्कि यों कहना कुछ अनुचित न होगा कि अपने नाते-दारों के खयाल से हम दोनों बहिनें मर चुकी हैं और किसी को खोजने या पता लगाने की भी जरूरत नहीं।

इन्दु०। (आश्चर्य से) तुम्हारी बातें तो बड़ी ही विचित्र हो रही हैं! अच्छा तो तुम यहां किसके भरोसे पर बैठी हो और तुम्हारा मददगार कौन है?

विमला०। यह बहुत ही गुप्त बात है, तुम भी किसी से इसका जिक्र न करना। मैं यहां इन्द्रदेव के भरोसे पर हूँ। वही मेरे मददगार हैं, यह उन्हीं का स्थान है। वही मेरे बाप हैं, वही मेरे ससुर हैं, और इस समय वही मेरे पूज्य इष्टदेव हैं।

इन्दु० । कौन इन्द्रदेव ?

बिमला० । वही तिलिस्मी इन्द्रदेव ! मेरे ससुर के सच्चे मित्र !!

इन्दु० । ( सिर हिला कर ) आश्चर्य ! आश्चर्य !! और तुम्हारे ससुर को इस बात की खबर नहीं है ?

बिमला० । हां बिल्कुल नहीं है ।

इन्दु० । यह कैसी बात है ?

बिमला० । ऐसी ही बात है । मैं कह जो चुकी कि उन लोगों के खयाल से हम दोनों इस दुनिया में नहीं हैं ।

इन्दु० । आखिर उन्हें इस बात का विश्वास कैसे हुआ कि जमना और सरस्वती मर गईं ?

बिमला० । सो मैं नहीं जानती क्योंकि यह कार्रवाई इन्द्रदेवजी की है । मैं सर्यू मासी ( इन्द्रदेव की स्त्री ) के यहां न्योते में आई हुई थी उसी जगह उन्होंने ( इन्द्रदेव ने ) मुझे गुप्त भाव से बताया कि भूतनाथ ने मेरे पति के साथ कैसा सलूक किया । मालूम होते ही मेरे तनोबदन में आग सी लग गई और मैंने उसी समय उनके सामने प्रतिज्ञा की कि भूतनाथ से इसका बदला जरूर लूँगी । ( एक लम्बी सांस ले कर ) गुस्से में प्रतिज्ञा तो कर गई मगर जब बिचारा तो कहां मैं और कहां भूतनाथ ! पहाड़ और राई का मुकाबला कैसा ? ऐसा खयाल आते ही मैं इन्द्रदेव के पैरों पर गिर पड़ी और बोली कि मेरी इस प्रतिज्ञा की लाज आपको है बिना आपकी मदद के मेरी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो सकती और वैसी अवस्था में मुझे आपके सामने ही प्राण त्याग देना पड़ेगा इत्यादि ।

इन्द्रदेवजी को भी इस अनुचित घटना का बड़ा दुःख था परन्तु मेरी उस अवस्था ने उन्हें और भी दुःखित कर दिया तथा मेरी प्रार्थना पर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया बल्कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी करना उन्होंने आवश्यक और धर्म समझ लिया ? बस फिर क्या था ? मेरे मन की भई । जैसा कि मैं चाहती थी उससे बढ़ कर उन्होंने मुझे मदद दी और सच तो यह है कि उनसे बढ़ कर इस दुनिया में मुझे कोई मदद दे ही नहीं सकता । खैर मैं खुलासा हाल फिर कभी सुनाऊँगी, मुख्तसर यह कि उन्होंने हर प्रकार की मदद करने का बन्दोबस्त कर

के हम दोनों को समझाया कि अब किस तरह की जिन्दगी हम दोनों को अख्तियार करनी चाहिये।

सब से पहिले इन्द्रदेवजी ने यही बताया कि प्रगट में तुम दोनों बहिनों को दुनिया से उठ जाना चाहिये अर्थात् तुम्हारे रिश्तेदारों के साथ ही साथ और सभों को भी यह मालूम हो जाना चाहिये कि जमना और सरस्वती मर गईं। यह बात मुझे भी पसन्द आई। आखिर इन्द्रदेवजी ने हम दोनों के सूरत बदल कर रहने और अपना काम करने का बन्दोबस्त करके न मालूम हमारे रिश्तेदारों को कैसे क्या समझा दिया और क्योंकर विश्वास दिला दिया कि सब कोई हमारी तरफ से निश्चिन्त हो गए। उनकी इच्छानुसार बहुत ही गुप्त भाव से हम दोनों यहाँ कला और विमला के नाम से रहती हैं। जो लोग हमारे साथ हैं वे सब इन्द्रदेवजी के आदमी हैं मगर उनको भी यह नहीं मालूम है कि हम दोनो वास्तव में जमना और सरस्वती हैं।

इन्दु०। (आश्चर्य से) क्या तुम्हारे घर में जितनेआदमी हैं उनमें से किसी को भी तुम्हारा सच्चा हाल मालूम नहीं है?

विमला०। किसी को भी नहीं।

इन्दु०। तो फिर मेरे बारे में तुमने लोगों को क्या समझाया है?

विमला०। मैंने यह किसी को भी नहीं कहा कि तुम मेरी रिश्तेदार हो, केवल यही कहा है कि तुम्हें भूतनाथ तथा शिवदत्त के हाथ से बचाना हमारा धर्म है। अस्तु अब उचित यही है कि हमारी तरह तुम भी अपनी सूरत बदल कर यहाँ रहो और अपने दुश्मनों से बदला लो, हमलोगों का बाकी हालचाल तुम्हें आप ही धीरे धीरे मालूम हो जायगा।

इन्दु०। ठीक है, जैसा तुम कहती हो मैं वैसा ही करूँगी, मगर (सिर झुका कर) मेरे पति का मुझसे.....

विमला०। (बात काट कर) नहीं नहीं, उनके बारे में तुम कुछ भी चिन्ता मत करो, आज मैं उनको तुम्हें जरूर दिखा दूँगी और फिर ऐसा बन्दोबस्त करूँगी कि तुम दोनों एक साथ.....

इन्दु०। (प्रसन्न होकर) इससे बढ़ कर मेरे लिये और कोई दूसरी बात नहीं हो सकती, मगर यह तो बताओ कि इस समय वे कहाँ हैं?

विमला० । ( मुस्कुराती हुई ) इस समय वे मेरे ही घर में हैं और मेरे कब्जे में हैं ।

इन्दु० । ( घबड़ा कर ) यह कैसी बात ? अगर यहाँ हैं तो मुझे दिखाओ ।

विमला० । मैं दिखाऊँगी, मगर जरा रुकावट के साथ ।

इन्दु० । सो क्यों ?

विमला० । ( कुछ सोच कर ) अच्छा चलो पहिले मैं तुम्हें उनके दर्शन करा दूँ फिर सलाह विचार करके जैसा होगा देखा जायगा मगर इस सूरत में मैं तुम्हें उनके सामने न ले जाऊँगी ।

इन्दु० । तो ?

विमला० । तुम अपनी सूरत बदलो और इस बात का वादा करो कि जब मैं उनके सामने तुम्हें ले जाऊँ तो चुपचाप देख लेने के सिवाय एक शब्द भी मुँह से न निकालोगी ।

इन्दु० । आखिर इसका सबब क्या है ?

विमला० । सबब पीछे बताऊँगी ।

इन्दु० । अच्छा तो फिर जो कुछ तुम कहती हो मुझे मंजूर है ।

"अच्छा तो मैं भी बन्दोबस्त करती हूँ ।" यह कह कर बिमला उठी और कुछ देर के लिये कमरे के बाहर चली गई । जब लौटी तो उसके हाथ में एक छोटी सी सन्दूकड़ी थी । उसी में से सामान निकाल कर उसने इन्दुमति की सूरत बदली और वैसी ही एक झिल्ली उसके चेहरे पर भी चढ़ाई जैसी आप पहिरे हुए थी । जब हर तरह से सूरत दुरुस्त हो गई तब हाथ का सहारा देकर उसने इन्दु को उठाया और कमरे के बाहर ले गई ।

कमरे के बाहर एक दालान था जिसके एक बगल में तो ऊपर की मंजिल में चढ़ जाने के लिए सीढ़ियाँ थीं तथा उसीके बगल में नीचे उतर जाने का रास्ता था और दालान के दूसरी तरफ बगल में एक सुरंग का मुहना था मगर उसमें मजबूत दर्वाजा लगा हुआ था । इन्दु को उसी सुरंग में बिमला के साथ जाना पड़ा ।

सुरंग बहुत छोटी थी, तीस पैंतीस कदम जाने के बाद उसका दूसरा मुहाना मिल गया जहाँ से सुबह की सुफेदी निकल आने के कारण मैदान की सूरत दि-

खाई दे रही थी। जब इन्दुमति वहाँ हद्द पर पहुँची तब उसकी आँखों के सामने वही सुन्दर घाटी या मैदान तथा बंगला या जिसका हाल हम इसके चौथे बयान में लिख आये हैं, या यों कहिये कि जहाँ पर एक पेड़ के साथ लटकते हुए हिंडोले पर प्रभाकरसिंह ने तारा को बैठे देखा था।

वही त्रिकोण घाटी और वही सुन्दर बँगला जिसके चारो कोनों पर मौलसिरी ( मालश्री ) के पेड़ थे इन्दुमति की आँखों के सामने था जिन्हें वह बड़े गौर से देख रही थी, बल्कि यों कहना चाहिये कि वहां की सुन्दरता और कुदरती गुलबूटो ने इन्दु को निगाह पड़ने के साथ ही लुभा लिया और इसके साथ प्रभाकरसिंह की याद ने आंसू बनकर निगाह के आगे पर्दा डाल दिया।

आंखें साफ करके वह हर एक चीज को गौर से देखने लगी। इसी बीच एक चट्टान पर बैठे हुए प्रभाकरसिंह पर उसकी निगाह पड़ी जिनके चारो तरफ कुदरती सुन्दर पौधे और खुशरंग फूलों के पेड़ बहुतायत से थे जो उदास आदमी के दिल को भी अपनी तरफ खींच लेते थे और जिन पर सूर्य भगवान की ताजी ताजी किरणें पड़ रही थीं।

अहा ! प्रभाकरसिंह को देख कर इन्दुमति की कैसी अवस्था हो गई यह लिखना हमारी सामर्थ्य के बाहर है। वह कुछ देर तक एक टक उनकी तरफ देखती रही। न तो वहा से नीचे को तरफ उतरने का कोई रास्ता था और न वह यही जानती थी कि वहां तक क्योंकर पहुँच सकेगी, अस्तु वह बेचैन होकर घूमी और यह कहती हुई बिमला के गले से लिपट गई कि बहिन ! तुम तो बेशक तिलिस्म की रानी हो गई हो !!

विमला०। बहिन ! घबड़ाओ मत, जरा गौर से देखो तो...

इन्दु०। (बिमला को छोड़ कर) तो क्या जो कुछ मैं देख रही हूँ केवल भ्रम है।

विमला०। नहीं ऐसा नहीं है।

इन्दु०। तो फिर यह स्थान किसका है ?

विमला०। इस समय तो मेरा ही है।

इन्दु०। तो क्या ये भी तुम्हारे ही मेहमान हैं ?

विमला०। बेशक।

इन्दु०। कब से ?

विमला० । कई दिनों से, या यों कहो कि जब से तुम आई हो उससे भी पहिले.....

इन्दु० । ( आश्चर्य दुःख और रोब से ) तब तुमने इनसे मुझे मिलाया क्यों नहीं बल्कि हाल तक नहीं कहा ऐसा क्यों ?

विमला० । इसके कहने का मौका ही कब मिला ! आज ही तो तुम इस योग्य हुई हो कि कुछ बातें कर सकूँ । इसके अतिरिक्त तुम्हारी मुलाकात के बाधक वे स्वयं भी हो रहे हैं । जिस तरह तुम मेरा साथ दिया चाहती हो उस तरह वे मेरा साथ नहीं दिया चाहते, जिस तरह तुमसे मुझे उम्मीद है उस तरह उनसे नहीं, जिस तरह तुम मेरा पक्ष कर सकोगी करती हो और करोगी उस तरह वे नहीं करते बल्कि आश्चर्य यह है कि वे भूतनाथ के पक्षपाती हैं और इसी बात का उन्हें हठ है । फिर तुम ही सोचो कि मैं क्योंकर.....

इन्दु० । ( जोर देकर ) नहीं बहिन ! ऐसी भला क्या बात है उन्हें सच्चे मामले की खबर हो न होगी !

विमला० । सब कुछ खबर है ! इसी वास्ते मैं उन्हें लाई थी और भूतनाथ के कब्जे से पहले ही दिन जब तुम लोग सुरंग में घुसे थे छुड़ाने का उद्योग किया था परन्तु खेद है कि वे ( प्रभाकरसिंह ) तो मेरे कब्जे में आ गये और तुम आगे निकल गईं जिससे तुम्हें इतना कष्ट भी भोगना पड़ा ।

इन्दु० । (आश्चर्य से) सो कैसी बात ? क्या तुम्हीं ने उन्हें मुझसे जुदा किया था ?

विमला० । हां ऐसा ही है । ( हाथ का इशारा कर के ) बस इस घाटी के बगल ही में उस तरफ भूतनाथ का स्थान है, रास्ता भी करीब करीब मिलता जुलता है । भूतनाथ को घाटी में आने के लिये जो रास्ता या सुरंग है उसी में से एक रास्ता हमारे यहां भी आने के लिये है, इसके अतिरिक्त यहां आने के लिये एक रास्ता और भी है जिससे प्रायः हम लोग आया जाया करते हैं । जिस समय तुम लोग भूतनाथ के साथ सुरंग में घुसे थे उस समय मैं देख रही थी ।

इन्दु० । फिर तुमने कैसे उन्हें बुला लिया ?

इसके जवाब में विमला ने खुलासा हाल जिस तरह उन्हें सुरंग के अन्दर धोखा देकर अपने कब्जे में ले आई थी बयान किया जो कि हम चौथे बयान में लिख चुके हैं ।

अब हमारे पाठक समझ गये होंगे कि भूतनाथ के पीछे पीछे सुरंग के अन्दर चलने वाले प्रभाकरसिंह को जिन्होंने धोखा देकर गायब किया वे बिमला और कला ये ही दोनों बहिनें थीं और यह काम उन्होंने नेकनीयती के साथ किया था ऐसा ही इन्दुमति का विश्वास है।

खुलासा हाल सुन कर इन्दुमति कुछ देर तक चुप रही फिर बोली :—

इन्दु०। अच्छा यह तो बताओ कि मेरे आने की भी उन्हे खबर की है या नहीं।

विमला०। कुछ कुछ खबर है। तुम्हारे लिये वे बहुत ही बेचैन हैं, कलपते हैं, रोते हैं, मगर फिर भी भूतनाथ का पक्ष नहीं छोड़ते!

इन्दु०। तुमने अपने को उन पर प्रगट कर दिया?

विमला०। हाँ भेद छिपा रखने की कसम खिला कर मैंने उन्हें बता दिया कि हम दोनों बहिनें जमना और सरस्वती हैं जिसे जान कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए मगर इस बात पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि भूतनाथ मेरे पति का घातक है। गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और गुलाबसिंह पर उन्हें पूरा विश्वास है।

इन्दु०। अच्छा तुम मुझे उनके सामने ले चलो देखें वे क्यों कर राजी नहीं होते और कैसे तुम्हारा साथ नहीं देते।

विमला०। मुझे इसमें कोई उज्र नहीं है मगर तुम हर एक बात को अच्छी तरह सोच बिचार लो।

इन्दु०। (जोर देकर) कोई परवाह नहीं, तुम वहाँ चलो, (कुछ सोच के) मगर मैं अपनी सूरत में उनके सामने जाऊँगी।

विमला०। जैसी तुम्हारी मर्जी, चलो पीछे की तरफ लौटो, एक सुरङ्ग के रास्ते पहिले (उँगली का इशारा करके) उस बीच वाले बँगले में पहुँचना होगा तब उनके पास जा सकोगी।

## सातवां बयान

प्रभाकरसिंह को इस घाटी में आये यद्यपि आज लगभग एक सप्ताह के हो गया मगर दिली तकलीफ के सिवाय और किसी बात की उन्हें तकलीफ नहीं हुई। नहाने धोने खाने पीने सोने पहिरने इत्यादि सभी तरह का आराम था परन्तु इन्दु के लिये वे बहुत ही बेचैन और दुःखी हो रहे थे जिस समय वे इस

घाटी में आये थे उस समय बल्कि उसके दो तीन घण्टे बाद तक वे बड़े ही फेर और तरद्दुद में पड़े रहे क्योंकि कला और विमला ने उनके साथ बड़ी दिल्लगी की थी, मगर इसके बाद उनकी घबराहट कम हो गई जब कला और विमला ने उन्हें बता दिया कि वे दोनों वास्तव में जमना सरस्वती हैं।

पेड़ के साथ लटकते हुए हिण्डोले पर बैठने वाली औरत ने उन्हें थोड़ी देर के लिये बड़े ही धोखे में डाला। जब उन्होंने पेड़ पर चढ़ने का इरादा किया तो वहाँ पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने गड़बड़ मचा दिया। वे दौड़ते हुये चले गये और कई आदमिकों को बुला लाये जिन्होंने प्रभाकरसिंह को घेर लिया मगर किसी तरह की तकलीफ नहीं दी और न कोई कड़ी बात ही कही।

दोनों नोजवान लड़कों के हल्ला मचाने पर जितने आदमी वहाँ इकट्ठे हो गये थे वे सब कद में छोटे बल्कि उन्हीं दोनों नौजवान सिपाहियों के बराबर थे जिन्हें देख प्रभाकरसिंह ताज्जुब करने लगे और विचारने लगे कि क्या ये लोग वास्तव में मर्द हैं?

पहिले तो क्रोध के मारे प्रभाकरसिंह की आँखें लाल हो गईं मगर जब कुछ सोचने विचारने पर उन्हें मालूम हो गया कि ये सब मर्द नहीं औरतें हैं तब उनका गुस्सा कुछ शान्त हुआ और उन सभों की इच्छानुसार वे उस बँगले के अन्दर चले गये जिसमें छोटे बड़े सब मिला कर ग्यारह कमरे थे।

बीच वाले बड़ेकमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा हुआ था। वहां पहुँचने के साथ ही विमला पर इनकी निगाह पड़ी और ये पहिचान गये कि मुझे भुलावा देकर यहाँ लाने वालियों में से यह भी एक औरत है जो बड़ी ढिठाई के साथ इस अनूठे ढङ्ग पर हुक्मकबाल कर रही है।

प्रभाकरसिंह ने विमला से कहा, "मालूम होता है कि यह मकान आप ही का है।"

विमला०। जी हाँ! समझ लीजिये कि आप ही का है!

प्रभाकर०। अच्छा तो मैं पूछता हूँ कि तुमने मेरे साथ ऐसा खोटा बर्ताव क्यों किया?

विमला०। मैंने आपके साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया बल्कि सच तो यों है कि आपको एक भयानक खोटे बेईमान और झूठे ऐयार के पञ्जे से बचाने का

उद्योग किया जो कि सिवाय बुराई के कभी कोई भलाई का काम आपके साथ नहीं कर सकता था। अफसोस ! आपको तो हम लोग उसके फन्दे से निकाल लाये मगर बेचारी इन्दु फँसी रह गई जिसे बचाने के लिए हम लोग तन, मन, धन सभी अर्पण कर देंगे।

प्रभा०। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन्दु के लिए मुझे बहुत बड़ी चिन्ता है और मैं यह नहीं चाहता कि वह किसी अवस्था में भी मुझसे अलग हो, मगर मैं इस बात का कभी विश्वास नहीं कर सकता कि भूतनाथ हम लोगों के साथ खोटा बर्ताव करेगा। मैं गुलाबसिंह की बात पर दृढ़ विश्वास रखता हूँ जिसने उसकी बड़ी तारीफ मुझसे की थी।

विमला०। नहीं ऐसा नहीं है, वह.....

प्रभा०। ( बात काट कर ) तुम्हारी बात मान लेना सहज नहीं है जिसने खुद मेरे साथ बुराई की ! ( क्रोध की मुद्रा से ) बेशक तुमने मेरे साथ दुश्मनी की कि इन्दु को मुझसे जुदा कर के एक आफत में डाल दिया ! क्या जाने इस समय उस पर क्या बीत रही होगी !! हाँ, कहाँ है वह जिसे मैं अपनी साली समझता था और जिसकी बात मान कर मैंने यह कष्ट उठाया ! क्या अब वह अपना मुँह न दिखलावेगी ?

विमला०। आप क्रोध न करें, आप की साली जरूर आप के सामने आवेगी और उसके साथ ही साथ मैं भी इस बात को साबित कर दूँगी कि हम लोग आप के साथ दुश्मनी नहीं करते। इन्दु हमारी बहुत ही प्यारी बहन है और उसे हम लोग हद्द से ज्यादे प्यार करते हैं, जिस तरह.....

प्रभा०। ( सिर हिला कर ) नहीं नहीं नहीं, अगर तुम इन्दु को प्यार करती होतीं तो उसे इस तरह मुझसे अलग करके संकट में न डालतीं। कुछ देर के लिए अगर यह भी मान लिया जाय कि भूतनाथ हमारा दुश्मन है, गुलाबसिंह ने हमसे जो कुछ कहा वह झूठ था, और तुमने वास्तव में हमें एक दुश्मन के हाथ से बचाना चाहा, मगर फिर भी यह कहना पड़ेगा कि वहां से बचा लाने के लिए वह ढंग अच्छा न था जो तुमने किया। अच्छा होता यदि तुम मुझे यहाँ ले आने के बदले में उस जगह केवल इतना ही कह देतीं कि देखो खबरदार हो जाओ, भूतनाथ का विश्वास मत करो इन्दु को लेकर निकल भागो और

फलानी राह से मेरे पास चलेआओ। बस अगर तुम ऐसा करतीं तो मैं तुम्हारी इज्जत करता।

विमला०। ठीक है मगर मुझे विश्वास नहीं था कि आप यकायक मेरी बात मान जायंगे।

"यह सब तुम्हारी बनावटी बातें हैं।" कहते हुए प्रभाकरसिंह एक उचित स्थान पर बैठ गये और विमला भी उनके सामने बैठ गई।

प्रभा०। ( कई सायत तक कुछ सोचने के बाद ) खैर पहिले यह बताओ कि जमना कहाँ है जिसके कारण मैं यहाँ तक आया ?

विमला०। वे भी इसी जगह कहीं हैं डर के मारे आपके सामने नहीं आतीं। उन्होंने मुझे यह कह कर आपके पास भेजा है कि जीजाजी से मेरा प्रणाम कहो और यह कहो कि मैं यहाँ बड़े सङ्कट में पड़ी हुई ग्रहदशा के दिन काट रही हूँ। किसी कारणवश हर वक्त अपनी सूरत बदले रहती हूँ। दुश्मन पड़ोस में है जिसका हरदम डर लगा ही रहता है, अस्तु यदि आप मेरी रक्षा करने और मेरा भेद छिपाये रहने की प्रतिज्ञा करें तो मैं आपके सामने आऊँ नहीं तो.....

प्रभा०। ( आश्चर्य से ) वाह वाह वाह !! ( कुछ देर तक सोच कर ) खैर जो कुछ हो, जमना को मैं इज्जत के साथ प्यार करता हूँ, वह मेरी बहुत ही नेक साली है। यद्यपि उसका यहाँ होना मेरे लिए ताज्जुब की बात है तथापि उसे देख कर मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा। यदि यह उसी का मकान है तो मैं विशेष चिन्ता भी न करूँगा। तुम शीघ्र जाकर उसे कह दो कि मेरे सबब से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती, तुम्हारे भेद तुम्हारी इच्छानुसार मैं जरूर छिपाऊँगा।

प्रभाकरसिंह की बात समाप्त होते ही प्रसन्नता के साथ विमला ने अपने चेहरे पर से झिल्ली उतार कर अलग रख दी और प्रभाकरसिंह के पैरों पर गिर पड़ी।

प्रभा०। ( विमला को पैरों से उठा कर ) जमना ? अहा ! क्या तू वास्तव में जमना है ?

विमला०। जी हाँ, मैं वास्तव में जमना हूँ, इसमें आप कुछ भी सन्देह न करें। ज्यादे देर तक तरद्दुद में न डाल कर मैं अभी अभी आपका भ्रम दूर कर देती हूँ। अपने जमना होने के सबूत में मैं आप को उस दिन की चिकोटी याद दिलाती हूँ जिस दिन मेरे यहाँ सत्यनारायण की कथा थी और जिसका हाल सिवाय

आपके और किसी को मालूम नहीं है।

प्रभा०। (प्रसन्न होकर) बेशक बेशक, अब मुझे कुछ भी सन्देह नहीं रहा, परंतु आश्चर्य! आश्चर्य!! तुम्हारे ससुर ने हाल ही मैं अपने हाथ से मुझे चीठी लिखी थी कि जमना और सरस्वती दोनों मर गई हैं। मैंने यह हाल अभी तक म्हारी बहिन इन्दु से नहीं कहा क्योंकि इस संकट के जमाने में इस खबर को ुना कर उसे और भी दुःख देना मैंने उचित नहीं जाना। मगर अब मुझे हना पड़ा कि तुम्हारे ससुर ने मुझे झूठ लिखा, न मालूम क्यों?

विमला०। नहीं नहीं, उन्होंने झूठ नहीं लिखा, उन्हें यही मालूम है कि जमना सरस्वती दोनों मर गईं, मगर वास्तव में हम दोनों जीती हैं।

प्रभा०। यह तो तुम और भी आश्चर्य की बात सुनाती हो!!

विमला०। आपके लिए बेशक आश्चर्य की बात है। इसीसे तो मैंने आपसे प्रतिज्ञा करा ली कि मेरे भेद आप छिपाये रहें, जिनमें से एक यह भी बात है कि हमारा जीते रहना किसी को मालूम न होने पावे।

इतना कह कर विमला ने ताली बजाई। उसी समय तेजी के साथ सरस्वती (कला) एक दर्वाजा खोल कर कमरे के अन्दर आई और प्रभाकरसिंह के पैरों पर गिर पड़ी। प्रभाकरसिंह ने प्रेम से उसे उठाया और कहा, "आह! मैं इस समय तुम दोनों को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ क्योंकि सुरङ्ग में तुम दोनों को देखना विश्वास के योग्य न था। अब यह मालूम होना चाहिये कि तुम लोग यहाँ क्यों, किसके भरोसे पर, और किस नीयत से रहती हो, तथा बाहर मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ पर मैंने किसे देखा था? नहीं नहीं, वह इस सरस्वती के सिवाय कोई और न था, मैं पहिचान गया, इसकी सूरत इन्दु से विशेष मिलती है!"

विमला०। बेशक वह सरस्वती ही थी, क्षण भर के लिए इसने आपके साथ दिल्लगी की थी।

कला०। (मुस्कुराती हुई) मगर जो कुछ मैं किया चाहती थी वह न कर सकी।

प्रभा०। वह क्या?

कला०। बस अब उसका कहना ठीक नहीं।

प्रभा०। अच्छा यह तो बताओ कि तुम लोग यहाँ छिप कर क्यों रहती हो ?

विमला०। इसीलिए कि कम्बख्त भूतनाथ से बदला लेकर कलेजा कुछ ठंढा करें। आपको मालूम नहीं कि वह मेरे पति का घातक है। उसने अपने हाथ से उन्हें मार कर हम दोनों बहिनों को विधवा बना दिया !!

प्रभाकर०। ( आश्चर्य से ) यह तुम क्या कह रही हो ?

विमला०। बेशक ऐसा ही है, आपने उस कमीने को पहिचाना नहीं ! वह वास्तव में गदाधरसिंह है, सूरत बदले हुए चारो तरफ घूम रहा है। आज कल वह अपनी नौकरी पर अर्थात् मेरे ससुर के यहाँ नहीं रहता।

प्रभाकर०। यह तो मुझे भी मालूम है कि आज कल गदाधरसिंह लापता हो रहा है और किसी को उसका ठीक हाल मालूम नहीं है, मगर यह बात मेरे दिल में नहीं बैठती कि भूतनाथ वास्तव में वही गदाधरसिंह है।

विमला०। मैं जो कहती हूँ कि बेशक ऐसा ही है।

प्रभाकर०। ( सिर हिला कर ) शायद हो ( कुछ सोच कर ) खैर पहिले मैं इन्दु को उसके यहाँ से हटाऊँगा और तब साफ साफ उससे पूछूँगा कि बताओ तुम गदाधरसिंह हो या नहीं ? मगर फिर भी इसका सबूत मिलना कठिन होगा कि दयारामजी को उसी ने मारा है।

विमला०। नहीं नहीं, आप ऐसा कदापि न करें, नहीं तो हमारा सब उद्योग मिट्टी में मिल जायगा !

प्रभाकर०। नहीं मैं जरूर पूछूँगा और यदि तुम्हारा कहना ठीक निकला तो मैं स्वयम् उससे लड़ूँगा।

विमला०। ( उदासी से ) ओह ! तब तो आप और भी अन्धेर करेंगे !!

प्रभाकर०। नहीं, इस विषय में मैं तुमसे राय न लूँगा।

विमला०। तब आप अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग करेंगे।

प्रभाकर०। ऐसा भी न होने पावेगा ( कुछ सोच कर ) खैर यह तो पीछे देखा जायगा पहिले इन्दु की फिक्र करनी चाहिये यद्यपि गुलाबसिंह उसके साथ हैं और अभी यकायक उसे किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती।

विमला०। मैं उसके लिए बन्दोबस्त कर चुकी हूँ आप बेफिक्र रहें।

प्रभाकर०। भला मैं बेफिक्र क्यों कर रह सकता हूँ ? मुझे यहाँ से जाने दो,

भूतनाथ के घर जाकर सहज ही में यदि तुम चाहती हो तो उसे यहाँ तुम्हारे पास ले आऊँगा।

विमला०। जी नहीं, ऐसा करने से मेरा भेद खुल जायगा। वह बड़ा ही काइयाँ है, बात ही बात में आप से पता लगा लेगा कि उसकी घाटी के साथ एक और स्थान है जहाँ कोई रहता है अभी उसे यह मालूम नहीं।

प्रभाकर०। नहीं नहीं, मैं किसी तरह तुम्हारा भेद खुलने न दूँगा।

विमला०। अस्तु इस समय तो आप रहने दीजिये, पहिले जरूरी कामों से निपटिये, स्नान ध्यान पूजा कीजिए, भोजन इत्यादि से छुट्टी पाइये, फिर जैसी राय होगी देखा जायगा। मैं कुछ इन्दु बहिन की दुश्मन तो हूँ नहीं जो उसे तकलीफ होने दूँगी बल्कि आपसे ज्यादे मुझे खुटखुटी लगी हुई है। अगर वह यहाँ न आई तो मैंने किया ही क्या।

प्रभाकर०। खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, थोड़ी देर के लिए ज्यादे जोर देने की भी अभी जरूरत नहीं है।

विमला०। अच्छा तो अब आप कुछ देर के लिये हम दोनों को छुट्टी दीजिये, मैं आपके लिए खाने पीने का इन्तजाम करूँ, तब तक आप इस (उँगली का इशारा करके) कोठड़ी में जाइये और फिर बंगले के बाहर जाकर मैदान और कुदरती बाग में जहाँ चाहिए घूमिए फिरिए, मैं बहुत जल्द हाजिर होऊँगी। मगर आप इस बात का खूब खयाल रखियेगा कि अब हम दोनों को जमना और सरस्वती के नाम से सम्बोधन न कीजियेगा और न हम दोनों घड़ी घड़ी जमना और सरस्वती की सूरत में आपको दिखाई देंगी, हम दोनों का नाम विमला और कला बस यही ठीक है।

इसके बाद और भी कुछ समझा बुझा कर कला को साथ लिये हुए विमला कमरे के बाहर चली गई।

प्रभाकरसिंह भी उठ खड़े हुए और कुछ सोचते हुए उस कमरे में टहलने लगे। वे सोचने लगे—"क्या जमना का कहना सच है? क्या भूतनाथ वास्तव में गदाधरसिंह ही है? फिर मैंने उसे पहिचाना क्यों नहीं? सम्भव है कि रात का समय होने के कारण मुझे धोखा हुआ हो या उसी ने कुछ सूरत बदली हुई हो! मेरा ध्यान भी तो इस तरफ नहीं था कि गौर से उसे देखता

और पहिचानने की कोशिश करता, लेकिन अगर वह वास्तव में गदाधरसिंह है तो निःसन्देह खोटा है और कोई भारी पातक करने के लिये उसने यह ढंग पकड़ा है। ऐयार भी तो प्रथम श्रेणी का है वह जो न कर सके थोड़ा है, मगर ऐसा तो नहीं हो सकता कि उसने दयाराम को मारा हो। अच्छा उसने रणधीरसिंह जी का घर क्यों छोड़ दिया जिनका ऐयार था और जो बड़ी खातिर से उसे रखते थे? सम्भव है कि दयाराम के मारे जाने पर उसने उदास हो कर अपना काम छोड़ दिया हो, या यह भी हो सकता है कि दयाराम के दुश्मन और खूनी का पता लगाने ही के लिए उसने अपना रहन सहन और रंग ढंग बदल दिया हो अगर ऐसा है तो रणधीरसिंह इस बात को जानते होंगे। गुलाबसिंह ने वह भेद मुझ पर क्यों नहीं खोला? हो सकता है कि उन्हें यह सब हाल मालूम न हो या वे धोखे में आ गए हों, बिना विचारे और अच्छी तरह तहकीकात किये किसी पक्ष को मजबूती के साथ पकड़ लेना उचित नहीं है। इसके अलावे यह भी तो मालूम करना चाहिये कि जमना और सरस्वती इस तरह स्वतन्त्र क्यों हो रही हैं और इन्होंने अपने को मुर्दा क्यों मशहूर कर दिया तथा यह अनूठा स्थान इन्हें कैसे मिल गया और यहाँ किसका सहारा पाकर ये दोनों रहती हैं। भूतनाथ से दुश्मनी रखना और बदला लेने का व्रत धारण करना कुछ हँसी खेल नहीं है और इस तरह रहने में रुपए पैसे की भी कम जरूरत नहीं है। आखिर यह है क्या! यह तो हमने पूछा ही नहीं कि यह स्थान किसका है और तुम लोग आजकल किसकी होकर रहती हो। खैर अब पूछ लेंगे। कोई न कोई भारी आदमी इनका साथी जरूर है और उसे भी भूतनाथ से दुश्मनी है। क्या इन दोनों पर व्यभिचार का दोष भी लगाया जा सकता है? कैसे कहें 'हाँ' या 'नहीं' ऐसे खोटे दिल की तो ये दोनों थीं नहीं। अगर ये सती और साध्वी हैं तो इनका मददगार भी कोई इन्हीं का रिश्तेदार जरूर होगा, मगर वह भी कोई साधारण व्यक्ति न होगा जिसका यह अनूठा स्थान है। हाँ यह भी तो है कि यदि ये दोनों व्यभिचारिणी होतीं तो मुझे यहाँ न लातीं और इन्दु को भी लाने की चेष्टा न करतीं...मगर अभी यह भी क्योंकर कह सकते हैं कि इन्दु को यहाँ लाने की चेष्टा कर रही हैं! अच्छा जो होगा देखा जायगा, चलो पहिले मैदान घूम आवें तब फिर उन दोनों के आने पर बातचीत से सब मामले की थाह लेंगे।"

प्रभाकरसिंह दर्वाजा खोल कर उस कोठड़ी में घुस गए जिसकी तरफ विमला ने इसारा किया था। उसके अन्दर नहाने तथा सन्ध्या पूजा करने का पूरा पूरा सामान करीने से रक्खा हुआ था, बल्कि एक छोटी सी आलमारी में कुछ जरूरी कपड़े और भोजन करने के अच्छे अच्छे पदार्थ भी मौजूद थे। प्रभाकरसिंह ने अपनी ढाल तलवार एक खूँटी से लटका दी और तीर कमान भी एक चौकी पर रख कर कपड़े का कुछ बोझ हलका किया और जल से भरा हुआ एक लोटा उठा कर कोठड़ी के बाहर निकले। कई कदम आगे गये होंगे कि कुछ सोच कर लौटे और उसी कोठड़ी में जाकर अपनी तलवार खूँटी पर से उतार लाये और बंगले के बाहर निकले।

दिन पहर भर से ज्यादे चढ़ चुका था और धूप में गर्मी ज्यादे आ चुकी थी मगर उस सुन्दर घाटी में जिसमें पहाड़ी से सटा हुआ एक छोटा सा चश्मा भी बह रहा था जङ्गली गुल बूटे और सुन्दर पेड़ों की बहुतायत होने के कारण हवा बुरी नहीं मालूम होती थी। प्रभाकरसिंह पूरब तरफ मैदान की हद तक चले गए और नहर लाँघ कर पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ गये जहाँ पेड़ों का एक बहुत अच्छा छोटा सा झुरमुट था। जब कुछ देर बाद वहाँ से लौटे तो नहाने धोने और सन्ध्या पूजा के लिए इन्हें वह चश्मा ही प्यारा मालूम हुआ अस्तु वे उसके किनारे एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गये।

घण्टे डेढ़ घण्टे के अन्दर ही प्रभाकरसिंह सब जरूरी कामों से निश्चिन्त हो गये तथा अपने कपड़े भी धोकर सुखा लिए। इसके बाद उस बंगले में पहुँचे और इस आशा में थे कि जमना और सरस्वती यहाँ आ गई होंगी मगर एक लौंडी के सिवाय वहाँ और किसी को भी न देखा जिसकी जुबानी मालूम हुआ कि उनके आने में अभी घण्टे भर की देर है, तब तक आप कुछ जल खा लीजिए जिसका सामान उस नहाने वाली कोठड़ी में मौजूद है।

"अच्छा" कह कर प्रभाकरसिंह ने उस लौंडी को तो बिदा कर दिया तथा आप एक किनारे फर्श पर तकिये का सहारा लेकर लेट गए और कुछ चिन्ता करने लगे।

घण्टा भर क्या कई घण्टे बीत गये पर जमना और सरस्वती न आईं और प्रभाकरसिंह तरह तरह की चिन्ता में डूबे रहे, यहाँ तक कि उन्होंने कुछ जलपान

भी न किया। जब थोड़ा सा दिन बाकी रह गया तब वे घबड़ा कर बंगले के बाहर निकले और मैदान में घूमने लगे। अभी इन्हें घूमते हुए कुछ ज्यादे देर नहीं हुई थी कि एक लौंडी बंगले के अन्दर से निकली और दौड़ती हुई प्रभाकरसिंह के पास आई तथा एक चीठी उनके हाथ में देकर जवाब का इन्तजार किये बिना ही वापस चली गई।

प्रभाकरसिंह ने चीठी खोल कर पढ़ी, यह लिखा हुआ था :—

"श्रीमान् जीजाजी !

मैं एक बड़े ही भारी तरद्दुद में पड़ गई। मुझे मालूम हुआ है कि इन्दु बहिन बुरी आफत में पड़ा चाहती हैं, अस्तु मैं उन्हीं की फिक्र में जाती हूँ। लौट कर आपसे सब समाचार कहूँगी। आशा है कि तब तक आप सब के साथ यहाँ रहेंगे। विमला।"

इस चीठी ने प्रभाकरसिंह को बड़े ही तरद्दुद डाल में दिया और तरह तरह की चिन्ता करते हुए वह उस मैदान में टहलने लगे उन्हें कुछ भी सुध न रही कि किस तरफ जा रहे हैं और किधर जाना चाहिये। उत्तर तरफ का मैदान समाप्त करके वे पहाड़ी के नीचे पहुँचे और कई सायत तक रुके रहने के बाद एक पगडण्डी देख ऊपर की तरफ चढ़ने लगे।

लगभग तीस या चालीस कदम के ऊपर गये होंगे कि एक छोटा सा काट का दर्वाजा नजर आया जिस पर साधारण जञ्जीर चढ़ी हुई थी।

वे इस दर्वाजे को देख कर चौंके और चारो तरफ निगाह दौड़ा कर सोचने लगे, "हैं ! यह दर्वाजा कैसा ? मैं तो बिना इरादा किये ही यकायक यहां आ पहुँचा ! मालूम होता है कि यह कोई सुरंग है ! मगर इसके मुँह पर किसी तरह की हिफाजत क्यों नहीं है ? यह दर्वाजा तो एक लात भी नहीं सह सकता ! शायद इसके अन्दर किसी तरह की रुकावट हो जैसी कि उस सुरंग के अन्दर थी जिसकी राह से मैं यहाँ आया था ? खैर इसके अन्दर चल के देखना चाहिये कि क्या है ! कदाचित इस कैदखाने के बाहर ही निकल जाऊँ। बेशक यह स्थान सुन्दर और सुहावना होने पर भी मेरे लिए कैदखाना ही है। यदि इस राह से मैं बाहर निकल गया तो बड़ा ही अच्छा होगा, मैं उस इन्दु को जरूर बचा लूँगा जिसे इस आफत के जमाने में भी मैंने अपने से से अलग नहीं किया था। अच्छा

जो हो, मैं इस सुरंग के अन्दर जरूर जाऊँगा मगर इस तरह निहत्थे जाना तो उचित नहीं! पहिले बंगले के अन्दर चल कर अपनी पूरी पौशाक पहिरना और अपने हर्बे लगा लेना चाहिये, न मालूम इसके अन्दर चल कर कैसा मौका पड़े! न भी मौका पड़े तो क्या? कदाचित् इस घाटी के बाहर ही हो जाँय, तो अपने हर्बे क्यों छोड़ जायँ?',

इस तरह सोच विचार कर प्रभाकरसिंह वहाँ से लौटे और तेजी के साथ बंगले के अन्दर चले गये। बात की बात में अपनी पूरी पौशाक पहिर कर और हर्बे लगा कर वे बाहर निकले और मैदान तय करके फिर उसी सुरंग के मुहाने पर पहुँचे।

दर्वाजा खोलने में किसी तरह की कठिनाई न थी अतएव वे सहज ही में दर्वाजा खोल उस सुरंग के अन्दर चले गये। सुरंग बहुत चौड़ी और ऊँची न थी, केवल एक आदमी खुले ढंग से उसमें चल सकता था। अगर सामने से कोई दूसरा आदमी आता हुआ मिल जाय तो बड़ी मुश्किल से दोनों एक दूसरे को निकाल कर अपनी अपनी राह ले सकते थे। हां लम्बाई में यह सुरंग बहुत छोटी न थी बल्कि चार साढ़े चार सौ कदम लम्बी थी। सुरंग में पूरा अन्धकार था और साथ ही इसके वह भयानक भी मालूम होती थी मगर प्रभाकरसिंह ने इसकी कोई परवाह न की और हाथ फैलाये आगे की तरफ बढ़े चले गये। जैसे जैसे आगे जाते थे सुरंग तंग होती थी।

जब प्रभाकरसिंह सुरंग खतम कर चुके तो आगे रास्ता बन्द पाया। लकड़ी या लोहे का कोई दर्वाजा नहीं लगा हुआ था जिसे बन्द कहा जाय बल्कि अनगढ़ पत्थरों ही से वह रास्ता बन्द था। प्रभाकरसिंह ने बहुत अच्छी तरह टटोलने और गौर करने पर यही निश्चय किया कि बस आगे जाने का रास्ता नहीं है, मालूम होता है कि सुरंग बनाने वाले ने इसी जगह तक बना कर काम छोड़ दिया है और यह सुरंग अधूरी रह गई है।

इस विचार पर भी प्रभाकरसिंह का दिल न जमा। उन्होंने सोचा जरूर इसमें कोई बात है और यह सुरंग व्यर्थ नहीं बनाई गई होगी। उन्होंने फिर अच्छी तरह आगे की तरफ टटोलना शुरू किया। मालूम होता था कि आगे छोटे बड़े कई अनगढ़ पत्थरों का ढेर लगा हुआ है। इसी बीच दो तीन पत्थर कुछ हिलते

हुए भी मालूम पड़े जिन्हें प्रभाकरसिंह ने बलपूर्वक उखाड़ना चाहा। एक पत्थर तो सहज ही में उखड़ आया और जब उन्होंने उसे उठा कर अलग रक्खा तो छोटे छोटे दो छेद मालूम पड़े जिनमें से उस पार की चीजें दिखाई दे रही थीं और यह भी मालूम होता था कि अभी कुछ कुछ दिन बाकी है। अब उन्हें और भी विश्वास हो गया कि अगर इस तरह और दो तीन पत्थर अपने ठिकाने से हटा दिये जायँ तो जरूर रास्ता निकल आवेगा अस्तु उन्होंने फिर जोर करना शुरू किया।

तीन पत्थर और भी अपने ठिकाने से हटाये गये और अब छोटे छोटे कई सूराख दिखाई देने लगे मगर इस बात का निश्चय नहीं हुआ कि कोई दर्वाजा भी निकल आवेगा।

उन सूराखों से प्रभाकरसिंह ने गौर से दूसरी तरफ देखना शुरू किया। एक बहुत ही सुन्दर घाटी नजर पड़ी और कई आदमी भी इधर उधर चलते फिरते नजर आये।

यह वही घाटी थी जिसमें भूतनाथ रहता था, जहाँ जाते हुए यकायक प्रभाकरसिंह गायब हो गये थे, और जहाँ इस समय गुलाबसिंह और इन्दुमति मौजूद हैं। प्रभाकरसिंह ने उस घाटी को देखा नहीं था इसलिये बड़े गौर से उसकी सुन्दरता को देखने लगे। उन्हें इस बात की क्या खबर थी कि यह भूतनाथ का स्थान है और इस समय इसी में इन्दुमति विराज रही है तथा इस समय उनके देखते ही देखते वह एक भारी आफत में फँसा चाहती है।

प्रभाकरसिंह बराबर उद्योग कर रहे थे कि कदाचित् पत्थरों के हटाने हिलाने से कोई दर्वाजा निकल आवे और साथ ही इसके घड़ी घड़ी उन सूराखों की राह से उस पार की तरफ देख भी लेते थे। इसी बीच में उनकी निगाह यकायक इन्दुमति पर पड़ी जो पहाड़ की ऊँचाई पर से धीरे धीरे नीचे की तरफ उतर रही थी। बस फिर क्या था! उनका हाथ पत्थरों को हटाने के काम से रुक गया और वे बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगे, साथ ही इसके उन्हें इस बात का भी विश्वास हो गया कि यह भूतनाथ का वह स्थान है जहाँ हम इन्दुमति के साथ आने वाले थे।

थोड़ी ही देर में इन्दु नीचे उतर आई और धीरे धीरे उस कुदरती बगीचे

में टहलती हुई उस तरफ बढ़ी जिधर प्रभाकरसिंह थे और अन्त में एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गई जो प्रभाकरसिंह से लगभग पचास साठ कदम की दूरी पर होगी।

अब प्रभाकरसिंह उससे मिलने के लिए बहुत ही बेचैन हुए मगर क्या कर सकते थे लाचार थे, तथापि उन्होंने उसे पुकारना शुरू किया। अभी दो ही आवाज दी थी कि निगाह और भी दो आदमियों पर पड़ी जो इन्दु से थोड़ी ही दूर पर एक मुहाने या सुरंग के अन्दर से निकले थे और इन्दु की तरफ बढ़ रहे थे उन्हें देखते ही इन्दु भी घबड़ा कर उनकी तरफ लपकी और पास पहुँच कर एक आदमी के पैरों गिर पड़ी जो शक्ल सूरत में बिल्कुल ही प्रभाकरसिंह से मिलता था या यों कहिये कि वह सचमुच का एक दूसरा प्रभाकरसिंह था *।

प्रभाकरसिंह के कलेजे में बिजली सी चमक गई, अपनी सी सूरत बने हुए एक ऐयार का वहाँ पहुँचना और इन्दु का उसके पैरों पर गिर पड़ना उनके लिये कैसा दुःखदायी हुआ इसे पाठक स्वयम् विचार सकते हैं। केवल इतना ही नहीं इनके देखते ही देखते नकली प्रभाकरसिंह ने अपने साथी को बिदा कर दिया और इसके बाद वह इन्दुमति को कुछ समझा कर अपने साथ ले भागा।

प्रभाकरसिंह चुटीले साँप की तरह पेंच खाकर रह गये, कर ही क्या सकते थे ? क्योंकि वहाँ तक इनका पहुँचना बिल्कुल ही असम्भव था।

उन्होंने पत्थरों को हटा कर रास्ता निकालने का फिर एक दफे उद्योग किया और जब कुछ नतीजा न निकला तो पेचोताब खाते हुए वहाँ से लौट पड़े। जब सुरंग के बाहर हुए तो देखा कि सूर्यभगवान अस्त हो चुके हैं और अन्धकार चारो तरफ से घिरा आ रहा है, अस्तु तरह तरह की बातें सोचते और विचारते हुए प्रभाकरसिंह बगले की तरफ लौटे और जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि हर एक स्थान में मौके मौके से रोशनी हो रही है।

प्रभाकरसिंह उसी कमरे में पहुँचे जिसमें विमला से मुलाकात हुई थी और फर्श पर तकिये के सहारे बैठ कर चिन्ता करने लगे। वे सोचने लगे :—

"वह कौन आदमी होगा जिसने आज इन्दु को इस तरह धोखे में डाला ? इन्दु की बुद्धि पर भी कैसा पर्दा पड़ गया कि उसने उसे बिल्कुल नहीं पहि-

* देखिये तीसरा बयान, नकली प्रभाकरसिंह का इन्दु को धोखा देना।

चाना ! पर वह पहिचानती ही क्योंकर ? एक तो वह स्वयम् घबड़ाई हुई थी, दूसरे सन्ध्या होने के कारण कुछ अन्धकार सा भी हो रहा था, तीसरे वह ठीक ठीक मेरी ही सूरत का बनकर वहाँ पहुँचा भी था, मुझमें और उसमें कुछ भी फर्क नहीं था, कम्बख्त पौशाक भी इसी ढंग की पहिरे हुए था, न मालूम इसका पता उसे कैसे लगा ! नहीं, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि इस समय भी मेरी पौशाक वैसी ही है जैसी हमेशा रहती है, इससे मालूम होता है कि वह आदमी मेरे लिये कोई नया नहीं हो सकता। अस्तु जो हो मगर इस समय इन्दु मेरे हाथ से निकल गई ! न मालूम अब उस बेचारी पर क्या आफत आवेगी ! हाय ! यह सब खराबी विमला की बदौलत हुई, न वह मुझे बहका के यहाँ लाती और न यह नौबत पहुँचती। हाँ यह भी सम्भव है कि यह कार्रवाई विमला ही ने की हो क्योंकि अभी कई घण्टे बीते हैं कि उसने लिखा था कि इन्दु किसी आफत में फँसा चाहती है, उसकी मदद को जाती हूँ। शायद उसका मतलब इसी आफत से हो? क्या यह भी हो सकता है कि विमला ही ने यह ढंग रचा हो और उसी ने किसी आदमी को मेरी सूरत बना कर इन्दु को निकाल लाने के लिए भेजा हो ? नहीं अगर ऐसा होता तो वह यह न लिखती कि इन्दु बहिन बुरी आफत में पड़ा चाहती हैं। हाँ यह हो सकता है कि इस होने वाली घटना का पहिले ही उसे पता लग गया हो और इसी दुष्ट के कब्जे से इन्दु को छुड़ाने के लिए वह गई हो ? जो हो कौन कह सकता है कि इन्दु किस मुसीबत में गिरफ्तार नहीं हो गई। अफसोस इस बात का है कि मेरी आँखों के सामने यह सब कुछ हो गया और मैं कुछ न कर सका।

इसी तरह की बातें प्रभाकरसिंह को सोचते सोचते कई घण्टे बीत गये मगर इस बीच में कोई शान्ति दिलाने वाला वहाँ न पहुँचा। कई नौजवान लड़के जो बँगले के बाहर पहरे पर दिखाई दिये थे इस समय उनका भी पता न था। दिन भर उन्होंने कुछ भोजन नहीं किया था मगर भोजन करने की उन्हें कोई चिन्ता भी न थी, वे केवल इन्दुमति की अवस्था और अपनी बेचैनी पर विचार कर रहे थे, हां कभी कभी इस बात पर भी उनका ध्यान जाता है कि देखो अभी तक किसी ने भी मेरी सुध न ली और न खाने पीने के लिए ही पूछा !!

चिन्ता करते करते उनकी आंख लग गई और नींद में भी वे इन्दुमति के

विषय में तरह के भयानक स्वप्न देखते रहे। आधी रात जा चुकी थी जब एक लौंडी ने आकर जायगा।

प्रभा०। ( लौंडी से ) क्या है ?

लौंडी०। मैं आपके लिए भोजन की सामग्री लाई हूँ।

प्रभा०। कहां है ?

लौंडी०। ( उँगली का इशारा करके ) उस कमरे में।

प्रभा०। मैं भोजन न करूँगा, जो कुछ लाई हो उठा ले जाओ।

लौंडी०। मैं ही नहीं कला जी भी आई हैं और उसी कमरे में बैठी आपका इन्तजार कर रही हैं।

कला का नाम सुनते ही प्रभाकरसिंह उठ बैठे और उस कमरे में गये जिसकी तरफ लौंडी ने इशारा किया था। यह वही कमरा था जिसको दिन के समय प्रभाकरसिंह देख चुके थे और जिसमें नहाने धोने का सामान तथा जलपान के लिए भी कुछ रक्खा हुआ था।

कमरे के अन्दर पैर रखते ही कला पर उनकी निगाह पड़ी जो कि एक कम्बल पर बैठी हुई थी। प्रभाकरसिंह को देखते ही वह उठ खड़ी हुई और उसने बड़े आग्रह से उन्हें उस कम्बल पर बैठाया जिसके आगे भोजन की सामग्री रक्खी हुई थी। बैठने के साथ ही प्रभाकरसिंह ने कहा :—

प्रभा०। कला, आज तुम लोगों की बदौलत मुझे बड़ा ही दुःख हुआ !

कला०। ( बैठ कर ) सो क्या ?

प्रभा०। ( चिढ़े हुये ढंग से ) मेरी आँखों के सामने से इन्दु हर ली गई और मैं कुछ न कर सका !

कला०। ठीक है, आपने किसी सुरंग से यह हाल देखा होगा।

प्रभा०। सो तुमने कैसे जाना ?

कला०। यहाँ दो सुरंगें ऐसी हैं जिनके अन्दर से भूतनाथ की घाटी बखूबी दिखलाई देती है इनमें से एक के अन्दर के सूराख पत्थर के ढोकों से मामूली ढंग से बन्द किये हुये हैं और दूसरी के सूराख खुले हुये हैं जिनकी राह से हम लोग बराबर भूतनाथ के घर के रंग ढंग देखा करती हैं।

प्रभा०। ठीक है, इत्तफाक से मैं उसी सुरंग के अन्दर पहुँच गया था जिसमें

देखने के सूराख पत्थर के ढोकों से बंद किये हुये थे।

कला०।जी हाँ मगर हमलोगों को आपसे पहिले इस बात की खबर लग चुकी थी।

प्रभा०। तब तुम लोगों ने क्या किया ?

कला०। यही किया कि इन्दु बहिन को उस आफत से छुड़ा लिया।

प्रभा०। ( प्रसन्नता से चौंक कर ) तो इन्दु कहाँ है ?

कला०। एक सुरक्षित और स्वतन्त्र स्थान में है। अब आप भोजन करते जाइये और बातें किए जाइये, नहीं तो मैं कुछ न कहूँगी, क्योंकि आप दिन भर के भूखे हैं बल्कि ताज्जुब नहीं कि दो दिन के भूखे हों। यहाँ जो कुछ खाने पीने का सामान पड़ा हुआ था उसके देखने से मालूम हुआ कि आपने दिन को भी कुछ नहीं खाया था।

मजबूर होकर प्रभाकरसिंह ने भोजन करना आरम्भ किया और साथ ही साथ बातचीत भी करने लगे।

प्रभा०। अच्छा तो मैं इन्दु को देखा चाहता हूँ।

कला०। जी नहीं, अभी देखने का उद्योग न किजिये। कल जैसा होगा देखा जायगा क्योंकि इस समय तबीयत खराब है, वह दुश्मनों के हाथ से चोट खा चुकी है यद्यपि उसने बड़े साहस का काम किया और अपने तीरों से कई दुश्मनों को मार गिराया।

इस खबर ने भी प्रभाकरसिंह को तरद्दुद में डाल दिया। वे इन्दु को देखा चाहते थे और कला समझाती जाती थी कि अभी ऐसा करना अनुचित होगा और वैद्यों की भी यही राय है।

बड़ी मुश्किल से कला ने प्रभाकरसिंह को भोजन कराया और कल पुनः मिलने का वादा करके वहाँ से चली गई।

प्रभाकरसिंह को इस बात का पता न लगा कि वह किस राह से आई थी और किस राह से चली गई।

क्या हम कह सकते हैं कि प्रभाकरसिंह इन्दु की तरफ से बेफिक्र हो गये ? नहीं कदापि नहीं ! उन्हें कुछ ढाढ़स हो जाने पर भी कला की बातों पर पूरा विश्वास न हुआ। उनका दिल इस बात को कबूल नहीं करता था कि यदि कला और विमला दूर से या किसी छिपे ढंग से इन्दु को दिखला देतीं तो कोई हर्ज

होता। बात तो यह है कि कला या विमला का इस तरह गुप्त रीति से आना जाना और रास्ते का पता न देना भी उन्हें बुरा मालूम होता था और उन लोगों पर विश्वास नहीं जमने देता था। हाँ इस समय इतना जरूर हुआ कि उनकी विचारप्रणाली का पक्ष कुछ बदल गया और वे पुरानी चिन्ता के साथ ही साथ किसी और चिन्ता में भी निमग्न होने लगे।

कई घण्टे तक कुछ सोचने विचारने के बाद वे उठ खड़े हुए और दालानों कमरों तथा कोठड़ियों में घूमने फिरने और टोह लगाने के साथ दीवारों आलों और आलमारियों पर भी निगाहें डालने लगे। पिछली रात का समय, इसके सिवाय कोई दूसरा आदमी बङ्गले के अन्दर न होने के कारण सन्नाटा छाया हुआ था, मगर जहाँ तक देखने में आता था कमरों और कोठड़ियों में रोशनी जरूर हो रही थी।

कमरों और कोठड़ियों में छोटी बड़ी कई आलमारियाँ देखने में आईं जिनमें से कइयों में तो ताला लगा हुआ था, कई बिना ताले की थीं और कई में किवाड़ के पल्ले भी न थे।

इन्हीं कोठड़ियों में एक कोठड़ी ऐसी भी थी जिसमें अन्धकार था अर्थात् चिराग नहीं जल रहा था अतएव प्रभाकरसिंह ने चाहा कि इस कोठड़ी को भी अच्छी तरह देख लें। उसके पास वाली कोठड़ी में एक फर्शी शमादान जल रहा था जिसे उन्होंने उठा लिया मगर जब उस कोठड़ी के दर्वाजे के पास पहुँचे तो अन्दर से कुछ खटके की आवाज आई। ये ठुमक गये और उस तरफ ध्यान देकर सुनने लगे! आदमी के पैरों की चाप सी मालूम हुई जिससे गुमान हुआ कि कोई आदमी इसके अन्दर जरूर है, मगर फिर कुछ मालूम न हुआ और प्रभाकरसिंह शमादान लिए हुये उस कोठड़ी के अन्दर चले गये।

और कोठरियों की तरह यह भी साफ और सुथरी थी तथा जमीन पर एक मामूली फर्श बिछा हुआ था। हाँ, छोटी छोटी अलमारियां इसमें बहुत ज्यादे थीं जिनमें से एक खुली हुई थी और उसका ताला ताली समेत उसकी कुण्डी के साथ अड़ा हुआ था। वह सिर्फ एक ही ताली न थी बल्कि तालियों का एक गुच्छा ही था।

ये शमादान लिये हुये उस आलमारी के पास चले गये और उसका पल्ला

अच्छी तरह खोल दिया। इसमें तीन लौ बने हुये थे जिसमें से एक में हाथ की लिखी हुई कई किताबें थीं, दूसरे में कागज पत्र के छोटे बड़े कई मुट्ठे थे और तीसरे में लोहे की कई बड़ी बड़ी तालियाँ थीं और सब के साथ एक एक पुर्जा बँधा हुआ था। उन्होंने एक ताली उठाई और उसके साथ का पुर्जा खोल कर पढ़ा और फिर ज्यों का त्यों उसी तरह ठीक करके रख दिया, इसके बाद दूसरी ताली का पुर्जा पढ़ा और उसी तरह रख देने के बाद फिर क्रमशः सभी तालियों के साथ वाले पुर्जे पढ़ डाले और अन्त में एक ताली पुर्जे सहित उठा कर अपने जेब में रख ली।

तालियों की जांच करने के बाद उन कागजों के मुट्ठों पर हाथ डाला और घण्टे भर तक अच्छी तरह देखने जांचने के बाद उनमें से भी तीन मुट्ठे लेकर अपने पास रख लिए और फिर किताबों की जांच शुरू की। इसमें उनका समय बहुत ज्यादे लगा मगर इनमें से कोई किताब उन्होंने ली नहीं।

उस आलमारी की तरफ से निश्चिन्त होने के बाद फिर उन्होंने किसी और आलमारी को जांचने या खोलने का इरादा नहीं किया। वे वहां से लौटे और शमादान जहां से उठाया था वहां रख कर अपने उसी कमरे में चले आये जहां आराम कर चुके थे। वहां भी वे ज्यादे देर तक नहीं ठहरे सिर्फ अपने कपड़ों और हर्बों की दुरुस्ती करके बँगले के बाहर निकले। आसमान की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि रात बहुत कम बाकी है और आसमान पर पूरब तरफ सुफेदी फैला ही चाहती है।

"कुछ देर तक और ठहर जाना मुनासिब है।" यह सोच कर वे इधर उधर घूमने और टहलने लगे। जब रोशनी अच्छी तरह फैल चुकी तब दक्खिन और पश्चिम कोण की तरफ रवाना हुए। जब मैदान खतम कर चुके और पहाड़ी के नीचे पहुँचे तो उन्हें एक हलकी सी पगडण्डी दिखाई पड़ी जो कि बहुत ध्यान देने से पगडण्डी मालूम होती थी हां इतना कह सकते हैं कि उस राह से पहाड़ी के ऊपर कुछ दूर तक चढ़ने में सुबीता हो सकता था अस्तु प्रभाकरसिंह पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। लग भग पचास कदम चढ़ जाने के बाद उन्हें एक छोटी सी गुफा दिखाई दी जिसके अन्दर वे बेधड़क चले गये और फिर कई दिनों तक वहां से लौट कर बाहर न आये।

# आठवाँ बयान

आज प्रभाकरसिंह उस छोटी सी गुफा के बाहर आये हैं और साधारण रीति पर वे प्रसन्न मालूम होते हैं। हम यह नहीं कह सकते कि वे इतने दिनों तक निराहार या भूखे रह गये हों क्योंकि उनके चेहरे से किसी तरह की कमजोरी नहीं मालूम होती। जिस समय वे गुफा के बाहर निकले सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। उन्होंने बंगले के अन्दर जाना कदाचित् उचित न जाना या इसकी कोई आवश्यकता न समझी हो अस्तु वे उस सुन्दर घाटी में प्रसन्नता के साथ चारों तरफ टहलने लगे। नहीं नहीं, हम यह भी नहीं कह सकते कि वे वास्तव में प्रसन्न थे क्योंकि बीच बीच में उनके चेहरे पर गहरी उदासी छा जाती थी और वे एक लम्बी साँस लेकर रह जाते थे। सम्भव है कि यह उदासी इन्दुमति की जुदाई से सम्बन्ध रखती हो और वह प्रसन्नता किसी ऐसे लाभ के कारण हो जिसे उन्होंने उस गुफा के अन्दर पाया हो। तो क्या उन्हें उस गुफा के अन्दर कोई चीज मिली थी या उस गुफा की राह से वे इस घाटी के बाहर हो गये थे अथवा उन्हें किसी तिलिस्म का दर्वाजा मिल गया जिसमें उन्होंने कई दिन बिता दिये? जो हो, बात कोई अनूठी जरूर है और घटना कोई आश्चर्यजनक आवश्य है।

बहुत देर तक इधर उधर घूमने के बाद वे एक पत्थर की सुन्दर चट्टान पर बैठ गये और साथ ही किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो गये। इसी समय इन्हें इन्दुमति ने पहाड़ी के ऊपर से देखा था मगर इस बात की प्रभाकरसिंह को कुछ खबर न थी।

बहुत देर तक चट्टान पर बैठे बैठे कुछ सोचने विचारने के बाद उन्होंने सर उठाया और इस नीयत से बंगले की तरफ देखा कि चलें उसके अन्दर चल कर किसी और विषय की टोह लगावें। उसी समय बँगले के अन्दर से आती हुई तीन औरतों पर उनकी निगाह पड़ी जिनमें से एक इन्दुमति दूसरी विमला और तीसरी कला थी।

इन्दुमति को देखते ही वे प्रसन्न होकर उठ खड़े हुए, उधर इन्दुमति भी इन्हें देखते ही दीवानी सी हो कर दौड़ी और प्रभाकरसिंह के पैरों पर गिर पड़ी।

प्रभाकर०। (इन्दु को उठा कर) अहा इन्दे! इस समय तुझे देख कर मैं

कितना प्रसन्न हुआ यह कहने के लिए मेरे पास केवल एक ही जुबान है अस्तु मैं कुछ कह नहीं सकता !

इन्दु० । नाथ ! मुझे आपने धोखे में डाला !! ( मुस्कुराती हुई ) मुझे तो इस बात का गुमान भी न था कि आप मेरे साथ साथ चलते हुए रास्ते में किसी चुलबुली औरत को देख कर आपने आपे से बाहर हो जायँगे और मेरा साथ छोड़ कर उसके साथ दौड़ पड़ेंगे ! क्या इस विपत्ति के समय में मुझे अपने साथ लाकर मेरे साथ ऐसा ही बर्ताव करना आपको उचित था ? क्या आपकी उन प्रतिज्ञाओं का यही नमूना था !

प्रभा० । ( हँसते हुए ) वाह ! तुम अपनी बहिन को और अपने ही मुँह चुलबुली बनाओ ! क्या मैं किसी चुड़ैल के पीछे दौड़ा था ? तुम्हारी बहिन इस विमला ही ने तो मुझे रोका और कहा कि कुछ जरूरी बात कहनी है । मैंने समझा कि यह अपनी हैं जरूरी ही कुछ भलाई की बातें कहेंगी, अस्तु इनके फेर में पड़ गया और तुम्हें खो बैठा । तुम्हारे साथ गुलाबसिंह मौजूद ही थे और इधर विमला से मैं कुछ सुना चाहता था । ऐसी अवस्था में यह कब आशा हो सकती थी कि साधारण मामले पर इतना बड़ा पहाड़ टूट पड़ेगा ! सच तो यह है कि तुम्हारी बहिन ने मुझे धोखा दिया जिसका मुझे बहुत ही रञ्ज है और मैं इसके लिए इनसे बहुत बुरा बदला लेता मगर आज इन्होंने तुमसे मुझे मिला दिया इसलिए मैं इनका कसूर माफ करता हूँ मगर इस बात की शिकायत जरूर करूँगा कि मुझे यहाँ फँसा इन्होंने भूखों मार डाला, खाने तक को न पूछा । अच्छा आओ बैठ जाओ, सब कोई बैठ कर बातें करें ।

विमला० । वाह ! बहुत अच्छी कही, आपने तो मानो अनशनव्रत ग्रहण किया था ! साफ साफ क्यों नहीं कहते कि किसी फिक्र और तरद्दुद के कारण खाना पीना कुछ अच्छा ही नहीं लगता था !

कला० । ( मुस्कुराती हुई ) रात रात भर जाग के कोने कोने की तलाशी लिया करते थे कि शायद कहीं छेद सूराख और आले आलमारी में से इन्दुमति निकल आवे ।

प्रभा० । ( चौंक कर, कला से ) सो क्यों ?

विमला० । बस इतना ही तो ! खैर इन बातों को जाने दीजिये यह बताइये

कि अब आप मुझसे सन्तुष्ट हुए कि नहीं? या आपको इस बात का निश्चय हुआ या नहीं कि हम लोगों ने जो कुछ किया वह नेकनीयती के साथ था?

प्रभा०। चाहे यह बात ठीक हो, चाहे तुम हर तरह से निर्दोष हो, चाहे तुम दोनों बहिनों पर किसी तरह के ऐब का धब्बा लगना कठिन अथवा असम्भव ही क्यों न हो, परन्तु मैं इतना तो जरूर कहूँगा कि तुम्हारी यह कार्रवाई बदनीयती के साथ नहीं तो बेवकूफी के साथ जरूर हुई। सम्भव था कि जिस दुश्मन पर फतह पा के तुम इन्दुमति को छुड़ा लाईं वह और जबर्दस्त होता या तुम पर फतह पा जाता तो फिर इन्दुमति पर कैसी मुसीबत गुजरती! मेरी समझ में ही नहीं आता कि इस अनुचित और टेढ़ी बात से तुम्हें या हमें क्या फायदा पहुँचा, हां इन्दुमति जख्मी हुई यह मुनाफा जरूर हुआ। जिस तरह तुमने मुझे बहकाया था उस तरह वहा यही समझा दिया होता कि इन्दुमति को साथ लेकर वहां से हट जाना मुनासिब है, तो.....

विमला०। (बात काट कर) नहीं नहीं, यदि मैं ऐसा करती तो आप मुझ पर कदापि विश्वास न करते और भूतनाथ तथा गुलाबसिंह का साथ न छोड़ते, साथ ही इसके यह भी असम्भव था कि वहा पर मैं सविस्तार अपना हाल कह कर आपको समझाती, भूतनाथ के ऐबों को दिखाती, अथवा उचित अनुचित पर बहस करती, बल्कि.....

इन्दु०। (बात काटकर, प्रभाकरसिंह से) खैर इन सब बातों से क्या फायदा, जो कुछ हुआ सो हुआ अब आगे के लिए सोचना चाहिये कि हम लोगों का कर्तव्य क्या है और क्या होगा हाँ मैं इतना जरूर कहूँगी कि हमारी ये दोनों जमाने के हाथों से सताई हुई बहिनें इस योग्य नहीं हैं कि इन पर बदनीयती का धब्बा लगया जाय। हां यदि कुछ भूल समझी जाय तो यह बड़े बड़े बुद्धिमान लोगों से भी हो जाया करती है। साथ ही इसके यह भी मानना पड़ेगा कि ग्रहदशा के फेर में पड़े हुए कई आदमी एक साथ मिल कर मुसीबत के दिन काटना चाहें तो सहज में काट सकते हैं बनिस्बत इसके कि वे सब अलग अलग हो कर कोई कार्रवाई करें, और आप यह सुन ही चुके हैं कि ये दोनों (कला और विमला) किस तरह जमाने अथवा भूतनाथ के हाथों से सताई जा चुकी हैं अस्तु हमलोगों का एक साथ रहना अवश्य लाभदायक होगा.....

प्रभा० । ( इन्दु से ) तुम्हारा कहना कुछ कुछ जरूर ठीक है। मैं इस बात को पसन्द कर सकता हूँ कि तुम यहां कुछ दिनों तक अपनी बहिनों के साथ रहो जब तक कि मैं अपने दुश्मनों पर फतह पा कर स्वतंत्र और निश्चिन्त न हो जाऊँ। मुझे इस बात की जरूर खुशी है कि तुम्हारे लिये एक अच्छा ठिकाना निकल आया है मगर मैं हाथ पैर तुड़वा कर यहां नहीं रह सकता।

इन्दु० । मगर आपको इन दोनों की मदद जरूर करनी चाहिये।

प्रभा० । इसके लिए मैं दिलोजान से तैयार हूँ, मगर अभी मैं भूतनाथ के साथ दुश्मनी न करूँगा जब तक कि अच्छी तरह जांच न कर लूँ और अपने दोस्त गुलाबसिंह से राय न मिला लूँ।

विमला० । ( कुछ घबराहटके साथ ) तो क्या आप हमलोगों के बारे में गुलाबसिंह से कुछ जिक्र करेंगे ?

प्रभा० । बेशक !

विमला० । तब तो आप चौपट ही करेंगे क्योंकि गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और उससे हमारा हाल जरूर कह देगा। ऐसी अवस्था में मेरे मनसूबों पर बिल्कुल ही पाला पड़ जायगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि सहज ही में इस दुनिया से...( लम्बी सांस लेकर ) ओफ ! यदि मैआपसे भलाई की आशा न करूँ तो दुनिया में किससे कर सकती हूँ? वह कौन सा दरख्त है जिसके साये तले मैं बैठ सकती हूँ और वह कौन सा मकान है जिसमें स्वतंत्र रूप से रह कर जिन्दगी बिता सकती हूँ ! एक इन्द्रदेव जिसने अपना हाथ मेरे सिर पर रक्खा है, और दूसरे आप जिनसे मैं भलाई की उम्मीद कर सकती हूँ। यदि आप ही मेरी प्रतिज्ञा भंग करने के कारण हो जावेंगे तो हमारी रक्षा करने वाला, और हमारे सतीत्व का बचाने वाला, हमारे धर्म का प्रतिपालन करने वाला और हमारी कुम्हलाई हुई शुभ मनोरथ-लता में जीवन संचार करने वाला और कौन होगा ? मैं कसम खाकर कह सकती हूँ कि भूतनाथ कदापि आपके साथ भलाई न करेगा चाहे गुलाबसिंह आपका दिली दोस्त हो और चाहे भूतनाथ गुलाबसिंह को इष्टदेव के तुल्य मानता हो साथ ही इसके मैं डंके की चोट कह सकती हूँ कि यदि आप मुझे धर्मपथ से बिचलित हुई पावें, यदि आपको मेरे निर्मल आंचल में किसी तरह का धब्बा दिखाई दे, और यदि जांच करने पर मैं झूठी साबित होऊँ तो

आपको अख्तियार है और होगा कि मेरे साथ ऐसा बुरा सलूक करें जो किसी अनपढ़ उजड्ड और अधर्मी दुश्मन के किये भी न हो सके! बेशक आप मुझे...

इतना कहते कहते विमला का गला भर आया और उसकी आंखों से आंसू की धार बह चली।

प्रभा०। ( बात काट कर दिलासे के ढंग से ) बस बस विमला बस, मुझे विश्वास हो गया कि तू सच्ची है और दिल का गुब्बार निकालने के लिए तेरी ऐसी प्रतिज्ञा सराहने के योग्य है। मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि तेरे भेदों को तुझ से ज्यादा छिपाऊँगा और तेरी इच्छा के विरुद्ध कभी किसी पर प्रगट न करूँगा चाहे वह मेरा कैसा ही प्यारा क्यों न हो, साथ ही इसके मैं विश्वास दिलाता हूँ कि तू मुझसे स्वप्न में भी बुराई की आशा न रखियो मगर हा मैं भूतनाथ की जांच जरूर करूँगा कि वह कितने पानी में है।

विमला०। ( खुशी से प्रभाकरसिंह को प्रणाम करके ) बस मैं इतना ही सुना चाहती थी, आपकी इतनी प्रतिज्ञा मेरे लिए बहुत है। आप शौक से भूतनाथ की बल्कि साथ ही इसके मेरी भी जांच कीजिये मैं इसके लिये कदापि न रोकूँगी, मगर मैं खूब जानती हूँ कि भूतनाथ परले सिरे का बेइमान दगाबाज और खुद-गर्ज ऐयार है और ऐयारी के नाम में धब्बे लगाने वाला है। मैं आपको एक चीज दूंगी जो समय पड़ने पर आप को बचावेगी, वह चीज मुझे इन्द्रदेव ने दी है और वह आप ऐसे बहादुरों के पास रहने योग्य है। यदि आपकी इच्छा के विरुद्ध न हो तो मैं इन्द्रदेव से भी आपकी मुलाकात कराऊँगी।

प्रभाकर०। मैं बड़ी खुशी से इन्द्रदेव से मिलने के लिए तैयार हूँ, उनसे मिल कर मुझे कितनी खुशी होगी मैं बयान नहीं कर सकता। वे निःसन्देह महात्मा हैं और मुझे उनसे मिलने की सख्त जरूरत है! मैं यह भी जानता हूँ कि वह मुझ पर कृपादृष्टि रखते हैं और ऐसे समय में मेरी पूरी सहायता कर सकते हैं।

विमला०। निःसन्देह ऐसा ही है। आप इस घाटी में तीन दिन के लिए मेरी मेहमानी कबूल करें, इन तीन दिनों में से मैं कई अद्भुत चीजें आपको दिखलाऊँगी और इन्द्रदेवजी से भी मुलाकात कराऊँगी क्योंकि वे कल यहाँ जरूर आवेंगे।

कला०। ( मुस्कुराती हुई दिल्लगी के साथ ) मगर ऐसा न कीजियेगा कि

उस रात की तरह ये तीन दिन भी आप इस स्थान की तलाशी में ही बिता दें और हर रोज सुबह को एक नई घाटी से बाहर निकला करें।

प्रभा०। मैं पहिले ही आवाज देने पर समझ गया था कि तुमने उस रात की कार्रवाई देख ली है, इस दोहराने की कोई जरूरत न थी। अगर खुशी से तुम अपना घर न दिखाओगी तो मैं बेशक इसी तरह जबर्दस्ती देखने का उद्योग कराऊँगा।

कला०। जबर्दस्ती से कि चोरी से।

इतना कह कर कला खिलखिला कर हँस पड़ी और तब कुछ देर तक इन सभों में इधर उधर की बातें होती रहीं, इसके बाद धूप ज्यादा निकल आने के कारण सब कोई उठ कर बंगले के अन्दर चले गये और वहां भी कई घण्टे तक हँसी दिल्लगी तथा ताने और उराहने की बातें होती रहीं। इस बीच में इन्दु ने अपनी दर्दनाक कहानी कह सुनाई और प्रभाकरसिंह ने भी अपनी बेबसी में जो कुछ देखा सुना था उससे बयान किया।

दो पहर से ज्यादे दिन चढ़ चुका था जब विमला सभों को लिए हुये अपने महल में आई। इतनी देर तक खुशी में किसी को भी नहाने धोने अथवा खाने पीने की सुध न रही।

## नवाँ बयान

तीन दिन नहीं बल्कि पांच दिन तक मेहमानी का आनन्द लूट कर आज प्रभाकरसिंह उस अद्भुत खोह के बाहर निकले हैं। इन पांच दिनों के अन्दर उन्होंने क्या क्या देखा सुना, किस किस स्थान की सैर की, किस किस से मिले जुले, सो हम यहां पर कुछ भी न कहेंगे, सिवाय इसके कि वे इन्दुमति को विमला और कला के पास छोड़ आये हैं और इस काम से बहुत प्रसन्न भी हैं। साथ ही इसके यह भी कह देना उचित जान पड़ता है कि अब उनके विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया।

दिन पहर भर से कुछ कम बाकी है। प्रभाकरसिंह सिर झुकाये कुछ सोचते हुए पहाड़ के किनारे किनारे भूतनाथ की घाटी की तरफ धीरे धीरे चले जा रहे हैं। वे जानते हैं कि भूतनाथ की घाटी का दर्वाजा अब दूर नहीं है तथा उन्हें

यह भी गुमान है कि भूतनाथ या गुलाबसिंह ताज्जुब नहीं कि मिल जायँ। इसलिये वे धीरे धीरे कदम उठाते हैं, इधर उधर चौकन्ना हो कर देखते हैं और कभी कभी पत्थर की किसी सुन्दर चट्टान पर बैठ भी जाते हैं।

प्रभाकरसिंह का सोचना बहुत ठीक निकला। वे एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर कुछ सोच रहे थे कि भूतनाथ ने उन्हें देख लिया और तेजी के साथ लपक कर इनके पास आया, मगर इन्हें सुस्त और उदास देख कर उसे ताज्जुब और दुःख हुआ क्योंकि जिस तपाक के साथ वह प्रभाकरसिंह से मिला चाहता था उस तपाक के साथ प्रभाकरसिंह उससे नहीं मिले, न तो उसका इस्तकबाल किया और न उसे आवभगत के साथ लिया। हाँ इतना जरूर किया कि भूतनाथ को देख कर उठ खड़े हुए और एक लम्बी साँस लेकर बोले, "बस भूतनाथ! तुमसे मुलाकात हो गई, अब केवल गुलाबसिंह से मिलने की अभिलाषा है। इसके बाद फिर कोई भी मुझे प्रभाकरसिंह की सूरत में नहीं देख सकेगा!!"

भूत०। (आश्चर्य से) क्यों क्यों, सो क्यों?

प्रभाकर०। तुम जानते हो कि इस दुनिया में मेरा कोई भी नहीं है! एक इन्दुमति थी सो वह भी ऐसे ठिकाने पहुँच गई जहाँ कोई भी जाकर उससे मिल नहीं सकता! ऐसी अवस्था में मैं दुनियादार बन कर कैसे रहूँगा?

भूत०। नहीं नहीं प्रभाकरसिंह! ये शब्द बहादुरों के मुँह से निकलने योग्य नहीं हैं। क्या इन्दुमति का कुछ हाल आपको मालूम हुआ?

प्रभा०। कुछ क्या बल्कि बहुत।

भूत०। किस रीति से?

प्रभा०। आश्चर्य रीति से।

भूत०। किसकी जुबानी?

प्रभा०। एक निर्जीव मूरत की जुबानी।

भूत०। अब इस पहेली से तो काम नहीं चलता, खुलासा कहिये नहीं तो...

प्रभा०। अच्छा बैठो और सुनो।

दोनों बैठ गये और तब भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह से पूछा :—

भूत०। अच्छा अब कहिये कि क्या हुआ और किसकी जुबानी आपको इन्दुमति का हाल मालूम हुआ?

प्रभा० । मैं कह चुका हूँ कि एक निर्जीव मूरत की जुबानी मुझे बहुत कुछ हाल मालूम हुआ जिसे सुन कर तुम ताज्जुब करोगे । सुनो और आश्चर्य करो कि तुम्हारे पड़ोस में कैसा एक विचित्र स्थान है । ( रुक कर ) नहीं नहीं, यह मेरी भूल है कि मैं ऐसा कहता हूँ, निःसन्देह उस विचित्र स्थान का हाल सबसे ज्यादे तुम्हीं को मालूम होगा मै तो नया मुसाफिर हूँ ।

भूतनाथ० । आखिर किस स्थान के विषय में आप कह रहे हैं ! कुछ समझाइये भी तो ?

प्रभा० । ( हाथ का इशारा करके ) बस इसी तरफ थोड़ी ही दूर पर एक शिवालय है जिसके अन्दर शिवजी की नहीं बल्कि किसी तपस्वी ऋषि की मूर्ति है जो कि पूरे आदमी के कद की.....

भूत० । हाँ हाँ ठीक है, उसे इस तरफ के जङ्गली लोग अगस्तमुनि की मूर्ति कहते हैं, खूब लम्बी लम्बी जटा है और मूर्ति के आगे एक छोटा सा कुण्ड है जिसमें हरदम जल भरा रहता है, न मालूम वह जल कहां से आता है कि चाहे जितना भी खर्च करो कम होता ही नहीं । वह स्थान 'अगस्ताश्रम' के नाम से पुकारा जाता है ।

प्रभा० । बस बस बस, वही स्थान है ।

भूत० । फिर उससे क्या मतलब ?

प्रभा० । उसी मूर्ति के जुबानी मुझे कई बातें मालूम हुई हैं, तुम्हें तो मालूम ही होगा कि उसमें बात करने की शक्ति है ।

भूत० । ( दिल्लगी के तौर पर हँस कर ) बहुत खासे ! यह आपसे किसने कह दिया है कि भूतनाथ ऐसा पागल हो गया है कि जो कुछ उसे कहोगे वह विश्वास कर लेगा ।

प्रभा० । तो क्या मैं गप्प उड़ा रहा हूँ ?

भूत० । अगर गप्प नहीं तो दिल्लगी ही सही !

प्रभा० । नहीं कदापि नहीं, मुझे आश्चर्य होता है कि तुम यहां के रहने वाले हो कर उस मूर्ति का गुण नहीं जानते और यदि मैं कुछ कहता भी हूँ तो दिल्लगी उड़ाते हो ! अस्तु जाने दो, अब मैं इस विषय में कुछ भी नहीं कहूँगा हां यदि तुम चाहोगे तो साबित कर दूँगा कि वह मूर्ति बोलती है और

त्रिकालदर्शी है। अच्छा जाओ और गुलाबसिंह को जल्द भेजो कि मैं उससे मिल कर बिदा होऊँ।

भूत०। तो आप मेरे स्थान पर ही क्यों नहीं चलते? उस जगह आपको बहुत आराम मिलेगा, गुलाबसिंह से मुलाकात भी होगी और साथ ही इसके मेरा भ्रम भी दूर हो जायगा।

प्रभा०। नहीं, अब मैं वहां न जाऊँगा। मैं उसी शिवालय में चल कर बैठता हूँ, तुम गुलाबसिंह को उसी जगह भेज दो मैं मिल लूँगा, बस अब इस विषय में जिद्द न करो।

भूत०। प्रभाकरसिंहजी! मैं खूब जानता हूँ आप क्षत्री हैं और सच्चे बहादुर हैं, आपकी वीरता मौरूसी है, खानदानी है, निःसन्देह आपके बड़े लोग जैसे वीर पुरुष होते आए हैं वैसे ही आप भी हैं, मगर आश्चर्य है कि आप मुझे कुछ ऐयारी ढग की बातें करके धोखे में डाला चाहते हैं...अच्छा अच्छा, मेरी बातो से यदि आपकी भृकुटी चढ़ती है तो जाने दीजिये मैं कुछ न कहूँगा, जाता हूँ और गुलाबसिंह को बुलाए लाता हूँ।

इतना कह कर भूतनाथ ने जफील बजाई जिसकी आवाज सुन कर उसके तीन शागिर्द बात की बात में वहाँ आ पहुँचे। भूतनाथ उन्हें इशारे में कुछ समझा कर बिदा हुआ और अपनी घाटी की तरफ चला गया। प्रभाकरसिंह को मालूम हो गया कि भूतनाथ इन तीनों ऐयारों को मेरी निगरानी के लिए छोड़ गया है।

कुछ सोच विचार कर प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए और धीरे धीरे ईशानकोण की तरफ जाने लगे। एक घड़ी तक बराबर चले जाने के बाद वह उस शिवालय के पास पहुँचे जिसका जिक्र अभी थोड़ी देर हुई भूतनाथ से कर चुके थे और जिसका नाम भूतनाथ ने अगस्तमुनि का आश्रम या अगस्ताश्रम बतलाया था।

यह स्थान बहुत ही सुन्दर और सुहावना था और पहाड़ की तराई में कुछ ऊँचे की तरफ चढ़ कर बना हुआ था। इस जगह दूर दूर तक बेल के पेड़ बहुतायत के साथ लगे हुए थे और बेलपत्र की छाया से यह जगह बहुत ठण्ढी जान पड़ती थी। मन्दिर यद्यपि बहुत बड़ा न था मगर एक खूबसूरत छोटी सी चार-दीवारी से घिरा हुआ था। आगे की तरफ एक मामूली सभामण्डप और बीच

में मूर्ति के आगे एक छोटा सा कुण्ड बना हुआ था जिसमें पानी हर दम भरा रहता था। वह कुण्ड यद्यपि बहुत छोटा अर्थात् डेढ़ हाथ चौड़ा तथा लम्बा और उसी अन्दाज का गहरा था मगर उसके साफ और निर्मल जल से सैकड़ों आदमियों का काम चल सकता था। किसी पहाड़ी सोते का मुँह उसके अन्दर जरूर था जिसमें से जल बराबर आता और बह कर ऊपर की तरफ से निकल जाता था। इस कुण्ड के विषय में लोग तरह तरह की गप्पें उड़ाया करते थे जिसके लिखने की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं।

प्रभाकरसिंह आकर इस मन्दिर के सभामण्डप में बैठ गए और भूतनाथ तथा गुलाबसिंह का इन्तजार करने लगे। उन्होंने देखा कि भूतनाथ के शागिर्द ऐयारों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा है बल्कि इधर उधर चलते फिरते दिखाई दे रहे हैं।

सन्ध्या हुआ ही चाहती थी जब गुलाबसिंह को साथ लिये हुए भूतनाथ वहाँ आ पहुँचा जहाँ प्रभाकरसिंह बैठे उन दोनों का इन्तजार कर रहे थे। प्रभाकरसिंह को देख कर गुलाबसिंह ने बहुत प्रसन्नता प्रगट की और दो चार मामूली बातचीत के बाद कहा :—

"भूतनाथ की जुबानी आपका हाल सुन कर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। आपने भूतनाथ को यह समझाने की कोशिश की थी कि यह अगस्तमुनि की मूर्ति बोलती है और इसकी जुबानी आपको इन्दुमति का बहुत कुछ हाल मालूम हुआ है!"

प्रभाकर०। निःसन्देह! मेरा यह कहना केवल आश्चर्य बढ़ाने के लिए नहीं है बल्कि इस विषय पर विश्वास दिलाने के लिए है, अब तुम लोग आ ही गये हो तो अपने कानों से सुन लेना कि मूर्ति क्या कहती है। मुझे यह बात अकस्मात् मालूम हुई। मैं नहीं जानता था कि इस मूर्ति में ऐसे गुण भरे हुए हैं, मगर अफसोस इस बात का है कि यह मूर्ति रोज नहीं बोलती और न हर वक्त किसी के सवाल का जवाब देती है। इसके बोलने का खास खास दिन मुकर्रर है जिसका ठीक ठीक हाल मुझे मालूम नहीं है मगर इतना मैं जान गया हूँ कि बातचीत करती समय यह मूर्ति अन्त में खुद बता देती है कि अब आगे किस दिन और किस समय बोलेगी। इसकी जुबानी सुन कर मैं कहता हूँ कि आज ग्यारह घड़ी रात जाने बाद यह मूर्ति पुनः बोलेगी और इसके बाद पुनः रवि-

वार के दिन बातचीत करेगी। आह! ईश्वर की लीला का किसी को भी अन्त नहीं मिलता, मेरी अक्ल हैरान है और कुछ भी समझ में नहीं आता कि क्या मामला है!!

गुलाब०। निःसन्देह यह आश्चर्य की बात है! खैर अब जो कुछ होगा हम लोग देख ही सुन लेंगे परन्तु यह तो बताइये कि आप इस मूर्ति की जुबानी क्या क्या सुन चुके हैं?

प्रभाकर०। सो मैं अभी कुछ भी नहीं कहूँगा, थोड़ी ही देर की तो बात है सब्र करो, समय आया ही चाहता है, जो कुछ पूछना हो खुद इस मूर्ति से पूछ लेना। तब तक मैं जरूरी कामों से निपट कर सन्ध्योपासन में लगता हूँ, अगर उचित समझिए तो आप लोग भी निपट लीजिये।

भूत०। मैं आपके लिए खाने पीने की सामग्री भी लेता आया हूँ।

# दसवाँ बयान

रात लगभग ग्यारह घड़ी के जा चुकी है। भूतनाथ गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह उत्कण्ठा के साथ उस (अगस्तमुनि की) मूर्ति की तरफ देख रहे हैं। एक आले पर मोमबत्ती जल रही है जिसकी रोशनी से उस मन्दिर के अन्दर की सभी चीजें दिखाई दे रही हैं भूतनाथ और गुलाबसिंह का कलेजा उछल रहा है कि देखें अब यह मूर्ति क्या बोलती है।

यकायक कुछ गाने की आवाज आई, ऐसा मालूम हुआ मानों मूर्ति गा रही है सब कोई बड़े गौर से सुनने लगे :—

* विहाग *

सबहि दिन नाहिं बराबर जात।
कबहूँ कला बला पुनि कबहूँ, कबहूँ, करि पछितात।
कबहूँ राज रंक पुनि कबहूँ, ससि उड़गन दिखलात॥
पै करनी अपनी सब चाखैं, फल बोये को खात।
अनरथ करम छिपै नहिं कबहूँ, अंत सबै खुल जात॥
सबहि दिन नाहिं बराबर जात।

इसके बाद मूर्ति इस तरह बोलने लगी :—

"अहा ! आज मैं अपने सामने किस किस को बैठा देख रहा हूँ ? महात्मा प्रभाकरसिंह ! धर्मात्मा गुलाबसिंह ! मैं अभी धर्मात्मा कैसे कहूँ, क्या सम्भव है कि भविष्य में भी यह धर्मात्मा बना रहेगा ?

"खैर जो कुछ होगा देखा जायगा। हां, यह तीसरा आदमी मेरे सामने कौन है ! वही गदाधरसिंह जिसने एक दम से अपनी कायापलट कर दी और एक सुन्दर नाम को छोड़ के भूतनाथ के नाम से प्रसिद्ध होना पसन्द किया ! आह, दुनिया में किसी को किसी पर विश्वास और भरोसा न करना चाहिए और न किसी की मित्रता पर किसी को घमण्ड करना चाहिए। क्या दयाराम को स्वप्न में भी इस बात का गुमान होगा कि मैं अपने दोस्त गदाधरसिंह के हाथ मारा जाऊँगा ? केवल दोस्त ही नहीं बल्कि गुलाम और ऐयार गदाधरसिंह !!"

मूर्ति की यह बात सुन कर भूतनाथ का कलेजा दहल उठा और गुलाबसिंह तथा प्रभाकरसिंह आश्चर्य के साथ भूतनाथ का मुँह देखने लगे। मूर्ति ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

"अफसोस ! अपनी चूक का प्रायश्चित्त करना उचित था न कि ढंग बदल कर पुनः पाप में लिप्त होना ! भूतनाथ ! क्या तुम समझते हो कि इस दुष्कर्म का अच्छा फल पाओगे ? क्या तुम समझते हो कि गुप्त रह कर पृथ्वी का आनन्द लूटोगे ? क्या तुम समझते हो कि बेईमान दारोगासे मिल कर स्वर्ग की सम्पत्ति लूटेंगे और मायारानी की बदौलत कोई अनमोल पदार्थ बन जाओगे ? नहीं नहीं, कदापि नहीं, गदाधरसिंह ! तुम्हारी किस्मत में दुःख भोगना बदा है अस्तु भोगो जो जी में आवे करो मगर ऐ गुलाबसिंह ! तुम ऐसे दुष्ट का साथ क्यों दिया चाहते हो, जो बिना कमन्द लगाए आस्मान पर चढ़ जाने का हौसला करता है, खुद गिरेगा और तुम्हें भी गिरावेगा। और ऐ प्रभाकरसिंह ! तुम अब अपनी आंखों के आँसू पोंछ डालो, इन्दुमतिको बिल्कुल भूल जाओ, और अपने कातर हृदय को ढ़ाढ़स देकर वीरता का स्मरण करो और दुनिया में कुछ नाम पैदा करो। यदि तुम धर्मपथ पर दृढ़ता के साथ चलोगे तो मैं बराबर तुम्हारी सहायता करता रहूँगा। मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम अवश्य उस पथ का अवलम्बन करो जो मैं तुमसे उस दिन कह चुका हूँ। खबरदार, अपने भेद के मालिक आप बने रहो और किसी दूसरे को मत बनाओ। क्या तुम्हें मुझसे

और कुछ पूछना है ?"

इतना कह कर मूर्ति चुप हो गई और प्रभाकरसिंह ने उससे यह सवाल किया :—

प्रभा० । मुझे यह पूछना है कि मैं किसी को अपना साथी बनाऊँ कि न बनाऊँ ?

मूर्ति० । बनाओ और अवश्य बनाओ ! पहिली बरसात के दिन एक आदमी से तुम्हारी मुलाकात होगी, उसे तुम अपना साथी बनाओगे तो शुभ होगा । अच्छा और कुछ पूछोगे ?

भूत० । अब मैं कुछ पूछूँगा

मूर्ति० । पूछो क्या पूछते हो ?

भूत० । पहिले यह बताओ कि अब तुम किस दिन और किस समय बोलोगे ?

मूर्ति० । यदि तुम्हारी नीयत खराब न हुई और तुमने कोई उत्पात न मचाया तो इसी अमावस वाले दिन सोलह घड़ी रात बीत जाने के बाद हम पुनः बोलेंगे ।

गुलाब० । हमें भी कुछ पूछना है ।

मूर्ति० । तुम्हारी बातों का जवाब आज नहीं मिल सकता, हां यदि तुम चाहो तो आज के अट्ठारहवें दिन इसी समय यहां आ सकते हो परन्तु अकेले ।

गुलाब० । अच्छा तो अब यह बताइये कि हम भूतनाथ के मेहमान बने रहें या.....

मूर्ति० । नहीं, अगर अपनी भलाई चाहते हो तो दो पहर के अन्दर भूतनाथ का साथ छोड़ दो और प्रभाकरसिंह की आज्ञानुसार काम करो । बस अब कुछ मत पूछो ।

इसके बाद मूर्ति ने बोलना बन्द कर दिया । भूतनाथ और प्रभाकरसिंह ने कई तरह के सवाल किये मगर मूर्ति ने कुछ जवाब न दिया अस्तु तीनों आदमी मन्दिर के बाहर निकले और सभामण्डप में बैठ कर यों बातचीत करने लगे:-

गुलाब० । क्यों भूतनाथ ! यह तो हमें एक नई बात मालूम हुई । मैं स्वप्न में भी नहीं जान सकता था कि दयारामजी को तुमने मारा होगा ! अफसोस !!

भूतनाथ० । गुलाबसिंह ! आश्चर्य की बात है कि तुम इतने बड़े होशियार

होकर भी इस पत्थर की मूर्ति की बातों में फँस गये और जो कुछ उसने कहा उसे सच समझने लगे ! इतना तक नहीं विचारा कि यह असम्भव बात वास्तव में क्या है ? निःसन्देह यह धोखे की टट्टी है और इसमें कोई अनूठा रहस्य है बल्कि यों कहना चाहिये कि यह कोई तिलिस्म है और इसका परिचालक ( इस समय जो कोई भी हो ) जरूर हमारा दुश्मन है।

गुलाब० । नहीं नहीं भूतनाथ ! अब तुम हमें धोखे में डालने की कोशिश मत करो और न अब हम लोग तुम्हारी बातों पर विश्वास ही कर सकते हैं। ऐसी आश्चर्यमयी अनूठी घटना का प्रभाव कैसा हम लोगों के ऊपर पड़ा उसे हम ही लोग जान सकते हैं।

भूतनाथ० । खैर, तुम जानो, जो जी में आवे करो और जहां चाहो चले जाओ, मैं तुम्हें अपने पास रहने के लिए जोर नहीं देता, मगर तुम दोस्त हो अस्तु निश्चिन्त रहो मैं तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूँगा।

इसके बाद इन तीनों में किसी तरह की बातचीत न हुई गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह पूरब की तरफ रवाना हुये और भूतनाथ ने पश्चिम की तरफ का रास्ता लिया।

# ग्यारहवाँ बयान

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन उसी अगस्ताश्रम के पास आधी रात के समय हम एक आदमी को टहलते हुए देखते हैं। हम नहीं कह सकते कि यह कौन तथा किस रंग ढंग का आदमी है, हां इसके कद की ऊँचाई से साफ मालूम होता है कि यह औरत नहीं है बल्कि मर्द है मगर यह नहीं मालूम पड़ता कि अपनी स्याह पोशाक के अन्दर यह किस ठाट से है अर्थात् यह आदमी जिसने स्याह लबादे से अपने को अच्छी तरह छिपा रक्खा है सिपाहियों और बहादुरों की तरह के हर्बे हथियारों से सजा हुआ है या चोरों की तरह सन्धियों और हत्थियों वगैरह से। जो हो, हमें इसके ब्यारे से इस समय कोई मतलब नहीं, हमें सिर्फ इतना ही कहना है कि यह यद्यपि टहल टहल कर अपना समय बिता रहा है मगर इसमें कोई शक नहीं कि अपने को हर तरह से छिपाये रखने की भी कोशिश कर रहा है दिन का मुकाबिला करने वाली चांदनी यद्यपि अच्छी

तरह छिटकी हुई है मगर उस अन्धकार को दूर करने की शक्ति उसमें नहीं है जो इस समय पेड़ों की झुरमुट के अन्दर पैदा हो रहा है और जिससे उस टहलने वाले व्यक्ति को अच्छी सहायता मिल रही है। अगस्ताश्रम की तरफ बड़ी घड़ी अटक कर देखने और आहट लेने से यह भी मालूम होता है कि वह किसी आने वाले की राह देख रहा है।

इसे टहलते हुए घण्टा भर से ज्यादे हो गया और तब इसने दो आदमियों को आते और अगस्ताश्रम की तरफ जाते देखा। ये दोनों कद के छोटे और ढाल तलवार तथा तीर कमान से सुसज्जित थे मगर इनकी पोशाक के बारे में हम इस समय किसी तरह की निन्दा वा प्रशंसा नहीं कर सकते।

मालूम होता है कि वह टहलने वाला स्याहपोश इन्हीं दोनों आदमियों का इन्तजार कर रहा था क्योंकि जैसे ही वे दोनों अगस्ताश्रम की चार दीवारी के अन्दर घुसे वैसे ही इसने उनका पीछा किया। उनके कुछ ही देर बाद यह स्याह-पोश भी चार दीवारी के अन्दर जा पहुँचा मगर वहां उन दोनों पर निगाह न पड़ी। पहिले इसने मंदिर के चारो तरफ की परिक्रमा की और उन दोनों को ढूँढ़ा, और जब पता न लगा तब मन्दिर के अन्दर पैर रक्खा मगर वहाँ भी कोई न था।

हम पहिले कह आये हैं कि यह मन्दिर बहुत छोटा और साधारण था अत-एव इसके अन्दर किसी के खोजने में विलम्ब करना बेशक पागलपन समझा जाता है मगर उस स्याहपोश ने इसका कुछ भी विचार न किया और खूब अच्छी तरह खोज डाला यहाँ तक कि उस छोटे से कुण्ड में भी तलवार डाल कर जाँच लिया जिसमें हर दम पानी भरा रहता था।

उस स्याहपोश को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह आश्चर्य के साथ सोचने लगा—"वे दोनों आदमी कहाँ गायब हो गए! इस छोटे से मन्दिर में किसी तरह छिप नहीं सकते, इसके अतिरिक्त यहाँ विशेष अन्धकार भी नहीं है क्योंकि सभामण्डप में चन्द्रमा की चाँदनी जो आड़ी होकर पहुँच रही है उसकी चमक में मंदिर के अन्दर का अन्धकार भी इस योग्य नहीं रह गया है कि अपनी स्याह चादर के अन्दर किसी को छिपा सके, अस्तु यही कहना पड़ता है कि यहां की जमीन उन दोनों को खा गई। जो हो, इसमें कोई संदेह नहीं कि यह मन्दिर मेरे दुश्मन का मुँह है। खैर कोई चिन्ता नहीं, अब मैं फिर बाहर चलता हूँ

क्योंकि गर्मी से जी ब्याकुल हो रहा है तिस पर भारी पौशाक ने और भी तंग कर रक्खा है।"

इस तरह की बातें सोचता और कुछ बुदबुदाता हुआ वह आदमी मंदिर के बाहर निकला और फिर उसी जगह पेड़ों की झुरमुट और आड़ में जा पहुँचा जहाँ हम पहिले टहलते हुए इसे देख चुके थे। इस समय यहाँ एक आदमी और खड़ा था जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और उसे देखते ही उस स्याहपोश ने पूछा, "केम ?" इसके जवाब में उसने कहा, "चहा !"

जवाब सुनते ही स्याहपोश ने अपने ऊपर से स्याह लबादा उतार कर उसके हवाले किया और, "अब मैं इसे नहीं ओढ़ सकता क्योंकि इससे गर्मी में तकलीफ होने के सिवाय अब इसकी कुछ जरूरत भी न रही, मैं भूतनाथ की ही सूरत में अच्छा हूँ मुझे कोई पहिचानने वाला नहीं। केवल गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह के खयाल से इसे ओढ़ लिया था सो उनके मिलने की अब कोई उम्मीद नहीं रही।"

दूसरे नकाबपोश ने वह लबादा ले लिया और जवाब में कहा, "मेरे लिये अब क्या आज्ञा होती है ?"

पाठक अब समझ गये होंगे कि यह स्याहपोश वास्तव में भूतनाथ है अस्तु उसने अपने साथी नकाबपोश से कहा, "तुम्हारी यहाँ कोई जरूरत नहीं रही, तुम जाओ और जो कुछ मैं पहिले हुक्म दे चुका हूँ उसी अनुसार काम करो, मैं अब यहाँ से जल्दी नहीं टल सकता क्योंकि इस मन्दिर ने मुझे अपने जाल में फंसा लिया है।।"

नकाबपोश चला गया और भूतनाथ फिर उसी अन्धकार में टहलने लगा। कुछ देर बाद उस मन्दिर के अन्दर से दो आदमी बाहर निकले और दक्खिन की तरफ चल पड़े। हम नहीं कह सकते कि ये दोनों वे ही थे जो पहिले मन्दिर में जाकर गायब हो गए थे अथवा कोई दूसरे।

भूतनाथ ने उन दोनों का पीछा किया मगर बड़ी कठिनता से अपने को छिपाता और उन्हें देखता हुआ जाने लगा क्योंकि चाँदनी उसके काम में बाधा डाल रही थी। लगभग आध कोस के जाने बाद वे दोनों एक ऐसी जगह जा पहुँचे जहाँ की जमीन पत्थर के बड़े बड़े ढोकों से कुछ भयानक सी हो रही थी और

उसी जगह खोह का एक मुहाना भी था जिसे भूतनाथ ने सहज ही में समझ लिया और यह इरादा कर लिया कि इन दोनों को यहां पर खोह के अन्दर घुसने के पहिले ही रोक लेना चाहिये, ताज्जुब नहीं कि खोह के अन्दर जाने पर ये फिर मेरे हाथ न लगें।

वे दोनों आदमी खोह के मुहाने पर पहुँच कर रुके और आपस में कुछ बातें करने लगे। उसी समय भूतनाथ उनके पास जाकर खड़ा हो गया और यह देख कर कि उनके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है बोला, "तुम दोनों कौन हो ?"

एक०। तुम्हें इससे मतलब ?

भूत०। मतलब यही है कि यह स्थान हमारी हुकूमत के अन्दर है और हम जानना चाहते हैं कि तुम दोनों कौन हो और तुम्हारे उस [illegible] के मंदिर में जाने आने का क्या कारण है ?

एक०। न तो इस सरजमीन के तुम मालिक ही हो और न तुम्हें कुछ पूछने का कोई अधिकार ही है। जिस तरह एक बेईमान और नमकहराम ऐयार बेइज्जती के साथ अपनी जिन्दगी बिता सकता है उसी तरह तुम भी अपनी जिन्दगी के दिन बिताने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकते। हम खूब जानते हैं कि तुम्हारा नाम गदाधरसिंह है और अब अपनी असलियत को छिपाते हुए भूतनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ चाहते हो।

भूत०। ( गुस्से से पेच खाकर ) मालूम होता है कि तुम दोनों की शामत आई है जिससे मेरी बातों का साफ साफ जवाब न देकर जली कटी बातें करते और मुझे गदाधरसिंह के नाम से सम्बोधन करते हो। मैं नहीं जानता कि गदाधरसिंह किस चिड़िया का नाम है, पर सम्भव है कि यह कोई भेद की बात हो, इसलिये मैं गदाधरसिंह के बारे में कुछ नहीं पूछता और एक दफे तुम्हारी इस ढिठाई को माफ करके फिर कहता हूँ कि तुम दोनों आदमी अपना परिचय दो नहीं तो...

एक०। नहीं तो क्या ? तुम हमारा कर ही क्या सकते हो ? पहिले तुम अपनी जान बचाने का तो बन्दोबस्त कर लो ! हम लोग तुम्हारी झूठी बातों से धोखा नहीं खा सकते, बस चले जाओ और अपना काम करो, हम लोगों का पीछा करके तुम कोई अच्छा नतीजा नहीं निकाल सकते।

भूतनाथ खिलखिला कर हँस पड़ा और उसने फिर पूछा :—

भूत० । मैं समझता हूँ तुम दोनों मर्द नहीं बल्कि औरत हो । खैर इससे भी कोई मतलब नहीं । मैं वह आदमी नहीं हूँ जो किसी तरह पर मुलाहजा कर जाऊँ, इस तलवार को देख लो और जल्द बताओ कि तुम कौन हो ?

इतना कह कर भूतनाथ ने म्यान से तलवार निकाल ली मगर उन दोनों का दिल फिर भी न हिला और एक ने पुनः कड़क कर भूतनाथ से कहा—"चल दूर हो मेरे सामने से ! तेरी इस निर्लज्ज तलवार से हम लोग डर नहीं सकते। समझ ले कि तू इस ढिठाई की सजा पावेगा और पछतावेगा !"

इसके जवाब में भूतनाथ ने हाथ बढ़ा कर एक की कलाई पकड़ ली, मगर साथ ही इसके दूसरे नकाबपोश ने भूतनाथ पर छुरी का वार किया जिसके लिये शायद वह पहिले ही तैयार था । वह छुरी यद्यपि बहुत बड़ी न थी मगर भूतनाथ उसकी चोट खाकर सम्हल न सका । वह भूतनाथ के बगल में चार अंगुल धँस गई और साथ ही भूतनाथ यह कहता हुआ जमीन पर गिर पड़ा—"ओफ ! यह जहरीली छुरी.....।"

# बारहवाँ बयान

दिन पहर भर से ज्यादे चढ़ चुका था जब भूतनाथ की बेहोशी दूर हुई और वह चैतन्य होकर ताज्जुब के साथ चारो तरफ निगाहें दौड़ाने लगा। उसने अपने को एक ऐसे कैदखाने में पाया जिसमें से उसकी हिम्मत और जवाँमर्दी उसे बाहर नहीं कर सकती थी । यद्यपि यह कैदखाना बहुत छोटा और अन्धकार से खाली था मगर तीन तरफ से उसकी दीवारें बहुत मजबूत और संगीन थीं तथा चौथी तरफ लोहे का मजबूत जंगला लगा हुआ था जिसमें आने के लिये छोटा सा दर्वाजा भी था जो इस समय बहुत बड़े ताले से बन्द था ।

इस कैदखाने के अन्दर बैठा बैठा भूतनाथ अपने सामने का दृश्य बहुत अच्छी तरह देख सकता था । थोड़ी देर इधर उधर निगाह दौड़ाने के बाद वह उठ खड़ा हुआ और जंगले के पास आकर बड़े गौर से देखने लगा । उसके सामने वही सुन्दर जमीन और खुशनुमा घाटी थी जिसका हाल हम ऊपर बयान कर आये हैं, जो कला और विमला के कब्जे में है, अथवा जहाँ की सैर अभी

अभी प्रभाकरसिंह कर आये हैं। बीच वाले सुन्दर कमरे को भूतनाथ बड़े गौर के साथ देख रहा था क्योंकि यह कैदखाना जिसमें भूतनाथ कैद था, पहाड़ की ऊँचाई पर बना हुआ था जहाँ से इस घाटी का हर एक हिस्सा साफ साफ दिखाई दे रहा था। उसकी चालाक और चंचल निगाहें इस बात की जाँच कर रही थीं कि वह किस जगह पर कैद है और उसको कैद करने वाला कौन है!

इस घाटी में न कभी वह आया था न इसे कभी देखा था और न इसका हाल ही कुछ जानता था, अतएव उसे किसी तरह का गुमान भी न हुआ कि यह उसके पड़ोस की घाटी है अथवा इसके पास ही उसका निज का मकान है जहाँ वह रहता है।

थोड़ी देर तक बड़े गौर से इधर उधर देखने के बाद भूतनाथ हताश होकर बैठ गया और तरह तरह की बातें सोचने लगा। उसे इस बात का बहुत ही दुःख था कि उसके हरबे छीन लिए गये थे और उसका ऐयारी का बटुआ भी उसके पास न था मगर उसके उस जख्म में कोई विशेष तकलीफ न थी जिसकी बदौलत वह बेहोश होकर कैदखाने की हवा खा रहा था।

दोपहर की टनटनाती धूप भूतनाथ की आखों के सामने चमक रही थी। भूख की तो कोई बात नहीं मगर प्यास के मारे उसका गला चटका जाता था। वह सोच रहा था कि मुझे दाना पानी देने के लिए भी कोई आवेगा या मैं भूखे ही पिंजरे में बन्द रहूँगा क्योंकि अभी तक किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी थी।

थोड़ी देर और बीत जाने के बाद एक औरत वहां आई जिसके पास भूतनाथ के लिये खाने पीने का सामान था। उसने वह सामान बड़ी होशियारी से जंगले के अन्दर एक खास रास्ते से जो इसी काम के वास्ते बना हुआ था रख दिया और कहा, 'लो गदाधरसिंह! तुम्हारे लिये खाने पीने का सामान आ गया है, इसे खाओ और मौत का इन्तजार करो!'

भूत०। (पानी का लोटा उठा कर) हां ठीक है, बस मेरे लिये यही काफी है, मैं सिर्फ पानी ही पीकर मौत का इन्तजार करूँगा क्योंकि जब तक मैं जंगल मैदान और स्नान ध्यान इत्यादि कर्म न कर लूँ भोजन नहीं कर सकता।

औरत०। खैर तुम्हारी खुशी, मेरा जो कुछ काम था उसे मैं पूरा कर चुकी

मगर मैं अपनी तरफ से यह पूछती हूँ कि तुम कै दिन तक इस तरह से गुजारा, कर सकोगे ? ( कुछ सोच कर ) नहीं, मेरा यह सवाल करना ही वृथा है क्योंकि मैं खूब जानती हूँ कि दो तीन दिन के अन्दर ही तुम्हारा फैसला हो जायगा और तुम इस दुनिया से उठा दिये जाओगे।

भूत०। अगर ऐसाही है तो यह दो तीन दिन का विलम्ब भी क्यों ?

औरत०। इस लिये कि तुम्हारी सजा का ढंग निश्चय कर लिया जाय।

भूत०। ढंग कैसा ? मैं नहीं समझा !

औरत०। मतलब यह कि तुम एक दम से नहीं मार डाले जाओगे बल्कि तरह तरह की तकलीफ देकर तुम्हारी जान ली जायगी, अस्तु यह निश्चय किया जा रहा है कि किस तरह की तकलीफ तुम्हारे लिये उचित है।

भूत०। ये बातें कौन तजबीज कर रहा है ?

औरत०। हमारे मलिक लोग।

भूत०। मालूम होता है कि तुम्हारे मालिक लोग मर्द नहीं हैं हीजड़े हैं या औरत। ऐसे विचार मर्दों के नहीं होते !

औरत०। बेशक ऐसा ही है, हमारे मालिक औरत हैं।

भूत०। ( आश्चर्य से ) औरत हैं !!

औरत०। हां, औरत।

भूत०। मगर मैंने किसी औरत के साथ कभी दुश्मनी नहीं की बल्कि कोई मर्द भी ऐसा न मिलेगा जो मुझे अपना दुश्मन बतावे और कहे कि गदाधरसिंह ने मुझे बर्बाद कर दिया।

औरत०। जो हो, इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती आखिर कोई बात होहीगी तो !!

भूत०। क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारी मालकिन का नाम क्या है अथवा वह कौन हैं ? तुम यकीन रक्खो कि इसके बदले में मैं तुम्हें इतनी दौलत दूँगा कि कभी तुमने आंख से न देखी होगी।

औरत०। मैं ऐसा नहीं कर सकती कि तुम्हें इस कैद से छुड़ा दूँ और तब तुम मुझे बेअन्दाज दौलत देकर मालामाल कर दो इसके अतिरिक्त इस कैदखाने की ताली खुद मालकिन के कब्जे में है।

भूत० । नहीं नहीं, मैं यह नहीं कहता कि तुम मुझे इस कैदखाने से बाहर कर दो ।

औरत० । अगर ऐसा नहीं है तो तुम मुझे किस काम के लिये और कहां से दौलत दे सकते हो !

भूत० । मेरे मकान में जो कुछ दौलत है उसका तो कोई ठिकाना ही नहीं, मगर मेरे पास भी हर दम बटुए में दो चार लाख रुपये की जमा मौजूद रहती है । तुम कह सकती हो कि इस समय तो तुम्हारे पास तुम्हारा बटुआ भी नहीं है .....

औरत० । हां हां मैं यही कहने वाली थी, बल्कि यह भी समझ रखना चाहिये कि इस समय वह बटुआ जिसके कब्जे में होगा उसने वह रकम भी जरूर ही निकाल ली होगी ।

भूत० । ( कुछ बनावटी हँसी के साथ ) नहीं नहीं, इस बात का तो तुम गुमान भी न करो कि वह रकम निकल गई होगी, क्योंकि उसमें कोई जवाहिरात की डिबिया नहीं है या कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई देखते ही दौलत समझ ले, बल्कि उस बटुये में कोई ऐसी चीज है जिसे मेरे सिवाय कोई बता ही नहीं सकता कि यह दौलत है और जो किसी अनजान की निगाह में बिल्कुल रद्दी चीज है, बल्कि यों समझो कि जहां दौलत रक्खी हुई है वहां की ताली उस बटुये में है जिसकी कलई मेरे सिवाय कोई खोल ही नहीं सकता और न मेरे बताये बिना कोई पा ही सकता है । वह दौलत जो लगभग चार पांच लाख रुपये के होगी मैं सिर्फ इतने ही काम के बदले में दे दिया चाहता हूँ कि बटुआ मुझे ला दिया जाय और बतला दिया जाय कि यह स्थान किसका है और मैं किसका कैदी हूँ । मैं समझता हूँ कि मैं जरूर मार ही डाला जाऊँगा, अस्तु ऐसी अवस्था में अगर वह दौलत किसी नेक रहम दिल और गरीब के काम आ जाय तो इससे बढ़ कर खुशी की बात और क्या हो सकती है?

अहा, दुनिया में रुपया भी एक अजीब चीज है ! इसकी आँच को सह जाना कोई हँसी खेल नहीं है । इसे देख कर जिसके मुँह में पानी न भर आवे समझ लो कि वह पूरा महात्मा है, पूरा तपस्वी है, और सचमुच का देवता है । इस कम्बख्त की बदौलत बड़े बड़े घर सत्यानाश हो जाते हैं, भाई भाई में बिगाड़

हो जाता है, दोस्तों की दोस्ती में बट्टा लग जाता है, जोरू और खसम का रिश्ता कच्चे धागे से भी ज्यादे कमजोर होकर टूट जाता है, और ईमानदारी की साफ और सुफेद चादर में ऐसा धब्बा लग जाता है जो किसी तरह छुटाये नहीं छूटता इसे देख कर जो धोखे में न पड़ा, इसे देख कर जिसका इमान न टला, और इसे जिसने हाथ पैर का मैल समझा, बेशक कहना पड़ेगा कि उस पर ईश्वर की कृपा है और वही मुक्ति का वास्तविक पात्र है।

इसकी आँच के सामने एक लौंडी का दिल भला कब तक कड़ा रह सकता है? यद्यपि उस औरत ने अपने चेहरे के उतार चढ़ाव को बहुत सम्भाला फिर भी भूतनाथ जान ही गया कि यह लालच के फन्दे में फँस गई।

भूत०। सच तो यों है कि उस दौलत को मैं बहुत ही सस्ते दाम में बल्कि मुफ्त मोल में बेच रहा हूँ, अब भी अगर तुम न खरीदो तो मैं जोर देकर कहूँगा कि तुमसे बढ़ कर बदनसीब इस दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। क्या वह दौलत कम है? क्या उसे पाकर फिर भी किसी की नौकरी की जरूरत रह सकती है? क्या उसकी बदौलत सुख का सामान इकट्ठा होने में किसी तरह की त्रुटि हो सकती है? बिल्कुल नहीं! फिर सोच विचार क्यों और विलम्ब कैसा? केवल हमारा ऐयारी का बटुआ ला देना और यह बता देना कि मैं किसका कैदी हूँ और इस स्थान का मालिक कौन है, सिर्फ इतने ही के बदले में अभी अभी यह रकम तुम्हें मिल सकती है सो भी ऐसी कि उसे कोई छीन भी न सकेगा।

औरत०। तुम यकीन जानो कि मैं एक अमीर की लौंडी हूँ, मेरी मालकिन बेअन्दाज दौलत लुटाने वाली है, और उसकी बदौलत मुझे किसी बात की पर्वाह नहीं है.....

भूत०। (बात काट कर) मगर लौंडीपन का तौक गले में जरूर पड़ा हुआ है, स्वतन्त्र नहीं, लापर्वाह नहीं, और बेफिक्र नहीं!

औरत०। हाँ, यह सच है मगर उसकी नौकरी मुझे गढ़ाती नहीं और वह मुझसे बहिनापे का सा बर्ताव करती है, मगर फिर भी अगर तुम खुशी से दोगे तो मैं उस दौलत को जरूर ले लूँगी लेकिन सिर्फ ऐसी अवस्था में कि मुझ पर नमकहरामी का धब्बा न लग सके।

भूत०। नहीं नहीं, तुम पर नमकहरामी का धब्बा नहीं लग सकेगा और

तुम्हारी मालकिन का भी कुछ नुकसान नहीं होगा क्योंकि मैं इस कैदखाने से छूट कर भाग जाना नहीं चाहता, केवल इतना ही जानना चाहता हूँ कि मैं किसका कैदी हूँ और अपना बटुआ केवल इतने ही के लिए माँगता हूँ कि उस खजाने की ताली निकाल कर तुम्हें दे दूँ और बता दूँ कि वह खजाना कहाँ है।

औरत०। अच्छा पहिले मैं बटुआ लाकर तुम्हें दे दूँ तब पीछे बता दूँगी कि तुम किसके कैदी हो, सब्र करो और दिन बीत जाने दो, देखो वह दूसरी लौंडी आती है, अब मैं बिदा होती हूँ।

इतना कह कर वह लौंडी भूतनाथ के दिल में खुशी और उम्मीद का पौधा जमा कर चली गई।

भूतनाथ बड़ा ही कट्टर और दुःख सुख बर्दाश्त करने वाला ऐयार था। कठिन से कठिन समय आ पहुँचने पर भी उसकी हिम्मत टूटती न थी और वह अपनी कार्रवाई से बाज नहीं आता था।

खाने पीने का सामान जो कुछ उसके सामने आ गया था वह पानी के सिवाय बाकी सब कुछ ज्यों का त्यों पड़ा रह गया। भूतनाथ को सिर्फ इस बात का इन्तजार था कि दिन बीते, अन्धेरा हो, और वह लौंडी आवे। इस बीच में बारी बारी से आठ दस लौंड़ियां उसके पास आईं, उन्होंने तरह तरह की बातें कीं और खाने के लिए समझाया बल्कि यहां तक कहा कि तुम्हारे मैदान जाने और नहाने का भी सामान किया जा सकता है मगर भूतनाथ ने कुछ भी न माना बल्कि उनकी बातों का जवाब तक न दिया औरवे सब की सब निराश होकर लौटती गईं।

दिन बीत गया सन्ध्या हुई और अन्धकार ने अपना दखल जमाना शुरू किया। दो घण्टे रात जाते जाते तक निशादेवी का शून्यमय राज्य हो गया। उस कैदखाने के पास जिसमें भूतनाथ बन्द था पेड़ों की बहुतायत होने के कारण इतना अन्धकार था कि किसी का आना जाना दूर से मालूम नहीं हो सकता था।

भूतनाथ जंगले के पास सीखचा पकड़े हुए खड़ा खड़ा कुछ सोच रहा था कि वही लौंडी जिसके ऊपर भूतनाथ का मोहनी मन्त्र चल चुक था और जो लालच के सुनहरे जाल में फँस चुकी थी हाथ में भूतनाथ का ऐयारी का बटुआ

लिये आ पहुँची और जंगले के सूराख* से हाथ बढ़ा कर धीरे से बोली, "लो गदाधरसिंह ! यह तुम्हारा बटुआ हाजिर है, इसके लिये मुझे बहुत तकलीफ उठानी पड़ी !!"

भूत० । बेशक बेशक, अब हमारा और तुम्हारा दोनों का काम चल गया। ( सम्हल कर, क्योंकि उसके मुँह से 'हमारा काम निकल गया, यह शब्द भी खुशी के मारे निकल आये थे जो कि वह निकालना नहीं चाहता था ) मेरा काम तो सिर्फ इतना ही कि मुझे अपने कैद करने वाले का पता लग जायगा मगर तुम अब हर तरह से प्रसन्न और स्वतन्त्र हो जाओगी।

इतना कह कर भूतनाथ ने बटुआ उसके हाथ से ले लिया और कहा, 'क्या इसमें मेरा सब समान ज्यों का त्यों पड़ा हुआ है ?'

लौंडी० । बेशक !

भूत० । तब मैं रोशनी करके देखूँ और वह ताली निकालूँ ?

लौंडी० । नहीं नहीं, रोशनी करने का मौका नहीं है, जो कुछ तुम्हें करना है अन्धेरे ही में करो और जो कुछ निकालना है उसे टटोल कर निकालो, मैं तुम्हें फिर भी विश्वास दिलाती हूँ कि तुम्हारी सब चीजें इसमें ज्यों की त्यों रक्खी हैं।

भूत० । खैर कोई चिन्ता नहीं, मैं सब काम अन्धेरे ही में कर सकूँगा, अगर मेरी चीजें ज्यों की त्यों रक्खी हैं और इधर उधर नहीं की गईं तो मुझे रोशनी की कुछ भी जरूरत नहीं है। अच्छा अब वह असल काम हो जाना चाहिये अर्थात् मुझे मालूम हो जाना चाहिये कि मैं किसका कैदी हूँ।

लौंडी० । हाँ मैं बताती हूँ ( कुछ सोच कर ) मगर मैं फिर सोचती हूँ कि यह काम मेरे लिये बिलकुल ही अनुचित होगा, मालिक का नाम तुम्हें बता देना निःसन्देह मालिक के साथ दुश्मनी करना है।

भूत० । यह सोचना तुम्हारी बुद्धिमानी नहीं है बल्कि बेवकूफी है, हाँ यदि मैं स्वतन्त्र होता और मैदान में तुमसे मुलाकात हुई होती तो तुम्हारा यह सोचना कुछ उचित भी हो सकता था। तुम देख रही हो कि मैं किस अवस्था में हूँ और मेरी तकदीर में क्या लिखा हुआ है। फिर, मैं इस समय कर ही क्या सकता हूँ ? सोचो तो...

* जिसे खोल कर खाने पीने की चीजें अन्दर रखी जाती थीं।

लौंडी० । हाँ एक तौर पर तुम्हारा कहना भी ठीक ही है, अच्छा मैं बताये देती हूँ कि तुम्हारा दुश्मन कौन है और तुम्हें किसने कैद किया ।

भूत० । हाँ बस मैं इतना ही सुना चाहता हूँ ।

लौंडी० । तुम्हें उसी ने कैद किया है जिसके पति को तुमने बेईमानी और नमकहरामी करके बड़ी निर्दयता के साथ बेकसूर मारा है । दयाराम को मार कर तुम इस दुनिया में सुखी नहीं हो सके और न भविष्य में तुम्हारे सुखी होने की आशा है ।

भूत० । ( चौंक कर ताज्जुब के साथ ) हैं !! क्या दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जीती हैं ? और उनको इस बात का विश्वास है कि दयाराम को मैं ही ने मार डाला है ?

लौंडी० । हाँ, वे दोनों जीती हैं, और उन्हें इस बात का विश्वास है ।

भूत० । मगर यह बात सच नहीं है, अपने प्यारे मित्र दयाराम को मैंने नहीं मारा बल्कि किसी दूसरे ही ने मारा है ।

लौंडी० । खैर इन बातों से तो मुझे कोई सम्बन्ध नहीं । मैं तो लौंडी ठहरी, जो कुछ सुनती हूँ वही जानती हूँ !!

भूत० । अच्छा अच्छा, मुझे इन बातों से कुछ फायदा भी नहीं है, बस विश्वास इसी बात का हो जाना चाहिये कि तुम सच कहती हो और वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जीती हैं । मुझे खूब याद है कि उनके मर जाने की खबर बड़ी सचाई के साथ उड़ी थी और उनके क्रिया कर्म में बहुत ज्यादे रुपया खर्च किया गया था जिसे मैं निज के तौर पर बहुत अच्छी तरह जानता हूँ । इस बारे में तुम मुझे क्योंकर धोखा दे सकती हो !!

लौंडी० । तुम जो चाहो सो समझो और कहो, मैं तुमसे बहस करने के लिये नहीं आई हूँ और न इन सब रहस्यों को जानती ही हूँ, बात जो सच है वही कहती हूँ ।

भूत० । मगर मुझे विश्वास नहीं आता ।

लौंडी० । विश्वास नहीं आता तो जाने दो ।

भूत० । ऐसी अवस्था में मैं इनाम भी नहीं दे सकता ।

लौंडी० । मुझे इसकी भी कोई परवाह नहीं है ।

भूत०। अच्छा तो जाओ अपना काम देखो।

लौंडी०। बटुआ मुझे वापस कर दो, जहाँ से मैं लाई हूँ वहाँ रख आऊँ और बदनामी से बचूँ।

भूतनाथ उस लौंडी से बातें भी करता जाता था और अपने बटुए में से जिसे लौंडी ने ला दिया था अन्धेरे ही में टटोल टटोल कर कुछ निकालता भी जाता था जिसकी खबर उस लौंड़ी को कुछ भी न थी और न अन्धकार के कारण वह कुछ देख ही सकती थी। अस्तु लौंडी की बात का भूतनाथ ने पुनः यों जवाब दिया:—

भूत०। बदनामी से तो तुम किसी तरह नहीं बच सकती हो। अगर मैं यह बटुआ तुम्हें वापस न दूँ तो तुम क्या करोगी?

लौंडी०। मैं खूब चिल्लाऊँगी कि किसी लौंडी ने यह बटुआ ला कर भूतनाथ को दे दिया है!

भूत०। लेकिन लोगों के इकट्ठा हो जाने पर मैं यही कह दूँगा कि इस लौंडी ने ला दिया है।

लौंडी०। मगर इस बात का किसी को विश्वास न होगा।

भूत०। (हँस कर) मालूम होता है कि तुम विश्वासपात्र समझी जाती हो! खैर तुम नहीं तो कोई दूसरी तुम्हारी साथिन पकड़ी जायगी।

लौंडी०। जो होगा देखा जायगा।

भूत०। मगर नहीं, मैं ऐसा बेईमान नहीं हूँ,। लो यह बटुआ देता हूँ, जहाँ से तुम लाई हो रख आओ। क्या कहूँ, मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास ही नहीं होता नहीं तो मैं वह खजाना जरूर तुम्हें दे देता।

इतना कह कर भूतनाथ ने वह बटुआ लौंड़ी की तरफ बढ़ाया। उसने जिस तरह दिया था उसी तरह ले लिया और यह कहती हुई वहाँ से चली गई, "बुरे लोगों से बातचीत करना भी बहुत ही बुरा है, इस काम के लिये मुझे जिन्दगी भर पछताना पड़ेगा!"

जब वह लौंडी कुछ दूर चली गई तब भूतनाथ ने धीरे से यह जवाब दिया जिसे वह खुद ही सुन सकता था—"तुम्हारे लिये चाहे जो हो मगर मेरा काम निकल ही गया। अब मैं इस पेचीले मामले की गुत्थी अच्छी तरह

सुलझा लूँगा।"

भूतनाथ ने बात करते करते उस बटुए में से जो कई चीजें निकाल ली थीं उनमें दो शीशियाँ भी थीं जिनमें किसी तरह का अर्क था। एक शीशी का अर्क किसी ढंग से भूतनाथ ने कैदखाने के कई सीखचों की जड़ में लगाया और इसके कुछ देर बाद दूसरी शीशी का अर्क भी उसी जगह पर लगाया जिससे उतनी जगह का लोहा गल कर मोम की तरह हो गया और भूतनाथ ने उसे बड़ी आसानी से हटाकर अपने निकलने लायक रास्ता बना लिया। बात की बात में भूतनाथ कैदखाने के बाहर हो गया और मैदान की हवा खाने लगा।

भूतनाथ कैदखाने के बाहर हो गया सही मगर उसके लिये इस घाटी से बाहर हो जाना बड़ा ही कठिन था। एक तो अन्धेरी रात, दूसरे पहाड़ की ढालवीं और अनगढ़े ढोकों वाली पथरीली जमीन, तिस पर पगडण्डी और रास्ते का कुछ पता नहीं। मगर खैर जो होगा देखा जायगा, भूतनाथ को इन बातों की कुछ पर्वाह न थी।

अब हम थोड़ा सा हाल उस लौंडी का बयान करेंगे जो भूतनाथ के हाथ से बटुआ वापस लेकर चली गई थी।

उसे अपने किये पर बड़ा ही पछतावा था, उसे इस बात का बड़ा ही दुःख था कि उसने भूतनाथ से अपने मालिकों का नाम बता दिया जो अपने को बहुत ही छिपा कर इस घाटी में रहती थीं। अब वह इस बात को खूब समझने लगी कि अगर भूतनाथ किसी तरह छूट कर निकल गया तो मेरे इस कर्म का बहुत ही बुरा नतीजा निकलेगा और भेद खुल जाने के कारण मेरे मालिकों को सख्त तकलीफ उठानी पड़ेगी। वह यही सोचती हुई जा रही थी कि मैंने बहुत ही बुरा किया जो लालच में पड़ कर अपने बेकसूर मालिकों के साथ ऐसा बेईमानी का बर्ताव किया! अब क्या किया जाय और मैं अपने इस पाप का क्या प्रायश्चित करूँ?

साथ ही इसके उसने यह भी सोचा कि भूतनाथ का यह बटुआ कुछ हलका मालूम पड़ता है। इसमें अब वह वजन नहीं है जो पहिले था जब मैं लाई थी। मालूम होता है भूतनाथ ने अन्धेरे में टटोल कर अपने मतलब की चीज निकाल ली। अपने हाथ की रक्खी हुई चीज निकालने के लिये बुद्धिमान आदमी को

रोशनी की जरूरत नहीं पड़ती। भूतनाथ ने बड़ी चलाकी की, अपना काम भी कर लिया और मुझे बेवकूफ बना कर विदा किया! मैं ही ऐसी कम्बख्त थी जो उसके फन्दे में आ गई, अब मुझे जरूर अपने इस पाप का प्रायश्चित करना पड़ेगा!!"

इसी तरह की बातें सोचती वह लौंडी वहाँ से चली गई।

# तेरहवाँ बयान

रात आधी से ज्यादे बीत जाने पर भी विमला और इन्दुमति की आँखों में नींद नहीं है। न मालूम किस गम्भीर विषय पर ये तीनों विचार कर रही हैं। सम्भव है कि भूतनाथ के विषय ही में कुछ विचार कर रही हों। अस्तु जो कुछ है इनकी बातचीत सुनने से मालूम हो जायगा।

इन्दु०। (विमला की तरफ देख कर) बहिन! जब इस बात का निश्चय हो गया कि तुम्हारे पति को गदाधरसिंह (भूतनाथ) ने मार डाला है तब उसके लिये बहुत बड़े जाल फैलाने और सोच विचार करने की जरूरत ही क्या है? जब वह कम्बख्त तुम्हारे कब्जे में आ गया है तो उसे मार कर सहज ही में बखेड़ा तै करो!

विमला०। (ऊंची साँस लेकर) हाय! बहिन तुम क्या कहती हो? इस कर्मीने को योंही सहज में मार डालने से क्या मेरे दिल की आग बुझ जायगी? क्या कहा जायगा कि मैंने उसे मार कर अपना बदला ले लिया? किसी को मार डालना और बात है और बदला लेना और बात है। इसने मेरे दिल को जो कुछ सदमा पहुँचाया है उससे सौ गुना ज्यादे दुःख इसे हो तब मैं समझूँ कि मैंने कुछ बदला लिया।

इन्दु०। बहिन! तुम खुद कह चुकी हो कि यह बहुत बुरी बला है अस्तु यदि यह तुम्हारे कब्जे से निकल गया या तुम्हारे असल भेद की इसे खबर हो गई तो बहुत बुरा हो जायगा।

विमला०। बल्कि अनर्थ हो जायगा! तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, मगर उसे हमारा भेद कुछ भी नहीं मालूम हो सकता और न वह यहाँ से निकल कर भाग जा सकता है।

इन्दु० । ईश्वर करे ऐसा ही हो, मगर.....

कला० । कल इन्द्रदेवजी यहाँ आयेंगे, उनसे राय करके कोई न कोई कार्रवाई बहुत जल्द की जायगी ।

विमला० । मैं सोच रही हूँ कि तब तक इसकी ( पड़ोस वाली ) घाटी पर कब्जा कर लिया जाय, उसका सदर दर्वाजा जिधर से वे लोग आते जाते हैं बन्द कर दिया जाय, उसके आदमी सब मार डाले जायँ और उसका माल असबाब सब लूट लिया जाय, और इन बातों की खबर भूतनाथ को भी दे दी जाय ।

इन्दु० । बहुत अच्छी बात है ।

विमला० । और इतना काम मैं सहज ही में कर भी सकूँगी ।

इन्दु० । सो कैसे ?

विमला० । तुम देखती रहो सब काम तुम्हारे सामने ही तो होगा ।

कला० । हाँ कल ही इस काम को करके छुट्टी पा लेना चाहिये जिसमें इन्द्रदेवीजी आवें तो उनके दिल को भी कुछ ढाढ़स पहुँचे ।

विमला० । कल नहीं आज बल्कि इसी समय उस घाटी का रास्ता बन्द कर दिया जाय जिसमें वे लोग भाग कर बाहर न चले जायँ ।

इन्दु० । अगर ऐसा हो जाय तो बहुत ही अच्छी बात है, मगर दूसरे के घर में तुम इस तरह की कार्रवाई.....

विमला० । ( मुस्कुरा कर ) नहीं बहिन, तुम व्यर्थ इतना सोच कर रही हो ? बात यह है कि जिस तरह यह स्थान और घाटी जिसमें हम लोग रहती हैं, इन्द्रदेवजी के अधिकार में है, उसी तरह वह घाटी भी जिसमें भूतनाथ रहता है इस घाटी का एक हिस्सा होने के कारण इन्द्रदेवजी के अधिकार में है । यह दोनों घाटी एक ही हैं, या यों कहा कि एक ही मकान का यह जनाना हिस्सा और वह मर्दाना हिस्सा है और इसलिए इन दोनों जगहों का पूरा पूरा भेद इन्द्रदेवजी ही को मालूम है और उन्होंने जो कुछ मुझे बताया है मैं जानती हूँ । इस बात की खबर भूतनाथ को कुछ भी नहीं है । यह घाटी जिसमें मैं रहती हूँ हमेशे बन्द रहती थी मगर उस घाटी का दर्वाजा बराबर न जाने क्यों खुला ही रहता था, शायद इसका सबब यह हो कि उस घाटी में कोई जोखम की चीज नहीं है

और न कोई अच्छी इमारत ही है, अस्तु भूतनाथ यह भी नहीं जानता कि उस घाटी का दर्वाजा कहाँ है तथा क्यों कर खुलता और बन्द होता है या इस स्थान का कोई मालिक भी है या नहीं। भूतनाथ को घूमते फिरते इत्तफाक से या और किसी वजह से वह घाटी मिल गई और उसने उसे अपना बना लिया और जब यह खबर इन्द्रदेवजी को और मुझको मालूम हुई तब उन्होंने मेरी इच्छानुसार यह स्थान मुझे देकर यहाँ के बहुत से भेद मुझे बता दिए। बस अब मैं समझती हूँ कि तुम्हें मेरी बातों का तत्व मालूम हो गया होगा।

इन्दु०। हाँ अब मैं समझ गई, ऐसी अवस्था में तुम जो चाहो सो कर सकती हो।

विमला०। अच्छा तो मैं जाती हूँ और जो कुछ सोचा है उस काम को ठीक करती हूँ।

इतना कह कर विमला उठ खड़ी हुई और इन्दुमति तथा कला को उसी जगह बैठे रहने की ताकीद कर घर के बाहर निकलने लगी, मगर इन्दु ने साथ जाने के लिए जिद्द की और बहुत कुछ समझाने पर भी न मानी, लाचार विमला इन्दु को साथ ले गई और कला को उसी जगह छोड़ गई।

भूतनाथ का साथ छोड़ कर प्रभाकरसिंह के इस घाटी में आने का हाल हमारे पाठक भूले न होंगे। उन्हें याद होगा कि भूतनाथ की घाटी के अन्दर जाने वाले सुरंग के बीच में एक चौमुहाना था जहाँ पहुँच कर प्रभाकरसिंह ने भूतनाथ और इन्दुमति का साथ छोड़ा था और कला तथा विमला के साथ दूसरी राह पर चल पड़े थे। आज इन्दुमति को साथ लिए हुए विमला पुनः उसी जगह जाती है।

उस सुरंग के अन्दर वाले चौमुहाने में एक रास्ता तो भूतनाथ की घाटी में जाने के लिये था, दूसरा रास्ता सुरंग के बाहर निकल जाने के लिये था, और तीसरा तथा चौथा रास्ता ( या सुरंग ) कला और विमला की घाटी में आने के लिए था। एक रास्ता तो ठीक उस घाटी में आता था जिधर से प्रभाकरसिंह आये थे और दूसरा रास्ता विमला के महल में जाता था।

विमला के घर आने वाले दोनों रास्ते एक रंग ढंग के बने हुए थे और उनके अन्दर के तिलिस्मी दर्वाजे भी एक ही तरह के तथा गिनती में एक

बराबर थे, अस्तु एक सुरंग का हाल पढ़ कर पाठक समझ जायँगे कि दूसरी तरफ वाली सुरंग की अवस्था भी वैसी ही है जो विमला के घर को जाती है।

उस सुरंग के चौमुहाने में पहुँच कर जब विमला की घाटी में आने वाली सुरंग की तरफ बढ़िये तो कई कदम जाने बाद एक ( कम उँची ) दहलीज मिलेगी जिसके अन्दर पैर रख कर ज्यों ज्यों आगे बढ़िए त्यों त्यों वह दहलीज ऊँची होती जायगी, यहाँ तक कि बीस पचीस कदम आगे जाते जाते वह दहलीज ऊँची होकर सुरंग की छत के साथ मिल जायगी और फिर पीछे की तरफ लौटने के लिए रास्ता न रहेगा। उसके पास ही दाहिनी तरफ दीवार के अन्दर एक पेंच है जिसे कायदे के साथ घुमाने पर वह दर्वाजा खुल सकता है। अगर वह पेंच न घुमाया जाय और उस दहलीज के अन्दर कोई न हो, जाने वाला आगे निकल गया हो, तो खुदबखुद भी वह रास्ता बारह घण्टे के बाद खुल जायगा और वह दहलीज धीरे धीरे नीची हो कर करीब करीब जमीन के बराबर अर्थात् ज्यों की त्यों हो जायगी।

रास्ता कैसा पेचीला और तंग है इसका हाल हम चौथे बयान में लिख आये हैं पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। लगभग तीन सौ कदम आगे जाने बाद एक और बन्द दर्वाजा मिलेगा जो किसी पेंच के सहारे पर खुलता और बन्द होता है। पेंच घुमा कर खोल देने पर भी उसके दोनों पल्ले अलग नहीं होते भिड़के रहते हैं, हाथ का धक्का दीजिये तो खुल जायंगे और कुछ देर बाद आपसे आप बन्द भी हो जायँगे मगर पुनः दूसरी बार केवल धक्का देने से वह दर्वाजा न खुलेगा असल पेंच घुमाने की जरूरत पड़ेगी। दोनों दरवाजों के दोनों तरफ एक ही ढंग के तिलिस्मी पेंच दर्वाजा खोलने और बन्द करने के लिए बने हुए थे और इसका हाल भूतनाथ को कुछ भी मालूम न था। इसके अतिरिक्त उस सुरंग का सदर दर्वाजा भी ( जिसके अन्दर घुसने के बाद चौमुहानी मिलती थी ) बन्द हो सकता था और यह बात विमला के आधीन थी। केवल इतना ही नहीं, उस चौमुहाने से भूतनाथ की घाटी की तरफ जाने वाले सुरंग में भी एक दर्वाजा (इन दोनों सुरंगों की तरफ) था और उसका हाल भी यद्यपि भूतनाथ को तो मालूम न था मगर विमला उसे भी बन्द कर सकती थी।

इन्दु को साथ लिए हुए विमला उसी सुरंग में घुसी और उस सुरंग के भेद

इन्दु को समझाती तथा दर्वाजा खोलती और बन्द करती हुई उसी चौमुहाने पर पहुँची जिसका हाल ऊपर कई दफे लिखा जा चुका है और जहाँ पर प्रभाकरसिंह ने इन्दु का साथ छोड़ा था। वहाँ पहुँच कर कुछ देर के लिए विमला अटकी और आहट लेने लगी कि भूतनाथ की घाटी में आने वाला कोई आदमी तो इस समय इस सुरंग में मौजूद नहीं। जब सन्नाटा मालूम हुआ और किसी आदमी के वहाँ होने का गुमान न रहा तब वह भूतनाथ वाली घाटी की तरफ जो रास्ता गया था उस सुरंग में घुसी और दस बारह कदम जाने बाद दीवार के अन्दर बने हुए किसी कल पुरजे को घुमा कर उस सुरंग का रास्ता उसने बंद कर दिया। लोहे का एक मोटा तख्ता दीवार के अन्दर से निकला और रास्ता बन्द करता हुआ दूसरी दीवार के अन्दर कुछ घुस कर अटक गया।

इसके बाद विमला सुरंग के सदर दर्वाजे पर दर्वाजा बन्द करने के लिए पहुँची ही थी कि सुरंग के अन्दर घुसते हुए भूतनाथ के शागिर्द भोलासिंह पर निगाह पड़ी और उसने भी इन दोनों औरतों को देख लिया। वह इन्दु को अच्छी तरह देख चुका था अस्तु निगाह पड़ते ही पहिचान गया और आश्चर्य के साथ देखता हुआ बोला—"आह! मेरी रानी! तुम यहाँ कहाँ? तुम्हारे लिए तो हमारे गुरूजी बहुत परेशान हैं!!

इस जगह बखूबी उजाला था इस लिए इन्दु ने भोलासिंह को और भोलासिंह ने इन्दु को बखूबी पहिचान लिया। इन्दु पर क्या क्या मुसीबतें गुजरीं और प्रभाकरसिंह कहाँ गए इन बातों की खबर भोलासिंह को कुछ भी न थी, इसीलिए वह इस समय इन्दु को देख कर खुश हुआ और ताज्जुब करने लगा। इन्दु ने धीरे से विमला को समझाया कि यह भूतनाथ का शागिर्द है।

इन्दु उसे पहिचानती थी सही मगर नाम कदाचित् नहीं जानती थी। वह उसकी बात का जवाब दिया ही चाहती थी कि विमला ने उँगली दबा कर उसे चुप रहने का इशारा किया और कुछ आगे बढ़ कर कहा, "तुम्हारे गुरुजी ने इन्हें मौत के पंजे से छुड़ाया और इनकी बदौलत उसी आफत से मेरी भी जान बची है।"

भोला०। गुरुजी कहाँ हैं?

विमला०। हमारे साथ आओ और उनसे मुलाकात करके सुनो कि उन्होंने

इस बीच में कैसे कैसे अनूठे काम किए हैं।

भोला०। चलो चलो, मैं बहुत जल्द उनसे मिला चाहता हूँ!

विमला ने इन्दु को अपने आगे किया और भोलासिंह को पीछे आने का इशारा करके अपनी घाटी की तरफ रवाना हुई।

विमला इस सुरंग का सदर दर्वाजा बन्द न कर सकी, खैर इसकी उसे ज्यादे परवाह भी न थी। चौमुहानें से जो भूतनाथ की घाटी की तरफ रास्ता गया था उसी को बन्द कर उसने सन्तोष लाभ कर लिया। विमला के पीछे पीछे चल कर भोलासिंह उस चौमुहाने तक पहुँचा मगर जब विमला अपनी घाटी की तरफ अर्थात् सामने वाले सुरंग में रवाना हुई तब भोलासिंह रुका और बोला, "इस तरफ तो हमारे गुरुजी कभी जाते न थे और उन्होंने दूसरों को भी इधर जाने से मना कर दिया था! आज वे इधर कैसे गये!"

विमला०। हाँ पहिले उनका शायद यही खयाल था मगर आज तो इसी मकान में बैठे हुए हैं।

भोला०। क्या इसके अन्दर कोई मकान है?

विमला०। हाँ बहुत सुन्दर मकान है?

भोला०। कितनी दूर पर?

विमला०। बहुत थोड़ी दूर पर, तुम आओ तो सही।

"ये दोनों औरतें बेचारी भला मेरे साथ क्या दगा करेंगी!" यह सोच भोलासिंह आगे बढ़ा और इनके साथ सुरंग के अन्दर घुस गया।

जो हाल प्रभाकरसिंह का इस सुरंग में हुआ था वही हाल इस समय भोलासिंह का हुआ अर्थात् पीछे की तरफ लौटने का रास्ता बन्द हो गया और विमला तथा इन्दु के आगे बढ़ जाने तथा चुप हो जाने के कारण वह जोर जोर से पुकारने और टटोल टटोल कर आगे की तरफ बढ़ने लगा।

प्रभाकरसिंह को इसके आगे का दर्वाजा खुला हुआ मिला था मगर भोलासिंह को आगे का दर्वाजा खुला हुआ न मिला, उसे दोनों दर्वाजों के अन्दर बन्द करके विमला और इन्दु अपने डेरे की तरफ निकल गईं।

● पहिला हिस्सा समाप्त ●

# भूतनाथ

उपन्यास

अथवा भूतनाथ की जीवनी

दूसरा हिस्सा

## पहिला बयान

रात बहुत कम बाकी थी जब बिमला और इन्दुमती लौट कर घर में आईं जहां कला को अकेली छोड़ गई थीं। यहां आते ही बिमला ने देखा कि उसकी प्यारी लौंडी चन्दो जमीन पर पड़ी हुई मौत का इन्तजार कर रही है, उसका दम टूटा ही चाहता है, आंखें बन्द हैं, और अधखुले मुंह से रुक रुक कर सांस आती जाती है, बीच बीच में हिचकी भी आ जाती है। कला झारी में गङ्गाजल लिये उसके मुंह में शायद टपका चुकी या टपकाया चाहती है।

यह अवस्था देख कर बिमला घबड़ा गई और ताज्जुब करने लगी कि उसकी इस थोड़ी देर की गैरहाजिरी में यह क्या हो गया और चन्दो यकायक किस बीमारी में फंस गई जो इस समय उसकी जिन्दगी का चिराग इस तरह टिमटिमा रहा है, बल्कि बुझा चाहता है! बिमला ने घबरा कर कला से पूछा, "यह क्या मामला है और इस कम्बख्त को हो क्या गया है?"

कला०। मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि चन्दो अब इस असार संसार को छोड़ा चाहती है, अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिये इस कम्बख्त ने जहर खा लिया है और अब रग रग में जहर भीज गया है तब यहां आकर

सब हाल कहा है। मैंने जहर उतर जाने के लिये दवाई इसे खिलाई है मगर कुछ फायदा होने का रङ्ग नहीं है क्योंकि देर बहुत हो गई कुछ और पहिले दवा पहुँचती तो अच्छा था।

विमला०। राम राम, मगर यह इस कम्बख्त को सूझी क्या? और इसने कौन सा पाप किया है जिसके लिये ऐसा प्रायश्चित्त करना पड़ा?

कला०। बहिन! पाप तो इसने निःसन्देह बहुत भारी किया है जिसका प्रायश्चित्त इसके सिवाय और कुछ यह कर ही नहीं सकती थी, परन्तु मुझे इसके मरने का दुःख अवश्य है। जो काम इसने किया है उसके करने की आशा इससे कदापि नहीं हो सकती थी और जब इससे ऐसा काम हो गया है तो किसी और लौंडी पर अब हम लोग इतना विश्वास भी नहीं कर सकतीं। हा! लालच में पड़कर इस चुड़ैल ने हम दोनों बहिनों का असल हाल गदाधरसिंह को बतला दिया और कह दिया कि तुमसे बदला लेने के लिये यह सब खेल रचे गये हैं, और साथ ही इसके भूतनाथ का बटुआ भी यहां से ले जाकर उसे दे दिया। परंतु इतना करने पर भी जब भूतनाथ ने इसे सूखा ही टरका दिया तब इसे ज्ञान उत्पन्न हुआ और ग्लानि में आकर जहर खा लिया, जब जहर अच्छी तरह तमाम बदन में भीन गया तब यह हम दोनों से मिलने और अपना पाप कहने के लिये यहाँ आई थी। इसे यहां आये बहुत देर नहीं हुई है।

विमला०। (हाथ से अपना माथा ठोक कर) हाय हाय, इस कम्बख्त ने तो बहुत ही बुरा किया!! क्या जाने यह इससे और भी कुछ ज्यादे कर गुजरा हो! जिस भेद को छिपाने के लिये तरह तरह की तरकीबें की गई थीं उस भेद को आज इसने सहज ही में सत्यानास कर दिया! हाय, अब भूतनाथ भी जरूर हमारे कब्जे से निकल गया होगा। जब उसका ऐयारी का बटुआ मिल गया तब वह उस कैदखाने से भी बाहर हो गया हो तो सन्देह नहीं। वह बड़ा ही धूर्त और मक्कार है। जिसके फेर में पड़ कर चन्दा ने हम लोगों को बर्बाद कर दिया और खुद भी दीनदुनिया दोनों में से कहीं के लायक न रही!!

कला०। बेशक ऐसा ही है, यद्यपि इस बात की आशा नहीं हो सकती कि भूतनाथ इस घाटी के बाहर हो जायगा तथापि उसका कैदखाने से बाहर निकल जाना कम कयाहत की बात नहीं है, और इससे भी ज्यादे बुरी बात यह

हुई कि हमारा भेद उसे मालूम हो गया। हाय, ऐसी रात में किसकी हिम्मत पड़ सकती है कि अकेले वहां जा कर भूतनाथ का हाल मालूम करे! अगर वह छूट गया होगा तो जरूर उसी जगह कहीं छिपा होगा, ताज्जुब नहीं कि सूरज निकलते निकलते तक वह कोई आफत.....

विमला०। मेरा भी यही खयाल है। (चन्दो के पास जाकर) हाय शैतान की बच्ची, तूने यह क्या किया? हाय! अगर तू जीती रहती तो तुझसे पूछती कि 'दुष्टे! तूने इतना ही किया कि कुछ और?'

चन्दो यद्यपि मौत के पंजे में फंसी हुई थी और उसकी जान बहुत जल्द निकलने वाली थी मगर वह कला और विमला की बातें सुन रही थी, यद्यपि उसमें जवाब देने की ताकत न थी। उसने विमला की आखिरी बात सुन कर आँखें खोल दीं, विमला की तरफ देखा और इस प्रकार मुँह खोला मानों कुछ कहने के लिये बेचैन हो रही है, बहुत उद्योग कर रही है, मगर उसमें इतनी शक्ति न थी, उसकी आंखें पुनः बन्द हो गईं और अब वह पूरी तरह से बेहोश हो गई। देखते देखते दस पांच हिचकियाँ लेकर उसने विमला और कला के सामने ही दम तोड़ दिया।

अब कला और विमला को यह फिक्र पैदा हुई कि पहिले इसे ठिकाने पहुंचाया जाय या चल कर भूतनाथ की खबर ली जाय, मगर इन्दुमति की राय हुई कि इन दोनों कामों के पहिले बंगले की हिफाजत की जाय (जो इस घाटी के बीच में था और जहां प्रभाकरसिंह पहिले पहिले पहुंचे थे) क्योंकि उसमें बहुत सी जरूरी चीजें रक्खी हुई हैं और साथ ही इसके उसकी जांच करने से बहुत से भेद भी मालूम हो सकते हैं।

इन्दु की इस राय का विमला और कला ने बहुत पसन्द किया और तीनों औरतें हर्बों और जरूरी चीजों से अपने को सजा कर गुप्त राह से बङ्गले की तरफ रवाना हुईं।

इस बङ्गले का हाल हम पहिले खुलासे तौर पर लिख चुके हैं, इसके दर्वाजे ऐसे न थे कि बन्द कर देने पर कोई जबर्दस्ती सहज ही में खोल सके तथा और बातों में भी वह एक छोटा मोटा तिलिस्म या कारीगरी का खजाना ही समझा जाता था। यद्यपि वह बङ्गला ऐसी हिफाजत की जगह में था जहाँ चारों ओर

बदमाशों का गुजर नहीं हो सकता था तथापि उसकी हिफाजत के लिये कई लौंडियाँ मुकर्रर थीं जो मर्दानी सूरत में पहरेदारी के कायदे से उसके चारों तरफ बराबर घूमा करती थीं।

कला विमला और इन्दु ने वहाँ पहुँच कर उस बंगले के दर्वाजे बन्द करने शुरू कर दिये। पहिले बाहर से भीतर आने का रास्ता रोका, इसके बाद कई जरूरी चीजें उनमें से निकाल कर आलमारियों में ताले लगाये और तब भीतर के कमरे सब बन्द कर दिये। इतना कर वे एक छोटे से गुप्त रास्ते को बन्द करती हुई बाहर निकली ही थीं कि एक पहरेदार लौंडी के जोर से चिल्लाने की आवाज आई।

तीनों औरतें कदम बढ़ाती हुई बङ्गले के सदर दर्वाजे पर पहुंचीं जहां नाम मात्र के लिये पहरा रहा करता था या जिधर से पहरेदार लौंडी के चिल्लाने की आवाज आई थी। वह लौंडी मर्दाने भेष में थी और घबराई हुई मालूम पड़ती थी। विमला ने पूछा—"क्या मामला है, तू क्यों चिल्लाई?"

लौंडी०। मेरी रानी, देखो उस पहाड़ी की तरफ जिधर कैदखाना है और जहाँ भूतनाथ कैद है, कई जगह आग की धूनी जल रही है, मालूम होता है मानों बहुत से आदमियों ने आकर उस पहाड़ी पर डेरा जमा लिया हो अगर ये आग की धूनियाँ आपकी तरफ से नहीं सुलगाई गई हैं तो जरूर किसी आने वाली आफत की निशानी हैं, और मुझे विश्वास है कि आपने इसके लिये कोई हुक्म नहीं दिया होगा।

विमला०। (ताज्जुब के साथ उस पहाड़ी की तरफ देख कर) बेशक यह नई बात है, मैंने ऐसा करने के लिये किसी को हुक्म नहीं दिया, मगर इस घबड़ाने की कोई बात नहीं है, जहां तक मैं समझती हूँ यह भूतनाथ की कार्रवाई है क्योंकि 'चन्दो' की मदद से भूतनाथ कैद से छूट गया है और इस समय हमलोग उसी के लिये बन्दोबस्त कर रही हैं।

लौंडी०। (ताज्जुब के साथ) हैं! भूतनाथ कैदखाने से छूट गया? और चन्दो बीबी की मदद से!!

विमला०। हां ऐसी ही बात है, किसी दूसरे वक्त इसका खुलासा हाल तुम्हें

मालूम होगा, इस समय मैं उसी पहाड़ी पर जाती हूँ और भूतनाथ को गिरफ्तार करती हूँ।

कला०। मगर बहिन, मैं इस राय के विरुद्ध हूँ।

विमला०। क्यों ?

कला०। देखो, सोचो तो सही कि इस तरह कई जगहों पर आग सुलगाने या बालने से भूतनाथ का क्या मतलब है !!

विमला०। ( कुछ सोच कर ) जहां तक मैं समझती हूँ इस कार्रवाई से भूतनाथ का यही मतलब होगा कि हम लोगों को धोखा दे कर उस तरफ बुलावे और किसी जगह आड़ में छिप रह कर हमारे ऊपर वार करे।

कला०। बेशक, क्योंकि आग के पास पहुँच कर हम लोग उसे छूट न सकेंगे ! दस्तूर की बात है कि जो कोई सुलगती हुई आग के पास रहता है वह सामने की तरफ की किसी चीज को नहीं देख सकता। वहां तो कई जगह पर आग सुलग रही है, उसके बीच में जाकर हमलोग किसी तरफ भी निगाह करके अपने दुश्मन को नहीं देख सकेंगे।

विमला०। ठीक है मगर हम लोगों पर इस समय उसका कोई हरबा काम नहीं कर सकता !

कला०। तथापि हर तरह से बचा के काम करना चाहिये विशेष कर के इस लिये कि इन्दु बहिन हमारे साथ हैं, यद्यपि ये कहां के सब भेदों को जान गई हैं और हम लोगों का साथ हर तरह दे सकती हैं।

इन्दु०। मेरे लिए कोई तरद्दुद न करो, मैं तुम लोगों के साथ बखूबी चल सकती हूँ मगर मैं यह पूछती हूँ कि ऐसा करने की जरूरत क्या है ? और इस काम में जल्दी किये बिना हर्ज ही क्या होता है ? सम्भव है कि भूतनाथ ने वहाँ ऐयारी का कोई जाल फैलाया हो और इस रात के समय वह कुछ कर भी सके। थोड़ी सी तो रात रह गई है अच्छा होता अगर यह बिता दी जाती। प्रातःकाल हम लोग देखेंगे कि भूतनाथ कहां जाता और क्या करता है ? यद्यपि वह स्वतन्त्र हो गया है मगर इस घाटी के बाहर नहीं जा सकता और हमारे मकान तथा इस बंगले में भी उसका गुजर नहीं हो सकता।

कला० । मैं भी इस राय को पसन्द करती हूँ चलो बंगले के ऊपर छत पर चल कर बैठें ।

विमला० । अच्छा चलो ।

इन्दु० । ( चलते हुए ) मगर ताज्जुब है कि इतनी जल्दी भूतनाथ को आग मुलगाने के लिये इतना सामान कैसे मिल गया !!

कला० । बहिन यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है । हम लोगों की जरूरत के लिये जंगल की लकड़ियाँ बहुत बटोरी गई थीं जिनके बहुत बड़े बड़े दो तीन ढेर वहां कैदखाने के पास ही में लगे हुए थे । मालूम होता है कि उन्हीं लकड़ियों से भूतनाथ ने काम लिया है ।

इन्दु० । हां तब तो उसे बहुत सुबीता मिल गया होगा मगर क्या तुम खयाल कर सकती हो कि भूतनाथ की यह कार्रवाई किसी और मतलब से भी हुई है ?

विमला० । मैं नहीं कह सकती, सम्भव है कि उसका और ही कोई मतलब हो, खैर देखा जायगा ।

इस तरह की बातें करती हुई दर्वाजे खोलती और बन्द करती तीनो बहिनें बंगले की छत पर चढ़ गईं और एक अच्छे ठिकाने बैठ कर उस तरफ देखने और सुबह का इन्तजार करने लगीं ।

इस समय कला और विमला से बहुत बड़ी भूल हो गई, क्योंकि वे तीनो बहिनें इस अद्भुत बंगले की हिफाजत के लिये जब आईं तो उन्होंने रोशनी का कोई खास बन्दोबस्त नहीं किया, बंगले का इन्तजाम करने के बाद वे तीनों बहिनें जब पहरे वाली लौंडी के चिल्लाने की आवाज सुन कर सदर दर्वाजे पर गईं तब उनके पास किसी तरह की रोशनी मौजूद न थी और न उनको अपने काम के लिये रोशनी की जरूरत ही थी, परन्तु जब तक वे पहरा देने वाली लौंडी से बातचीत करतीं और पहाड़ी के ऊपर वाली रोशनी की तरफ देखती रहीं तब तक एक आदमी जो अपने को स्याह कपड़े से छिपाये हुए था आड़ देता हुआ सदर दर्वाजे के पास आ पहुँचा और न मालूम किस ढंग से उस बंगले के अन्दर दाखिल हो गया क्योंकि वे तीनों बहिनें और पहरा देनेवाली लौंडी पहाड़ी की रोशनी ताज्जुब के साथ देखती हुई सदर दर्वाजे से कुछ आगे की तरफ बढ़ गई थीं और

उन्हें इस बात का कुछ खयाल न था कि दुश्मन बगल में आ पहुँचा और अपना काम किया चाहता है। खैर वे तीनों बंगले के अन्दर घुसीं तो दर्वाजा बंद करती हुई छत पर गईं, जैसा कि ऊपर लिख चुके है।

वे तीनों बहिनें उन कई जगह जलती हुई आग की रोशनियों को गौर से देख रही थीं जो अब धीरे धीरे ठण्डी हो रही थीं।

कला०। अब आग थोड़ी देर में बिल्कुल ही ठण्डी हो जायगी।

विमला०। हां और इससे मालूम होता है कि भूतनाथ कहीं आगे की तरफ बढ़ गया।

"आगे की तरफ नहीं बढ़ गया बल्कि इस तरफ चला आया और विश्वास दिलाया चाहता है कि वह आपका दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त है!"

यह आवाज छत के ऊपर जाने वाले दर्वाजे की तरफ से आई थी जो उन तीनो बहिनो के पास ही था।

इस आवाज ने उन तीनों को चौंका दिया, वे उठ खड़ी हुईं और दर्वाजे की तरफ देखने लगीं। अब यहां पर वैसा अन्धकार न था जैसा नीचे खास करके पेड़ो की छांह के सबब से था। चन्द्रदेव उदय हो चुके थे और उनकी चांदनी पल पल भर में बराबर बढ़ती ही चली जाती थी, अस्तु उन तीनों बहिनों ने साफ देख लिया कि दर्वाजे के अन्दर एक पैर बाहर और दूसरा भीतर किये कोई आदमी स्याह लबादा ओढ़े खड़ा है।

विमला०। (उस आदमी से) तुम कौन हो?

आदमी०। गदाधरसिंह।

विमला०। (निडर रह कर) तुमने बड़ी चालाकी से अपने को कैद से छुड़ा लिया!

गदाधर०। बात तो ऐसी ही है।

विमला०। मगर तुम भाग कर इस पहाड़ी के बाहर नहीं जा सकते।

गदाधर०। शायद ऐसा ही हो, मगर मुझे भागने की जरूरत ही क्या है?

विमला०। क्यो? अपनी जान बचाने के लिये तुम जरूर भागना चाहते होगे।

गदाधर०। नहीं, मुझे अपनी जान का यहां कोई खौफ नहीं है क्योंकि

तुम्हारी एक नमकहराम लौंडी ने मुझे बता दिया है कि तुम मेरे प्यारे दोस्त दयाराम की स्त्री हो.....

विमला०। ( बात काट कर ) जिस प्यारे दोस्त को तुमने अपने हाथ से हलाल किया !!

गदाधर०। नहीं नहीं, कदापि नहीं ! जिसने यह बात तुमसे कही है वह बिल्कुल झूठा है और उसने तुम लोगों को धोखे में डाल दिया है, यही समझाने और विश्वास दिलाने के लिये मैं यहाँ अटक गया हूँ और भागना पसन्द नहीं करता। मुझे विश्वास था कि तुम दोनों बहिनों का देहान्त हो चुका है जैसा कि दुनिया में प्रसिद्ध किया गया है, मगर अब तुम दोनों का हाल जान कर भी क्या मैं भागने की इच्छा करूंगा ? नहीं, क्योंकि तुम दोनों को अब भी मैं उसी निगाह से देखता हूँ जैसा अपने प्यारे दोस्त की जिन्दगी में देखता था और यही सबब है कि मुझे तुम दोनों से किसी तरह का डर नहीं लगता।

विमला०। मगर नहीं, तुम्हें हम लोगों से डरना चाहिये, हम लोग तुम्हारे हितेच्छु कभी नहीं हो सकते, क्योंकि हम लोगों ने जो कुछ सुना है वह कदापि झूठ नहीं हो सकता।

गदाधर०। ( दर्वाजे से बाहर निकल कर और विमला के पास आ कर ) मैं विश्वास दिला दूँगा कि मुझ पर झूठा इल्जाम लगाया गया है।

विमला०। ( कई कदम पीछे हट कर और नफरत के साथ ) बस दूर रह मुझसे दुष्ट ! मैं तेरी सूरत नहीं देखा चाहती !!

गदाधर०। ( अपने ऊपर से स्याह कपड़ा हटा कर ) नहीं तुम मेरी सूरत देखो पहिचानो और सुनो कि मैं क्या कहता हूँ।

विमला०। सिवाय बात बनाने के तू और क्या कहेगा ? तू अपने माथे से कलङ्क का टीका किसी तरह नहीं धो सकता और न वह बात झूठी हो सकती है जो मैं सुन चुकी हूँ। दलीपशाह और शम्भू अभी तक दुनिया में मौजूद हैं और मैं भी खास तौर पर इस बात को खूब जानती हूँ।

गदाधर०। मगर सच बात तो यह है कि लोगों ने तुम्हें धोखा दिया और असल भेद छिपा रक्खा। खैर तुम अगर मुझ पर विश्वास नहीं करतीं तो मुझे ज्यादे खुशामद करने की जरूरत नहीं, अब मैं सिर्फ दो चार बातें पूछ कर

चला जाऊंगा। एक तो यह कि तुम मुझे गिरफ्तार कर के यहां लाई थीं मगर मैं अपनी चालाकी से छूट गया, अब बताओ कि मेरे साथ क्या सलूक करोगी?

विमला०। अपने दिल का बुखार निकालने के लिये जो कुछ मुझसे बन पड़ेगा करूंगी, इसे तुम खुद सोच सकते हो।

गदा०। मगर मैं तो अब स्वतंत्र हूँ अगर चाहूँ तो तुम तीनों को इसी जगह खतम करके रख दूँ! मगर नहीं, मैं नमक का ख्याल करता हूँ ऐसा कदापि न करूंगा हां तुमसे बचने के लिये उद्योग जरूर करूंगा

विमला०। कदाचित् ऐसा ही हो!

इतना कह कर विमला ने कला की तरफ देखा।

गदाधरसिंह विमला से बातें कर रहा था मगर उसे इस बात की खबर न थी कि कला क्या कर रही है अथवा क्या किया चाहती है।

कला ने अपने बगल से एक छोटा सा बांस का बना हुआ तमंचा निकाला और गदाधरसिंह (भूतनाथ) की तरफ उसका मुंह करके चलाया।

इस अद्भुत तमंचे में बेहोशी की बारूद भरी जाती थी और इसका तेज तथा जल्द बेहोश कर देने वाला धूआं छूटने के साथ ही तेजी से कई बिलांद तक फैल कर लोगों को बेहोश कर देता था। यहां पर फैलने के लिये विशेष जगह तो थी नहीं इसलिये उस धूयें के गुब्बार ने गदाधरसिंह को चारों तरफ से घेर एक तरह का अन्धकार सा कर दिया।

"गदाधरसिंह धूयें के असर से बेहोश हो ही जायगा!" यह सोच कर विमला कला और इन्दुमती तीनों बहिनें भाग कर नीचे उतर जाने के लिये उठीं और नाक दबाये हुए सीढ़ी की तरफ बढ़ गईं।

गदाधरसिंह बेशक इस धूयें के असर से बेहोश हो जाता मगर उसने पहिले ही से अपने बचाव का बन्दोबस्त कर लिया था अर्थात् ऐसी दवा खा ली थी कि कई घण्टे तक उस पर बेहोशी का असर नहीं हो सकता था तथापि उस धूयें ने एक दफे उसका सर घुमा दिया।

ये तीनों बहिनें वहां से भागी तो सही मगर अफसोस! विमला और इन्दु तो नीचे उतर गईं परन्तु कला को फुर्ती से गदाधरसिंह ने पकड़ कर बन्दी में कर लिया और यह हाल विमला को नीचे उतर कर और कई कमरों में घूम

फिर कर छिप जाने के बाद मालूम हुआ, जब चित्त स्थिर हो जाने पर उसने कला को अपने साथ न देखा।

## दूसरा बयान

दिन पहर भर से कुछ ज्यादे चढ़ चुका है। यद्यपि अभी दोपहर होने में बहुत देर है तो भी धूप की गर्मी इस तरह बढ़ रही है कि अभी से पहाड़ के पत्थर गर्म हो रहे हैं और उन पर पैर रखने की इच्छा नहीं होती, दोपहर दिन चढ़ जाने के बाद यदि ये पत्थर आग के अङ्गारों का मुकाबला करने लग जायं तो आश्चर्य ही क्या है।

पहाड़ के ऊपरी हिस्से पर एक छोटा सा मैदान है जिसका फैलाव लगभग डेढ़ या दो बिगहे के होगा। इसके ऊपर की तरफ सिर उठा कर देखने से मालूम होता है कि कुछ और चढ़ जाने से पहाड़ खतम हो जायगा और फिर सरपट मैदान दिखाई देगा वास्तव में ऐसा नहीं है।

इस छोटे से मैदान में यद्यपि पत्थर के कई छोटे बड़े ढोंके मौजूद हैं जो मैदान की मामूली सफाई में बाधा डालते हैं मगर पत्थर के बड़े बड़े चट्टान भी बहुतायत से दिखाई दे रहे हैं जिनकी वजह से यह जमीन कुछ सुन्दर मालूम होती है मगर इस वक्त धूप की गर्मी के समय सभी बातें बुरी और भयानक जान पड़ रही है।

इस छोटे से मैदान में केवल ढाक ( पलास ) के कई पेड़ दिखाई दे रहे हैं सो भी एक साथ नहीं जिससे किसी तरह आराम मिलने की आशा हो सके। इन्हीं पेड़ों में से एक के साथ हम बेचारी कला को कमन्द के सहारे बंधे हुए और उसके सामने गदाधरसिंह अर्थात् भूतनाथ को खड़े देख रहे हैं, अब सुनिये कि इन दोनों में क्या क्या बातें हो रही हैं।

गदाधर०! रात के समय जब मैंने तुझे गिरफ्तार किया तब यही समझे हुए था कि कला और बिमला में से किसी एक को पकड़ पाया हूँ मगर अब मैं देखता हूँ कि तू कोई और ही औरत है *।

* पाठकों को याद होगा कि कला और बिमला हर वक्त अपनी असली सूरत को एक झिल्ली से छिपाये रहती थीं। इस समय भी कला के चेहरे पर वही झिल्ली है।

कला० । तो क्या उस समय तुमने वहां पर कला और विमला को अच्छी तरह देखा या पहिचाना था ?

गदा० । नहीं पहिचाना तो नहीं था मगर बातें जरूर की थीं और वे बातें भी ऐसे ढंग की थीं जिनसे उनका कला और विमला ही होना साबित होता था ।

कला० । वह तुम्हारा भ्रम था, इस घाटी में कला और विमला नहीं रहती ।

गदा० । ( हंस कर ) बहुत खासे !! अब थोड़ी देर में यह भी कह दोगी कि 'मैं कला और विमला को जानती ही नहीं !'

कला० । नहीं ऐसा तो मैं नहीं कह सकती कि उन दोनों को पहिचानती ही नहीं मगर यह जरूर कहूँगी कि वे दोनों यहाँ नहीं रहतीं और हम लोगों को उनसे कोई वास्ता नहीं ।

गदा० । तो फिर तुम्हारी तरफ से इस ढंग की बातें क्यों की गईं कि मानो तुम ही कला या विमला हो ?

कला० । अब यह तो उनसे पूछो तो मालूम हो जिन्होंने तुमसे बातें की थीं, मैंने तो तुमसे एक बात भी नहीं की थी ।

गदा० । वे कौन थीं जो मुझसे बातें कर रही थीं ?

कला० । मेरी मालकिन ।

गदा० । आखिर उनका कुछ नाम पता भी है या नहीं ?

कला० । यह बताने की तो कोई जरूरत नहीं है ।

गदा० । तुझे झख मार के बताना ही पड़ेगा और यह भी बताना पड़ेगा कि कला और विमला कहां हैं ! तेरा यह कहना मैं नहीं मान सकता कि कला विमला इस घाटी में नहीं रहतीं और तुम लोगों को उनसे कोई सम्बन्ध नहीं, आखिर तुमने मुझसे दुश्मनी क्यों की और मैं क्यों इस घाटी में कैद कर लाया गया ? तुम लोगों का मैंने क्या बिगाड़ा था ?

कला० । हम लोगों को तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी नहीं है मगर तुम्हारी गिरफ्तारी में हम लोग शरीक जरूर हैं और वह गिरफ्तारी कला और विमला के हुक्म ही से हुई थी । मैं खूब जानती हूँ कि यहां की एक लौंडी ने

तुम्हें कला और विमला की खबर दी थी और कहा था कि कला और विमला ने तुम्हें गिरफ्तार किया है। बेशक उसका यह कहना सच था, मगर अफसोस तुमने उसके साथ दगा की। यह मैं इसलिये कहती हूँ कि वह मेरी बहिन थी। अगर तुम उसके साथ दगा न करते तो वह जरूर तुम्हें पूरा पूरा भेद बता देती। एक तौर पर तो उसने भण्डा फोड़ ही दिया मगर तुम्हारी सचाई जानने के लिये बहुत कुछ बचा भी रक्खा, अगर तुम अपना वादा पूरा करते तो वह जरूर बचा हुआ भेद भी बता देती और यह भी कह देती कि कला और विमला कहां रहती है। मेरे कहने का मतलब यही है कि तुम उसकी सब बातों को सच न समझना।

गदा०। नहीं, बल्कि तुम्हारा मतलब यह है कि मुझे कुछ दो तो मैं वहां का भेद बताऊं।

कला०। नहीं ऐसा है तो नहीं, मगर तुम जैसा चाहे खयाल कर सकते हो।

गदा०। (मुस्कुरा कर) ठीक है। अच्छा पहिले तुम मेरी उस बात का जवाब तो दो जो मैं पूछ चुका हूँ, पीछे और बातें की जायंगी।

कला०। कौन सी बात का जवाब?

गदा०। यही कि उस रात को मुझसे इस ढंग की बातें क्यों की गईं कि जो कला और विमला ही कर सकती हैं।

कला०। मैं तो समझती हूँ कि तुम्हें ठीक तरह से पहिचान लेने ही के लिये उन्होंने इस ढंग की बातें कीं, क्योंकि हम लोगों को इस बात का निश्चय नहीं था कि वास्तव में तुम ही गदाधरसिंह हो और तुम्हारी गिरफ्तारी में धोखा नहीं हुआ।

गदा०। (मुस्कुराते हुए) बात बनाने में तुम भी बड़ी तेज हो, यद्यपि मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं कर सकता मगर कह सकता हूँ कि शायद तुम्हारा कहना ठीक हो! अच्छा अब यह कहो कि तुम यहां के भेद और कला तथा विमला का हाल मुझे बता सकती हो या नहीं?

कला०। नहीं।

गदा०। इस लिये कि मैंने तुम्हारी बहिन के साथ दगा की, यदि वास्तव में वह तुम्हारी बहिन ही थी?

कला० । सिर्फ इसी लिये नहीं बल्कि इस लिये भी कि यह काम बड़ा ही नाजुक है और ऐसा करने के बाद मैं किसी तरह जीती नहीं रह सकती ।

गदा० । क्यों तुम्हें मारने वाला कौन है ? यहां जितने हैं वे सभी तुम्हारे अपने हैं, इसके अतिरिक्त किसी को मालूम हो क्योंकर हो सकता है कि तुमने मुझे कुछ बताया है ?

कला० । यह बात छिपी नहीं रह सकती, यह घाटी तिलिस्मी है और यहां के हर एक पेड़ पत्तों और पत्थरों के ढोकों का भी कान है, मेरी बहिन ने इस बात का कुछ खयाल नहीं किया और इसी लिये आखिरकार जान से मारी गई ।

गदा० । ( आश्चर्य से ) क्या तुम्हारी बहिन मारी गई ?

कला० । हाँ, क्योंकि मालकिन को तुम्हारी और उसकी बातों का किसी तरह पता लग गया ।

गदा० । रात का समय था, सम्भव है किसी ने छिप कर सुन लिया हो, इसके अतिरिक्त और किसी तिलिस्मी बात का मैं कायल नहीं । इस समय दिन है, चारो तरफ आंखें फैला के देखो किसी की सूरत दिखाई नहीं देती, अस्तु मेरी तुम्हारी बातें कोई सुन नहीं सकता तुम बेखौफ होकर यहां का हाल इस समय मुझे बता सकती हो ।

कला० । नहीं, कदापि नहीं ।

गदा० । ( कमर से खञ्जर निकाल कर और दिखा कर ) नहीं तो फिर इसी से तुम्हारी खबर ली जायगी !

कला० । जो हो, बताने के बाद भी तो मैं किसी तरह बच नहीं सकती ? फिर ऐसी अवस्था में क्यों अपने मालिक को नुकसान पहुँचाऊँ ? तुम्हें चाहे तिलिस्मी बातों का विश्वास न हो पर मैं समझती हूँ कि मेरे और तुम्हारे बीच जो जो बातें हो रही हैं वह सब मेरी मालकिन सुन रही होंगी.....

गदा० । ( खिलखिला के हँस कर ) ठीक है ! तुम्हारी बातें.....

कला० । बेशक ऐसा ही है, अगर मैं इस घाटी के बाहर होती तो इस बात का खयाल न होता और यहां के भेद शायद बता देती ।

गदा० । ( मुस्कुराते हुए ) यही सही, तुम मुझे इस घाटी के बाहर ले चलो और यहां के भेद बता दो तो मैं तुम्हें.....

कला० । नहीं नहीं, किसी तरह का वादा करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि उस पर मुझे विश्वास न होगा, मगर हाँ यदि मुझे दलीपशाह के पास पहुँचा दो तो मैं यहां का पूरा पूरा भेद तुम्हें बता सकती हूँ बल्कि हर तरह से तुम्हारी मदद भी कर सकती ।

गदा० । ( चौंककर ) दलीपशाह !! दलीपशाह से और तुमसे क्या वास्ता ?

कला० । वे मेरे रिश्तेदार हैं और यहां से भाग कर मैं उनके यहा अपनी जान बचा सकती हूँ ।

गदा० । अगर ऐसा ही है तो तुम स्वयं उसके पास क्यों नहीं चली जाती ?

कला० । पहिले तो मुझे यहां से भागने की कोई जरूरत ही नहीं, भागने का खयाल तो सिर्फ इसी सबब से होगा कि तुम्हें यहां के भेद बताऊँगी । दूसरे यह कि आज कल न जाने किस कारण से उन्होंने अपना मकान छोड़ दिया है और किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे हैं ।

गदा० । अगर किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे हैं तो भला मुझे क्योंकर उनका पता लगेगा ?

कला० । तुम्हें उनका पता जरूर मालूम होगा क्योंकि तुम उनके साढ़ू हो और दोस्त भी हो ।

गदा० । यह बात तुम्हें क्योंकर मालूम हुई ?

कला० । भला मैं दलीपशाह की नातेदार होकर यह नहीं जानूंगी कि तुम उनके कौन हो ?

गदा० । ( आश्चर्य के साथ कुछ सोच कर ) अगर तुम्हारी बातें सच हैं तो तुम मेरी भी कुछ नातेदार होवोगी !

कला० । जरूर ऐसा ही है, मगर यहाँ मैं इस बारे में भी कुछ न कहूँगी, दलीपशाह के मकान पर चलने ही से तुम्हें सब हाल मालूम हो जायगा तथा और भी कई बातें ऐसी मालूम होंगी कि जिन्हें जानकर तुम खुश हो जाओगे । इन्हीं बातों को खयाल करके और तुम्हें अपना नजदीकी नातेदार समझ के मैं चाहती हूँ कि तुम्हें इस घाटी के बाहर कर दूँ और खुद भी भाग जाऊँ नहीं तो

यहां रह कर तुम्हारी जान किसी तरह नहीं बच सकती और बिना मेरी मदद के तुम इस घाटी के बाहर भी नहीं जा सकते।

गदा०। (सोच कर) अगर ऐसा ही है तो तुम मेरी नातेदार होकर यहां क्यों रहती हो।

कला०। यहां पर मैं इन सब बातों का कुछ भी जवाब न दूँगी।

कला की बातें सुन कर गदाधरसिंह सोच और तरद्दुद में पड़ गया। वह यहां का भेद जानने के लिये अवश्य ही कला को तकलीफ देता या गुस्से में आकर मार ही डालता मगर कला की बातों ने उसे उलझन में डाल दिया और वह सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। वह जानता था बल्कि उसे विश्वास था कि बिना किसी की मदद के वह इस घाटी के बाहर नहीं निकल सकता है और यहां फंसे रहना भी उसके लिये अच्छा नहीं चाहे वह किसी तरह की ऐयारी करके कितना ही उपद्रव क्यों न मचा ले, अतएव वह बाहर निकल जाना बहुत पसन्द करता था और समझता था कि इत्तफाक ही ने इस समय उसे एक मदद दिला दिया है अब इससे काम न लेना निरी बेवकूफी है मगर कला की बातों ने उसे चक्कर में डाल दिया था। यद्यपि वह दलीपशाह* का पता जानता था मगर कई कारणों से उसके पास या सामने जाना अथवा कला को ले जाना पसन्द नहीं करता था, तथापि कला से उसको इच्छानुसार वादा करने की उसे सख्त जरूरत थी क्योंकि उसे इस बात का शक होता था कि अगर कला से दलीपशाह के पास ले जाने का वादा न करूँगा तो शायद यह मुझे इस खोह के बाहर भी न ले जायगी। वह कला को धोखा देने और वादा करने के लिये तैयार था मगर यह चाहता था कि कला मुझसे वादा पूरा करने के लिये कसम न खिलावे, क्योंकि असली सूरत में कसम खाकर मुंह फेर देने की आदत अभी तक उसमें नहीं पड़ी थी और वह अपने को बहादुर समझता था।

गदाधरसिंह के दिल में ये बातें भी पैदा हो रही थीं कि इस घाटी के मालिक का पता लगाना चाहिये और यहां के भेदों को जानना चाहिये, परन्तु उसने सोचा कि "यहां अकेला बिना किसी मददगार के रह कर मैं कुछ भी न कर

* यह नाम चन्द्रकान्ता सन्तति में आ चुका है।

सकूंगा। यहां के रहने वाले बिल्कुल ही सीधे साधे नहीं मालूम होते। यद्यपि अभी तक यहां किसी मर्द की सूरत नहीं दिखाई दी परन्तु औरतें भी यहां की ऐयारा जान पड़ती हैं। क्या यह औरत भी मुझसे ऐयारी के ढंग पर बातें कर रही है? सम्भव है कि ऐसा ही हो और मुझे इस घाटी के बाहर ले जाने के बहाने से यह किसी खोह या कन्दरा में फंसा कर पुनः कैद कर ले! अभी तक तो मैंने इस बात की भी जांच नहीं की कि इसकी सूरत असली है या बनावटी। मैं अभी अभी इस बात की भी जांच कर लूंगा और इसके बाद इस घाटी के बाहर निकल जाने के लिये इसके साथ किसी खोह या सुरंग के अन्दर घुसूंगा मगर होशियार रहूँगा कि यह मुझसे दगा न करे, न मैं इसे अपने आगे आगे चलने दूँगा और न पीछे रहने दूँगा बल्कि इसका हाथ पकड़े रहूँगा या कमर में कमन्द बांध कर थामे रहूँगा। इस खोह के बाहर निकल जाने पर मैं सब कुछ कर सकूंगा क्योंकि तब यहां का रास्ता भी देखने में आ जायगा, अस्तु अपने दो एक शागिर्दों को मदद के लिये साथ लेकर पुनः यहां आ जाऊंगा और यहां रहने वालों से समझ लूंगा जिन्होंने मुझे गिरफ्तार किया था।"

इत्यादि तरह तरह की बातें गदाधरसिंह बहुत देर तक सोचता रहा और इसके बाद कला से बोला, "अच्छा मैं तुम्हें दलीपशाह के पास ले चलूंगा मगर पहिले तुम पानी से अपना मुंह धोकर मुझे विश्वास दिला दो कि तुम्हारी सूरत बदली हुई नहीं है या तुम ऐयारा नहीं हो और मुझे धोखा नहीं दिया चाहता।"

कला०। हां हां, मैं अपना चेहरा धोने के लिये तैयार हूँ पानी दो।

गदा०। (अपने बटुये में से पानी की एक छोटी सी बोतली निकाल कर और कला की तरफ बढ़ा कर) लो यह पानी तैयार है।

कला ने गदाधरसिंह के हाथ से पानी लेकर अपना चेहरा धो डाला। उसके चेहरे पर किसी तरह का रंग चढ़ा हुआ नहीं था जो धोने से दूर हो जाता बल्कि एक प्रकार की झिल्ली चढ़ी थी जिस पर पानी का कुछ भी असर नहीं हो सकता था। गदाधरसिंह को विश्वास हो गया कि इसकी सूरत बदली हुई नहीं है अस्तु उसने (भूतनाथ) ने इसके हाथ पैर खोल दिये और घाटी के बाहर चलने के लिये कहा।

गदा० । क्या तुम इस दिन के समय मुझे यहां से बाहर ले जा सकती हो ?

कला० । हां ले जा सकती हूँ ।

गदा० । मगर तुम्हारे संगी साथी किसी जगह से छिपे हुए देख सकते हैं ।

कला० । औवल तो शायद ऐसा न होगा, दूसरे अगर कोई दूर से देखता भी होगा तो जब तक वह मेरे पास पहुँचेगा तब तक मैं तुम्हें लिए इस घाटी के बाहर हो जाऊंगी, फिर मुझे बचा लेना तुम्हारा काम है ।

गदा० । ( जोश के साथ ) ओह ! घाटी के बाहर हो जाने पर फिर तुम्हारा कोई क्या बिगाड़ सकता है !!

कला० । तो बस फिर जल्दी करो, मगर हां एक बात तो रही गई !!

गदा० । वह क्या ?

कला० । तुमने मुझसे इस बात की प्रतिज्ञा नहीं की कि दलीपशाह से मुलाकात करा दोगे ?

गदा० । मैं तो पहिले वादा कर चुका हूँ कि तुम्हें दलीपशाह के पास ले चलूंगा ।

कला० । वादा और बात है प्रतिज्ञा और बात है, मैं इस बारे में तुमसे कसम खिला के प्रतिज्ञा कराना चाहती हूँ, तुम क्षत्री हो अस्तु खंजर जिसे दुर्गा समझते हो हाथ में लेकर प्रतिज्ञा करो कि वादा पूरा करोगे ।

गदा० । ( कुछ देर तक सोचने के बाद खंजर हाथ में लेकर ) अच्छा लो मैं कसम खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हें दलीपशाह के घर पहुँचा दूँगा ।

कला० । हां बस मेरी दिलजमयी हो गई ।

इतना कह कर कला उठ खड़ी हुई और गदाधरसिंह को साथ लिये हुए पहाड़ी के नीचे उतरने लगी ।

पाठकों को समझ रखना चाहिये कि इस सुन्दर घाटी से बाहर निकल जाने के लिये केवल एक ही रास्ता नहीं है बल्कि कई रास्ते हैं जिन्हें मौके मौके से समयानुसार ये लोग अर्थात् कला और विमला काम में लाया करती हैं और इनका हाल किसी मौके पर आगे चलकर मालूम होगा । इस समय हम केवल उसी रास्ते का हाल लिखते हैं जिससे गदाधरसिंह को साथ लिये हुये कला बाहर जाने वाली है ।

कला पहाड़ी के कोने की तरफ दबती हुई नीचे उतरने लगी। धूप बहुत तेज हो चुकी थी और गरमी से उसे सख्त तकलीफ हो रही थी तथापि वह बड़े गौर से कुछ सोचती हुई पहाड़ी के नीचे उतर रही थी। जब करीब करीब जमीन के पास पहुँच गई तो एक ऐसा स्थान मिला जहा जंगली झाड़ियाँ बहुतायत से थीं और वहां पत्थर का एक छोटा बुर्ज भी था जिस पर चढ़ने के लिये उसके अन्दर की तरफ छोटी छोटी तीस या पैंतीस सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। उस बुर्ज के ऊपर लोहे की चौरुखी झण्डी लगी हुई थी अर्थात् लोहे के बनावटी बांस पर लोहे के पत्तर की चौरुखी झण्डी इस ढंग की बनी हुई थी कि वह घुमाने से घूम सकती थी। एक झण्डी का रग सुफेद, दूसरी का स्याह, तीसरी का लाल और चौथी झण्डी का पीला था। इस समय पीले रंग वाली झण्डी का रुख बगले की तरफ घूमा हुआ था। वहां पर खड़ी होकर कला ने गदाधरसिंह से कहा, "बस इसी जगह बाहर निकल जाने के लिये एक सुरग है और यह बुर्ज उसकी ताली है अर्थात् दर्वाजा खोलने के लिये पहिले मुझे इस बुर्ज के ऊपर जाना होगा अस्तु तुम इसी जगह खड़े रहो, मैं क्षण भर के लिये ऊपर जाती हूँ।"

गदा०। ( कुछ सोच कर ) तो मुझे भी अपने साथ लेती चलो, मैं देखूंगा कि वहां तुम क्या करती हो।

कला०। ( मुस्कुरा कर ) तो तुम इस रास्ते का भेद जानना चाहते हो!

गदा०। हां बेशक! और इसी लिये तो मैंने तुमसे दलीपशाह के पास पहुँचा देने का वादा किया है।

कला०। अच्छा चलो।

गदाधरसिंह कला के साथ उस बुर्ज के अन्दर घुस गया और उसने देखा कि कला ने ऊपर चढ़ कर उस झण्डी के बांस को जो बुर्ज के बीचोबीच से छत फोड़ कर अन्दर की तरफ निकला हुआ था घुमा दिया, बस इसके अतिरिक्त उसने और कुछ भी नहीं किया और बुर्ज के नीचे उतर आई। बाहर निकलने पर गदाधरसिंह ने देखा कि जिस रुख पर पीले रंग की झण्डी थी अब उस रुख पर लाल रंग की झण्डी है मगर इस काम से और सुरंग के दर्वाजे से क्या सम्बन्ध हो सकता है सो उसकी समझ में न आया। कुछ गौर करने पर उसे यकायक खयाल आया कि वे झण्डियां यहां रहने वालों के लिये इशारे का काम करती

हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है। वह सोचने लगा कि निःसन्देह यह और बड़ी चालाक और धूर्त है, पहिले भी इसी ने मुझ पर वार किया था, बेहोश की दवा से भरा हुआ तमञ्चा इसी ने मुझ पर चलाया था, और इस समय भ इसी से मुझे पाला पड़ा है, देखा चाहिये यह क्या क्या रंग लाती है। इस सम भी अगर यह मेरे साथ दगा करेगी तो मैं इसे दुरुस्त ही करके छोड़ूंगा—इत्यादि

गदाधरसिंह को सोच और विचार में पड़े हुए देख कर कला भी समझ ग कि यह मेरे ही विषय में चिन्ता कर रहा है और इसे इस झण्डी के घुमाने प शक हो गया है अस्तु कला ने शीघ्रता की मुद्रा दिखाते हुए गदाधरसिंह से कह "बस आओ और जल्दी से खोह के अन्दर घुसो क्योंकि इसका पहिला दर्वाज खुल गया है।"

बुर्ज के नीचे उतर आने के बाद गदाधरसिंह को साथ लिये हुए कला वह से पश्चिम तरफ ढालवीं जमीन पर चलने लगी और लगभग तीस या चालीस कदम चलने के बाद एक ऐसी जगह पर पहुँची जहां चार पाँच पेड़ पारिजात के लगे हुए थे और उनके बीच में जङ्गली लताओं से छिपा हुआ खोह का दर्वाज था। कला ने गदाधरसिंह की तरफ देख के कहा, "यही उस खोह का दर्वाजा है जिस राह से हम लोगों का आना जाना होता है, अब मैं इसके अन्दर घुसती हूँ तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ।"

गदा०। जहां तक मेरा खयाल है मैं कह सकता हूँ कि इस खोह के अन्दर जरूर अन्धकार होगा, कहीं ऐसा न हो कि तुम आगे चल कर गायब हो जाओ और मैं अन्धेरे में तुम्हें टटोलता पुकारता और पत्थरों से ठोकर खाता हुआ परेशानी में फंस जाऊं, क्योंकि नित्य आने जाने के कारण यह रास्ता तुम्हारे लिये खेल हो रहा है। इसके अतिरिक्त यह रास्ता एकदम सीधा कभी न होगा जरूर रास्ते में गिरह पड़ी हुई होगी, या यों कहा जाय कि इसके बीच में दो एक तिलिस्मी दर्वाजे जरूर लगे हुए होंगे।

कला०। नहीं नहीं, तुम बेखौफ मेरे पीछे पीछे चले आओ यह रास्ता बहुत साफ है।

गदा०। नहीं मैं ऐसा बेवकूफ नहीं हूँ, बेहतर होगा कि तुम अपनी कमर में मुझे कमन्द बांधने दो, मैं उसे पकड़े हुए तुम्हारे पीछे पीछे चला चलूंगा।

कला० । अगर तुम्हारी यही मर्जी है तो मुझे मंजूर है ।

आखिर ऐसा ही हुआ गदाधरसिंह ने कला की कमर में कमन्द बांधी और उसे आगे आगे चलने के लिये कहा और उसका दूसरा सिरा पकड़े हुए पीछे पीछे आप रवाना हुआ । गदाधरसिंह को इस बात का बहुत खयाल था कि सुरंग की राह से आने जाने का रास्ता किसी तरह मालूम कर ले मगर कला किसी दूसरी ही फिक्र में थी, वह यह नहीं चाहती थी कि इसी सुरंग के अन्दर भूतनाथ अर्थात् गदाधरसिंह को फंसा कर मार डाले । इस समय उसे इस सुरंग से बाहर निकाल देना ही वह पसन्द करती थी, अस्तु वह धीरे धीरे सुरंग के अन्दर रवाना हुई ।

पन्द्रह या बीस ही कदम आगे जाने के बाद सुरंग में एकदम अन्धकार मिला इस लिये गदाधरसिंह को टटोल टटोल कर चलने की जरूरत पड़ी मगर कला तेजी के साथ कदम बढ़ाये जाती थी और एक तौर पर गदाधरसिंह को खैंचे लिये जाती थी ।

कला० । अब तुम जल्दी जल्दी चलते क्यों नहीं ? रास्ता बहुत चलना है और मैं तुम्हारी सताई हुई प्यास के मारे बेचैन हो रही हूँ, इस खोह के बाहर निकल कर तब पानी पीऊंगी, और तुम्हारी यह हाल है कि चींटी की तरह कदम बढ़ाते हो, मेरे पीछे पीछे आने में भी तुम्हारी यह दशा है !! तुम कैसे ऐयार हो ।

गदा० । मालूम होता है कि मुझे आज तुमसे भी कुछ सीखना पड़ेगा । मेरी ऐयारी में जो कुछ कसर थी उसे अब कदाचित् तुम लोग पूरा करोगी !!

कला० । वास्तव मे ऐसी ही बात है, देखो यहा पर एक दर्वाजा आया है, जरा सम्हल कर चौकठ लांघना नहीं ठोकर खाओगे !

उसी समय किसी तरह के खटके की आवाज आई और मालूम हुआ कि दर्वाजा खुल गया । गदाधरसिंह बहुत होशियारी से इस नीयत से हाथ बढ़ा कर टटोलता हुआ आगे बढ़ा कि दर्वाजे का पता लगावे और मालूम करे कि वह कैसा है या किस तरह से खुलता है मगर चौखट लांघ जाने पर भी जब उसे इस बात का कुछ पता न लगा तब उसने चिढ़ कर कला से कहा, "क्या यह खाली चौकठ ही थी या यहां तुमने कोई दर्वाजा खोला है ?"

कला० । इस बात के जानने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं, मैंने तुमसे यह वादा नहीं किया है कि यहाँ के भेद बता दूँगी ।

गदा० । मैं यहाँ के भेद जानना नहीं चाहता मगर इस सुरंग का हाल तो तुम्हें बताना ही पड़ेगा !

कला० । इस भरोसे मत रहना, मैं वादे के मुताबिक तुम्हें इस सुरंग के बाहर कर दूँगी और तुम प्रतिज्ञानुसार मुझे दलीपशाह के पास पहुँचा देना ।

गदा० । क्या तुम नहीं जानती कि अभी तक तुम मेरे कब्जे में हो और मैं जितना चाहूँ तुम्हें सता सकता हूँ ?

कला० । तुम्हारे ऐसे बेवकूफ ऐयार के मुंह से ऐसी बात निकले तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है ! अजी तुम यही गनीमत समझो कि इस घाटी के अन्दर हम लोगों ने तुम्हें किसी तरह का दुःख नहीं दिया क्योंकि हम लोग तुम्हारे साथ कोई और ही सलूक किया चाहती हैं और किसी दूसरे ही ढङ्ग पर बदला लेने का इरादा है । यह तुम्हारी भूल है कि तुम मुझे अपने कब्जे में समझते हो, अगर अपनी खैरियत चाहते हो तो चुपचाप चले आओ ।

कला की ऐसी बातें सुन कर गदाधरसिंह झल्ला उठा और उसने क्रोध के साथ कमन्द खैंची । उसे आशा थी कि कला इसके साथ ही खिंचती हुई चली आवेगी मगर ऐसा न हुआ और खाली कमन्द खिंच कर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई क्योंकि रास्ता चलते चलते कला ने हाथ से वह कमन्द खोल डाली थी इस लिये कि उसके हाथ खुले हुए थे । गदाधरसिंह ने इस खयाल से उसके हाथ नहीं बांधे थे और कला ने भी ऐसा ही बहाना किया था कि सुरङ्ग के अन्दर कई कठिन दर्वाजे खोलने पड़ेंगे ।

जिस समय खाली कमन्द खिंचकर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई उसका कलेजा दहल उठा और वह वास्तव में बेवकूफ सा बन कर चुपचाप खड़ा रह गया, मगर साथ ही इसके कला की आवाज आई—"कोई चिन्ता मत करो, चुपचाप कदम बढ़ाते चले आओ और समझ लो कि यहां भी तुम्हें बहुत कुछ सीखना पड़ेगा !"

खटके की आवाज और आहट से उसी समय यह भी मालूम हो गया कि जिस चौकठ को लांघ कर वह आया था उसमें किसी तरह का दर्वाजा था जो

उसके इधर आ जाने के बाद आप से आप बन्द हो गया। पीछे की तरफ हट कर और हाथ बढ़ा कर देखा तो अपना खयाल सच पाया और विश्वास हो गया कि अब उसका पीछे की तरफ लौट जाना भी असंभव हो गया।

वहा की अवस्था और कला की बातों से गदाधरसिंह का गुस्सा बराबर बढ़ता ही गया और इस बात की उसे बहुत ही शर्म आई कि एक साधारण औरत ने उसे उल्लू बना दिया। मगर वह कर ही क्या सकता था, उस अनजान सुरङ्ग और अन्धकार में उसका क्या बस चल सकता था? परन्तु इतने पर भी उसने मजबूर होकर कला के पीछे पीछे टटोलते हुए जाना पसन्द नहीं किया।

कई सायत तक चुपचाप खड़े रह कर कुछ सोचने के बाद उसने अपने बटुये में से सामान निकाल कर रोशनी की और तब आंखें फाड़ फाड़ कर चारों तरफ देखने लगा। उसने देखा कि यह सुरङ्ग बहुत चौड़ी और कुदरती ढङ्ग पर बनी हुई है तथा ऊंचाई भी किसी तरह कम नहीं है, तीन आदमी एक साथ खड़े होकर उसमें बखूबी चल सकते हैं मगर यहाँ पर इस बात का पता नहीं लगता कि यह सुरङ्ग कितनी लांबी है क्योंकि आगे की तरफ बिल्कुल ही अन्धकार मालूम होता था। पीछे की तरफ देखा तो दर्वाजा बन्द पाया जिसमें किसी तरह की कुण्डी खटके या ताले का निशान नहीं मालूम होता था।

गदाधरसिंह हाथ में बत्ती लिये हुये आगे की तरफ कदम बढ़ाये रवाना हुआ। लगभग डेढ़ दो सौ कदम जाने बाद उसे पुनः दूसरी चौखट लाघंने की जरूरत पड़ी। उस पार हो जाने बाद यह दर्वाजा भी बन्द हो गया। उसने अपनी आँखों से देखा कि लोहे का बहुत बड़ा तख्ता एक तरफ से निकल कर रास्ता बन्द करता हुआ दूसरी तरफ जाकर हाथ भर तक दीवार के अन्दर घुस गया क्योंकि वह पीछे फिर कर देखता हुआ आगे बढ़ा था। वह पुनः आगे की तरफ बढ़ा मगर अब क्रमशः सुरङ्ग तङ्ग और नीची मिलने लगी। उस कला का पता भी न लगा जिसे गिरफ्तार करने के लिये वह दांत पीस रहा था।

कई सौ कदम चले जाने के बाद पिछले दो दर्वाजों की तरह उसे और भी नती दर्वाजे लांघने पड़े और तब वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ दो तरफ को रास्ता फूट गया था। वहाँ पर वह अटक गया और सोचने लगा कि किस तरफ जांय। कुछ ही सायत बाद एक तरफ से आवाज आई, "अगर सुरङ्ग के

बाहर निकल जाने की इच्छा हो तो दाहिनी तरफ चला जा और अगर यहां के रहने वालों की ऐयारी का इमतिहान लेना हो और किसी को गिरफ्तार करने की प्रबल अभिलाषा हो तो बाईं तरफ का रास्ता पकड़ !"

गदाधरसिंह चौकन्ना हो कर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी मगर किसी आदमी की सूरत नजर न पड़ी। आवाज पर गौर करने से विश्वास हो गया कि यह उसी औरत ( कला ) की आवाज है जिसकी बदौलत वह यहां तक आया। आवाज किस तरफ से आई, आवाज देने वाला कहां है, और वहां तक पहुँचने की क्या सबील हो सकती है इत्यादि बातों पर गौर करने के लिये भी गदाधरसिंह वहाँ न अटका और गुस्से के मारे पेचोताब खाता हुआ दाहिनी तरफ वाली सुरंग में रवाना हुआ। थोड़ी देर तक तेजी के साथ चल कर वह सुरंग के बाहर निकल आया और एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहां बहुत से सुन्दर और सुहावने बेल तथा पारिजात के पेड़ लगे हुए थे और हरी हरी लताओं से उस सुरंग का मुंह ढका हुआ था।

जहां पर गदाधरसिंह खड़ा था उसके दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर एक प्रशस्त और साफ पानी से लहराता हुआ सुन्दर झरना था जो पहाड़ की ऊंचाई से गिरता हुआ यहां तेजी के साथ बह रहा था। यद्यपि इस समय उसके जल की चौड़ाई चार या पांच हाथ से ज्यादे न थी मगर दोनों तरफ के करारों पर ध्यान देने से विश्वास होता था कि मौसिम पर जरूर यह चश्मा छोटी मोटी नदी का रूप धारण कर लेता होगा।

गदाधरसिंह ने देखा कि उस चश्मे का जल मोती की तरह साफ और निथरा हुआ बह रहा है और उसके उस पार वही औरत ( कला ) जिसने उसे धोखा दिया था हाथ में तीर कमान लिये खड़ी उसकी तरफ देख रही है। वह अकेली नहीं है बल्कि और भी चार औरतें उसी की तरह हाथ में तीर कमान लिये उसके पीछे हिफाजत के खयाल से खड़ी हैं।

गदाधरसिंह क्रोध में भरा हुआ लाल लाल आखों से उस औरत ( कला ) की तरफ देखने लगा और कुछ बोला ही चाहता था कि सामने से और भी दो आदमी आते हुए दिखाई दिये जिन्हें नजदीक आने पर भी उसने नहीं पहिचाना मगर उसे खयाल हुआ कि इन दोनों ने ऐयारी ढङ्ग पर अपनी सूरत बदली हुई है।

ये दोनों आदमी गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह थे जिनकी सूरत इस समय वास्तव में बदली हुई थी। प्रभाकरसिंह ने निगाह पड़ते ही कला को पहिचान लिया क्योंकि ये उसी बदली हुई सूरत में कला और विमला को देख चुके थे, हां कला ने प्रभाकरसिंह को नहीं पहिचाना जो इस समय भी सुन्दर सिपाहियाना ठाट में सजे हुए थे।

कला को इस जगह ऐसी अवस्था में देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ और ये उससे कुछ पूछा ही चाहते थे कि उनकी निगाह गदाधरसिंह पर जा पड़ी जो चश्मे के उस पार एक पत्थर की चट्टान पर खड़ा इन लोगों की तरफ देख रहा था।

प्रभाकरसिंह ने इस ढङ्ग पर अपनी सूरत बदली हुई थी कि उन्हें यकायक पहिचानना बड़ा ही कठिन था मगर एक बंधे हुए इशारे से उन्होंने कला पर अपने को प्रकट कर दिया और यह भी बतला दिया कि जो आदमी मेरे साथ है वह मेरा सच्चा खैरखाह गुलाबसिंह है।

गुलाबसिंह का हाल कला को मालूम था क्योंकि वह उनकी तारीफ इन्दुमती से सुन चुकी थी और जानती थी कि ये प्रभाकरसिंह के विश्वासपात्र हैं इस लिये इनसे कोई बात छिपाने की जरूरत नहीं है अस्तु पूछने पर उसने अपने साथ वाली औरतों को अलग करके सब हाल अपना और भूतनाथ का साफ साफ बयान कर दिया जिसे सुनते ही प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह हंस पड़े।

प्रभाकर०। वास्तव में तुम बेतरह इसके हाथ में फंस गई थीं मगर खूब ही चालाकी से अपने को बचाया!

गुलाब०। (प्रभाकरसिंह की तरफ देख के) यद्यपि गदाधरसिंह इनका कसूरवार है, और आजकल इसने अजीब तरह का ढंग पकड़ रक्खा है तथापि मैं कह सकता हूँ कि गदाधरसिंह ने इन्हें पहिचाना नहीं, अगर पहिचान लेता तो कदापि इनके साथ बेअदबी का बर्ताव न करता।

कला०। (गुलाबसिंह से) आप जो चाहे कहें क्योंकि वह आपका दोस्त है मगर हम लोगों को उस पर कुछ भी विश्वास नहीं है। (प्रभाकरसिंह से) मालूम होता है कि हम लोगों का हाल आपने इनसे कह दिया है?

प्रभाकर०। हां बेशक ऐसा ही है मगर तुम लोगों को इन पर विश्वास

करना चाहिये क्योंकि ये मेरे सच्चे सहायक हितैषी और दोस्त हैं। तुम लोगों को भी इनसे बड़ी मदद मिलेगी।

कला०। ठीक है और मैं जरूर इन पर विश्वास करूंगी क्योंकि इनका पूरा पूरा हाल बहिन इन्दुमति से सुन चुकी हूँ, यद्यपि ये गदाधरसिंह के दोस्त हैं और हम लोग उसके साथ दुश्मनी का बर्ताव करते हैं।

गुलाब०। ( कला से ) यद्यपि गदाधरसिंह मेरा दोस्त है मगर ( प्रभाकर-सिंह की तरफ बताकर ) इनके मुकाबले में मैं उस दोस्ती की कुछ भी कदर नहीं करता। इनके लिये मैं उसी को नहीं बल्कि दुनिया के हर एक पदार्थ को जिसे मै प्यार करता हूँ छोड़ देने के लिये तैयार हूँ। अच्छा जाने दो इस समय यहा पर इन सब बातों की जरूरत नहीं है पहिले उस ( गदाधरसिंह ) से बातें करके उसे बिदा कर लो फिर हम लोगों से बातें होती रहेंगी। हां यह तो बताओ कि जब तुमने इसे गिरफ्तार ही कर लिया था तो फिर मार क्यों नहीं डाला ?

कला०। हम लोग इसे मार डालना पसन्द नहीं करतीं बल्कि यह चाहती हैं कि जहां तक हो सके इसकी मिट्टी पलीद करें और इसे किसी लायक न छोड़ें, यह किसी के सामने मुंह दिखाने के लायक न रहे बल्कि आदमी की सूरत देख कर भागता फिरे और इसके माथे पर कलंक का ऐसा टीका लगे कि किसी के छुड़ाये न छूट सके और यह घबड़ा कर पछताता हुआ जङ्गल जङ्गल छिपता फिरे।

गुलाब०। बेशक यह बहुत बड़ी सजा है, अच्छा तुम उससे बातें करो।

गदधरसिंह दूर खड़ा हुआ इन लोगों की तरफ बराबर देख रहा था मगर इन लोगों की बातें उसे कुछ भी सुनाई नहीं देती थीं और वह न हावभाव ही से कुछ समझ सकता था, हां इतना जानता था कि अब वह कला का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

कला०। ( कुछ आगे बढ़ कर ऊंची आवाज में गदाधरसिंह से ) अब तो तुम उस घाटी के बाहर निकल आए, मैंने जो कुछ वादा किया था वह पूरा हो गया, अब तुम मुझे दलीपशाह के पास ले चल अपना वादा पूरा करो।

गदा०। ( कला की तरफ बढ़ कर ) बेशक तुम्हारी ऐयारी मुझ पर चल गई और मैं बेवकूफ बन गया ! मैं यह भी खूब समझता हूँ कि दलीपशाह से मुलाकात करने की तुम्हें कोई जरूरत न थी वह केवल बहाना था और न अब

तुम मेरे साथ दलीपशाह के पास जा ही सकती हो। अस्तु कोई चिन्ता नहीं, तुम मेरे हाथ से निकल गईं और मैं तुम्हारे पंजे से छूट गया। अच्छा अब मैं जाता हूँ मगर कहे जाता हूँ कि तुम लोग व्यर्थ मुझसे दुश्मनी करती हो, दयारामजी के विषय में जो कुछ तुम लोगों ने सुना है या जो कुछ तुम लोगों का खयाल है वह बिल्कुल झूठ है, वह मेरे सच्चे प्रेमी थे और मैं अभी तक उनके लिये रो रहा हूँ। यदि जमना और सरस्वती वास्तव में जीती हैं और तुम लोग उनके साथ रहती हो तो जाकर उनसे कह देना कि गदाधरसिंह तुम लोगों के साथ दुश्मनी कदापि न करेगा, यद्यपि तुम्हारा हाल जानने के लिये वह तुम्हारे आदमियों को दुःख दे और सतावे तो हो सकता है मगर वह तुम दोनों को कदापि दुःख न देगा। तुम यदि इच्छा हो तो गदाधरसिंह को सता लो, उसे तुम्हारे लिये जान दे देने में भी कुछ उज्र न होगा।

इतना कह कर भूतनाथ वहां से पलट पड़ा और देखते देखते नजरों से गायब हो गया।

गुलाबसिंह को बाहर ही छोड़ कर प्रभाकरसिंह कला के साथ घाटी के अन्दर चले गये और गुलाबसिंह से कह गये कि तुम इसी जगह ठहर कर मेरा इन्तजार करो मैं इन्दुमति तथा विमला से मिल कर आता हूँ तो चुनार की तरफ चलूंगा क्योंकि जब तक शिवदत्त से बदला न ले लूंगा तब तक मेरा मन स्थिर न होगा।

सन्ध्या हो चुकी थी जब प्रभाकरसिंह लौट कर गुलाबसिंह के पास आए और दोनों आदमी धीरे धीरे बातचीत करते हुए चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए।

इन दोनों को इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि भूतनाथ इनका पीछा किये चला आ रहा है और चाहता है कि इन दोनों को किसी तरह पहिचान ले। इन दोनों के खयाल से भूतनाथ उसी समय कला के सामने ही चला गया था मगर वास्तव में वह थोड़ी दूर जाकर छिप रहा था और अब मौका पाकर इन दोनों के पीछे पीछे छिपता हुआ रवाना हुआ।

## तीसरा बयान

क्या भूतनाथ को कोई अपना दोस्त कह सकता था? क्या भूतनाथ के दिल में किसी की मुहब्बत कायम रह सकती थी? क्या भूतनाथ किसी एहसान का

पाबन्द रह सकता था ? क्या भूतनाथ पर किसी का दबाव पड़ सकता था ? या भूतनाथ पर कोई भरोसा रख सकता था ? इसका जवाब देना बहुत कठिन है। जो गुलाबसिंह भूतनाथ को अपना दोस्त कहता था आज वही गुलाबसिंह भूतनाथ पर भरोसा नहीं करता और इसी तरह भूतनाथ भी उसे अपना दोस्त नहीं समझता। जिस प्रभाकरसिंह की मदद के लिये भूतनाथ कमर बांध कर तैयार हुआ था आज उसी प्रभाकरसिंह पर ऐयारी का वार करके इन्दुमति को सताने के लिये वह तैयार हो रहा है।

सूरत बदले हुए प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह को यद्यपि भूतनाथ ने पहिचाना न था मगर उसे किसी तरह का शक जरूर हो गया था और यही जांच करने के लिये उसने उन दोनों का पीछा किया था।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी थी। गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह आपस में बातें करते हुए चुनारगढ़ की तरफ जा रहे थे। वे दोनों इस विचार में थे कि कोई गांव या बस्ती आ जाय तो वहां थोड़ी देर के लिये आराम करें। कुछ दूर और जाने बाद वे दोनों ऐसी जगह पहुँचे जहाँ जङ्गली पेड़ बहुत ही कम होने के कारण वह जमीन मैदान का नमूना बन रही थी और पगडण्डी रास्ते से कुछ हट कर दाहिनी तरफ एक सुन्दर कूँआं भी था जिसे देख कर इन दोनों की इच्छा हुई कि इस कूएं पर बैठ कर कुछ देर आराम कर लें तब आगे बढ़ें।

कूएं के पास जा कर देखा कि एक आदमी गमछा बिछाये उसकी जगत पर आराम कर रहा है और डोरी तथा लोटा उसके सिरहाने की तरफ पड़ा हुआ है।

गुलाबसिंह ने प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर कहा, "कुछ देर के लिये यहां आराम कीजिये पानी पीजिये और हाथ मुंह धो कर ठण्ढे होकर सफर की हरारत मिटाइये।" इसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने कहा, "पानी पीने के लिये हम लोगों के पास लोटा डोरी तो है नहीं, हाँ आगे ठिकाने पर चलें तो सभी कुछ हो सकता है, बल्कि वहां खाने पीने का भी सुबीता होगा!"

इन दोनों की बातें सुन कर वह मुसाफिर जो कूंए की जगत पर लेटा हुआ था उठ बैठा और बोला, हां हां आप क्षत्री जान पड़ते हैं और मैं भी गौड़ ब्राह्मण हूँ, अभी अभी यह लोटा मांज कर मैंने रक्खा है, आप पानी खींच लीजिये।"

"अति उत्तम" कह कर गुलाबसिंह ने लोटा डोरी उठा ली और प्रभाकरसिंह उसी जगत पर बैठ गये।

गुलाबसिंह ने कूंए से जल निकाला और दोनों दोस्तों ने हाथ मुंह धोया। इसके बाद पुनः जल निकालकर दोनों ने थोड़ा थोड़ा पीया और फिर लोटा मांज मुसाफिर के सिरहाने उसी जगह रख दिया।

गुलाबसिंह यद्यपि होशियार आदमी थे मगर इस जगह एक मामूली बात में भूल कर गये। उन्हें उचित था कि अपने हाथ से लोटा मांज कर तब जल पान करते या मुंह हाथ धोते मगर ऐसा न करने के कारण दोनों ही को तकलीफ उठानी पड़ी।

वह आदमी जो कूंए पर पहिले ही से आराम कर रहा था वास्तव में भूतनाथ था। वह इन दोनों की आहट लेता हुआ इनसे कुछ ही दूर आगे आगे सफर कर रहा था बल्कि यों कहना चाहिये कि कभी आगे कभी पीछे कभी पास कभी दूर जब जैसा मौका पाता उसी तरह उन दोनों के साथ सफर कर रहा था और इस समय पहिले ही से यहाँ आकर इन लोगों को धोखा देने के लिये ही अटका हुआ था।

प्रमाकर०। ( गुलाबसिंह से ) यह कूआं है तो अच्छे मौके पर मगर इसका पानी अच्छा नहीं है।

गुलाब०। हां पानी में कुछ बदबू मालूम पड़ती है मगर यह बात पहिले न थी, मैं कई दफे इस कूएं का पानी पी चुका हूँ, यहां चार पांच कोस के घेरे में यही एक कूआं है।

इसके बाद दोनों आदमी कुछ देर तक मामूली बातचीत करते रहे क्योंकि अनजान मुसाफिर पास होने के खयाल से मतलब की या भेद की कोई बात नहीं कर सकते थे। इसके बाद वे दोनों चादर बिछा कर लेट गये और बात की बात में बेखबर होकर खुर्राटे लेने लगे। उस समय भूतनाथ अपनी जगह से उठा और इन दोनों के पास आ कर गौर से देखने लगा कि अभी ये लोग बेहोश हुए हैं या नहीं।

भूतनाथ ने अपने लोटे के अन्दर बेहोशी की दवा लगा दी थी जिसका कुछ हिस्सा पानी में मिलजुल कर इनके पेट में उतर गया था और इसी दवा

की महक इन दोनों के नाक में गई थी जिसका असल मतलब न समझ कर इन्होंने पानी की शिकायत की थी।

जब भूतनाथ ने देखा कि ये दोनों अच्छी तरह बेहोश हो गये तब अपने बटुए में से सामान निकाल कर उसने रोशनी की, इसके बाद कूएं में से पानी निकाला और रूमाल तर करके इन दोनों का चेहरा साफ किया। उस समय अच्छी तरह देखने से भूतनाथ का शक जाता रहा और उसने पहिचान लिया कि ये दोनों गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह हैं।

गुलाबसिंह ऐयार नहीं था मगर अक्ल का तेज और होशियार आदमी था तथा ऐयारों के साथ दोस्ती रहने के कारण कुछ कुछ ऐयारी का काम भी कर सकता था और इसी सबब से उसने अपनी और प्रभाकरसिंह की सूरत मामूली ढंग पर बदल ली थी।

भूतनाथ ने इन दोनों को अच्छी तरह पहिचान लेने के बाद गुलाबसिंह की सूरत पुनः उसी तरह की बना दी और प्रभाकरसिंह को पीठ पर लाद कर अपने घर का रास्ता लिया।

तेजी के साथ चल कर दो ही घण्टे में वह अपनी उस घाटी के मुहाने पर जा पहुँचा जहाँ रहता था और जो कला और विमला की घाटी के साथ सटी हुई थी। वहां उसके शागिर्द लोग उसका इन्तजार कर रहे होंगे यह सोच कर भूतनाथ तेजी के साथ कदम बढ़ता हुआ उस सुरंग के अन्दर घुसा।

सुरंग के अन्दर घुसने बाद वह उसी चौमुहानी पर पहुँचा जिसका जिक्र ऊपर कई दफे आ चुका है। इसके बाद वह अपनी घाटी की तरफ घूमा और उस सुरंग में घुसा मगर दो ही चार कदम आगे जाने के बाद रास्ता बन्द देख उसे बड़ाही ताज्जुब हुआ, उसका दिमाग हिल गया और हिम्मतवर होने पर भी वह एक दफे काँप उठा।

प्रभाकरसिंह की गठड़ी उसने जमीन पर रख दी और बटुए में से सामान निकाल रोशनी करने बाद अच्छी तरह गौर करके देखने लगा कि रास्ता क्योंकर बन्द हो गया। मगर उसकी समझ में कुछ भी न आया कि रास्ता क्योंकर बन्द हो गया। उसने सिर्फ इतना देखा कि लोहे का एक बहुत बड़ा तख्ता सामने अड़ा हुआ है जिसके कारण यह बिल्कुल नहीं जान पड़ता कि उसका घर किस तरफ

है। उसने दर्वाजा खोलने की बहुत कोशिश की और बड़ी देर तक हैरान रहा मगर सब बेकार हुआ। यह सोच कर उसकी आंखों में आंसू भर आये कि हाय उसके कई शागिर्द जो इस घाटी के अन्दर हैं सब बेचारे भूख के मारे तड़प तड़प कर मर जायंगे क्योंकि इस रास्ते के सिवाय बाहर निकलने के लिये उन्हें कोई दूसरा रास्ता न मिलेगा।

भूतनाथ घबड़ाया हुआ प्रभाकरसिंह की गठड़ी लिये हुए सुरंग के बाहर निकल आया और एक घने पेड़ के नीचे बैठ कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये? इस समय यहां मेरा कोई शागिर्द या नौकर भी नहीं मिल सकता जिससे किसी तरह का काम निकाला जाय। जिस खयाल से प्रभाकरसिंह को ले आया था वह काम भी न हुआ। हाय! मेरे आदमी एकदम जहन्नुम में मिल गये और मैं उनकी कुछ भी मदद न कर सका!! मालूम होता है कि यहां का कोई सच्चा जानकार आ पहुँचा जिसने इस घाटी पर कब्जा कर लिया। क्या दयाराम की दोनों स्त्रियां तो यहां नहीं आ पहुँचीं जो पड़ोस में रहती हैं! अगर ऐसा हो भी तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि बगल वाली घाटी जिसमें वे दोनों रहती हैं कोई तिलिस्म मालूम पड़ती है और यह घाटी भी उससे कुछ सम्बन्ध रखती हो तो आश्चर्य ही क्या है। मैं नहीं चाहता था कि उन दोनों को सताऊं या किसी तरह की तकलीफ दूँ मगर दोस्तों और शागिर्दों को छुड़ाने के लिये अब मुझे सभी कुछ करना पड़ेगा।

## चौथा बयान

गुलाबसिंह की जब आंख खुली तो रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी में पूरब तरफ कुछ लालिमा दिखाई देने लग गई थी। वह घबड़ा कर उठ बैठा और इधर उधर देखने लगा। जब प्रभाकरसिंह को वहां न पाया तब बोल उठा, "बेशक मैं धोखा खा गया! वह मुसाफिर न था बल्कि कोई ऐयार था जिसने लोटे में किसी तरह की दवा लगा दी होगी। क्या मैं कह सकता हूँ कि प्रभाकरसिंह को वही उठा ले गया होगा?"

इतना कह कर वह जगत के नीचे उतरा और घूम घूम कर प्रभाकरसिंह को तलाश करने लगा। जब वे न मिले तो यन सोचता हुआ आगे की तरफ बढ़ाः—

"बेशक वह कोई ऐयार था जो प्रभाकरसिंह को उठा कर ले गया। ताज्जुब नहीं कि वह भूतनाथ ही हो, यद्यपि मुझे उससे ऐसी आशा न थी परन्तु आजकल वह जमना और सरस्वती के खयाल से प्रभाकरसिंह को भी अपना दुश्मन समझने लग गया है। यह भी किसी को क्या उम्मीद थी कि जमना और सरस्वती जीती होंगी! खैर मुझे इस समय प्रभाकरसिंह के लिये कुछ बन्दोबस्त करना चाहिये, बेहतर होगा यदि मैं स्वयम् भूतनाथ के पास चला जाऊं और उससे प्रभाकरसिंह को मांग लूं। मगर नहीं, यद्यपि वह मेरा दोस्त है परन्तु इस समय वह दोस्ती पर कुछ भी ध्यान न देगा, अगर उसे ऐसा ही खयाल होता तो प्रभाकरसिंह को ले जाता ही क्यों? मुझे भी इस समय उससे किसी तरह की उम्मीद न रखनी चाहिये क्योंकि अब हमलोग दयाराम के खयाल से जमना और सरस्वती के पक्षपाती हो गये हैं अस्तु उसके लिये अब कोई दूसरा ही बन्दोबस्त करना चाहिये। अगर उस खोह का रास्ता मुझे मालूम होता तो मैं जमना और सरस्वती को भी इस बात की खबर दे देता। खैर अब मुझे दलीपशाह के पास चलना चाहिये और उससे मदद मांगनी चाहिये क्योंकि मैं अकेला भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकता। दलीपशाह जरूर मेरी मदद करेगा, उस पर मेरा जोर भी है और वह मेरे साथ अपनी मुहब्बत भी दिखलाता है मगर पहिले अपने आदमियों को तो कुछ समझा देना चाहिये जो कि अभी तक हम लोगों का इन्तजार कर रहे होंगे।"

इत्यादि तरह तरह की बातें सोचता हुआ गुलाबसिंह आगे की तरफ बढ़ा चला जाता था। लगभग एक या डेढ़ कोस के गया होगा कि सामने से दो सिपाही ढाल तलवार लगाये दो घोड़ों की बागडोर थामे आते हुए दिखाई पड़े। जब वे गुलाबसिंह के पास पहुँचे तो सलाम कर के खड़े हो गये और गुलाबसिंह भी रुक गये।

गुलाब०। तुम लोग कहां जा रहे हो?

एक०। आपही की खोज में तो जा रहे हैं क्योंकि रात भर इन्तजार करके हमलोग.....

गुलाब०। (बात काट कर) बेशक तुम लोग तरद्दुद में पड़ गये होंगे मगर क्या करें लाचारी है। अच्छा यह कहो कि बाकी के आदमी कहां हैं?

एक०। अभी तक सब उसी जगह अटके हुए हैं।

गुलाब०। अच्छा एक काम करो, तुम घोड़ा यहीं छोड़ दो और लौट जाओ हमारे आदमियों को इत्तला दो कि हमारे घर पर चले जायं पुराने घर पर नहीं आजकल जहां हम रहते हैं उस घर पर चले जायं और जब तक हम या प्रभाकरसिंह वहां न आवें तब तक कहीं न जांय। मैं इस घोड़े पर सवार होकर किसी काम के लिये जाता हूँ, (दूसरे सिपाही की तरफ देखकर) तुम उस दूसरे घोड़े पर सवार हो लो और मेरे साथ चलो।

इतना कह कर गुलाबसिंह घोड़े पर सवार हो गया। "जो हुक्म" कह कर एक सिपाही तो पीछे की तरफ लौट गया और दूसरा घोड़े पर सवार होकर गुलाबसिंह के साथ रवाना हुआ।

## पाँचवाँ बयान

ऊपर लिखी वारदात को गुजरे आज कई दिन हो चुके हैं, इस बीच में कहां और क्या क्या नई बातें पैदा हुईं उसका हाल तो पीछे मालूम होगा, इस समय हम पाठकों को कला और विमला की उसी सुन्दर घाटी में ले चलते हैं जिसकी सैर वे पहिले भी कई दफे कर चुके हैं।

उस घाटी के बीचोबीच में जो सुन्दर बंगला है उसी में चलिये और देखिये कि क्या हो रहा है।

रात घण्टे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है, बङ्गले के अन्दर एक कमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा हुआ है और उस पर चन्द आदमी बैठे आपस में बातें कर रहे हैं। एक तो इन्द्रदेव हैं, दूसरी कला, तीसरी विमला, और चौथी इन्दुमति है जिसका नाम आज कल 'चन्दा' रक्खा गया है। खैर सुनिये कि इनमें क्या क्या बातें हो रही हैं।

विमला०। (इन्द्रदेव से) आपका कहना बहुत ठीक है। मैं भी भूतनाथ से इसी तरह पर बदला लेना पसन्द करती हूँ, तभी तो उसे यहां से निकल जाने का मौका दिया नहीं तो यहां पर उसका मार डालना कोई कठिन काम न था।

इन्द्र०। ठीक है। किसी दुश्मन को मार डालने से मेरी तबीयत तो प्रसन्न

नहीं होती। मैं समझता हूँ कि मरनेवाले को कई सायत तक की मामूली तकलीफ तो होती है मगर मरने बाद उसे कुछ भी ज्ञान नहीं रहता कि उसने किसके साथ कैसा सलूक किया था और उसने किस तरह पर उससे बदला लिया। प्राण का सम्बन्ध शरीर से नहीं छूटता, उसे कोई न कोई शरीर अवश्य ही धारण करना पड़ता है। एक शरीर को छोड़ा तो दूसरा धारण करना पड़ा। यह उसकी इच्छानुसार नहीं होता बल्कि सर्वशक्तिमान जगदीश्वर के रचे हुए मायामय जगत का यह एक अकाट्य नियम ही है और इसी नियम के अनुसार ईश्वर भले बुरे कर्मों का बदला मनुष्य को देता है। एक देह को छोड़कर जब जीव दूसरे देह में प्रवेश करता है तब अपने भले बुरे कर्मों का फल उसी दूसरे देह में भोगता है मगर इसका उसे कुछ भी परिज्ञान नहीं होता और उस सुख दुःख का कारण न समझ कर वह सहज ही में उस कर्म फल को अथवा सुख दुःख का भोग लेता है या भोग करता है। वह इस बात को नहीं समझ सकता कि पूर्व में मैंने यह पाप किया था जिसका बदला इस तरह पर मिल रहा है, बल्कि उसे वह एक मामूली बात समझता है और दुःख को दूर करने का उद्योग किया करता है, यही कारण है कि वह पुनः पाप कर्म में प्रवृत्त हो जाता है। अगर मनुष्य जानता कि यह दुःख उसके किस पाप कर्म का फल है तो कदाचित् वह पुनः उस पापकर्म में प्रवृत्त होने का साहस न करता परन्तु उस महामाया की माया कुछ कही नहीं जाती और समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों होता है। कदाचित् उस दयाराम के दया भाव ही का यह कारण हो। इसी से मै कहता हूँ कि दुश्मन को मार डालने से कोई फल नहीं होता। उसके पापकर्म का बदला ईश्वर तो उसे देवेहीगा परन्तु 'मैं भी तो कुछ बदला दे दूँ" यही मेरी इच्छा रहती है। चाहे किसी मत के पक्षपाती लोग इसे भी ईश्वर की इच्छा ही कहें परतु मेरे चित को जो सन्तोष होता है यह विशेषता इसमें अधिक अवश्य है।

विमला०। निःसन्देह ऐसा ही है।

इन्द्रदेव०। दुश्मन बहुत दिनों तक जीता रह कर पाप का प्रायश्चित भोगता रहे सो अच्छा, जितने ही ज्यादे दिनों तक वह पश्चाताप करे उतना ही अच्छा, उसके शरीर को जितना ही कष्ट भोगना पड़े उतना ही उत्तम, वह अपने सचाई के साथ बदला देने वाले को प्रसन्न और हंसता हुआ देख कर जितना

ही कुढ़े जितना ही शर्मिन्दा हो और जितना ही दुःख पा सके उतना ही शुभ समझना चाहिये। इसी विचार से मैं कहता हूँ कि भूतनाथ को मारो मत बल्कि उसे जहां तक बने सताओ और दुःख दो भला वह समझे तो सही कि मेरे किस कर्म का यह क्या फल मिल रहा है!

मगर एक बात और विचारने के योग्य है। वह यह है कि इस तरह पर दुश्मन से बदला लेना कुछ सहज काम नहीं है। इसके लिये बड़े ही उद्योग, बड़े ही साहस, और बड़े ही धैर्य्य की जरूरत है और इसके लिये अपने चित्त के भाव को बहुत ही छिपाना पड़ता है सो ये बातें मनुष्य से जल्दी निबहती नहीं, इसी से कई विद्वानों का यह मत है कि 'दुश्मन को जहाँ तक जल्द हो सके मिटा देना चाहिये, नहीं तो किसी विचार से तरह दे देने पर कहीं ऐसा न हो कि मौका पाकर वह बलवान हो जाय और तुम्हीं को अपने कब्जे में कर ले।' यह सच है परन्तु यदि ईश्वर सहायक हो और मनुष्य धैर्य्य के साथ निर्वाह कर सके तो इस बदले से वह पहिला ही बदला अच्छा है जिसे मैं ऊपर बयान कर चुका हूँ।

भूतनाथ के साथ इस तरह का बर्ताव करने से एक फायदा यह भी हो सकता है कि सच्चे और झूठे मामले की जांच भी हो जायगी। कदाचित् उसने तुम्हारे पति को धोके ही में मारा हो जानबूझ कर न मारा हो जैसा कि उसका कथन है। भूतनाथ ऐसा बुद्धिमान और धुरन्धर ऐयार यदि अपने कर्मों का प्रायश्चित पा कर सुधर जाय और अच्छी राह लगे तो अच्छी ही बात है क्योंकि ऐसे बहादुर लोग दुनिया में कम पैदा होते हैं।

इन्द्रदेव की आखिरी बात कला और विमला को पसन्द न आई मगर उन्होंने उनकी खातिर से यह जरूर कह दिया कि—'आपका कहना ठीक है।'

कला०। खैर अब तो भूतनाथ को मालूम ही हो गया है कि जमना और सरस्वती जीती हैं, देखें हम लोगों के लिये क्या उद्योग करता है।

इन्द्र देव०। कोई चिन्ता नहीं, मालूम हो गया तो होने दो, तुम होशियारी के साथ घाटी के अन्दर पड़ी रहो, किसी को यहाँ का रास्ता मत बताओ, और जब कभी इस घाटी के बाहर जाओ तो उन अद्भुत हर्बों को जरूर अपने साथ रक्खो जो मैंने तुम लोगों को दिये हैं।

विमला० । जो आज्ञा ।

कला० । यहां का रास्ता अभी तक तो सिवाय प्रभाकरसिंह के और किसी नए आदमी को मालूम नहीं हुआ मगर इधर प्रभाकरसिंहजी की जुबानी यह जाना गया है कि हम लोगों का कुछ हाल उन्होंने अपने दोस्त गुलाबसिंह को जरूर कह दिया है मगर यहां का रास्ता या इस घाटी का असल भेद उन्होंने उनको भी नहीं बताया है ।

इन्द्रदेव० । ( कुछ सोचकर ) प्रभाकरसिंह बुद्धिमान आदमी हैं, उन्होंने जो कुछ किया होगा उचित ही किया होगा, उनके विषय में तुम लोग चिन्ता न करो । इसके अतिरिक्त गुलाबसिंह पर मैं भी विश्वास करता हूँ । वह निःसन्देह उनका सच्चा हितैषी है और साथ ही इसके साहसी और बहादुर भी है । यदि गुलाबसिंह को वे इस घाटी के अन्दर ले भी आवें तो कोई चिन्ता की बात नहीं है, ( मुस्कुरा कर ) ओर बेटी तुमने तो प्रभाकरसिंह को यहां का राज्य ही दे दिया ! यहा के तिलिस्म की ताली ही दे दी है !!

विमला० । सो आपकी आज्ञा से, मैंने अपनी तरफ से कुछ भी नहीं किया परन्तु फिर भी आप की मदद पाये बिना वे कुछ न कर सकेंगे । हां एक बात कहना तो मैं भूल ही गई !

इन्द्रदेव० । वह क्या ?

विमला० । भूतनाथ की घाटी का रास्ता मैंने बन्द कर दिया है, अब भूतनाथ अपने स्थान पर नहीं पहुँच सकता और उसके साथी और दोस्त लोग उसी के अन्दर पड़े पड़े सड़ा करेंगे !

यह कह कर विमला अपनी बेईमान लौंडी चन्दो की मौत और भूतनाथ की घाटी का दर्वाजा बन्द कर देने का हाल पूरा पूरा इन्द्रदेव से बयान किया ।

इन्द्र० । ( कुछ सोच कर ) मगर यह काम तो तुमने अच्छा नहीं किया । तुम लोगों को मैंने इस घाटी में इसी लिये स्थान दिया था कि अपने दुश्मन भूतनाथ का हाल चाल बराबर जाना करोगी, वह इस घाटी के पड़ास में रहता है और यहां से उस घाटी का हाल बखूबी जाना जा सकता है, इसी सुबीते को देख कर मैंने तुम लोगों को यहाँ छोड़ा था सो सुबीता तुमने अपने हाथ से बिगाड़ दिया । यद्यपि भूतनाथ के कई सङ्गी साथी इसमें परेशान होकर मर जायँगे

मगर इसमें भूतनाथ का कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। वह इस स्थान को छोड़ कर दूसरी जगह चला जायगा, फिर तुम्हें उसके काम काज की कुछ भी खबर नहीं मिला करेगी। तुम ही सोचो कि यदि वह तुम्हारे किसी दोस्त या साथी को गिरफ्तार करता तो जरूर इसी घाटी में ले आता और तुम्हें उसकी खबर लग जाती, तब तुम उसके छुड़ाने की उद्योग करती मगर अब क्या होगा ? अब तो अगर वह तुम्हारे किसी साथी को पकड़ेगा भी तो दूसरी ही जगह ले जायगा और ऐसी अवस्था में तुम्हें भी पता न लगेगा।

विमला०। ( सिर झुका कर ) बेशक यही बात है !

कला०। निःसन्देह भूल हो गई !!

इन्दु०। गहरी भूल हो गई ! आखिर हम लोग औरत की जात इतनी समझ कहां ! अब इस भूल का सुधार क्योंकर हो ?

इन्द्र०। अब इसका सुधार होना जरा कठिन है, भूतनाथ जरूर चौकन्ना हो गया होगा और अब वह अपने लिये कोई दूसरा स्थान मुकर्रर करेगा। ( कुछ विचार कर ) मगर खैर एक दफे मैं इसके लिये उद्योग जरूर करूंगा, कदाचित् काम निकल जाय।

कला०। क्या उद्योग कीजियेगा ?

इन्द्र०। सो अभी से कैसे कहूँ ? वहाँ जाने पर और मौका देखने पर जो कुछ बन जाय। यदि भूतनाथ इस घाटी में बना रहेगा तो बहुत काम निकलेगा।

विमला०। तो क्या आप अकेले भूतनाथ की तरफ या उस घाटी में जायंगे ?

इन्द्रदेव०। हाँ जा सकता हूँ क्योंकि वे लोग मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और न मुझे भूतनाथ की कुछ परवाह ही है मगर मेरा इरादा है कि इस काम के लिये दलीपशाह को भी अपने साथ लेता जाऊँ।

इतना कह कर इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और उस कमरे में चले गये जो यहां नहाने धोने के लिये मुकर्रर था।

## छठवां बयान

दिन तीन पहर से ज्यादे चढ़ चुका है। इस समय हम भूतनाथ को एक घने जङ्गल में अपने तीन साथियों के साथ पेड़ के नीचे बैठे हुए देखते हैं। यह

जङ्गल उस घाटी से बहुत दूर न था जिसमें भूतनाथ रहता था और जिसका रास्ता विमला ने बन्द कर दिया था।

भूत०। ( अपने साथियों से ) मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि मेरे साथी लोग इस घाटी में कैदियों की तरह बन्द होकर दुःख भोग रहे हैं। यद्यपि वहां पानी की कमी नहीं है और खाने के लिये भी इतना सामान है कि वे लोग महीनों तक निर्वाह कर सकें मगर फिर भी कब तक ? आखिर जब वह सामान चुक जायगा तो फिर वे लोग क्या करेंगे !

एक०। ठीक है मगर साथ ही इसके यह खयाल भी तो होता है कि जिस आदमी ने इस घाटी का दर्वाजा बन्द कर दिया है उसने ताज्जुब नहीं कि हमारे दोस्तों को भी तकलीफ दी हो।

भूत०। हो सकता है लेकिन इस विचार पर मै विशेष भरोसा नहीं करता, क्योंकि दर्वाजा बन्द कर देना सिर्फ एक जानकार आदमी का काम है मगर हमारे साथियों से लड़ कर बीस या पचीस आदमी भी पार नहीं पा सकते।

दूसरा०। हां है तो ऐसी ही बात, इसी से आशा होती है कि अभी तक वे सब जीते होंगे अस्तु जिस तरह हो सके उन्हें बचाना चाहिये।

भूत०। मैं इसी फिक्र में पड़ा हुआ हूँ और सोच रहा हूँ कि उनको बचाने के लिये क्या इन्तजाम किया जाय।

एक०। पहिले तो उसका पता लगाना चाहिये जिसने दर्वाजा बन्द कर दिया है।

भूत०। हां और इस विषय में मुझे उन्हीं औरतों पर शक होता है जो इस पड़ोस वाली घाटी में रहती है जहां मैं कैद होकर गया था और जहां सुनने में आया कि जमना और सरस्वती अभी तक जीती जागती हैं और मुझसे दयाराम का बदला लेने के लिये उद्योग कर रही हैं। वास्तव में वह घाटी भी बड़ी ही विचित्र है। निःसन्देह वह कोई तिलिस्म है और अगर मेरा खयाल ठीक है तो वहां की रहने वालियां अड़ोस पड़ोस की भी घाटियों का हाल जानती होंगी, बल्कि मेरी यह घाटी भी उसी घाटी से सम्बन्ध रखती हो तो ताज्जुब नहीं।

तीसरा०। आपका यह विचार बहुत ठीक है। अगर वास्तव में जमना और सरस्वती जीती हैं और उसी घाटी में रहती हैं तो निःसन्देह यह काम उन्हीं

का है और उन्हीं लोगों में से किसी को गिरफ्तार करने से हमारा काम निकल सकता है।

भूत०। बेशक, और मैं उन लोगों में से किसी न किसी को जरूर गिरफ्तार करूंगा।

एक०। आप जब गिरफ्तार होकर वहां गये तो वहां की अवस्था देख कर और उन लोगों की बातें सुन कर जमना और सरस्वती के विषय में आपने क्या विश्वास किया?

भूत०। मुझे विश्वास होता है कि जरूर वे दोनों जीती हैं।

दूसरा०। तो यह घाटी उन लोगों को किसने रहने के लिये दी और उन लोगों का मददगार कौन है?

भूत०। यही तो एक विचारने की बात है। मेरे खयाल से इन्द्रदेव उन दोनों के पक्षपाती बने हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है, क्योंकि दयारामजी मेरे हाथ से मारे गये इस बात को दुनिया में मेरे सिवाय दो ही आदमी और जानते हैं, एक तो दलीपशाह दूसरा शम्भू। सो शम्भू तो इन्द्रदेव का शागिर्द ही ठहरा और दलीपशाह इन्द्रदेव का दिली दोस्त। यद्यपि दलीपशाह मेरा नातेदार है और उसने इस बात को छिपा रखने के लिये मुझसे कसम भी खाई है मगर अब मालूम होता है कि उसने अपनी कसम तोड़ दी और इस भेद को खोल दिया। इस बात का सब से बड़ा सबूत एक यह है कि जब मैं कैद होकर उस घाटी में गया था तो एक औरत ने जोर देकर मुझसे बयान किया था कि तुमने दयाराम को मारा है और इसके सबूत में पेश करने के लिये दलीपशाह और शम्भू अभी तक जीते हैं! अस्तु मेरा यह विचार पक्का है कि निःसन्देह शम्भू और दलीपशाह ने वह भेद खोल दिया और सब के पहिले उन्होंने जरूर अपने दोस्त इन्द्रदेव से वह हाल बयान किया होगा। ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि इन्द्रदेव ही इन दोनों के पक्षपाती बने हों।

एक०। तो इन्द्रदेव को क्या आपसे कुछ दुश्मनी है?

भूत०। नहीं इस बात का तो मुझे गुमान भी नहीं होता।

एक०। और यदि इन्द्रदेव चाहें तो क्या आपको कुछ सता नहीं सकते? या आपको गिरफ्तार करके सजा नहीं दे सकते?

भूत०। बेशक इन्द्रदेव जो कुछ चाहें कर सकते हैं, उनकी ताकत का कोई अन्दाजा नहीं कर सकता, वे एक बहुत बड़े तिलिस्म के राजा समझे जाते हैं, मुझसे वे बहुत ज्यादे जबर्दस्त हैं, और ऐयारी में भी उन्हें बढ़ कर मानता हूँ। यद्यपि एक विषय में मैं अपने को उनका कसूरवार मानता हूँ मगर फिर भी कह सकता हूँ कि वे मेरे दोस्त हैं।

दूसरा०। तो आप अपने ऐसे दोस्त पर इस तरह का शक क्यों करते हैं?

भूत०। दिल ही तो है, खयाल ही तो है! जब आदमी किसी मुसीबत में गिरफ्तार होता है तो उसके सोच विचार और शक का कोई हिसाब नहीं रहता। मैं इस समय मुसीबत की जिन्दगी बिता रहा हूँ। मुझसे दो तीन काम बहुत ही बुरे हो गये हैं जिनमें से एक दयाराम वाली वारदात है। इसमें मुझे बहुत ही बड़ा धोखा हुआ। मैंने कुछ जान बूझ कर अपने दोस्त को नहीं मारा, मगर खैर वह तो जो कुछ होना था हो गया, अब क्या मैं अपने को दुश्मनों के हाथ में सहज ही सौंप दूँगा? यद्यपि इन्द्रदेव को मैं अद्भुत व्यक्ति मानता हूँ मगर मैं अपने को भी कुछ समझता हूँ, मुझे भी अपनी ऐयारी पर घमण्ड है, इसी लिये मैं इन्द्रदेव से नहीं डरता और तुम लोगों से कहे देता हूँ कि दलीपशाह इन्द्रदेव का दोस्त है तो क्या हुआ मगर मैं उसे मारे बिना कभी न छोड़ूगा, उस कम्बख्त से अपना बदला जरूर लूंगा। केवल उसी को नहीं मारूंगा बल्कि उसके खानदान में भी किसी को जीता न रहने दूँगा। मैं इस बात को जरा भी न सोचूंगा कि वह मेरा नातेदार है क्योंकि खुद उसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया और मेरी बर्बादी के पीछे लग गया। मुझे यह भी खबर लगी है कि दलीपशाह ने जमानिया के दारोगा से भी दोस्ती पैदा कर ली है और उसकी तरफ से भी मुझे सताने के लिये तैयार है।

एक०। ऐसी अवस्था में जरूर दलीपशाह का नाम निशान मिटा देना चाहिये क्योंकि जब तक वह जीता रहेगा आप बेफिक्र नहीं हो सकते, साथ ही इसके शम्भू को भी मार डालना चाहिये। उन दोनों के मारे जाने पर आप इन्द्रदेव को अच्छी तरह समझा लेंगे और विश्वास दिला देंगे कि आपके हाथों से दयाराम नहीं मारे गये और अगर दलीपशाह और शम्भू ने उनसे ऐसा कहा है तो वह बात बिल्कुल ही झूठ है।

भूतनाथ० । ठीक है, मैं जरूर ऐसा ही करूंगा लेकिन अगर इतने पर भी काम न चलेगा और वह बात मशहूर होती दिखाई देगी तो लाचार होकर मुझे और भी अनर्थ करना पड़ेगा, नाता और रिश्ता भूल जाना पड़ेगा, दोस्ती और मुरौवत को तिलांजुली दे देनी पड़ेगी, और जिन को यह बात मालूम हो गई है उन सभों को इस दुनियां से उठा देना पड़ेगा ।

एक० । जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकसिंह को भी ?

भूत० । बेशक ! बल्कि गुलाबसिंह को भी !!

दूसरा० । यह बड़े कलेजे का काम होगा ?

भूत० । मुझसे बढ़ कर कठिन और बड़ा कलेजा किसका होगा जिसने लड़के लड़की और स्त्री को भी त्याग दिया है, मगर अफसोस ! इस समय मैं पाप पर पाप करने के लिये मजबूर हो रहा हूँ !

एक० । खैर यह बताइये कि सब से पहिले कौन काम किया जायगा और इस समय आप हम लोगों को क्या हुक्म देते हैं ?

भूत० । सबसे पहिले मैं अपने दोस्तों को छुड़ाऊंगा, और इसके लिये उस पड़ांस की घाटी में रहने वाली औरतों में से किसी को गिरफ्तार करना चाहिये । खैर अब बताता हूँ कि तुम लोगों को क्या करना चाहिये ( चौंक कर ) देखो तो वह साधू कौन है ! ऐसा गुमान होता, है कि इसे मैंने कभी देखा है ! यह तो हमारे उसी खोह की तरफ जा रहा है । पहिले इसी की सुध लेनी चाहिये फिर पीछे बतावेंगे कि तुम लोगों को क्या करना चाहिये ।

यह साधू जिस पर भूतनाथ की निगाह पड़ी बहुत ही बुड्ढा और तपस्वी जान पड़ता था इसके सर और दाढ़ी के सुफेद बाल बहुत ही घने और लाँबे थे । लाँबा कद, वृद्ध होने पर भी गठीला बदन, और रोआबदार मालूम होता था । कमर में क्या पहिरे हुए था इसका पता नहीं लगता था क्योंकि इसके बदन में एक बहुत लम्बा गेरुए रंग का ढीला कुरता था जो घुटने से भी एक बित्ता नीचे तक पहुँच रहा था मगर साथ ही इसके यह जान पड़ता था कि उसने अपने तमाम बदन में हलकी विभूत लगाई हुई है । इसके अतिरिक्त इसके पास और किसी तरह का सामान दिखाई न देता था अर्थात् कोई माला या सुमरनी तक इसके पास न थी ।

भूतनाथ अपने साथियों को उसी जगह रहने का हुक्म देकर धीरे धीरे उस साधू के पीछे रवाना हुआ मगर उस लापरवाह साधू को इस बात का कुछ भी खयाल न था कि उसके पीछे कोई आ रहा है।

थोड़ी ही देर में वह साधू उस खोह के मुहाने पर जा पहुँचा जिसमें भूतनाथ रहता था और जब वह खोह के अन्दर घुसने लगा तब भूतनाथ भी लपक कर उसके पास पहुँचा।

साधू०। (भूतनाथ को देख कर) तुम कौन हो!

भूत०। जी मेरा नाम गदाधरसिंह ऐयार है।

साधू०। ठीक है, मैं तुम्हारा नाम सुन चुका हूँ, बहुत अच्छा हुआ कि तुमसे मुलाकात हो गई, मालूम होता है कि तुम्हीं ने इस घाटी में दखल जमा रक्खा है और जो लोग इसके अन्दर हैं वे सब तुम्हारे ही संगी साथी हैं?

भूत०। जी हाँ बात तो ऐसी ही है।

साधू०। मैं इसी फिक्र में पड़ा हुआ था और सोच रहा था कि इस घाटी में किसने अपना दखल जमा लिया है। शायद तुम्हें यह बात मालूम नहीं है खैर अब समझ लो कि मैं इस घाटी में पचास वर्ष से रहता हूँ और यहाँ का हाल जितना मैं जानता हूँ किसी दूसरे को मालूम नहीं है। इधर कई वर्ष हुए हैं कि मैं इस घाटी को छोड़कर तीर्थयात्रा के लिये चला गया था। मेरा विचार था कि फिर लौट कर यहाँ न आऊँ और इसी लिये इसका दर्वाजा खुला छोड़ गया था पर ईश्वर की प्रेरणा से फिर मैं घूमता फिरता यहाँ चला आया और जब इस घाटी के अन्दर गया तो देखा कि इसमें किसी दूसरे ही की अमलदारी हो रही है, अस्तु मैं इसका दर्वाजा बन्द करता हुआ बाहर निकल आया और इस फिक्र में पड़ा कि इसके मालिक का पता लगाना चाहिये क्योंकि इसके अन्दर जितने आदमी दिखाई पड़े उनमें से कोई भी ऐसा नजर न आया जिसे मैं यहाँ का मालिक समझूं, इसी लिये मै इसके अन्दर किसी से मिला भी नहीं और न किसी ने मुझे देखा। खैर यह जान कर मुझे प्रसन्नता हुई कि तुम यहाँ रहते हो, मैं बहुत ही प्रसन्न होता यदि तुम्हारी गृहस्थी या तुम्हारे बालबच्चे भी यहाँ दिखाई देते, मगर खैर जो कुछ है वही गनीमत है। मैं तुम्हें मुहब्बत की निगाह से देखता हूँ क्योंकि तुमसे मुझे एक गहरा सम्बन्ध है।

भूत० । ( आश्चर्य से ) वह कौन सा सम्बन्ध है ?

साधू० । सो कहने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि मैं भूलता हूँ जो तुमसे सम्बन्ध रखने की बात कहता हूँ । जो साधू है ।और जिसने दुनिया ही से सम्बन्ध छोड़ दिया उसे फिर किसी से सम्बन्ध रखने की जरूरत ही क्या है मगर खैर फिर कभी जब तुमसे मिलूँगा तब बताऊँगा कि मैं कौन हूँ, उस समय तुम मुझे मुहब्बत की निगाह से देखोगे और समझ जाओगे कि मैं तुम पर क्यों कृपा करता हूँ·····अस्तु जाने दो·····अच्छा तो तुम खुशी से इस घाटी में रहो, मैं इसका दर्वाजा खोल देता हूँ बल्कि यह भी बताए देता हूँ कि किस तरह यह दर्वाजा खुलता और बन्द होता है ।

भूत० । ( प्रसन्नता से ) ईश्वर ही ने मुझे आपसे मिलाया ! मैं बड़े ही तरद्दुद में पड़ा हुआ था । अपने दोस्तों की तरफ से मुझे बड़ी ही फिक्र थी जो इस घाटी के अन्दर इस समय कैद हो रहे हैं । मैं समझ रहा था कि मेरा कोई दुश्मन यहाँ आ पहुँचा जो इस घाटी का हाल अच्छी तरह जानता है और उसी ने मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया है मगर अब मेरा तरद्दुद जाता रहा और यह जान कर प्रसन्नता हुई कि इसके मालिक आप हैं, मगर आप मुझे बेतहर खुटके में डाल रहे हैं जो अपना पूरा परिचय नहीं देते । मैं क्योंकर समझूँ कि आप मेरे बड़े और सरपरस्त हैं ?

साधू० । ( मुस्कुरा कर ) खैर अगर तुम मुझे अपना सरपरस्त या मददगार न भी समझोगे तो इसमें मेरी तुम्हारी किसी की भी हानि नहीं है परन्तु फिर भी मैं तुमसे वादा करता हूँ कि बहुत जल्द एक दफे पुनः मिलूंगा और तब अपना ठीक ठीक परिचय तुमको दूँगा, इस समय तुम मेरी फिक्र न करो और अपने दुश्मनों से बेफिक्र होकर इस घाटी में रहो । यहाँ थोड़ी सी दौलत भी है जिसका पता तुम्हें मालूम न होगा, चलो वह भी मैं तुम्हें दे देता हूँ जो कि तुम्हारे काम आवेगी क्योंकि अब मुझे दौलत की कुछ जरूरत नहीं रही और यदि आवश्यकता पड़े भी तो मुझे किसी तरह की कमी नहीं है ।

भूतनाथ० । ( प्रसन्न होकर ) मैं केवल धन्यवाद देकर आपसे उऋण नहीं हो सकता, आप मुझ पर बड़ी ही कृपा कर रहे हैं !!

साधू० । उसे कृपा नहीं कहते यह केवल प्रेम के कारण है, अस्तु अब तुम

विलम्ब न करो शीघ्र चलो, जो कुछ मुझे करना है उसे जल्द निपटा कर मैं बदरिकाश्रम की यात्रा करूंगा।

भूतनाथ के दिल में इस समय तरह तरह के विचार उठ रहे थे। न मालूम किन बातों को सोच रहा था मगर प्रकट में यही जान पड़ता था कि वह बड़ी होशियारी के साथ सचेत बना हुआ खुशी खुशी साधू के साथ सुरंग के अन्दर जा रहा है। जब उस चौमुहानी पर पहुँचा जिसका जिक्र कई दफे हो चुका है तो भूतनाथ ने साधू से पूछा:—

भूतनाथ०। ये बाकी के दोनों रास्ते किधर गये हैं और उधर क्या है?

साधू०। इस घाटी के साथ ही और भी दो घाटियाँ हैं और उन्हीं में जाने के लिये ये दोनों रास्ते हैं मगर इन्हें मैंने बहुत अच्छी तरह से बन्द कर दिया है क्योंकि उन घाटियों में रहने वालों के आने जाने के लिये और भी कई रास्ते मौजूद हैं, अब इन रास्तों से कोई आ जा नहीं सकता। तुम इस तरफ से बिल्कुल बेफिक्र रहो मगर इस राह से उस तरफ जाने के लिये उद्योग कभी न करना।

भूत०। जी नहीं, मैं तो उस तरफ जाने का ख्याल कभी करता ही नहीं परन्तु आज कल उस तरफ वाली घाटी में बहुत से आदमी आकर बस गये हैं और वे सब मेरे साथ दुश्मनी करते हैं बस इसी लिये जरा खयाल होता है।

साधू०। (लापरवाही के साथ) खैर अगर उस घाटी में कोई रहता भी होगा तो यहां अर्थात् इस घाटी में आकर तुम्हारे साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं कर सकता। यों तो दुनिया में सभी जगह दोस्त और दुश्मन रहा करते हैं, तुम उनका बन्दोबस्त दूसरे ढङ्ग पर कर सकते हो।

भूत०। जैसी मर्जी आपकी!

साधू०। हां यही बेहतर है कि तुम बेफिक्र के साथ यहां रह कर अपने दुश्मनों का प्रबन्ध करो और मेरा इन्तजार करो, मैं बहुत जल्द इसी घाटी में आकर तुमसे मिलूंगा। उस समय मैं तुमको कुछ और भी लाभदायक वस्तुएं दूँगा और कुछ उपदेश भी करूंगा।

इतना कह कर साधू आगे की तरफ बढ़े और बहुत जल्द उस दर्वाजे के पास जा पहुँचे जिसे विमला ने बन्द कर दिया था। जिस तरह से विमला ने उस दर्वाजे को बन्द किया था उसी तरह साधू ने उसे खोला और खोलने तथा बन्द

करने का ढङ्ग भूतनाथ को बता दिया।

अब भूतनाथ सहज ही में साधू के साथ घाटी के अन्दर जा पहुँचा और अपने साथियों से मिल कर बहुत प्रसन्न हुआ। बातचीत करने पर मालूम हुआ कि उसके साथी लोगों ने कई दफे इस घाटी के बाहर निकलने का उद्योग किया था मगर रास्ता बन्द रहने के कारण बाहर न जा सके और इस वजह से वे लोग बहुत घबरा रहे थे।

भूतनाथ ने अपने सब साथियों से बाबाजी की मेहरबानी का हाल बयान किया और उन सभों को महात्मा के पैरों पर गिराया।

भूतनाथ यद्यपि जानता था कि साधू महाशय मुझ पर बड़ी कृपा कर रहे हैं और उन्हें मुझसे किसी तरह का फायदा नजर नहीं आता, तथापि वह अभी तक उन पर अच्छी तरह भरोसा करने का साहस नहीं रखता था। यह बात चाहे ऐयारी नियम के अनुसार कहिये चाहे भूतनाथ की प्रकृति के कारण समझिये। हाँ इतना जरूर था कि बाबाजी की मेहरबानियों से भूतनाथ दबा जरूर जाता था और सोचता था कि 'यदि इन्होंने कोई खजाना मुझे दे दिया जैसा कि कह चुके हैं, तो मुझे मजबूर हो कर इन पर भरोसा करना पड़ेगा कि ये वास्तव में मुझसे स्नेह रखते हैं और मेरे कोई अपने ही हैं।'

साधू महाशय की आज्ञानुसार भूतनाथ ने उन्हें वे सब गुफायें दिखाई जिन में वह अपने साथियों के साथ रहता था और बताया कि इस इस ढङ्ग पर इस इस स्थान को हम लोग बरतते हैं। इसके बाद साधू महाशय उसे अपने साथ लिये पूरब तरफ की पहाड़ी पर चले गये जिधर छोटी बड़ी कई गुफायें थीं।

साधू०। देखो भूतनाथ! मैं जब यहाँ रहता था तो इसी तरफ की गुफाओं में गुजारा करता था और इस पड़ोस वाली घाटी में जिसे तुम अपने दुश्मनों का स्थान बता रहे हो इन्द्रदेव रहता था जिसे तुम पहिचानने होवोगे।

भूत०। जी हां मैं खूब जानता हूँ।

साधू०। उन दिनों इन्द्रदेव का दिमाग बहुत ही बढ़ा चढ़ा था और वह मुझसे दुश्मनी रखता था, क्योंकि जिस तरह वह एक तिलिस्म का दारोगा है उसी तरह मैं भी एक तिलिस्म का दारोगा हूँ अस्तु वह चाहता था कि मेरे कब्जे में जो तिलिस्म है उसका भेद जान ले और उस पर कब्जा कर ले मगर

वह कुछ भी न कर सका और कई साल तक यहाँ रहने पर भी वह न जान सका कि फलाना ब्रह्मचारी इस पड़ोस वाली घाटी में रहता है। इस समय मैं तुमसे ज्यादे न कहूँगा और न ज्यादे देर तक रहने की मुझे फुरसत ही है, मगर तुम्हें बड़ा ही ताज्जुब होगा जब मैं अपना परिचय तुम्हें दूँगा और उस समय तुम भी मुझसे उतनी ही मुहब्बत करोगे जितनी इस समय मैं करता हूँ।

भूत०। ठीक है, मैं परिचय देने के लिये इस समय जिद्द नहीं कर सकता क्योंकि आप बड़े हैं और आपकी आज्ञानुसार मुझे चलना ही चाहिये। अच्छा यह तो बताइये कि वह तिलिस्म जिसके आप दारोगा हैं अभी तक आपके कब्जे में है या नहीं?

साधू०। हाँ अभी तक वह तिलिस्म मेरे कब्जे में है।

भूत०। वह किस स्थान में है?

साधू०। इसी घाटी में वह तिलिस्म है, मैं अबकी दफे जब यहाँ आकर तुमसे मिलूंगा तो उसका कुछ हाल कहूँगा और अगर तुम इसी घाटी में अपना कब्जा बनाए रहोगे और तुम्हारी चालचलन अच्छी देखूंगा तो एक दिन तुमको उस तिलिस्म का दारोगा भी बना दूँगा क्योंकि अब मैं बहुत बुड्ढा हो गया हूँ और तिलिस्म के नियमानुसार अपने बाद के लिये किसी न किसी को दारोगा बना देना बहुत जरूरी है।

साधू महाशय की इस आखिरी बात को सुन कर भूतनाथ बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह जानता था कि तिलिस्म का दारोगा बनना कोई मामूली बात नहीं है, उसके कब्जे में बेअन्दाज दौलत रहती है और उसकी ताकत तिलिस्मी सामान की बदौलत मनुष्य की ताकत से कहीं बढ़ कर रहती है। उसी समय भूतनाथ का खयाल एक दफे इन्द्रदेव की तरफ गया और उसने मन में कहा कि देखो तिलिस्मी दारोगा होने के कारण इन्द्रदेव कैसे चैन और आराम के साथ रहता है। दुश्मनों का उसे जरा भी डर नहीं है और वास्तव में उसके दुश्मन उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। मगर अफसोस! भूतनाथ ने इस बात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया कि इन्द्रदेव कैसा नेक ईमानदार और साधू आदमी है तथा उसमें सहनशीलता और क्षमाशक्ति कितनी भरी हुई है, तिस पर भी दुश्मनों के हाथ कैसा सताया गया।

भूत०। (बहुत नरमी के साथ) तो आप पुनः कब तक लौट कर यहाँ आवेंगे?

साधू०। इस विषय में जो कुछ मेरा विचार है इसे प्रकट करना अभी मैं उचित नहीं समझता।

भूत०। जैसा मर्जी आपकी। आजकल मेरी आर्थिक दशा बहुत ही हीन हो रही है, रुपये पैसे की तरफ से मैं बहुत ही तङ्ग हो रहा हूँ।

साधू०। तो इस समय जो खजाना मैं तुम्हें दे रहा हूँ वह तुम्हारे लिये कम नहीं है, यदि तुम उसे उचित ढङ्ग पर खर्च करोगे तो वर्षों तक अमीर बने रहोगे और राज्यसुख भोगोगे। आओ मेरे पीछे पीछे चले आओ।

इतना कह कर साधू एक गुफा की तरफ बढ़ा और भूतनाथ उसके पीछे पीछे रवाना हुआ।

खोह के अन्दर बहुत अन्धकार था मगर भूतनाथ बेधड़क साधू के पीछे पीछे दूर तक चला गया। जब लगभग दो तीन सौ कदम चला गया तो साधू ने कहा, "लड़के! देख मैं इस खोह के अन्दर अन्दाज से चला आकर सब काम कर सकता हूँ मगर तुझे इस काम में तकलीफ होगी क्योंकि तेरे लिये यह पहिला मौका है, इसलिये मैं उचित समझता हूँ कि तू अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी कर ले और अच्छी तरह से सब कुछ देख ले, फिर दूसरी दफे तेरे ऐसे होशियार आदमी को रोशनी की जरूरत न पड़ेगी।

भूतनाथ ने ऐसा ही किया अर्थात् रोशनी करके अच्छी तरह से देखता हुआ साधू के पीछे पीछे जाने लगा और ऐसा कहने और करने से साधू पर उसका विश्वास भी ज्यादे हो गया।

करीब करीब पाँच सौ कदम के चले जाने बाद रास्ता बन्द हो गया और साधू महाशय ने खड़े हो कर भूतनाथ से कहा, "बस आगे जाने का रास्ता नहीं है, देख यह बगल वाले आले में कैसा अच्छा नाग बना हुआ है जिसे देख कर डर मालूम होता है। यह वास्तव में लोहे का है। इसकी दुम पकड़ कर जब तू अपनी तरफ खैंचेगा तो यहाँ का दर्वाजा खुल जायगा, मगर इस बात से होशियार रहियो कि इसके सिर अथवा फन के ऊपर कभी हाथ न लगने पावे नहीं तो धोखा खायगा।"

भूतनाथ० । जो आज्ञा, पहिले आप ही इसे खैंचें जिसमें मैं अच्छी तरह समझ लूं !

साधू० । ( जोर से हंस कर ) अभी तक तुझको मुझपर भरोसा नहीं होता !! मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, ऐयारों के लिये यह ऐसा अनुचित नहीं है ।

इतना कह कर साधू ने साँप की दुम पकड़ ली और अपनी पूरी ताकत के साथ खैंचा । दो हाथ के लगभग वह दुम खिंच कर आले के बाहर निकल आई और साथ ही इसके बगल में एक छोटा सा दर्वाजा खुला हुआ दिखाई दिया ।

भूतनाथ को लिये हुए साधू उसके अन्दर घुस गया और उसी समय वह दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया । उस समय साधू ने भूतनाथ से कहा, "देख गदाधर ! इधर भी उसी तरह का नाग बना हुआ है, बाहर निकलती समय इधर से भी उसी तरह दर्वाजा खोलना पड़ेगा ।"

भूतनाथ ने उसे अच्छी तरह देखा और फिर उस कोठड़ी की तरफ निगाह दौड़ाई जिसमें इस समय वह मौजूद था । उसने देखा कि वहाँ चाँदी के कितने ही बड़े बड़े देग वा हण्डे रक्खे हुए हैं जिनका मुंह सोने के ढकने से ढंका हुआ है । भूतनाथ ने साधू की आज्ञा पाकर कई हण्डों का मुंह खोला और देखा कि उनमें अशर्फियाँ भरी हुई हैं ।

इस समय भूतनाथ की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा और उसने सोचा कि निःसन्देह ऐसे ऐसे कई खजाने इस घाटी में होंगे मगर उनका पता जानने के लिये साधू से इस समय जिद्द करना ठीक न होगा । अवश्य यह पुनः यहाँ आवेंगे और मुझ पर कृपा करेंगे ।

लौटते समय आज्ञा पाकर भूतनाथ ने अपने हाथ से वह दर्वाजा बन्द किया और साधू के पीछे पीछे चल कर खोह के बाहर निकल आया । उस समय साधू ने कहा, "गदाधरसिंह ! अब मैं जाता हूँ, जब लौट कर पुनः यहां आऊंगा, तो ऐसे ऐसे कई खजाने तुझे दूंगा और तिलिस्म का दारोगा बनाऊँगा मगर मैं तुझे समझाये जाता हूँ कि इन्द्रदेव के साथ दुश्मनी का ध्यान भी कभी अपने दिल में न लाइयो नहीं तो बर्बाद हो जायगा और दुःख भोगेगा, वह मुझसे बहुत ज्यादा जबर्दस्त है । अच्छा अब मैं जाता हूँ, मेरे साथ आने की कोई जरूरत नहीं है ।"

इतना कह कर साधू महाशय रवाना हो गये और आश्चर्य में भरे हुए भूतनाथ को उसी जगह छोड़ गये।

भूतनाथ बड़ी देर तक खड़ा खड़ा इस बात को सोचता रहा कि यह साधू महाशय कौन हैं और मुझ पर इतनी कृपा करने का सबब क्या है! सोचते सोचते उसका खयाल देवदत्त ब्रह्मचारी की तरफ चला गया जिन्होंने इसे पाला था और ऐयारी सिखा कर इस लायक बना दिया था कि किसी राजा या रईस के यहाँ रह कर इज्जत और हुर्मत पैदा करे।*

भूतनाथ सोचने लगा कि "ताज्जुब नहीं यदि यह मेरे गुरु महाराज देवदत्त ब्रह्मचारी जी हों जो बहुत दिनों से लापता हो रहे हैं। मुझे रणधीरसिंहजी के यहाँ नौकर रखा देने के बाद वह यह कह कर चले गये थे कि अब मैं योगाभ्यास करने के लिये उत्तराखण्ड चला जाऊंगा, तुम मुझसे मिलने के लिये उद्योग मत करना। या सम्भव है कि उनके भाई ज्ञानदत्तजी ब्रह्मचारी हों जिनकी प्रायः गुरुजी तारीफ किया करते थे और कहते थे कि वे एक अद्भुत तिलिस्म के दारोगा भी हैं। जहाँ तक मेरा खयाल है उन्हीं दोनों में से कोई न कोई जरूर है। ताज्जुब नहीं कि अब मैं कुछ दिनों में तिलिस्म का दारोगा बन जाऊ। अब मै इस घाटी को कदापि न छोड़ूंगा और देखूंगा कि किस्मत क्या दिखाती है। अब प्रभाकरसिंह को भी लाकर इसी घाटी में रखना चाहिये। मगर वास्तव में आजकल मैं बड़ी संकट में पड़ गया हूँ। मैं अपने मित्र इन्द्रदेव पर किस तरह अविश्वास करू और किस तरह भरोसा ही करूं या किस तरह समझूं कि जमना और सरस्वती बिना किसी की मदद के मुझसे दुश्मनी करने के लिये तैयार हो रही हैं! खैर जो कुछ होगा देखा जायगा अब प्रभाकरसिंह को शीघ्र इसी घाटी में ले आना चाहिये और उसके बाद इन्द्रदेव से चलकर मिलना चाहिये। उनसे मुलाकात होने पर बहुत सी बातों का पता लग जायगा। मैं इन्द्रदेव के सिवाय और किसी से डरने वाला भी नहीं हूँ!!"

इत्यादि तरह तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने दोस्तों और साथियों के पास चला गया और उनसे अपने कर्तव्य के विषय में बातचीत करने लगा मगर साधू महाशय की कृपा से खजाना मिलने का हाल उसने उन लोगों से नहीं कहा।

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति हिस्सा बाईस, भूतनाथ की जीवनी।

# सातवाँ बयान

जमानिया में दलीपशाह का मकान बहुत ही सुन्दर और अमीराना ढंग पर गुजारा करने लायक बना हुआ है। उसमें जनाना और मर्दाना किला इस ढंग से बनाया गया है कि भीतर से दर्वाजा खोल कर जब चाहे एक कर लें और अगर भीतरी रास्ता बन्द कर दिया जाय तो एक को दूसरे से कुछ भी सम्बन्ध न मालूम पड़े यहाँ तक कि अगर मर्दाने मकान में कोई मेहमान आ कर टिके तो उसे यकायक इस बात का पता भी न लगे कि जनाने लोग कहाँ रहते हैं और उस तरफ आने जाने के लिये इस तरफ से कोई रास्ता भी है या नहीं।

इस मकान के सामने एक छोटा सा सुन्दर नजरबाग बना हुआ था और उसके बाद सामने अर्थात् पूरब तरफ ऊंची दीवार और फाटक था। मकान के बाईं तरफ लम्बा खपड़ैल था जिसका एक सिरा तो मकान के साथ सटा हुआ था और दूसरा सिरा सामने अर्थात् फाटक वाली दीवार के साथ सटा हुआ था। बीच में कई दालान और कोठाड़ियाँ बनी हुई थी जिनमें दलीपशाह के खिदमतगार और सिपाही लोग रहा करते थे। इसी तरह मकान के दाहिनी तरफ इस सिरे से लेकर उस सिरे तक कुछ ऐसी इमारतें बनी हुई थीं जिनमें कई गृहस्थियों का गुजारा हो सकता था और उनमें दलीपशाह के शागिर्द ऐयार लोग रहा करते थे। इस ढंग पर वह नजरबाग बीच में अर्थात् चारों तरफ से घिरा हुआ था। सरसरी तौर पर खयाल करने से साफ मालूम होता था कि दलीपशाह बहुत ही अमीराना ढंग पर रह कर जिन्दगी के दिन बिता रहा है।

इस इमारत के बगल ही में दलीपशाह का एक बहुत बड़ा खुला हुआ बाग था जिसमें बड़े बड़े आम नीबू और अमरूद तथा इसी तरह के और भी बहुत किस्म के दरख्त लगे हुये थे।

दलीपशाह अपने मर्दाने मकान में एक सुन्दर सजे हुए कमरे के बाहर दालान में चौकी के ऊपर फर्श पर बैठे हुए अपने दोस्त इन्द्रदेव से बातचीत कर रहे हैं। इस जगह से सामने का नजरबाग और उसके बाद फाटक अच्छी तरह दिखाई दे रहा है। आज इन्द्रदेव इनसे मिलने के लिये यहाँ आये हुए हैं और इस समय इनके पास ही बैठे हुए कई जरूरी मामलों पर सलाह और बातचीत कर रहे हैं।

दलीप० । भाई साहब, गदाधरसिंह आपका दोस्त है इस लिये मैं भी लाचार होकर उसे अपना दोस्त मानता हूँ मगर सच तो यों है कि उसके साथ रिश्तेदारी होने पर भी मैं उसे दिल से पसन्द नहीं करता ।

इन्द्र० । हां उसकी चालचलन तो कुछ खराब जरूर है मगर आदमी बड़े ही जीवट का है और ऐयारी का ढंग भी बहुत ही अच्छा जानता है ।

दलीप० । इस बात को मैं मानता हूँ और जोर देकर कह सकता हूँ कि अगर वह ईमानदारी के साथ काम करके रणधीरसिंहजी के यहाँ कायदे से बना रहता तो एक दिन ऐयारों का सिरताज गिना जाता ।

इन्द्र० । ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह का साथ छोड़ तो नहीं दिया।

दलीप० । अब इसे छोड़ना नहीं तो क्या कहते हैं ? दो दो महीने तक गायब रहना और मालिक को मुँह तक नहीं दिखाना क्या इसी को नौकरी कहते हैं ? आप ही कहिये कि अबकी कै महीने के बाद आया था ? सिर्फ दो दिन रह कर चला गया । उससे तो उसकी स्त्री अच्छी है जो अपने मालिक अर्थात् रणधीरसिंहजी का साथ नहीं छोड़ती ।

इन्द्र० । ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह के यहाँ अपने बदले में अपना एक शागिर्द तो रख दिया है, इसके अतिरिक्त जब रणधीरसिंहजी को उसकी जरूरत पड़ती है तो उसी शागिर्द की मार्फत बुलवा भेजते हैं । अभी हाल ही में देखिये उसने कैसी कैसी बहादुरी के काम किये ।

दलीप० । अजी यह तो मैं खुद कह रहा हूँ कि वह ऐयार परले सिरे का है, उसके सब काम अच्छे ही होंगे, मगर इस जगह बहस तो ईमानदारी की हो रही है ।

इन्द्र० । ( दबी जुबान से ) हाँ वह लालची तो जरूर है मगर अभी नई जवानी है सम्भव है आगे चल कर सुधर जाय ।

दलीप० । ( हँस कर ) जी हाँ !! बात तो यह है कि वह कम्बख्त आपके सामने ढोंग रचता है और दयारामजी के मामले पर उदासी दिखला कर कहता है कि अब मैं दुनिया ही को छोड़ दूँगा मगर मैं इस बात को कभी नहीं मान सकता, हाँ उसका यह कहना शायद सच हो कि दयारामजी के मामले में उसने धोखा खाया ।

इन्द्र० । भाई उसकी यह बात तो जरूर सच है, वह जान बूझ कर दयारामजी को कदापि नहीं मार सकता ।

दलीप० । जी हाँ मैं भी यही कहता हूँ मगर आप देख लीजियेगा कि कुछ दिन के बाद वह हमारे और आपके ऊपर भी सफाई का हाथ जरूर फेरेगा । आपके ऊपर चाहे मेहरबानी भी कर जाय क्योंकि आपसे डरता है और उसे विश्वास है कि आप ऐयारी में किसी तरह उससे कम नहीं हैं, मगर मुझे तो कभी न छोड़ेगा ।

इन्द्र० । अजी भविष्य में जैसा करेगा वैसा पावेगा मगर इस समय तो हमारा आपका किसी का भी कसूरवार नहीं है ।

दलीप० । ( खिलखिला कर हंसने के बाद धीरे से) तब क्यों आपने बेचारे के पीछे जमना और सरस्वती को लगा दिया है ?

इन्द्र० । केवल उन दोनों का प्रण पूरा करने के लिये मैंने यह कार्रवाई कर दी है नहीं तो तुम ही सोचो कि बेचारी लड़कियाँ उसका क्या बिगाड़ सकती हैं !!

दलीप० । तो आप उन लड़कियों के साथ धोखेबाजी का काम करते हैं ! सच्चे दिल से उनकी मदद नहीं करते !!

इन्द्र० । ( दाँत से जुबान दबाने के बाद ) नहीं नहीं, मैं जरूर उनकी मदद करता हूँ । मगर मेरी इच्छा यही है कि गदाधरसिंह मारा न जाय और उन दोनों लड़कियों की अभिलाषा भी पूरी हो जाय ।

दलीप० । यह एक अनूठी बात है, खरबूजा खा भी ले और वह काटा भी न जाय ! मैं समझाता हूँ कि वह एक न एक दिन जरूर जमना और सरस्वती को मार डालेगा ।

इन्द्र० । नहीं ऐसा तो न करेगा ।

दलीप० । अजी आप तो निरे ही सूधे हैं ! इतने बड़े ऐयार होकर भी धोखा खाते हैं । मगर इसमें आपका कोई कसूर नहीं है, ईश्वर ने आपका दिल ही ऐसा नर्म बनाया है कि किसी की बुराई पर ध्यान नहीं देते । भाईजान मैं तो उससे बराबर खटका रहता हूँ, इससे आप यह न समझिये कि मैं उसका दुश्मन हूँ, आपकी तरह मैं भी यही चाहता हूँ कि वह किसी तरह अच्छे ढर्रे पर आ जाय, मगर यह उम्मीद नहीं । अच्छा यह बताइये कि उन लोगों के विषय में

आजकल क्या कार्रवाई हो रही है अर्थात् जमना और सरस्वती क्या कर रही हैं ?

इन्द्र० । बस गदाधरसिंह के पीछे पड़ी हुई हैं, आज कई दिन हुए कि उसे गिरफ्तार भी कर लिया था मगर सिर्फ डरा धमका के छोड़ दिया, क्योंकि मैंने अच्छी तरह समझा दिया है कि दुश्मन को सता के और दुःख दे के बदला लेना चाहिये न कि जान से मार के । वे बेचारियां तो मेरी बात मान जायंगी मगर गदाधरसिंह की तरफ से मैं डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि वह उन दोनों का सफाया कर दे ।

दलीप० । ( मुस्कुरा कर ) आप तो उसे नेक बना रहे हैं ? उस पर भरोसा करते हैं ! अभी अभी कह चुके हैं कि वह उन दोनों के साथ बुराई कभी न करेगा !!

इन्द्र० । आशा तो ऐसी ही है जो मैं कह चुका हूँ, मगर फिर भी डरता हूँ क्योंकि आज कल उसका रङ्ग ढङ्ग और रहम सहन ठीक नहीं है ।

दलीप० । आप तो अच्छी दिलफी बात करते हैं !

इन्द्र० । ऐसा नहीं मेरे दोस्त ! मैं खूब समझता हूँ कि वह आजकल बिगड़ा हुआ है मगर मैं उसे सुधारना चाहता हूँ, मेरा खयाल है कि वह दुःख भोग कर सुधर सकता है, अगर उसकी यातना की जाय तो ताज्जुब नहीं कि वह राह पर आ जाय ।

दलीप० । तो क्या बेचारी जमना और सरस्वती ही के हाथ से उसकी यातना कराइयेगा ?

इन्द्र० । नहीं नहीं, वे बेचारियां भला क्या कर सकेंगी ! मैं आज आप के पास इसी लिये आया हूँ कि इस काम में आप से मदद लूं ।

दलीप० । वह क्या ? मैं आपके लिये हर तरह से तैयार हूँ ।

इन्द्र० । आप जानते ही हैं कि मैं अपना स्थान किसी तरह छोड़ नही सकता ।

दलीप० । बेशक ऐसा ही है ।

इन्द्र० । अस्तु मैं चाहता था कि आप कुछ दिनों तक उन लड़कियों के साथ रह कर उनकी मदद करें, मगर देखता हूँ कि आप बेतरह गदाधरसिंह पर टूटे हुए हैं । मैं यह नहीं चाहता कि वह जान से मारा जाय ।

दलीप० । तो क्या आप समझते हैं कि मैं आपकी इच्छा के विपरीत चलूंगा ?

इन्द्र० । नहीं नहीं, ऐसा तो मुझे स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता। हां यह सोचता हूँ कि मेरा कहना आपकी इच्छा के विरुद्ध कहीं न हो।

दलीप० । चाहे जो हो मगर मैं आपकी बात कभी न टालूंगा इसके अतिरिक्त आप जानते ही हैं कि वह मेरा रिश्तेदार है, उसकी स्त्री शान्ता है तो मेरी साली है मगर मैं उसे बहिन की तरह मानता और प्यार करता हूँ, ऐसी अवस्था में मैं कब चाहूँगा कि गदाधरसिंह मारा जाय और उसकी स्त्री विधवा होकर मेरी आँखों के सामने आवे ? मगर बात जो असल है वह जरूर कहने में आती है।

इन्द्र० । ठीक है, मगर गदाधरसिंह खुद अपने पैर में कुल्हाड़ी मार रहा है, खैर जैसा करेगा वैसा पावेगा। हम लोग जहाँ तक हो सकेगा उसके सुधारने की कोशिश करेंगे आगे जो ईश्वर की मर्जी।

दलीप० । खैर मुझे आप क्या काम सुपुर्द करते हैं सो कहिये ?

इन्द्र० । मैं चाहता हूँ कि आप कुछ दिनों तक जमना और सरस्वती के साथ रह कर उनकी मदद कीजिये मगर इस तरह पर नहीं कि जो कुछ वे कहती जांय उसे आप करते जांय।

दलीप० । तब किस तरह से ?

इन्द्र० । इस तरह से कि वे दोनों जिस तरह चाहें स्वयम् काम करके अपना हौसला पूरा करें और यही उनकी इच्छा भी है मगर जब कभी वे धोखा खा जाय या किसी मुसीबत में फंस जायं तब आप उनकी रक्षा करें।

दलीप० । यह बड़ा कठिन काम है !

इन्द्र० । बेशक कठिन काम है और इसे सिवाय आपके कोई दूसरा पूरा नहीं कर सकता।

दलीप० । ( कुछ सोच कर ) बहुत अच्छा, मैं तैयार हूँ।

इन्द्र० । तो बस आज ही आप मेरे साथ चलिये, मैं उन दोनों को आपके सुपुर्द कर दूँ और उस घाटी के भेद भी आपको बता दूँ तथा जो कुछ मैं कर आया हूँ उसे भी समझा दूँ।

दलीप० । जब आपकी इच्छा हो चलिये। ( फाटक की तरफ खयाल करके ) देखिये वह गुलाबसिंह चले आ रहे हैं ! इन्हें चुनार से क्योंकर छुट्टी मिली !!

इन्द्र० । इनका हाल आपको मालूम नहीं है पर मैं सुन चुका हूँ और इस

समय आपसे कहने ही वाला था कि इन्दुमति भी आजकल जमना और सरस्वती के पास पहुँची हुई है, मगर अब कहने की कोई जरूरत नहीं, खुद गुलाबसिंह की जुबानी आप सब कुछ सुन लेंगे और शायद इसीलिये वह यहां आए भी हैं।

दलीप०। शिवदत्त भी नया नया राज्य पा कर आजकल अन्धा हो रहा है।

इन्द्र०। बेशक ऐसा ही है!

इतने ही में दरवान ने ऊपर आकर गुलाबसिंह के आने की इत्तला की और उन्हें ले आने का हुक्म पाकर चला गया। थोड़ी ही देर में गुलाबसिंह वहां आ पहुँचे और उन्होंने बड़े अदब के साथ इन्द्रदेव को सलाम किया और दलीपशाह से मिले।

इशारा पाकर गुलाबसिंह एक कुर्सी पर बैठ गये और इस तरह बातचीत होने लगी :—

दलीप०। कहो भाई गुलाबसिंहजी! आज तो बहुत दिनों के बाद आपसे मुलाकात हुई है। सब कुशल तो है?

गुलाब०। जी कुशल तो नहीं है, और इसी लिये मुझे चुनारगढ़ से भागना पड़ा।

दलीप०। क्या महाराज शिवदत्त की नौकरी आपने छोड़ दी?

गुलाब०। हां मजबूर होकर मुझे ऐसा करना पड़ा, क्योंकि मैं प्रभाकरसिंह के साथ किसी तरह का बुरा वर्ताव नहीं कर सकता था।

दलीप०। प्रभाकरसिंह भी तो उन्हीं के यहां सेनापति का काम करते हैं?

गुलाब०। हां, मगर महाराज ने उनके साथ बहुत ही बुरा वर्ताव किया, उनकी स्त्री इन्दुमती पर हजरत आशिक हो गये और बड़ी बड़ी चालबाजियों से अपने महल में बुलवा लिया मगर जब वह किसी तरह राजी न हुई और जान देने तथा लेने पर तैयार हो गई तब लाचार उसे महल के अन्दर कैद कर रक्खा और प्रभाकरसिंह को मार डालने का बन्दोबस्त करने लगे जिसमें निश्चिन्त हो कर इन्दुमति को काम में लावें, परन्तु प्रभाकरसिंह को इस बात का पता लग गया और वे महल में घुस कर बड़ी बहादुरी से इन्दुमति को छुड़ा लाये, तो भी शिवदत्त का मुकाबला नहीं कर सकते थे इस लिये अपनी स्त्री को साथ ले कर वहां से भाग खड़े हुए। इसके बाद शिवदत्त ने उनकी गिरफ्तारी के लिये मुझे मुकर्रर

किया, मैंने इस बात को गनीमत समझा और कई आदमियों को साथ लेकर उनकी खोज में निकला। आखिर उनसे मुलाकात हो गई और तब से मैं उनकी ताबेदारी में रहने लगा क्योंकि उनके बुजुर्गों ने जो कुछ भलाई मेरे साथ की है उसे मैं भूल नहीं सकता। नौगढ़ की सरहद के पास ही उनसे मुलाकात हुई थी और अकस्मात् उसी जगह भूतनाथ भी मुझसे मिल गया। मैंने भूतनाथ से मदद माँगी और वह मदद देने के लिये तैयार होकर हम लोगों को अपने डेरे में ले गया, मगर कई मामले ऐसे हो गये कि भूतनाथ दोस्ती को इस्तीफा देकर दुश्मन बन बैठा और उसके सबब से भी हमें तकलीफ ही उठानी पड़ी !!

इतना कह कर गुलाबसिंह ने इन्द्रदेव की तरफ देखा।

इन्द्र०। हाँ हाँ गुलाबसिंह, तुम कहते जाओ रुको मत, दलीपशाह से कोई बात छिपी हुई नहीं है।

गुलाब० ( हाथ जोड़ कर ) जी नहीं, अब जो कुछ कहना बाकी है आप ही इन्हें समझा दें, मैं डरता हूँ कि कदाचित् मेरी जुबान से ऐसी कोई बात निकल पड़े जिसे आप नापसन्द करते हों तो.....

इन्द्र०। (मुस्कुरा कर) अजी नहीं गुलाबसिंह ! मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ, तुम बड़े ही नेक और सज्जन आदमी हो, जमना और सरस्वती ने जो कुछ भेद की बातें प्रभाकरसिंह से कही हैं सो मुझे मालूम हैं और प्रभाकरसिंह ने जो कुछ तुम्हें बताया है उसे भी मैं कदाचित् जानता हूँ अस्तु तुम जो कुछ कहना चाहते हो बेधड़क कह जाओ।

गुलाब०। जो आज्ञा अच्छा मैं संक्षेप ही में कह डालता हूँ। ( दलीपशाह से ) भूतनाथ जिस घाटी में रहता है उसके पास ही जमना और सरस्वती भी रहती हैं। वह किसी तरह प्रभाकरसिंह को अपने यहां ले गई मगर इसके बाद ही इन्दुमति पुनः दुश्मनों के हाथ में फंस गई, उसे भी दोनों बहिनें छुड़ा कर अपने यहां ले गईं। तब से इन्दुमति उन्हीं के यहां रहती है। प्रभाकरसिंह उस खोह से बाहर आए और मुझसे मिले। कई दिनों के बाद हम दोनों आदमी चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए इस लिये कुछ सिपाहियों का बन्दोबस्त करके दुश्मन से बदला लें, मगर भूतनाथ जिसे जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार करके नीचा दिखाया था हम लोगों का दुश्मन बन बैठा और वह धोखा देकर प्रभाकरसिंह को

कैद कर अपने घर ले गया, कहां रक्खा सो मुझे मालूम नहीं।

इसके बाद गुलाबसिंह ने वह किस्सा खुलासे तौर पर दलीपशाह और इन्द्रदेव से बयान किया। इन्द्रदेव को प्रभाकरसिंह की गिरफ्तारी का हाल अभी तक मालूम नहीं हुआ था अस्तु उन्हें यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने दलीपशाह से कहा, "मेरे दोस्त! मुझे प्रभाकरसिंह के हाल पर अफसोस होता है। भूतनाथ ने यह काम अच्छा नहीं किया। खैर कोई चिन्ता नहीं, प्रभाकरसिंह को उसके कब्जे से निकाल देना कोई बड़ी बात नहीं है। अब तुम सफर की तैयारी करो और जमना तथा सरस्वती के साथ ही साथ प्रभाकरसिंह की भी मदद करो, मैं खुद तुम्हारे साथ चल कर प्रभाकरसिंह को कैद से छुट्टी दिलाऊंगा।"

इतना कह कर इन्द्रदेव दलीपशाह को कमरे के अन्दर ले गये और आधे घण्टे तक एकान्त में न मालूम क्या क्या समझाते रहे, इसके बाद बाहर आये और बहुत देर तक गुलाबसिंह से बातचीत करते रहे।

## आठवाँ बयान

भूतनाथ को जब अपनी घाटी में घुसने का रास्ता नहीं मिला था तो वह प्रभाकरसिंह को एक दूसरे ही स्थान में ले जा कर रख आया था और अपने दो आदमी उनकी हिफाजत के लिये छोड़ दिये थे। अब जो भूतनाथ महात्मा की कृपा से अपनी सुहावनी घाटी में चला गया, सुरंग का रास्ता उसके लिये साफ हो गया, दर्वाजा खोलने और बन्द करने की तर्कीब मिल गई, बल्कि उसके साथ ही साथ बेअन्दाज दौलत का भी मालिक बन बैठा तो उसका हौसला बनिस्बत पहिले के सौगुना बढ़ गया और उसने चाहा कि प्रभाकरसिंह को भी लाकर उसी घाटी में रख छोड़े, अस्तु महात्माजी को बिदा करने के बाद दूसरे दिन वह वहां से रवाना हुआ और सन्ध्या होते होते तक प्रभाकरसिंह को इस घाटी में लाया। इस समय प्रभाकरसिंह बेहोशी के नशे में बेहोश थे और उनके हाथों में हथकड़ी तथा पैरों में बेड़ी पड़ी हुई थी।

भूतनाथ ने उन्हें एक बहुत बड़ी साफ और सुन्दर चट्टान पर रख दिया, हाथ की बेड़ी खोल दी और लखलखा सुंघा कर उनकी बेहोशी दूर की। जब प्रभाकरसिंह उठ कर बैठ गये तो इस तरह बातचीत होने लगी :—

प्रभा० । ( चारो तरफ देख कर ) क्या अभी तक मेरी गिनती कैदियों ही में है ? मैं पुनः बेहोश करके इस घाटी में क्यों लाया गया और तुम क्यों नही बताते कि मुझे इस तरह दुःख देने से तुम्हारा मतलब क्या है ।

भूत० । प्रभाकरसिंह ! तुम खूब जानते हो कि ऐयारों को जरा जरा से काम के लिये बड़े बड़े नाजुक और अमीर आदमियों को तकलीफ देनी पड़ती है । मैं सच कहता हूँ कि तुमसे मुझे किसी तरह की दुश्मनी नहीं थी, बल्कि मैं हर तरह से तुम्हारी मदद के लिये तैयार होगया था, अगर तुम धोखा देकर अपना ढङ्ग न बदलते तो देखते कि मैं किस खूबी और खूबसूरती के साथ तुम्हारे दुश्मनों से तुम्हारा बदला लेता और तुम्हें हर तरह से बेफिक्र कर देता, मगर अफसोस तुमने दुश्मनों से मिल कर मुझे धोखा दिया और गुलाबसिंह को भी जो मेरा दोस्त था बहका दिया !!

प्रभा० । मैंने तुम्हारे किस दुश्मन से मिल कर तुम्हारा क्या नुकसान किया सो साफ साफ क्यों नहीं कहते ?

भूत० । क्या तुम नहीं जानते जो साफ साफ कहने की जरूरत है ? जमना और सरस्वती ने मुझे तकलीफ देने के लिये अवतार लिया है और तुम उनके पक्षपाती बन गये हो ! वे तो भला औरत की जात हैं नासमझ कहलाती हैं, पर तुम्हीं ने उनका भ्रम क्यों नहीं दूर कर दिया और क्यों नहीं समझा दिया कि भूतनाथ ने दयाराम को कदापि न मारा होगा क्योंकि वह उनके साथ मुहब्बत रखता था और उनका दोस्त था !

प्रभा० । ( हँस कर) तुमको तो वे गिरफ्तार करके उस घाटी में ले गई थीं, फिर तुम ही ने क्यों नहीं उनका भ्रम दूर कर दिया ? तुम ऐयार कहलाते हो और हर तरह से बात बनाना जानते हो !!

भूत० । मुझे तो वे कसूरवार समझती हैं, भला मेरी बात क्यों मानने लगीं ?

प्रभा० । इसी तरह मैं भी तो उनका रिश्तेदार ठहरा, मैं उनकी इच्छा के विरुद्ध क्यों करने लगा ! तुम जानो और वे जानें ! मुझे इन झगड़ों से मतलब ही क्या ? बेचारी औरत की जात अबला कहलाती हैं और तुम इतने बड़े नामी ऐयार हो, फिर भी जरा से मामले के लिये मुझसे मदद मांगते और चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये अपने एक ऐसे रिश्तेदार के साथ बेमुरौवती करूं जो दया

करने के योग्य है ! तुम्हें शर्म नहीं आती ! हां अगर मैं खुद तुम्हारे साथ किसी तरह की बुराई करूं तो जरूर मुझसे बदला लेना उचित था।

भूत०। ( मुस्कुरा कर ) सत्य वचन ! मालूम हुआ कि आप बड़े बोलने वाले हैं और सिवाय सच के कभी झूठ नहीं बोलते ! अच्छा खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं, मैं तुमसे बहस करना पसन्द नहीं करता मैं जो कुछ पूछता हूँ उसका साफ साफ जवाब दो नहीं तो तुम्हारे लिये अच्छा न होगा !

प्रभा०। अब इस धमकी में आकर तो मैं तुम्हारी बातों का जवाब नहीं दे सकता, मुलायमियत से अगर पूछते तो शायद कुछ जवाब दे भी देता क्योंकि न तो तुम्हारे किसी अहसान का बोझ मेरी गर्दन पर है और न मैं तुमसे डरता ही हूँ !!

भूत०। ऐसी अवस्था में भी तुम मुझसे नहीं डरते ! देख रहे हो कि तुम्हारे हर्बे छीन लिये गये, हथकड़ी तुम्हारे हाथों में पड़ी हुई है और इस समय तुम हर तरह से मजबूर और कमजोर हो रहे हो !!

"यह हथकड़ी तो कोई चीज नहीं है ! मेरे ऐसे क्षत्री के लिये तुमने इसे पसन्द किया यह तुम्हारी भूल है !!" इतना कह कर बहादुर प्रभाकरसिंह ने एक ऐसा झटका दिया कि हथकड़ी टूट कर उनके हाथों से अलग हो गई और साथ ही इसके वे अपनी कमर से तलवार खैंच कर भूतनाथ के सामने खड़े हो गये और बोले, "बताओ क्या अब भी मैं तुम्हारा कैदी हूँ ?"

प्रभाकरसिंह की कमर में एक ऐसी तलवार थी जो बदन के साथ पेटी की तरह लपेट कर बांधी जा सकती थी, चमड़े की मुलायम म्यान उसके ऊपर चढ़ी हुई थी और उसे प्रभाकरसिंह कपड़े के अन्दर कमर में लपेट कर धोती और कमरबन्ध से छिपाये हुए थे, अभी तक उस पर भूतनाथ की निगाह नहीं पड़ी थी बल्कि उसे इस बात का कुछ गुमान भी न था। यह तिलिस्मी तलवार विमला ने प्रभाकरसिंह को दी थी और विमला ने इन्द्रदेव से पाई थी। इन्द्रदेव का बयान है कि उन्हें इसी तरह के कई हर्बे कुंअर गोपालसिंह ने अपने जमानिया के तिलिस्म में से निकाल कर दिये थे।

इस तलवार में भी करीब करीब वही गुण था जो उस तिलिस्मी खञ्जर और

नेजे में था जिसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिख आये हैं, फर्क बस इतना था कि जिस तरह उन खञ्जरों में कब्जा दबाने से चमक पैदा होती थी उस तरह इसमें चमक नहीं पैदा होता थी और न इसके छूने से आदमी बेहोश ही होता था मगर इसका जख्म लगने से बिजली का असर जरूर होता था, और उसके असर से आदमी बेहोश हो जाता था, हां उनकी तरह इसके जोड़ की भी एक खूबसूरत अंगूठी जरूर थी जो इस समय प्रभाकरसिंह की तरजनी उंगली में पड़ी हुई थी। इस अंगूठी में यह गुण भी था कि अगर धोखे से उन्हीं को इसका जख्म लग जाय तो उन्हें कुछ असर न हो।

प्रभाकरसिंह की हिम्मत मरदानगी और ताकत देख कर भूतनाथ हैरान हो गया बल्कि यों कह सकते हैं कि घबड़ा गया। यद्यपि भूतनाथ भी मर्दमैदान और लड़ाका था तथा यहां पर पास ही में उसके कई मददगार भी थे जो उसके आवाज देने के साथ ही पहुँच सकते थे मगर फिर भी थोड़ी देर के लिये उसके ऊपर प्रभाकरसिंह का रोब छा गया वह खड़ा होकर उनका मुंह देखने लगा।

प्रभा०। हां बताओ तो क्या अब भी मैं तुम्हारा कैदी हूँ ?

भूत०। ( बनावटी मुस्कुराहट के साथ ) हां बेशक तुम ताकतवर और बहादुर हो, मगर समझ रक्खो कि ऐयारों का मुकाबला करना तुम्हारा काम नहीं है!

प्रभा०। हां बेशक इस बात को मैं मानता हूँ, मगर खैर जैसा मौका होगा देखा जायगा। इस समय तुम्हारा क्या इरादा है सो साफ साफ कह डालो, अगर लड़ना चाहते हो तो मैं लड़ने के लिये भी तैयार हूँ।

भूत०। मुझे न तो तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी ही है और न मैं व्यर्थ लड़ना ही चाहता हूँ, हां इतना जरूर चाहता हूँ कि जमना और सरस्वती का सच्चा सच्चा हाल मुझे मालूम हो जाय। न मालूम किस नालायक ने उन्हें समझा दिया है कि मैं अपने प्यारे दोस्त दयारामजी का घातक हूँ तथा इस बात पर उन्होंने विश्वास करके मेरे साथ दुश्मनी करने पर कमर बांध ली है, और.....

प्रभा०। (बात काट कर) ओफ, इन पचड़ों को मै सुनना पसन्द नहीं करता, इस बारे में मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि तुम जानो और वे जानें, मै तुम्हारा तावेदार नहीं हूँ कि तुम्हारे लिये उनको समझाने जाऊं !

भूत० । ( क्रोध के साथ ) तुम अजब ढंग पर बातें कर रहे हो ! तुम्हारा मिजाज तो आसमान पर चढ़ा हुआ है !!

प्रभा० । बेशक ऐसा ही है, तुम धोखा देकर मुझे गिरफ्तार कर लाये हो इस लिये मैं तुमसे बात करना भी पसन्द नहीं करता !

भूत० । फिर ऐसा करने से तो नहीं चलता, तुम्हें झखमार कर मेरी बातों का जवाब देना पड़ेगा !!

यह कह कर भूतनाथ ने भी म्यान से तलवार निकाली और पैतरा बदल कर सामने खड़ा हो गया ।

प्रभा० । तुम्हारी तलवार बिल्कुल बेकार है कुछ भी काम नहीं देगी, चलाओ और देखो क्या होता है ।

भूत० । हाँ हाँ, देखा यह तलवार कैसा मजा करती है, मैं तुम्हें जान से न मारूंगा बल्कि बेकार करके छोड़ दूँगा !

इतना कह के भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह पर वार किया जिसे उन्होंने बड़ी चालाकी के साथ अपनी तलवार पर रोका ।

प्रभाकरसिंह की तलवार पर पड़ने के साथ ही भूतनाथ की तलवार कट कर दो टुकड़े हो गई क्योंकि वह हर एक हर्बे को काट सकती थी । भूतनाथ ने टूटी हुई तलवार फेंक दी और कमर से खञ्जर निकाल कर वार किया ही चाहता था कि प्रभाकरसिंह ने अपनी तलवार से उसे भी काट कर दो टुकड़े कर दिया । भूतनाथ को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगा कि यह अंगूठी तलवार किस लोहे की बनी हुई है जो दूसरे हर्बों को इतने सहज में काट डाला करती है !!

थोड़ी ही दूर पर भूतनाथ के कई आदमी खड़े यह तमाशा देख रहे थे मगर मालिक का इशारा पाये बिना पास नहीं आ सकते थे । इस समय भूतनाथ ने उन्हें इशारा किया और वे लोग जो गिनती में आठ थे वहां आ मौजूद हुए ! यह कैफियत देख कर प्रभाकरसिंह ने कहा, "भूतनाथ, केवल तुम्हीं से नहीं बल्कि एक साथ इन सभों से लड़ने के लिये मैं तैयार हूँ !"

यह बात भूतनाथ को बहुत बुरी मालूम हुई और अपने एक साथी के हाथ से तलवार लेकर उसने पुनः प्रभाकरसिंह पर वार किया और साथ साथ अपने साथियों को भी मदद करने के लिये इशारा किया ।

प्रभाकरसिंह बड़ा ही बहादुर आदमी था और लड़ाई के फन में वह लासानी था। अगर वह चाहता तो सहज ही में अपनी तिलिस्मी तलवार से जख्मी करके सभों को बेहोश कर देता, मगर नहीं उसने कुछ देर तक लड़ कर सभों को दिखला दिया कि हमारे सामने तुम लोग कुछ भी नहीं हो। यद्यपि उसके बदन पर भी कई जख्म लगे मगर उसने सभों के हर्बे बेकार कर दिये और अन्त में भूतनाथ तथा उसके सभी साथी जख्मी होकर तलवार वाली बिजली के असर से बेहोश हो जमीन पर गिर पड़े। प्रभाकरसिंह धीरे धीरे मस्तानी चाल से चलते हुए वहां से रवाना हुए मगर जब सुरंग में आये और दर्वाजा बन्द पाया तब मजबूर होकर उन्हें रुक जाना पड़ा।

प्रभाकरसिंह पुनः लौट कर वहां आये जहा भूतनाथ और उसके सार्थी लोग बेहोश पड़े हुए थे। तिलिस्मी तलवार के जोड़ की अंगूठी उन्होंने भूतनाथ के बदन से लगाई। उसी समय भूतनाथ की बेहोशी जाती रही, वह उठ कर खड़ा हो गया और ताज्जुब के साथ प्रभाकरसिंह का मुंह देखने लगा।

प्रभा०। कहो अब क्या इरादा है?

भूत०। मै समझ गया कि तुम बहादुर आदमी हो और तुम्हारे हाथ की यह तलवार बड़ी ही अनूठी है जिसके सबब से तुम और भी जबर्दस्त हो रहे हो। (मुस्कुरा कर) सच कहना यह तलवार तुमने कहां से पाई? पहले तो तुम्हारे पास यह न थी, अगर होती तो उस बेइज्जती के साथ तुम चुनारगढ़ से न भागते!

प्रभा०। ठीक है मगर इससे तुम्हे क्या मतलब, चाहे कहीं से यह तलवार मुझे मिली हो।

भूत०। (मुलायमियत के साथ) नहीं नहीं प्रभाकरसिंह, बुरा मत मानो, मेरी बातों का जवाब देने से तुम कुछ छोटे न हो जाओगे। बताओ तो सही क्या यह तलवार जहर में बुझाई हुई है? क्योंकि इसका जख्म लगने के साथ ही नशा चढ़ आता है।

प्रभा०। कदाचित् ऐसा ही हो, मैं ठीक नहीं कह सकता।

भूत०। देखो मेरे साथी लोग अभी तक बेहोश पड़े हुए हैं।

प्रभा०। यह अभी बहुत देर तक बेहोश पड़े रहेंगे मगर मरेंगे नहीं तुम्हारी

बेहोशी तो मैंने खुद दूर कर दी है, खैर यह बताओ कि अब तुम मेरे साथ क्या किया चाहते हो ?

भूत० । कुछ भी नहीं, मैं जो कुछ कर चुका हूँ उसके लिये आपसे माफी मांगता हूँ और चाहता हूँ कि आइन्दे के लिये हमारे और आपके सुलह हो जाय ।

प्रभा० । जैसा तुम बर्ताव करोगे मैं वैसा ही जवाब दूँगा, मुझे खास तौर पर तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी नहीं है ।

भूत० । अच्छा तो चलिये मैं आपको इस घाटी के बाहर कर आऊं क्योंकि बिना मेरी मदद के आप यहां से बाहर नहीं जा सकते ।

प्रभा० । चलो ।

भूत० । मगर मैं देखता हूँ कि आप बहुत जख्मी हो रहे हैं और खून से आपका कपड़ा तर बतर हो रहा है, मुझे आज्ञा दीजिये तो मैं आपके जख्मों को धो कर उन पर गीले कपड़े की पट्टी बांध दूँ ।

प्रभा० । नहीं इसकी कोई जरूरत नहीं है, घाटी के बाहर निकल कर मैं इसका उद्योग कर लूंगा

भूत० । आखिर क्यों ऐसा किया जाय, जितनी देर होगी उतना ज्यादे खून निकल जायगा, आप इसके लिये जिद्द न करें मुझ पर भरोसा करें और आज्ञा दें कि इन जख्मों पर पट्टी बांधूं ।

प्रभा० । खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, मैं तैयार हूँ ।

भूतनाथ तेजी के साथ उस गुफा में चला गया जिसमें उसका डेरा था और एक पीतल की गगरी पानी से भरी हुई और एक लोटा तथा कुछ कपड़ा पट्टी बांधने के लिये ले कर प्रभाकरसिंह के पास लौट आया ।

प्रभाकरसिंह ने कपड़े उतारे और भूतनाथ ने जख्मों को धोकर उन पर पट्टियां बांधीं । इसके बाद प्रभाकरसिंह कपड़ा पहिन कर चलने के लिये तैयार हो गये ।

भूतनाथ ने अपने आदमियों के विषय में प्रभाकरसिंह से पूछा कि 'इन सभों की बेहोशी खुदबखुद जाती रहेगी या इसके लिये कोई इलाज करना होगा ?'

पहिले तो प्रभाकरसिंह के जी में आया कि अपने हाथ की अंगूठी छुला कर उन सभों की बेहोशी दूर कर दें मगर फिर कुछ सोच कर रुक गये और बोले,

"नहीं इनकी बेहोशी आप से आप थोड़ी देर में जाती रहेगी कुछ उद्योग करने की जरूरत नहीं है।"

आगे आगे भूतनाथ और पीछे पीछे प्रभाकरसिंह वहां से रवाना हुए। सुरङ्ग में घुस कर भूतनाथ ने वह दर्वाजा खोला जो बन्द था मगर प्रभाकरसिंह को यह नहीं मालूम हुआ कि वह दर्वाजा किस ढङ्ग से खोला गया।

घाटी के बाहर निकल जाने पर भी भूतनाथ बहुत दूर तक पहुँचाने के लिये प्रभाकरसिंह के साथ मीठी मीठी बातें करता हुआ चला गया। लगभग आध कोस के दोनों आदमी चले गये होंगे जब प्रभाकरसिंह का सर घूमने लगा और धीरे धीरे बेहोश होकर वे जमीन पर गिर पड़े।

भूतनाथ बड़ा ही चालाक और कांइयां था और उसने प्रभाकरसिंह को बुरा धोखा दिया। हमदर्दी दिखा कर जख्म धोने के बहाने से वह बेहोशी की दवा का बर्ताव कर गया। जो पानी वह अपनी गुफा में से लेकर आया था उसमें तेज जहरीली दवा मिली हुई थी मगर वह दवा ऐसी न थी जिससे जान जाती रहे बल्कि ऐसी थी कि खून के साथ मिल कर बेहोशी का असर पैदा करे।

जब प्रभाकरसिंह बेहोश हो गये तब भूतनाथ ने पहिले तो उस अंगूठी और तलवार पर कब्जा किया और बहुत ही खुश हुआ, इसके बाद प्रभाकरसिंह को गठड़ी में बांध पीठ पर लाद कर अपनी घाटी की तरफ रवाना हुआ। बेचारे प्रभाकरसिंह पुनः भूतनाथ के फन्दे में फंस गये, देखा चाहिये अब भूतनाथ उनके साथ क्या सलूक करता है।

# नौवाँ बयान

अबकी दफे भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह को बड़ी सकती के साथ कैद किया, पैरों में बेड़ी और हाथों में दोहरी हथकड़ी डाल दी और उस गुफा के अन्दर रख दिया जिसमें स्वयम् रहता था और उसके (गुफा के) बाहर आप चारपाई डाल कर रात को पहरा देने लगा।

भूतनाथ ने बहुत कुछ दम दिलासा देकर प्रभाकरसिंह से जमना और सरस्वती का हाल पूछा मगर उन्होंने उनका कुछ भी भेद न बताया, तिसपर भी भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह को किसी तरह का दुःख नहीं दिया हां इस बात का

जरूर खयाल रक्खा कि वे किसी तरह भाग न जायं।

इसी तरह प्रभाकरसिंह की हिफाजत करते करते बहुत दिन गुजर गये मगर भूतनाथ की इच्छानुसार कोई कार्रवाई न हुई। भूतनाथ ने जमना और सरस्वती के विषय में भी पता लगाने के लिये बहुत उद्योग किया मगर कुछ नतीजा न निकला।

भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दों को तरह तरह का काम सुपुर्द करके चारो तरफ दौड़ाया और कइयों को उस सुरंग के इर्द गिर्द घूम कर टोह लगाने के लिये मुकर्रर किया जिस सुरंग की राह से कला ने उसे खोह के बाहर किया था।

भूतनाथ को अपने शागिर्द भोलासिंह की बड़ी ही फिक्र थी क्योंकि वह मुद्दत से गायब था और हजार कोशिश करने पर भी उसका कुछ पता नहीं लगता था। वह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासी शागिर्द था और भूतनाथ उसे दिल से मानता था।

एक दिन दोपहर के समय भूतनाथ अपनी घाटी से बाहर निकला और सुरङ्ग के मुहाने पर बाहर की तरफ पेड़ों की ठण्ढी ठण्ढी छाया में टहलने लगा। सम्भव है कि वह अपने किसी शागिर्द का इन्तजार कर रहा हो। उसी समय दूर से आते हुए भोलासिंह पर उसकी निगाह पड़ी। वह बड़ी खुशी के साथ भोलासिंह की तरफ बढ़ा और भोलासिंह भी भूतनाथ को देख कर दौड़ता हुआ उसके पास आया और उसके पैरों पर गिर पड़ा। भूतनाथ ने भोलासिंह को गले से लगा लिया और पूछा, "इतने दिन तक तुम कहां थे? मुझे तुम्हारे लिये बड़ी ही फिक्र थी और दिन रात खुटके में जी टंगा रहता था!"

भोला०। गुरुजी! मैं तो बड़ी ही आफत में फँस गया था। ईश्वर ही ने मुझे बचाया नहीं तो मैं बिल्कुल ही निराश हो चुका था।

भूत०। क्या तुम्हें किसी दुश्मन ने गिरफ्तार कर लिया था?

भोला०। जी हां।

भूत०। किसने?

भोला०। दो औरतों ने जिन्हें मैं बिल्कुल नहीं पहिचानता।

भूत०। मालूम होता है कि तुम्हें भी जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार कर लिया?

भोला०। जमना और सरस्वती कौन ?

भूत०। हमारे प्यारे दोस्त और मालिक दयाराम की स्त्रियाँ जिनका जिक्र मैं कई दफे तुमसे कर चुका हूँ।

भोला०। हाँ हाँ, अब मुझे याद आया, मगर आपने तो कहा था कि वे मर गईं ?

भूत०। हां मुझे ऐसा ही विश्वास था, मुझे क्या तमाम दुनिया यही जानती है कि वे दोनों मर गईं मगर अब मुझे मालूम हुआ है कि वे दोनों जीती हैं और ( हाथ का इशारा करके ) इसी पड़ोस वाली घाटी में रहती हैं तथा उन्होंने अपने को कला और विमला के नाम से मशहूर किया है इस लिये कि मुझे सता कर अपना कलेजा ठण्ढा करें क्योंकि किसी ने उन दोनों को विश्वास दिला दिया है कि दयाराम को भूतनाथ ही ने मार डाला है।

भोला०। शिव शिव शिव ! भला यह भी कोई बात है !! अच्छा तो ये सब बातें आपको किस तरह मालूम हुईं ?

भूत०। मैं एक दफे उनके फन्दे में पड़ गया था। वे दोनों मुझे गिरफ्तार करके अपनी घाटी में ले गईं और कैद कर दिया।

भोला०। फिर आप छूटे किस तरह से ?

भूत०। वहां मैंने एक लौंडी को धोखा देकर अपना बटुआ जो छिन गया था मंगवा लिया। फिर कैदखाने से बाहर निकल जाना मेरे लिये कोई कठिन काम न था। इसके बाद मैंने उसी अन्धेरी रात में पुनः एक लौंडी को गिरफ्तार किया, और लालच दे कुछ पता लगाना चाहा मगर वह लालच में न पड़ी। तब मैंने अपने चाबुक से काम लिया, मुख्तसर यह कि वह मार खाते खाते मर गई पर इससे ज्यादे और कुछ भी न बताया कि हां जमना और सरस्वती यहा रहती हैं और उन्होंने अपना नाम कला और विमला रक्खा है। इसके बाद एक ऐसा मौका हाथ आया कि मैंने कला को पकड़ लिया। उस समय मुझे विश्वास हो गया कि जमना या सरस्वती में से किसी एक को पकड़ लिया, मगर दिन के समय जब मैंने उसकी सूरत देखी तो मालूम हुआ कि यह जमना सरस्वती दोनों में कोई भी नहीं है क्योंकि नाम बदल दिया तो क्या हुआ मैं उन दोनों को अच्छी तरह पहिचानता था। पहिले तो शक हुआ कि शायद ऐयारी ढङ्ग पर इसने सूरत

बदल ली है मगर नहीं, पानी से मुंह धुलवाने पर वह शक भी जाता रहा।

इतना कह कर भूतनाथ ने अपना खुलासा हाल उस घाटी में गिरफ्तार हो कर जाने और फिर बाहर निकलने का तथा प्रभाकरसिंह को गिरफ्तार करने का बयान किया और कहा कि मालूम होता है कि उन्हीं दोनों में से किसी ने तुम्हें गिरफ्तार कर लिया था। खैर खुलासा हाल कहो तो कुछ मालूम हो।

भोला०। जी हां बेशक उन्हीं दोनों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया था, जब तक मैं उनके यहां कैद रहा तब तक रोज उन दोनों से मुलाकात होती रही क्योंकि वह रोज ही मुझे समझाने के लिये आया करती थीं। मैंने वहां एक नया ही ढङ्ग रचा जिस पर कई दिनों तक तो उन्हें विश्वास ही न हुआ मगर अन्त में उन्होंने मान लिया कि जो कुछ मैं कहता हूँ वह सब सच है। मैंने उन्हें यह समझाया कि मैं भूतनाथ का नौकर या शागिर्द नहीं हूँ बल्कि मैं राजा सुरेन्द्रसिंह का ऐयार हूँ जिसने चुनार के राजा शिवदत्त से आज कल में लड़ाई हुआ हो चाहती है। महाराजा सुरेन्द्रसिंह ने सुना है कि गदाधरसिंह राजा शिवदत्त की मदद पर है इस लिये उन्होंने मुझे तथा अपने कई ऐयारों को गदाधरसिंह की गिरफ्तारी के लिये भेजा था।

भूत०। ( मुस्कुरा कर ) खूब समझाया, अच्छी सूझी !

भोला०। जी हां, आखिर उन्हें मेरी बातों पर विश्वास हो गया और कई तरह के वादे करा के उन्होंने मुझे छोड़ दिया।

भूत०। किस राह से उन्होंने तुझे बाहर निकाला ?

भोला०। सो मैं नहीं कह सकता क्योंकि उस समय मेरी आँखों पर पट्टी बांध दी गई थी, जब पट्टी खोली गई तो मैंने देखा कि वहां बहुत से सुन्दर और सुहावने बेल तथा परिजात के पेड़ लगे हुए हैं और दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर साफ पानी का एक सुन्दर चश्मा भी बह रहा है.....

भूत०। ( बात काट के ) ठीक है ठीक है, मैं समझ गया, मैं भी उसी सुरङ्ग के बाहर निकाला गया था। परन्तु मैं समझता हूँ कि उसके अतिरिक्त और भी कोई रास्ता उस घाटी में आने जाने के लिये जरूर है क्योंकि जब मैं गिरफ्तार हुआ था तो किसी दूसरे ही मुहाने पर था। उस समय मुझे छुरी का एक जख्म लगा था जो अभी तक तकलीफ दे रहा है।

भोला० । सम्भव है, हो सकता है, इसमें आश्चर्य ही क्या है ?

इसके बाद दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर देर तक बातें करते रहे । भूतनाथ पर जो कुछ बीती थी उसने ब्यौरेवार बयान किया और भोलासिंह ने जो कुछ कहा उसे बड़े गौर से सुना ।

भोलासिंह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासपात्र था इसलिये साधू महाशय की कृपा का हाल भूतनाथ ने यद्यपि अपने किसी शागिर्द या आदमी से बयान नहीं किया था मगर भोलासिंह से साफ साफ और पूरा पूरा बयान कर दिया चाहे अभी यह नहीं बताया कि उस खजाने का दर्वाजा किस तरह खुलता और बन्द होता है हां अन्त में इतना जरूर कह दिया कि मैं तुम्हें उस खजाने वाले घर में ले चलूंगा और दिखाऊंगा कि वहां कितनी बेशुमार दौलत है ।

सन्ध्या होते होते भोलासिंह को लेकर भूतनाथ अपनी अनूठी घाटी में चला गया, रास्ते में उस दर्वाजे का हाल और भेद भी भोलासिंह को बताया जिसे विमला ने बन्द कर दिया था और जिसे साधू महाशय की कृपा से भूतनाथ ने खोला था ।

भोलासिंह जब उस घाटी के अन्दर पहुँच गया तो भूतनाथ ने सबसे पहिले प्रभाकरसिंह से उसकी मुलाकात कराई । भोलासिंह को देख कर और यह सुन कर कि इसका नाम भोलासिंह है प्रभाकरसिंह चौंके और गौर से उसकी तरफ देख कर चुप हो रहे ।

इसके बाद भोलासिंह को साथ ले कर भूतनाथ उस गुफा की तरफ रवाना हुआ जिसमें खजाना था, वह खजाना जो साधू महाशय की कृपा से मिला था रोशनी न करके अंधेरे ही में भोलासिंह को सुरङ्ग के अन्दर अपने पीछे पीछे आने के लिये भूतनाथ ने कहा और भोलासिंह भी बेखौफ कदम बढ़ाए चला गया मगर अन्त में जब भूतनाथ खजाने के दर्वाजे पर पहुँचा और वह दर्वाजा खोल चुका तब उसने अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और भोलासिंह को कोठड़ी के अन्दर आने के लिये कहा ।

भूत० । देखो भोलासिंह ! इस तरफ निगाह दौड़ाओ । ये सब चांदी के देग असर्फियों से नकानक भरे हैं, इनमें से सिर्फ एक देग मैंने खाली किया है ।

भोला० । (देगों वा हण्डों की तरफ देख के) बेशक यह बहुत बड़ा खजाना है ! करोड़ों रुपये की अशर्फियाँ भरी हुई हैं जो आपको बहुत दिनों तक काम देंगी !!

भूत० । बेशक ! साथ ही इसके यह भी सुन रक्खो कि वह साधू महाराज पुनः यहाँ आवेंगे तो ऐसे ऐसे और भी कई खजाने मुझे देंगे !!

भोला० । ईश्वर की कृपा है आपके ऊपर ! हाँ यदि आज्ञा दीजिये तो मैं भी जरा इन अशर्फियों के दर्शन तो कर लूं ।

भूत० । हां हां, अपने हाथों ही से ढकना खोलते जाओ देखते जाओ बल्कि मैं यह भी हुक्म देता हूँ कि इस समय जितनी अशर्फियाँ तुमसे उठाते बने उठा लो और अपने घर ले जाकर बाल बच्चों को दे आओ, तुम खूब जानते हो कि मैं तुम्हें अपने लड़के की तरह मानता हूँ ।

भोला० । निःसन्देह ऐसा ही है मगर मैं इस समय अशर्फियां लेकर क्या करूंगा । आपकी बदौलत मुझे किसी बात की कमी तो है नहीं ।

भूत० । नहीं नहीं तुम्हें जरूर लेना पड़ेगा !

भोला० । ( कई देगों के ढकने उठा कर देखने के बाद ) मगर इनमें से तो कई हण्डे खाली पड़े हैं ! आप कहते हैं कि सिर्फ एक ही हण्डे की अशर्फियां निकाली गई हैं !!

भूत० । ( ताज्जुब से ) क्या कई हण्डे खाली पड़े हैं !!

इतना कह कर भूतनाथ ने एक एक करके इन हण्डों को देखना शुरू किया मगर यह मालूम करके उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा कि उसका आधा खजाना एक दम से खाली हो गया है अर्थात् आधे हण्डों में अशर्फियों की जगह एक कौड़ी भी नहीं है ।

भूत० । हैं ! यह क्या हुआ !! मैं खूब जानता हूँ कि इन सब हण्डों में अशर्फियां भरी हुई थीं, मैंने अपने हाथ से इन सभों का ढकना उठाया था और अपनी आंखों से देखा था.....

भोला० । ( बात काट कर ) बेशक बेशक आपने देखा होगा मगर बड़े आश्चर्य की बात है कि इतनी हिफाजत के साथ रहने पर भी अशर्फियां गायब हो गईं !! मैं कह तो नहीं सकता मगर हमारे साथियों में से किसी न किसी की नीयत...

भूत० । जरूर खराब हो गई है, मैंने अपनी जुबान से इस खजाने का हाल अपने किसी साथी से भी नहीं कहा तिस पर यह हाल है।

भोला० । सम्भव है कि आपके पीछे पीछे आकर किसी ने देख लिया हो और यह भेद मालूम कर लिया हो।

भूत० । अगर ऐसा नहीं हुआ तो हुआ क्या ? इसका पता लगाना चाहिये और जानना चाहिये कि हमारे साथियों में किस किस का दिल बेईमान हो गया है क्योंकि इसमें तो कोई शक नहीं कि हमारे साथियों ही में से किसी ने यह चोरी की है।

भोला० । मेरा खयाल तो यह है कि कई आदमियों ने मिल कर चोरी की है।

भूत० । हो सकता है। भला तुम ही कहो कि अब मैं कब अपने साथियों का विश्वास कर सकता हूँ !!

भोला० । कभी नहीं, मेरा विश्वास भी अब इन सभों के ऊपर से उठ गया। हाय हाय ! इतना बड़ा खजाना और ऐसी नमकहरामी !!!

भूत० । देखो तो सही मैं कैसा इन लोगों को छकाता हूँ !

भोला० । आप जल्दी न कीजिये एक दो रोज और देख लीजिये ।

भूत० । कहीं ऐसा न हो कि एक दो दिन ठहरने से यह भी जो बचा है जाता रहे।

इतना कह कर भूतनाथ कोठड़ी के बाहर निकल आया और दर्वाजा बन्द कर पेचोताब खाता हुआ सुरङ्ग के बाहर हो उस तरफ रवाना हुआ जिधर उसका डेरा था।

भूतनाथ को इन अशर्फियों के गायब होने का बड़ा ही दुःख हुआ, रात के समय उसने किसी से कुछ कहना मुनासिब न समझा और चुप हो रहा, मगर रात भर उसे अच्छी तरह नींद न आई और क्रोध के मारे उसने कुछ भोजन भी न किया। भोलासिंह कुछ देर के बाद उसके पास से हट गया और किसी दूसरी ही गुफा के बाहर बैठ कर उसने रात बिताई, जब घण्टे भर रात बाकी रही तब वह घबड़ाया हुआ भूतनाथ के पास आया और देखा कि वह नींद में सो रहा है। भोलासिंह ने हाथ से हिला कर भूतनाथ को सचेत किया, वह घबड़ा कर उठ बैठा और बोला, "क्यों क्या है ?"

भोला०। मालूम होता है कि आज फिर आपकी चोरी हुई!

भूत०। सो कैसे?

भोला०। मैंने कई आदमियों को उस खजाने वाले सुरङ्ग के अन्दर जाते और वहां से लदे हुए बाहर निकलते देखा है।

भूत०। फिर वे लोग कहां गये!

भोला०। मालूम होता है कि इस घाटी के बाहर निकल गये। मैं उन लोगों को नीचे उतर कर उस सुरङ्ग में जो बाहर निकलने का रास्ता है जाते देख लपका हुआ आपके पास चला आया हूँ, अब आप शीघ्र उठिये और उन लोगों का पीछा कीजिये!

भूतनाथ घबड़ा कर उठ बैठा और बोला, "जरा देख तो लो कि यहां से कौन कौन गायब है?"

भोला०। इस देखादेखी में तो बहुत देर हो जायगी वे लोग दूर निकल जायंगे।

भूत०। अच्छ चलो पहिले बाहर ही चलें।

दोनों आदमी तेजी के साथ पहाड़ी के नीचे उतर आये और सुरंग में घुस कर उस घाटी के बाहर निकले। वहां बिलकुल ही सन्नाटा था। थोड़ी देर तक ये दोनों आदमी इधर उधर घूमते रहे मगर जब कुछ पता न लगा तो लौट कर सुरंग के मुहाने पर चले आये और यों बातचीत करने लगे:—

भोला०। मालूम होता है कि वे लोग दूर निकल गये मगर किस तरफ गये हैं इसका पता लगाना जल्दी में नहीं हो सकता।

भूत०। अच्छा तो अब तुम घाटी के अन्दर जाओ और वहा जो लोग हैं उनका खयाल रक्खो, मैं पुनः घूम फिर कर टोह लगाता हूँ और देखता हूँ कि वे लोग कहा गये।

भोला०। जी नहीं बल्कि आप ही घाटी के अन्दर जाइये और मुझे उन लोगों का पता लगाने की आज्ञा दीजिये क्योंकि जो लोग यहाँ से गये हैं वे अगर अपने ही आदमी हैं तो आखिर लौट कर यहां आवेंगे जरूर। ऐसी अवस्था मे ज्यादे देर तक पीछा करने की कोई जरूरत नहीं, इसके अतिरिक्त आप घाटी में जा कर इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि वहां से कौन कौन आदमी गायब

हैं क्योंकि यह बात मुझे बिल्कुल ही नहीं मालूम है कि आज कल किस किस को आपने किस किस काम पर मुस्तैद किया है तथा घाटी के अन्दर कौन कौन रहता है।

भूत०। ठीक है, अच्छा मैं ही घाटी के अन्दर जाकर पता लगाता हूँ कि कौन कौन गायब हैं। अफसोस सुरंग के अन्दर का दर्वाजा खोलना बन्द करना मैंने अपने सब आदमियों को बता दिया है, अगर बताता नहीं तो काम भी नहीं चल सकता था क्योंकि नित्य ही वे लोग आते जाते रहते हैं, मेरी गैरहाजिरी में भी उन लोगों को आना जाना पड़ता है।

भोला०। ठीक है बिना बताये काम चल नहीं सकता था।

भूत०। इसके अतिरिक्त मैंने उन सभों को यह भी हुक्म दे रक्खा है कि नित्य ही प्रातःकाल सूर्योदय के पहिले बारी बारी से दो चार आदमी घाटी के बाहर निकल कर इधर उधर घूमा फिरा करें, अगर वे लोग जिन्हें तुमने जाते देखा है लौट कर आवेंगे भी तो यही कहेंगे कि हम बालादवी * के लिये बाहर गये थे, फिर उन्हें कायल करने और चोर सिद्ध करने के लिये क्या तर्कीब हो सकती है?

भोला०। ठीक ही तो है, फिर आप जानिये जो मुनासिब समझियेगा कीजियेगा, मगर पहिले जाकर देखिये तो सही कि कौन कौन गायब हैं और उस खजाने को भी एक नजर देख लीजियेगा कि बनिस्बत कल के कुछ और भी कम हुआ है या नहीं। जरूर कम हुआ होगा क्योंकि मैंने अपनी आँखों से उन लोगों की कारवाई देखी है।

"खैर मै जाता हूँ।" इतना कह कर भूतनाथ घाटी के अन्दर चला गया। सब के पहिले उसने खजाने को देखना मुनासिब समझा इस लिये पहिले उस तरफ गया जिधर खजाने वाली गुफा थी।

गुफा के अन्दर घुस कर और खजाने वाली कोठड़ी का दर्वाजा खोल कर जब भूतनाथ अन्दर गया और रोशनी करके गौर से उन हण्डों को देखा तो मालूम हुआ कि और भी कई हण्डे खाली हो गये हैं। भोलासिंह को ले कर जिस समय वह इस कोठड़ी में आया था उस समय जिन जिन हण्डों वा देगों में भोलासिंह ने अशर्फियां देखी थीं और भूतनाथ ने भी देखी थीं उनमें से चार

*घूम फिर कर पहरा देने और टोह लगाने के लिए जाने को बालादवी कहते हैं।

हण्डे इस समय बिल्कुल खाली दिखाई दे रहे थे। भूतनाथ ने मन में सोचा कि भोलासिंह का कहना बहुत ठीक है, जरूर हमारे आदमियों ने रात को चोरी की है, खैर अब मैं इन हरामखोरों से जरूर समझूंगा, मगर मामला बड़ा ही कठिन आ पड़ा है, अगर इन शैतानों को यहाँ से निकाल दूँ तब भी काम नहीं चल सकता है क्योंकि यहाँ का रास्ता इन लोगों का देखा हुआ है अब तो कुछ डरते भी हैं फिर दुश्मनी की नीयत से यहाँ छिप कर आया करेंगे और यदि मैं खुद इस घाटी को छोड़ दूँ और बचा हुआ खजाना लेकर दूसरी जगह जा रहूँ तो बाबाजी से मुलाकात क्यों कर होगी जिन्होंने यह खजाना दिया है और पुनः आकर बेहिसाब दौलत देने तथा तिलिस्म दारोगा बनाने की प्रतिज्ञा कर गये हैं! बड़ी मुश्किल है!! फिर इन सभों को निकाल देने से भी मैं निश्चिन्त नहीं हो सकता क्योंकि ये सब के सब दुश्मन हो जायगे और दुश्मन से जा मिलेंगे, इससे तो यही बेहतर है कि इन सभों को जान से मार कर बखेड़ा तै किया जाय।

इस तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने डेरे की तरफ गया जहाँ प्रभाकरसिंह को कैद कर रक्खा था। वहाँ पहुँच कर देखा तो प्रभाकरसिंह भी गायब हैं!!

क्रोध के मारे भूतनाथ की आखें लाल हो गईं उसे विश्वास हो गया कि यह काम भी उसके ही आदमियों का है।

भूतनाथ ने अपनी गुफा के बाहर निकल कर इशारे की जरीब बुलाई जिसके सुनते ही वे सब शागिर्द और ऐयार उसके पास आकर इकट्ठे हो गए जो इस समय वहाँ मौजूद थे। ये लोग गिनती में बारह थे जिनमें से चार आदमी कुछ रात रहते ही बालादबी के लिये चले गये थे और बाकी आठ आदमी मौजूद थे जो इस समय भूतनाथ के सामने आये। कौन कौन आदमी बाहर गया हुआ है यह पूछने के बाद भूतनाथ ने कहा :—

भूत०। (सभों की तरफ देखकर) बड़े ताज्जुब की बात है कि प्रभाकरसिंह इस गुफा के अन्दर से गायब हो गये!!

एक०। यह तो आप ही जानिये, क्योंकि रात को आप ही उनके पहरे पर थे हमलोगों में से तो कोई यहां था नहीं।

भूत०। सो तो ठीक है मगर तुम्हीं सोचो कि यकायक यहां से उनका गायब

हो जाना कैसी बात है।

दूसरा०। बेशक ताज्जुब की बात है।

भूत०। इसके अतिरिक्त और भी एक बात सुनने के लायक है! (उंगली से बता के) उस गुफा के अन्दर हमारा खजाना रहता है, उसमें से भी आज लाखों रुपये की जमा चोरी हो गई है, इसके पहिले भी एक दफे चोरी हो चुकी है।

एक०। यह तो आप और भी ताज्जुब की बात सुनाते हैं! भला यहा चोर क्योंकर आ सकता है! इसके सिवाय उस गुफा में पचासों दफे हमलोग गये हैं मगर वहां खजाना वगैरह तो कभी नहीं देखा न आप ही ने कभी हम-लोगों से कहा कि वहां खजाना रख आये हैं।

भूत०। उस गुफा के भीतर एक चोर दर्वाजा है और उसके अन्दर जो कोठड़ी है उसी में खजाना था, उस दिन जो साधू महाशय आये थे उन्हीं का वह खजाना था और वे ही मुझे दे गये थे तथा वे ही उस कोठड़ी को खोलने और बन्द करने की तर्कीब भी बता गये थे, मगर अब जो हम देखते हैं तो वह खजाना आधा भी नहीं रह गया!!

तीसरा०। अब ये सब बातें तो आप जानिये हमें तो कभी आपने इसकी इत्तला नहीं दी थी इसलिये हम लोगों का उस तरफ कुछ खयाल भी नहीं था और खयाल हो अथवा न हो, यहा से चोरी जाने की बात कौन मान सकता है?

भूत०। तो क्या हम झूठ कह रहे हैं?

चौथा०। यह तो हम लोग कह नहीं सकते मगर इसके जिम्मेवार भी हम लोग नहीं हैं।

भूत०। फिर कौन इसका जिम्मेवार है?

चौथा०। आप जिम्मेवार हैं या जो चुरा ले गया है वह जिम्मेवार है! आप तो हम लोगों से इस तरह पूछते हैं जैसे कोई लौंडी या गुलाम से आँख दिखाकर पूछता है। हम लोग आपके पास शागिर्दी का काम करते हैं, ऐयारी सीखते हैं, आपके लिये दिन रात दौड़ते दौड़ते परेशान होते हैं, और हरदम हथेली पर जान लिये रहते हैं, मरने की भी परवाह नहीं करते, तिस पर आप हम लोगों को चोर समझते हैं और ऐसा बर्ताव करते हैं! यह हम लोगों के लिये एक नई बात है, आज के पहिले कभी आप ऐसे बेरुख नहीं हुए थे!

भूत० । हां, बेशक आज के पहिले हम तुम लोगों को इमानदार समझते थे, यह तो अब मालूम हुआ कि तुम लोग ऐयार नहीं बल्कि चोर दगाबाज और बेईमान हो !

पांचवां० । देखिये जुबान सम्हालिये, हम लोगों को ऐसी बातें सुनने की आदत नहीं है !!

भूत० । अगर आदत नहीं होती तो ऐसा काम भी न करते !!

छठां० । ( क्रोध में भर कर ) सीधी तरह से यह क्यों नहीं कह देते कि यहां से चले जाओ ! इस तरह इज्जत लेने और देने की जरूरत ही क्या है ?

भूत० । वाह वाह ! क्या अच्छी बात कही है । तमाम खजाना उठा कर हजम कर जाओ और इसके बदले में हम बस इतना ही कह कर रह जाय कि चले जाओ !

इस तरह की बातें हो रही थी कि वे बाकी के चार आदमी भी आ गये जो बालादवी के लिए कुछ रात रहते घाटी के बाहर निकल गये थे । भूतनाथ ने उन सभों से भी इसी तरह की बातें कीं और अच्छी तरह डांट बताई । उन लोगों ने भी खजाने की जानकारी से इनकार किया और कहा कि हम लोगों को कुछ भी नहीं मालूम कि कहां आपका खजाना रहता है और कब कौन उठा कर ले गया तथा प्रभाकरसिंह को किसने यहा से भगा दिया ।

भूतनाथ बड़ा ही लालची आदमी था, रुपये पैसे के लिये वह बहुत जल्द बेमुरौवत बन जाता था और खोटे से खोटा काम करने के लिये तैयार हो जाता था । बात तो यह है कि रुपये पैसे के विषय में वह किसी का एतबार ही नहीं करता था । आज उसकी बहुत बड़ी रकम गायब हो गई थी और मारे क्रोध के वह जलभुन कर खाक हो रहा था । अपने आदमियों पर उसने इतनी ज्यादे सख्ती की और ऐसे ऐसे बुरे शब्दों का प्रयोग किया कि वे सब के सब एकदम बिगड़ खड़े हुए क्योंकि ऐयार लोग इस तरह की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकते थे ।

इन आदमियों या शागिर्दों के अतिरिक्त भूतनाथ के पास और भी कई आदमी थे जो दूसरी जगह रहते थे तथा और और कामों पर मुकर्रर कर दिये गये थे मगर इस घाटी के अन्दर आजकल ये ही बारह आदमी रहते थे जो आज भूतनाथ की बातों से नाराज होकर बेदिल हो गये थे और उसका साथ छोड़

दूसरी जगह चले जाने के लिये तैयार थे, मगर भूतनाथ ने उन्हें सीधी तरह जाने भी नहीं दिया बल्कि तलवार खैंच कर सभों को सजा देने के लिये तैयार हो गया।

भूतनाथ की कमर में वही अनूठी तलवार थी जो उसने प्रभाकरसिंह से पाई थी, उस तलवार को वह बहुत ही प्यार करता था और उसे अपनी फतहमन्दी का सितारा समझता था। उसके आदमियों को इस बात की कुछ भी खबर न थी कि इस तलवार में कौन सा गुण है अस्तु लाचार हो वे लोग भी खञ्जर और तलवारें खैंच मुकाबला करने के लिये तैयार हो गये।

भूतनाथ अकेला ही सभों से लड़ने के लिये तैयार हो गया बल्कि बहुत देर तक लड़ा। भूतनाथ के बदन पर छोटे छोटे कई जख्म भी लगे मगर भूतनाथ के हाथ की तलवार का जिसको जरा सा भी चरका लगा वह बेकार हो गया और तुरन्त बेहोश होकर जमीन पर गिर गया। यह देख उन लोगों को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा था। थोड़ी ही देर में कुल आदमी जख्मी होने के कारण बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े और भूतथाथ ने सभों की मुश्कें बांध कर एक गुफा में कैद कर दिया।

इसके बाद भूतनाथ घाटी के बाहर निकला और भोलासिंह की खोज में चारो तरफ घूमने लगा मगर तमाम दिन बीत जाने पर भी भोलासिंह का कहीं पता न लगा।

सन्ध्या होने पर भूतनाथ पुनः लौट कर अपनी घाटी में आया और यह देखने के लिये उस गुफा के अन्दर गया जिसमें अपने शागिर्दों को कैद किया था कि उन सभों की बेहोशी अभी दूर हुई या नहीं, मगर अफसोस! भूतनाथ ने वह तमाशा देखा जो कभी उसके खयाल में भी नहीं आ सकता था, अर्थात् उसके कैदी शागिर्दों में से वहाँ एक भी मौजूद न था, हा उनके बदले वह सब सामान वहा जमीन पर जमा दिखाई दे रहा था जिससे उनके हाथ पैर बेकार कर दिये गये थे या उनकी मुश्कें बांधी गई थीं।

अपने शागिर्दों को कैदखाने में न देख कर भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि ये सब के सब कैदखाने में से निकल कर किस तरह भाग गये! मैं इनके हाथ पैर बड़ी मजबूती के साथ बाध गया था जो बिना

किसी की मदद के किसी तरह भी खुल नहीं सकते थे फिर ये लोग क्योंकर निकल गये ! मालूम होता है कि इनका कोई न कोई मददगार यहां जरूर आया चाहे वह मेरे शागिर्दों का दोस्त हो या मेरा दुश्मन । इधर कई दिनों से ऐसी ऐसी बातें हो रही हैं कि मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता है । क्या सम्भव है कि इन लोगों ने होश में आने बाद आपुस में मिल जुल कर किसी तरह अपने हाथ पैर खोल लिये हों ? हां हो भी सकता है । अस्तु अब मुझे मानना पड़ेगा कि मेरे दुश्मनों की गिनती बढ़ गई क्योंकि वे लोग भी अब मेरे साथ जरूर दुश्मनी करेंगे और ऐसी अवस्था में मैं किस किस का वार सम्हाला करूंगा ? मैं तो यही सोचे हुए था कि इन लोगों को एक दम मार कर बखेड़ा तै करूंगा क्योंकि दुश्मनों की गिनती बढ़ानी अच्छी नहीं मगर अफसोस तो यह है कि मैं अकेला क्या करूंगा ? दो चार साथी अगर और हैं भी तो अब उनका क्या भरोसा ? वे लोग अब जरूर उनको भड़कावेंगे और जब उन लोगों को यह मालूम हो जायगा कि मैं अपने शागिर्दों को इस तरह पर सजा दिया करता हूँ तो वे लोग भी मेरा साथ छोड़ देंगे बल्कि ताज्जुब नहीं कि भविष्य में कोई भी मेरा सार्थी बनना पसन्द न करे । आह ! मैं मुफ्त की परेशानी उठा रहा हूँ, व्यर्थ का दुःख भोग रहा हूँ ! अगर अपने मालिक के पास चुपचाप बैठा रहता तो काहे को इस तरद्दुद में पड़ता, मगर अब तो मैं वहाँ भी जाना पसन्द नहीं करता क्योंकि दयाराम की दोनों स्त्रियाँ वहां मुझे और भी विशेष कष्ट देंगी । अफसोस ! यह बात रणधीरसिंहजी ने मुझसे व्यर्थ ही छिपाई और कह दिया कि दयाराम की दोनों स्त्रियों का देहान्त हो हो गया । मगर जहां तक मैं खयाल करता हूँ इसमें उनका कसूर कुछ भी नहीं जान पड़ता, सम्भव है कि मेरी तरह वे भी धोखे में डाल दिये गये हों और अभी तक उन्हें इस बात की खबर भी न हो कि जमना और सरस्वती जीती हैं । मगर अब मुझे क्या करना चाहिये यह सोचने की बात है । मैं तो ऐसा गायब हो सकता हूँ कि हवा को भी मेरी खबर न लगे मगर इस घाटी का छोड़ना जरा कठिन हो रहा है क्योंकि अगर मैं यहां से चला जाऊंगा तो फिर साधू महाशय से मुलाकात न होगी और मैं उस दौलत को न पा सकूंगा जो उनकी बदौलत मिलने वाली है, मगर यहां का रहना भी अब कठिन हो रहा है । अच्छा कुछ दिन के लिये इस स्थान को अब छोड़ ही देना चाहिये और जो कुछ बचा हुआ खजाना है

उसे निकाल ले जाना चाहिये।

इस तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ उस गुफा की तरफ रवाना हुआ जिसमें उसका खजाना था। जब गुफा के अन्दर जाने के बाद रोशनी लिए हुए खजाने वाली कोठड़ी में पहुँचा तो देखा कि अब उन हण्डों में एक भी अशर्फी बाकी नहीं है सब की सब गायब हो गई, बल्कि वे हण्डे तक भी अब नहीं दिखाई देते जिनमें अशर्फियां रक्खी हुई थीं। भूतनाथ का दिमाग हिल गया और वह अपना माथा ठोंक कर उसी जगह बैठ गया।

थोड़ी देर बाद भूतनाथ उठा और मोमबत्ती की रोशनी में उसने उस कोठड़ी को अच्छी तरह देखा, इसके बाद वह दर्वाजा बन्द करके निकल आया और गुफा की जमीन को बड़े गौर से देखता तथा यह सोचता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर गया कि 'अब यहा रहना उचित नहीं है।'

# दसवाँ बयान

दोपहर का समय है मगर सूर्य नहीं दिखाई पड़ते। आस्मान गहरे बादलों से भरा हुआ है। ठण्ढी ठण्ढी हवा चल रही है और ज्ञान पड़ता है कि मूसलाधार पानी बरसा ही चाहता है।

भूतनाथ अपनी घाटी के बाहर निकल कर अकेला ही मैदान और जङ्गल की सैर कर रहा है। उसके दिल में हर तरह की बातें उठ रही हैं, तरह तरह के विचार पैदा हो और मिट रहे हैं। कभी वह अटक कर इस तरह चारो तरफ देखने लग जाता है जैसे किसी के आने की आहट लेता हो और कभी वह जफील बजा कर उसके जवाब का इन्तजार करता है।

इसी तरह वह बहुत देर तक घूमता रहा, आखिर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और कुछ सोचने लगा। थोड़ी देर बाद उसने पुनः जफील बुलाई और उसी समय उसका जवाब भी पाया। भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ रवाना हुआ जिधर से जफील की आवाज आई थी। थोड़ी दूर जाने बाद उसने अपने शागिर्द को देखा जिसका नाम रामदास था। इसे भूतनाथ बहुत ही प्यार करता और अपने लड़के के समान मानता था और वास्तव में रामदास बहुत ही चालाक और धूर्त था भी। यद्यपि उसकी उम्र बीस साल के ऊपर होगी

मगर देखने में वह बारह या तेरह बर्ष से ज्यादे नहीं मालूम होता था। उसको रेख बिल्कुल ही नहीं आई थी और उसकी सूरत में कुदरती तौर पर जनानापन मालूम होता था, यही सबब था कि वह औरतों की सूरत में बहुत अच्छा काम कर गुजरता था और हाव भाव में भी उससे किसी तरह की त्रुटी नहीं होती थी। इस समय उसकी पीठ पर एक गठड़ी लदी हुई थी जिसे देख भूतनाथ को आश्चर्य हुआ और उसने आगे बढ़ कर पूछा, "कहो रामदास! खैरियत तो है? यह तुम किसे लाद लाये हो? मालूम होता है कोई अच्छा शिकार किया है?"

रामदास०। (कानी आंख से प्रणाम करके) हाँ चचा! मैं बहुत अच्छा शिकार कर लाया हूँ!!

भूतनाथ०। (प्रसन्न हो कर) अच्छा अच्छा आओ, इस पत्थर की चट्टान पर बैठ जाओ, देखें तुम्हारा शिकार कैसा है?

भूतनाथ ने गठड़ी उतारने में उसे मदद दी और दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये। भूतनाथ ने गठड़ी खोल कर देखी तो एक बेहोश औरत पर निगाह पड़ी। पूछा, "यह कौन है?"

रामदास०। यह जमना और सरस्वती की लौंडी है।

भूत०। अच्छा इसे तुमने कहाँ पाया?

रामदास०। उसी घाटी के बाहर जिसमें वे दोनों रहती हैं। यह किसी काम के लिये बाहर आई थी और मैं आपकी आज्ञानुसार उसी जगह छिप कर पहरा दे रहा था, मौका मिलने पर मैंने इसे गिरफ्तार कर लिया और जबर्दस्ती बेहोश करके एक गुफा के अन्दर छिपा आया जहाँ किसी को यकायक पता नहीं लग सकता था। इसके बाद मैं इसी की सूरत बनकर उस सुरङ्ग के पास चला आया जो उस घाटी के अन्दर जाने का रास्ता है और जहाँ मैंने इसे गिरफ्तार किया था। मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि उस घाटी के अन्दर जाऊं मगर इस बात की कुछ भी खबर न थी कि यह औरत जिसे मैंने गिरफ्तार किया है किस दर्जे की है या किस काम पर मुकर्रर है और इसका नाम क्या है, अस्तु इसके जानने के लिये मुझे कुछ पाखण्ड रचना पड़ा जिसमें एक दिन की देर तो हुई मगर ईश्वर की कृपा से मेरा काम बखूबी चल गया। मैंने सूरत बदलने के बाद इस लौंडी के कपड़े तो पहिर ही लिये थे तिस पर भी मैं चुटीला बन कर एक पत्थर

की चट्टान पर बैठ गया और इन्तजार करने लगा कि घाटी के अन्दर से कोई आवे तो मैं उसके साथ भीतर पहुँच जाऊं। थोड़ी ही देर बाद जमना और सरस्वती स्वयम् घाटी के बाहर आईं, उस समय मुझे यह नहीं मालूम हुआ कि यही जमना और सरस्वती हैं मगर जब घाटी के अन्दर चला गया और तरह तरह की बातें सुनने में आईं तब मालूम हुआ कि यही जमना और सरस्वती हैं। यद्यपि ये दोनों कला और बिमला के नाम से पुकारी जाती थीं मगर यह तो मैं आपसे सुन ही चुका था कि उन्होंने अपना नाम कला और बिमला रक्खा हुआ है इसी लिये मुझे असल जानने में कोई कठिनता न हुई। खैर जब सुरङ्ग के बाहर मुझे कला और बिमला ने देखा तो पूछा "अरी हरदेई! तू अभी तक इसी जगह बैठी हुई है?" मैंने धीरे से इसका जवाब दिया, 'मैं पहाड़ी के ऊपर से गिर कर बहुत चुटीली हो गई हूँ, मुझमें दस कदम चलने की भी ताकत नहीं है बल्कि बात करने में भी तकलीफ मालूम होती है।" इसके बाद मैंने कई जगह छिले और फटे हुए जख्म दिखाये जो कि अपने हाथ से बनाये थे। मेरी अवस्था पर उन दोनों को बहुत अफसोस हुआ और वे दोनों मदद देकर मुझे अपनी घाटी के अन्दर ले गईं और दवा इलाज करने लगीं। दो दिन तक मैं चारपाई पर पड़ा रहा और इस बीच में मुझे बहुत सी बातें मालूम हो गईं जिन्हें मैं बहुत ही संक्षेप के साथ इस समय बयान करूंगा। दो दिन के बाद मैं चङ्गा हो गया और उन सभी के साथ मिल जुल कर काम करने लगा क्योंकि इस बीच में मतलब की सभी बातें मुझे मालूम हो चुकी थीं।

भूत०। निःसन्देह तुमने बड़ी हिम्मत का काम किया, अच्छा तो कौन कौन बातें वहां तुम्हें मालूम हुईं?

रामदास०। पहिली बात तो यह मालूम हुई कि बेचारा भोलासिंह उन दोनों के हाथ से मारा गया। खुद कला और बिमला ने उसे मारा था। यद्यपि यह नहीं मालूम हुआ कि कब किस ठिकाने और किस तरह से उसे मारा मगर इसे कई सप्ताह हो गये!!

भूत०। (आश्चर्य से) क्या वह मारा गया?

रामदास०। हां निःसन्देह मारा गया।

भूत०। अभी तो कल परसों वह मेरे साथ था!

रामदास०। वह कोई दूसरा होगा जिसने भोलासिंह बन कर आप को धोखा दिया।

भूत०। (कुछ सोच कर) बेशक वह कोई दूसरा ही था, अब जो मैं सोचता हूँ तो तुम्हारा कहना ठीक मालूम होता है। हाय मुझसे बड़ी भूल हो गई और मैंने अपने को बर्बाद कर दिया! मेरे साथी शागिर्द लोग बेचारे अपने दिल में क्या कहते होंगे! वे लोग अब अगर मेरे साथ दुश्मनी करें तो इसमें उनका कोई कसूर नहीं!!

रामदास०। यह क्या बात हुई भला कुछ मै भी तो सुनूँ?

भूत०। तुमसे कुछ छिपा न रहेगा मैं सब कुछ तुमसे बयान करूंगा, पहिले तुम अपना किस्सा कह जाओ।

रामदास०। नहीं नहीं, पहिले मैं आपका यह हाल सुन लूंगा तब कुछ कहूँगा।

रामदास ने इस बात पर बहुत जिद्द किया, आखिर लाचार हो कर भूतनाथ को अपना सब हाल बयान करना ही पड़ा जिसे सुन कर रामदास को बड़ा ही दुःख हुआ।

भूत०। अच्छा और क्या क्या तुम्हें मालूम हुआ?

रामदास०। और यह मालूम हुआ कि जिस साधू महाशय का अभी अभी आपने जिक्र किया है, जिसने आपको खजाना दिया था, वह कला और बिमला के पक्षपाती है, जो रंग ढंग आपने उनके अभी बयान किये हैं ठीक उसी सूरत शक्ल में मैंने उन्हें वहां देखा था और यह कहते अपने कानों से सुना था कि—'भूतनाथ को मैंने खूब ही लालच में फँसा लिया है, अब वह इस घाटी को कदापि न छोड़ेगा और प्रभाकरसिंह को भी इसी जगह ले आवेगा, तब हम लोग उन्हें सहज ही में छुड़ा लेंगे।' इसके अतिरिक्त मुझे यह भी निश्चय हो गया कि वह साधू अपनी असली सूरत में नहीं है बल्कि कोई ऐयार है, मेरे सामने ही उसने बिमला से कहा था कि अब मैं इसी सूरत में यहाँ आया जाया करूंगा

भूत०। बेशक वह कोई ऐयार था और है मगर अशर्फियां किस तरह निकल गईं इसका भी पता कुछ लगा!!

रामदास०। इस विषय में तो मैं भी कुछ नहीं कह सकता।

भूत०। खैर इस बारे में फिर सोचेंगे, अच्छा और क्या देखा सुना?

रामदास०। और यह मालूम हुआ कि गुलाबसिंह आपकी शिकायत लेकर दलीपशाह के पास गये थे और दलीपशाह को साथ लिये हुए कला और विमला के पास आये थे, उस समय भी उस बुड्ढे साधू को मैंने उन दोनों के साथ देखा था।

भूत०। खैर तो अब मालूम हुआ कि दलीपशाह के सिर में भी खुजाहट होने लगी।

रामदास०। बात तो ऐसी ही है, वह आपका बगली दुश्मन ठीक नहीं, उससे होशियार रहना चाहिए।

भूत०। बेशक वह बड़ा ही दुष्ट है, आश्चर्य नहीं कि वही भोलासिंह बन कर मेरे पास आया हो।

रामदास०। हो सकता है, शायद वही आया हो।

भूत०। खैर उससे भी समझ लिया जायगा। अच्छा यह बताओ कि कुछ इन्द्रदेव का हाल भी तुम्हें मालूम हुआ या नहीं? मुझे शक होता है कि इन्द्रदेव उन दोनों की मदद पर हैं, ताज्जुब नहीं कि वहां वे भी आते जाते हों।

रामदास०। इन्द्रदेव को तो मैंने वहां नहीं देखा और न उनके विषय में कुछ सुना, मगर वे तो आपके मित्र हैं फिर आपके विरुद्ध क्यों कोई कार्रवाई करेंगे?

भूत०। हाँ मैं भी यही खयाल करता हूँ, खैर और बताओ क्या क्या.....

रामदास०। प्रभाकरसिंह मेरे सामने ही वहां पहुँच गये थे मगर मैं उनके विषय में कुछ विशेष हाल न जान सका क्योंकि और ज्यादे दिन वहां रहने की हिम्मत न पड़ी। मुझे मालूम हो गया कि अब अगर और यहाँ रहूंगा तो मेरा भेद खुल जायगा क्योंकि दलीपशाह ने दो तीन दफे मुझे जाँच की निगाह से देखा, अस्तु लाचार हो मैं बहाना करके एक लौंडी के साथ जो सुरंग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना जानती थी घाटी के बाहर निकल आया।

भूत०। तुम्हें सुरंग का दर्वाजा खोलना और बन्द करने की तर्कीब मालूम हुई या नहीं?

प्रति का पाठ हूबहू देने का प्रयास किया है, फिर भी आकार-विभाग की



रामदास० । नहीं, लेकिन अगर दो चार दिन और वहाँ रहता तो शायद मालूम हो जाती ।

इतने ही में पानी बरसने लग गया और हवा में भी तेजी आ गई ।

रामदास० । अब यहाँ से उठना चाहिये ।

भूत० । हाँ चलो किसी आड़ की जगह में चल कर आराम करें । मेरी राय में तो अब इस घाटी में रहना मुनासिब न होगा, और साथ ही अब भविष्य के लिये बचे हुए आदमियों को आपुस में कोई इशारा कायम कर लेना चाहिये जिसे मुलाकात होने पर हम लोग जाँच के खयाल से बरता करें जिसमें फिर कभी ऐसा धोखा न हो जैसा भोलासिंह के विषय में हुआ है । तुम्हारा इशारा अर्थात् एक आँख बन्द करके प्रणाम करना तो बहुत ठीक है, तुम्हारे विषय में किसी तरह का धोखा नहीं हो सकता ।

रामदास० । बहुत मुनासिब होगा, अब यह सोचना चाहिये कि हमलोग अपना डेरा कहाँ कायम करेंगे ।

भूत० । तुम ही बताओ ?

रामदास० । मेरी राय में तो लामाघाटी उत्तम होगी । *

भूत० । खूब कहा, इस राय को पसन्द करता हूं !

इतना कह के भूतनाथ ने पुनः उस औरत की गठड़ी बाँधी जिसे रामदास ले आया था और अपनी पीठ पर लाद वहाँ से रवाना हुआ । रामदास भी उसके पीछे पीछे चल पड़ा ।

# ग्यारहवां बयान

भूतनाथ के हाथ से छुटकारा पा कर प्रभाकरसिंह अपनी स्त्री से मिलने के लिये उस घाटी में चले गये जिसमें कला और विमला रहती थीं । सन्ध्या का समय था जब वे उस घाटी में पहुँच कर कला विमला और इन्दुमति से मिले । उस समय वे तीनों बंगले के आगे सुन्दर मैदान में पत्थर की चट्टानों पर बैठी आपुस में बातें कर रही थीं । प्रभाकरसिंह को देख कर वे तीनों बहुत प्रसन्न हुईं,

* लामाघाटी का जिक्र चन्द्रकान्ता सन्तति में आ चुका है ।

कई कदम आगे बढ़ कर उनका इस्तकबाल किया तथा उसी जगह ला कर अपने पास बैठाया जहाँ वे सब बैठी हुई थीं।

विमला०। मैं भूतनाथ के हाथ से छुट्टी मिलने पर आपको मुबारकबाद देती हूँ। वास्तव में इन्द्रदेवजी ने इस विषय में बड़ी ही चालाकी की नहीं तो हम लोगों से गहरी भूल हो गई थी कि भूतनाथ की घाटी का रास्ता बन्द कर दिया था। उन्होंने साधू बन कर भूतनाथ को ऐसा धोखा दिया कि वह जन्म भर याद रक्खेगा।

प्रभा०। बेशक ऐसी ही बात है, मुझे अभी थोड़ी देर हुई है यहाँ आते समय इन्द्रदेवजी रास्ते में मिले थे जो तुम्हारे पास हो कर जा रहे थे, उन्होंने सब हाल मुझसे कहा था और उस समय भी वे उसी तरह साधू महात्मा बने हुए थे।

विमला०। जी हाँ, अब वे बराबर उसी सूरत में यहाँ आया करेंगे, उनका खयाल है कि असली सूरत में आने जाने से कभी न कभी भूतनाथ को जरूर पता लग जायगा और तब भूतनाथ उनसे खटक जायगा क्योंकि वह बड़ा ही चाँगला है।

प्रभा०। उनका खयाल बहुत ठीक है, मुझसे भी ऐसा ही कहते थे। उन्होंने मुझसे यह भी पूछा था कि अब तुम्हारा क्या इरादा है भूतनाथ का पीछा करोगे या नहीं? इसके जवाब में मैंने कहा कि भूतनाथ का पीछा करने की बनिस्बत नौगढ़ के राजा से मिलकर चुनारगढ़ पर चढ़ाई करना अच्छा समझता हूँ क्योंकि राजा शिवदत्त से बदला लिये बिना मेरा जी ठिकाने न होगा और इस काम को मैं सब से बढ़ कर समझता हूँ। इन्द्रदेव जी ने मेरी यह बात स्वीकार कर ली और इस विषय में जो जो बातें मैंने सोची थीं उन्हें भी उन्होंने पसन्द किया।

इन्दु०। तो क्या अब आप नौगढ़ जा कर चुनार की लड़ाई में शरीक होंगे?

प्रभा०। हाँ मैं जरूर ऐसा ही करूँगा, आजकल चन्द्रकान्ता की बदौलत वीरेन्द्रसिंह से और शिवदत्त से खूब खिचाखिची हो रही है, मेरे लिये इससे बढ़ कर और कौन सा मौका मिलेगा!

विमला०। आप स्वयम् फौज तैयार करके चुनार पर चढ़ाई कर सकते हैं। इस काम में मैं आपकी मदद करूँगी। वे सब अशर्फियाँ जो भूतनाथ को दिखाई

गई थीं और पुनः ले ली गईं मैं आपको दे सकती हूँ क्योंकि इन्द्रदेवजी ने वे सब मुझे दे दी हैं। आप जानते ही हैं कि इस घाटी से भूतनाथ की घाटी में जाने के लिये कई रास्ते हैं, इसी तरह उस खजाने वाली कोठड़ी में भी जाने के लिये एक रास्ता यहाँ से है अस्तु उसी रास्ते से हमलोग उन अशर्फियों को उठा लाये थे।

प्रभा०। मुझे मालूम है, यह हाल इन्द्रदेवजी से सुन चुका हूँ मगर चुनार के विषय में मैं इस राय को पसन्द नहीं करता और न इस मामले में मैं किसी से विशेष मदद ही लूंगा हां मेरे दोस्त गुलाबसिंह जरूर मेरा साथ देंगे, मगर सुना है कि वे इस समय दलीपशाह के साथ कहीं गये हैं और दलीपशाह भी सुबह शाम में यहां आने वाले हैं।

विमला०। भोलासिंह की सूरत बन कर दलीपशाह जब से गये हैं तब से पुनः मुझसे नहीं मिले।

प्रभा०। क्या हुआ अगर नहीं मिले तो, इन्द्रदेवजी ने मुझसे कहा है कि वे कल तक यहां आवेंगे।

विमला०। मालूम होता है कि आपने इन्द्रदेवजी से अपने बारे में सब बातें तै कर ली हैं!

प्रभा०। हाँ जो कुछ मुझे करना है कम से कम उसके विषय में तो मैंने सभी बातें तै कर ली हैं।

विमला०। तो आप जरूर नौगढ़ जायंगे?

प्रभा०। जरूर।

विमला०। दूसरे ढङ्ग से बदला नहीं लेंगे?

प्रभा०। नहीं।

इन्दु०। तब तक मैं कहां रहूँगी?

प्रभा०। तुम्हारे बारे में यह निश्चय हुआ है कि तुम्हें मैं तब तक के लिए जमानियां में राजासाहब के यहाँ रख दूँ क्योंकि इस समय वे ही मेरे बड़े और गुरु जो कुछ है सो हैं।

विमला०। (चौंक कर) मगर ऐसा करने से तो मेरा भेद खुल जायगा!

प्रभा०। तुम्हारा भेद क्यों खुलेगा? मैं इन्द्रदेवजी से वादा कर चुका हूँ कि

इन सब बातों का वहाँ कभी जिक्र तक न करूंगा। मेरी जुबानी तुम्हारा हाल उन्हें कभी मालूम न होगा, इन्दु को भी मैं ऐसा ही करने के लिए ताकीद करूंगा और तुम भी अच्छी तरह समझा देना। क्या मैं नहीं समझता कि तुम्हारा भेद खुल जाने से आपुस में कई आदमियों की खटपट हो जायगी और बेदाग दोस्ती तथा मुहब्बत में बट्टा लग जायगा।

विमला०। अगर भूतनाथ किसी तरह इन्दु को वहाँ देख ले तो क्या होगा? क्योंकि वह अकसर जमानिया जाया करता है।

प्रभा०। तब क्या होगा? भूतनाथ अपने मुंह से इन सब बातों का जिक्र कदापि न करेगा।

विमला०। मगर दुश्मनी तो जरूर करेगा क्योंकि उसे इस बात का डर हो जायगा कि कहीं इन्दु इन सब बातों का भेद किसी से खोल न दे।

प्रभा०। एक तो वह जमानिया विशेष जाता ही नहीं है, दूसरे अगर कभी गया भी तो महल के अन्दर उसकी गुजर नहीं होती, तीसरे अगर वह किसी तरह इन्दु को देख भी लेगा तो वहाँ कुछ गड़बड़ी करने की उसकी हिम्मत ही न पड़ेगी। फिर इसके अतिरिक्त और मैं कर ही क्या सकता हूँ, मेरे लिये दूसरा कौन सा घर है? हां अपने साथ नौगढ़ ले चलूं तो हो सकता है, वहाँ भूतनाथ के जाने का डर नहीं है।

इन्दुमति०। मेरा खयाल तो यही है कि जमानिया की बनिस्बत नौगढ़ में मैं निडर रहूंगी।

विमला०। तो आप इन्हे इसी जगह हमारे पास क्यों नहीं छोड़ जाते?

प्रभा०। यहाँ तुम लोग स्वयम् ही तरद्दुद में पड़ी हुई हो, इसके सबब से और भी.....

विमला०। नहीं नहीं, इनके सबब से किसी तरह की तकलीफ मुझे नहीं हो सकती है, और फिर अगर मैं ज्यादे बखेड़ा देखूगी तो इन्हें इन्द्रदेव जी के सुपुर्द कर दूँगी वे अपने घर ले जायँगे।

प्रभा०। यह सबसे ठीक है। इन्द्रदेवजी का घर हमारे लिये सबसे अच्छा है और उन्होंने ऐसा कहा भी था कि अगर तुम्हारी राय हो तो इन्दु को मेरे घर पर रख सकते हो।

विमला० । तो बस यहां ठीक रखिये और इन्हें मेरे पास छोड़ जाइये ।

प्रभाकरसिंह से और कला विमला तथा इन्दुमती से इस विषय पर बड़ी देर तक बहस होती रही और अन्त में लाचार होकर प्रभाकरसिंह को विमला की बात माननी पड़ी अर्थात इन्दुमति को विमला ही के पास छोड़ देना पड़ा ।

रात भर प्रभाकरसिंह वहां रहे और प्रातःकाल सभीसे मिल जुल कर नौगढ़ की तरफ रवाना हुए ।

# बारहवाँ बयान

गुलाबसिंह को साथ लेकर प्रभाकरसिंह नौगढ़ चले गये । वहां उन्हें फौज में एक ऊंचे दर्जे की नौकरी मिल गई और चुनार पर चढ़ाई होने से उन्होंने अपने दिल का हौसला खूब ही निकाला । वे मुद्दत तक लौट कर इन्दुमति के पास न आये और न इस घर का कुछ हाल ही उन्हें मालूम हुआ ।

जब चुनारगढ़ फतह हो गया ! राजा शिवदत्त उदासीन हो कर भाग गए, चन्द्रकान्ता की शादी हो गई और चुनार की गद्दी पर राजा बीरेन्द्रसिंह बैठ गये, तब बहुत दिनों के बाद प्रभाकरसिंह को इस बात का मौका मिला कि वे जाकर इन्दुमति से मुलाकात करें ।

प्रभाकरसिंह के दिल में तरह तरह का खुटका पैदा हो रहा था और यह जानने के लिये वे बहुत ही उत्सुक हो रहे थे कि उनके पीछे कला विमला और इन्दुमति पर क्या क्या बीती, अस्तु वे गुलाबसिंह को साथ लिये हुए बहुत तेजी के साथ कूच और मुकाम करते दोपहर के समय उस पहाड़ी के पास पहुंचे जिसके अन्दर वह सुन्दर घाटी थी जिसमें कला और विमला रहती थी । वे सोच रहे थे कि अब थोड़ी ही देर में उन लोगों से मुलाकात हुआ चाहती है जिनसे मिलने के लिये जी बेचैन हो रहा है ।

आज कई वर्ष के बाद प्रभाकरसिंह इस घाटी के अन्दर पैर रक्खेंगे। आज पहिले की तरह गर्मी या बरसात का मौसिम नहीं है, बल्कि आज जाड़े के दिनों में प्रभाकरसिंह उस घाटी के अन्दर जा रहे है, देखा चाहिये वहा का मौसिम कैसा दिखाई देता है ।

सुरङ्ग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना उन्हें बखूबी मालूम था बल्कि

इस घाटी के विषय में वे और भी बहुत कुछ जान चुके थे अस्तु गुलाबसिंह को बाहर ही छोड़ कर वे सुरंग के अन्दर घुसे और दर्वाजा खोलते और बन्द करते हुए उस घाटी के अन्दर चले गये। मगर पहुँचने के साथ ही वहां कुछ उदासी सी मालूम हुई। वे ताज्जुब के साथ चारो तरफ देखते हुए बंगले के अन्दर गये और वहाँ बिल्कुल ही सन्नाटा पाया। जिस बंगले को ये पहिले सजा हुआ देख चुके थे और जिसके अन्दर पहिले तरह तरह के सामान मौजूद थे आज वह बंगला बिल्कुल ही खाली दिखाई दे रहा है। सजावट की बात तो दूर रही वहां एक चटाई बैठने के लिये और एक लुटिया पानी पीने के लिये भी मौजूद न थी! यही हाल यहाँ की आलमारियों का भी था जिनमें से एक भी पहिले खाली नहीं दिखाई देती थीं। आज वहां हर तरह से सन्नाटा छाया हुआ है और ऐसा मालूम होता है कि वर्षों से इस बंगले के अन्दर किसी आदमी ने पैर नहीं रक्खा।

इसी बंगले में से एक रास्ता उस मकान के अन्दर जाने के लिये था जिसमें कला और विमला खास तौर पर रहती थीं अथवा जिस मकान में पहिले पहल इन्दुमति की बेहोशी दूर हुई थी। प्रभाकरसिंह हैरान और परेशान उस मकान में पहुँचे मगर देखा कि वहां कि उदासी उस बंगले से भी ज्यादे बढ़ी चढ़ी है और वहाँ एक तिनका भी दिखाई नहीं देता।

"यह क्या मामला है! यहां ऐसा सन्नाटा क्यों छाया हुआ है! कला विमला और इन्दुमति कहां चली गईं! अगर कहीं किसी आपुस वाले के घर में चली गईं तो यहाँ इस तरह उजाड़ कर जाने की क्या जरूरत थी! कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि वे तीनों भूतनाथ के कब्जे में पड़ गई हों और भूतनाथ ने ही इस मकान को ऐसा उजाड़ बना दिया हो।" इन सब बातों को सोचते हुए प्रभाकरसिंह उदास और दुःखित चित्त से बहुत देर तक चारो तरफ घूमते रहे और तब यह निश्चय कर वहाँ से चल पड़े कि अब भूतनाथ की घाटी का हाल मालूम करना चाहिये और देखना चाहिये कि वह किस अवस्था में है।

पहिले प्रभाकरसिंह उस सुरङ्ग में घुसे जिसमें से उन्होंने पहिले दिन भूतनाथ की घाटी में इन्दुमति को एक अपनी ही सूरत वाले के साथ ठगे जाते हुए देखा था। सुरङ्ग के अन्त में पहुँच सूराख की राह से उन्होंने देखा कि भूतनाथ की घाटी में भी बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है अर्थात् यह नहीं जान पड़ता कि

इसमें कोई आदमी रहता है। कुछ देर तक देखने और गौर करने के बाद प्रभाकरसिंह सुरङ्ग के बाहर निकल आये। अब उनकी हिम्मत न पड़ी कि एक सायत के लिये भी उस घाटी के अन्दर ठहरे। उदास और दुःखित चित्त से वे सोचते और गौर करते हुए वहाँ से रवाना हुए और सुरङ्ग की राह से बाहर निकल कर सन्ध्या होने के पहिले ही उस टिकाने पहुँचे जहाँ गुलाबसिंह को छोड़ गये थे।

दूर ही से प्रभाकरसिंह की सूरत और चाल देख कर गुलाबसिंह समझ गए कि कुछ दाल में काला है, रङ्ग अच्छा नहीं दिखाई देता। जब गुलाबसिंह के पास प्रभाकरसिंह पहुँचे तो सब हाल बयान किया और उदास होकर उनके पास बैठ गए। गुलाबसिंह को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वे सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

प्रभाकरसिंह के दिल पर क्या गुजरी होगी इसे पाठक स्वयं समझ सकते हैं। उनके लिये दुनिया ही उजाड़ हो गई थी और चुनारगढ़ की लड़ाई में जो कुछ बहादुरी कर आए थे वह सब व्यर्थ जान पड़ती थी। दोनों बहादुरों ने मुश्किल से उस जङ्गल में रात बिताई और सवेरा होने पर अच्छी तरह निश्चय करने के लिये भूतनाथ के घाटी में जाने का इरादा किया। दोनों आदमी वहाँ से रवाना हुए और कुछ देर के बाद उस सुरङ्ग के मुहाने पर जा पहुँचे जिस राह से भूतनाथ अपनी घाटी में आया जाया करता था। रास्ते तथा दर्वाजे का हाल प्रभाकरसिंह से कुछ छिपा न था अस्तु ये दोनों शीघ्र ही घाटी के अन्दर जा पहुँचे और देखा कि वास्तव में यहाँ भी सब उजाड़ पड़ा हुआ है और लक्षणों से जाना जाता था कि यहाँ वर्षों से कोई नहीं आया और न कोई रहता है। अब कहाँ चलना चाहिये !!

तरह तरह की बातें सोचते विचारते प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह घाटी के बाहर निकल आए और एक पेड़ के नीचे बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगे:—

गुलाब०। आश्चर्य की बात तो यह है कि दोनों घाटियाँ एकदम से खाली हो गईं। अब रणधीरसिंहजी के यहाँ चल कर पता लगाना चाहिये कि भूतनाथ का क्या हाल है क्योंकि असल में भूतनाथ ही इन बखेड़े की जड़ है और ताज्जुब नहीं कि वे तीनों औरतें भूतनाथ के कब्जे में आ गई हों! यहाँ चलने से कुछ न कुछ पता जरूर लग जायगा।

प्रभा० । रणधीरसिंह के यहाँ तो मैं किसी तरह नहीं जा सकता ! यद्यपि वे मेरे रिश्तेदार हैं मगर इस समय मैं उनके दामाद ( शिवदत्त ) से लड़ कर आ रहा हूँ इस लिये मुझे देखते ही वे आग हो जायंगे क्योंकि उन्हें अपने दामाद और अपनी लड़की की बुरी अवस्था पर बहुत ही दुःख हो रहा होगा ।

गुलाब० । ठीक है, ऐसा जरूर होगा, मगर मैं यह तो नहीं कहता कि आप सीधे रणधीरसिंह के पास चले चलिये, मेरा मतलब यह है कि हम लोग सौदागरों की सूरत में वहाँ जाकर किसी सराय में डेरा डालें तथा ऊपर ही ऊपर लोगों से मिलजुल कर भूतनाथ का पता लगावें और जो कुछ हाल मालूम हो सके करें ।

प्रभा० । हाँ यह हो सकता है, अच्छा तो अब यहाँ ठहरना व्यर्थ है, चलो उठो मै समझता हूं कि इन्द्रदेवजी से मुलाकात किये बिना दिल को तसल्ली न होगी ।

गुलाब० । जरूर, वहाँ भी चलना ही होगा, मगर पहिले भूतनाथ की खबर लेनी चाहिये ।

इतना कह कर गुलाबसिंह उठ खड़े हुए, प्रभाकरसिंह ने भी उसका साथ दिया और दोनों आदमी भिर्जापुर की तरफ रवाना हुए । इस बात का कुछ भी खयाल न किया कि समय कौन है और रास्ता कैसा कठिन है ।

## तेरहवाँ बयान

प्रेमी पाठक महाशय ! अभी तक भूतनाथ के विषय में जो कुछ हम लिख आये हैं उसे आप भूतनाथ के जीवनी की भूमिका ही समझें, भूतनाथ का मजेदार हाल जो अद्भुत घटनाओं से भरा हुआ है पढ़ने के लिये अभी आप थोड़ा सा और सब्र कीजये, अब उसका अनूठा किस्सा आया ही चाहता है । यद्यपि चन्द्रकान्ता सन्तति में प्रभाकरसिंह और इन्दुमति का नाम नहीं आया है मगर भूतनाथ की जीवनी का इन दोनों व्यक्तियों से बहुत ही घना सम्बन्ध है और भूतनाथ की बरबादी या ढिठाई का जमाना शुरू होने के बहुत दिन पहिले ही से भूतनाथ को इन दोनों से वास्ता पड़ चुका था और इन्हीं दोनों के सबब से इन्द्रदेव और दलीपशाह के ऊपर भी भूतनाथ की निगाह पड़ चुकी थी इसलिये हमें सब के पहिले प्रभाकरसिंह और इन्दुमति का परिचय देना पड़ा, तथापि आपको

आगे चल कर प्रभाकरसिंह और इन्दुमति की अवस्था पर आश्चर्य करना पड़ेगा।

यद्यपि इन्दुमति का पता न लगने से प्रभाकरसिंह को बहुत दुःख हुआ परन्तु इन्द्रदेव का खयाल उन्हें ढाढ़स दे रहा था। वे समझते थे कि इन्दुमति अपनी दोनों बहिनों के साथ जरूर इन्द्रदेव के यहाँ चली गई होगी, अस्तु सब से पहिले इन्द्रदेव ही के यहाँ चल कर उसका पता लगाना चाहिये। इसी बात का निश्चय कर गुलाबसिंह को साथ लिये हुए प्रभाकरसिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिये रवाना हुए।

जमना और सरस्वती की जुबानी प्रभाकरसिंह को मालूम हो चुका था कि इन्द्रदेव वास्तव में किसी तिलिस्म के दारोगा हैं परन्तु इन्द्रदेव ने अपने को ऐसा मशहूर नहीं किया था और न साधारण लोगों को उनके विषय में ऐसा खयाल ही था। उनके मुलकातियों में से भी बहुत कम आदमियों को यह बात मालूम थी कि इन्द्रदेव किसी तिलिस्म के दारोगा हैं और यदि कोई इस बात को जानता भी था तो उसे तिलिस्म के विषय में कुछ ज्ञान ही न था। अगर कोई इन्द्रदेव से तिलिस्म के विषय में कुछ पूछता भी तो इन्द्रदेव समझा देते कि यह सब दिलगी की बातें हैं। हां दो चार आदमियों को इस बात का पूरा पूरा विश्वास था कि इन्द्रदेव किसी भारी तिलस्म के दारोगा हैं मगर अपनी जुबान से उन्हें भी पूरा पूरा पता नहीं लगने देते थे। इसके अतिरिक्त इन्द्रदेव का रहन सहन ऐसा था कि किसी को उनके विषय में जानने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी और न वे विशेष दुनियादारी के मामले में पड़ते ही थे, वह वास्तव में साधु और महात्मा की तरह अपनी जिन्दगी बिताते थे मगर ढंग उनका अमीराना था मतलब यह है कि सर्व साधारण को इन्द्रदेव के विषय में पूरा पूरा ज्ञान नहीं था. हां इतना जरूर मशहूर था कि इन्द्रदेव ऊंचे दर्जे के ऐयार हैं और उनके बुजुर्गों ने ऐयारी के फन में बहुत दौलत पैदा की है जिसकी बदौलत आज तक इन्द्रदेव बहुत बड़े रईस और अमीर बने हुए हैं।

यह सब कुछ था सही परन्तु इन्द्रदेव के दो चार दोस्त ऐसे भी थे जिन्हें इन्द्रदेव का पूरा पूरा हाल जरूर मालूम था। मगर इन्द्रदेव की तरह वे लोग भी इस बात को मन्त्र की भांति छिपाये रहते थे।

इन्द्रदेव के रहने का स्थान कैसा था और वहां जाने के लिये कैसी कैसी

कठिनाइयाँ उठानी पड़ती थीं इसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है यहाँ पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है, हां इतना कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि जिन दिनों का हाल इस जगह लिखा जा रहा है उन दिनों इन्द्रदेव निश्चित रूप से उस तिलिस्मी घाटी ही में नहीं रहा करते थे बल्कि अपने लिये उन्होंने एक मकान तिलिस्मी घाटी के बाहर उसके पास ही एक पहाड़ी पर बनवाया हुआ था जिसका नाम "कैलाश" रक्खा था और इसी मकान में वह ज्यादे रहा करते थे, हां जब जमाने के हाथों से वह ज्यादे सताये गये और उन्होंने उदास होकर दुनिया ही को तुच्छ समझ लिया तब उन्होंने बाहर का रहना एकदम से बन्द कर दिया जैसा कि चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है।

प्रभाकरसिंह जब इन्द्रदेव से मिलने गये तब उसी 'कैलाश-भवन' में मुलाकात हुई। उन दिनों इन्द्रदेव बीमार थे, यद्यपि उनकी बीमारी ऐसी न थी कि चारपाई पर पड़े रहते परंतु घर के बाहर निकलने योग्य भी वह न थे।

प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह से मिल कर इन्द्रदेव ने बड़ी प्रसन्नता प्रगट की और बड़ी खातिरदारी से इन दोनों को उन्होंने अपने यहां रक्खा। प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह ने भी इन्द्रदेव की बीमारी पर खेद प्रगट किया और उसी के साथ अपने आने का सबब भी प्रभाकरसिंह ने बयान किया जिसे सुन इन्द्रदेव की आंखे डबडबा आईं और एकान्त होने पर उन दोनों में इस तरह बातचीत होने लगी। इस बातचीत में गुलाबसिंह शरीक नहीं थे।

इन्द्र०। प्रभाकरसिंह ? तुम्हें यह सुन कर बहुत दुःख होगा कि तुम्हारी स्त्री इन्दुमति हमारे यहाँ नहीं है तथा जमना और सरस्वती का भी कुछ पता नहीं लगता कि वे दोनों कहाँ गायब हो गईं। अफसोस ! उन दोनों ने मेरी शिक्षा पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और अपनी बेवकूफी से अपने को थोड़े ही दिनों में जाहिर कर दिया, अगर वे मेरी आज्ञानुसार अपने को छिपाये रहतीं और धीरे धीरे काम करतीं तो धोखा न उठातीं।

प्रभा०। (दुःखित चित्त से) निःसन्देह ऐसा ही है उस घाटी में पहिले जब मुझसे मुलाकात हुई थी तब उन्होंने कहा था कि ऐसे स्थान में रह कर भी हमलोग अपने को हर वक्त छिपाये रहती हैं, यहाँ तक कि अपनी लौंडियों को भी, अपनी असली सूरत नहीं दिखातीं....."

इन्द्र०। (बात काट के) बेशक ऐसी ही बात थी और मैंने ऐसा ह प्रबन्ध कर दिया था कि उनके साथ रहने वाली लौंडियों को भी इस बात क ज्ञान न हो कि ये दोनों वास्तव में जमना सरस्वती हैं वे सब उन दोनों को कल और विमला ही जानती थीं मगर इस बात को जमना ने बहुत जल्द चौपट क दिया और लौंडियों पर भरोसा करके शीघ्र ही अपने को प्रगट कर दिया। अगर लौंडियों को यह भेद मालूम न हो गया होता तो भूतनाथ की समझ में खाक भी न आता कि वे दोनों कौन हैं और क्या चाहती हैं।

प्रभा०। आपका कहना बहुत ठीक है।

इन्द्र०। बड़ों ने सच कहा है कि स्त्रियों के विचार में स्थिरता नहीं होती और वे किसी भेद को ज्यादे दिनों तक छिपा नहीं सकती, कइयों का कथन तो यह है कि स्त्रियों की बुद्धि प्रलय करने वाली होती है, और मैं भी इसी का पक्ष पाती हूँ।

प्रभा०। अफसोस करने के सिवाय और मैं क्या कहूँ, इन बखेड़ों में मैं व्यर्थ ही पीसा गया, मेरे हौसले सब मटियामेट हो गये और मैं कहीं का भी न रहा, मैं क्या कहूँ कि कैसी कैसी उम्मीदें अपने साथ लेकर मैं आपके पास आया था, मगर.....

इन्द्रदेव०। प्रभाकरसिंह! तुम एकदम से हताश मत हो जाओ और उद्योग का पल्ला मत छोड़ो। क्या कहूँ मैं बहुत दिनों से बीमार पड़ा हुआ हूँ और इस योग्य नहीं कि स्वयम् कुछ कर सकूँ तथापि मैंने अपने कई आदमी उन सभों की खोज में दौड़ा रक्खे हैं। दलीपशाह का भी बहुत दिनों से पता नहीं है, वे भी उन सभों के साथ ही गायब हैं।

प्रभा०। और भूतनाथ?

इन्द्र०। भूतनाथ अपने मालिक के यहाँ स्थिर भाव से बैठा हुआ है मुद्दत से वह कहीं आता जाता नहीं है, रणधीरसिंह जी को जो उसकी तरफ से रञ्ज हो गया था उसे भी भूतनाथ ने ठीक कर लिया। अब तो ऐसा मालूम होता है कि मानों भूतनाथ ने कभी रङ्ग बदला ही न था, इधर साल भर में चार पाँच दफे भूतनाथ मुझसे मिलने के लिये आया था मगर जमना और सरस्वती के विषय में न तो मैं ही ने कुछ जिक्र किया और न भूतनाथ ही ने कुछ छेड़ा, यद्यपि

मालूम होता है कि भूतनाथ उसी विषय में छेड़छाड़ करने के लिये आया था मगर मैंने कुछ चर्चा उठाना मुनासिब न समझा।

प्रभा०। अस्तु, अब क्या करना चाहिये सो कहिये। मैं तो आपका बहुत भरोसा रख के यहाँ आया था परन्तु यह जान कर मुझे आश्चर्य हुआ कि आपने जमना सरस्वती के लिये कुछ भी नहीं किया।

इन्द्र०। ऐसा मत कहो, मैंने उन सभों के लिये बहुत उद्योग किया मगर लाचार हूँ कि उद्योग का कोई अच्छा नतीजा न निकला, हाँ यह जरूर मानना पड़ेगा कि मैं स्वयम् अपने हाथ पैर से कुछ न कर सका, इसका सबसे बड़ा सबब तो यह है कि मैं इस मामले में अपने को प्रकट करना उचित नहीं समझता, दूसरे बीमारी से भी लाचार हो रहा हूँ, अस्तु जो कुछ होना था सो हो गया। अब तुम आ गये हो तो उद्योग करो। ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा और मैं भी हर तरह से तुम्हारी मदद के लिए तैयार हूँ। मेरी यह प्रबल इच्छा है कि किसी तरह उन तीनों का पता लगे, यदि मुझे इस बात का निश्चय हो जायगा कि उन तीनों से भूतनाथ ने कोई अनुचित व्यवहार किया है तो मै निःसन्देह भूतनाथ से बदला लूँगा मगर जब तक इस बात का निश्चय न होगा मैं कदापि भूतनाथ से सम्बन्ध न तोड़ूंगा, हाँ तुम्हें हर तरह से मदद बराबर देता रहूँगा।

प्रभा०। अच्छा तो फिर मुझे शीघ्र बताइये कि अब क्या करना चाहिये। अब मुझसे चुपचाप बैठे रहने की सामर्थ्य नहीं है।

इन्द्र०। जल्दी न करो, मैं सोच विचार कर कल तुमसे कहूँगा कि अब क्या करना चाहिए, एक दिन के लिये और सब्र करो।

प्रभा०। जो आज्ञा, परन्तु.....

लाचार होकर प्रभाकरसिंह को इन्द्रदेव की बात माननी पड़ी परन्तु इस बात का उनको आश्चर्य बना ही रहा कि इन्द्रदेव ने जमना और सरस्वती के लिए इतनी सुस्ती क्यों की और वास्तव में जमना और सरस्वती गायब हो गई हैं या इसमें भी कोई भेद है।

## चौदहवाँ बयान

अब हम कुछ हाल जमना सरस्वती और इन्दुमति का बयान करना उचित समझते हैं। जब महाराज शिवदत्त से बदला लेने का विचार करके प्रभाकरसिंह

नौगढ़ की तरफ रवाना हो गये तो उनके चले जाने के बाद बहुत दिनों तक जमना और सरस्वती को कोई ऐसा मौका हाथ न आया कि भूतनाथ से कुछ छेड़ छाड़ करें और न भूतनाथ ही ने उनके साथ कोई बदसलूकी की, हां यह जरूर होता रहा कि जमना और सरस्वती भूतनाथ की घाटी में ताक झांक करके इस बात की बराबर टोह लगाती रहीं कि भूतनाथ क्या करता है अथवा किस धुन में है।

थोड़े ही दिनों में उन दोनों को मालूम हो गया कि भूतनाथ अब इस घाटी में नहीं रहता, न मालूम वह कहीं चला गया था उसने जगह बदल दी। बहुत दिनों तक उनकी लौंडियों और ऐयार इस विषय का पता लगाने के लिये इधर उधर दौड़ती रहीं मगर सफल मनोरथ न हो सकीं। कुछ दिन और बीत जाने के बाद यह मालूम हुआ कि भूतनाथ अपने मालिक रणधीरसिंह के यहाँ चला गया तथा अब बराबर एकाग्रचित से उन्हीं का काम किया करता है और उन्हीं के यहां स्थिर भाव से रहता है। यह बात इन दोनों को अच्छी नहीं मालूम हुई और इन दोनों ने समझा कि अब भूतनाथ से बदला लेना कठिन हो गया तथा अब बिना प्रगट भये काम नहीं चलेगा। कई दफे इन दोनों ने सोचा कि रणधीरसिंह के यहाँ चली जायं और जो कुछ मामला हो चुका है उसे साफ साफ कह के भूतनाथ को सजा दिलावें परन्तु इन्द्रदेव ने ऐसा करने से मना किया और समझाया कि अगर तुम वहाँ चली जाओगी तो रणधीरसिंह मुझसे इस बात के लिये रञ्ज हो जायंगे कि मैंने इतने दिनों तक तुम दोनों को छिपा रक्खा और झूठ ही मशहूर कर दिया कि जमना और सरस्वती मर गईं साथ ही इसके हमसे और भूतनाथ से भी खुल्लमखुल्ला लड़ाई हो जायगी। केवल इतना ही नहीं बल्कि यह भी सोच रखना चाहिये कि रणधीरसिंह भूतनाथ का कुछ बिगाड़ न सकेंगे, सिवाय इसके कि अपने यहाँ से निकाल दें, बल्कि ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ रणधीरसिंह से रञ्ज होकर उन्हें भी किसी तरह की तकलीफ पहुँचावे।

इन्द्रदेव का यह विचार भी बहुत ठीक था, इसलिये वे दोनों बहुत दिनों तक चुपचाप बैठी रह गईं और रणधीरसिंह के यहां भी न गईं।

इसी तरह सोचते विचारते और समय का इन्तजार करते वर्षों बीत गये और

इस बीच में जमना सरस्वती और इन्दुमति प्रायः घूमने फिरने के लिये उस घाटी के बाहर निकलती रहीं।

एक दिन माघ के महीने में दोपहर के समय अपनी कई लौंडियों को साथ लिये हुए वे तीनों भेष बदले हुए उस घाटी और जङ्गल में चारो तरफ घूम फिर कर दिल बहलाने लगीं। यकायक उनकी निगाह एक मरे हुए घोड़े पर पड़ी जिस पर अभी तक चारजामा कसा हुआ था। वे सब ताज्जुब में आकर उसके पास गईं और गौर से देखने लगीं। वह घोड़ा कई जगहों से जख्मी हो रहा था जिससे गुमान होता था कि किसी लड़ाई में इसके सवार ने बहादुरी दिखाई और अन्त में किसी सबब से यह भाग निकला है सम्भव है कि इसका सवार लड़ाई में गिर गया हो। मगर इस बात पर भी विमला का विचार नहीं जमा, वह यही सोचती थी कि जरूर अपने सवार को लेकर भागा है, अस्तु विमला आँख फैला कर चारो तरफ इस खयाल से देखने लगी कि शायद इस घोड़े की तरह गिरा हुआ कोई आदमी भी दिखाई दे जाय।

विमला कला और इन्दुमति घूम घूम कर इस बात का पता लगाने लगीं आखिर थोड़ी देर में एक आदमी पर भी उनकी निगाह पड़ी। ये सब तेजी के साथ घबड़ाई हुई उसके पास गईं और देखा कि प्रभाकरसिंह बेहोश पड़े हुए हैं, उनका कपड़ा खून से तरबतर हो रहा है और उनके बदन में कई जगह तलवार के जख्म लगे हुए हैं तथा सर पर भी एक भारी जख्म लगा हुआ है जिसमें से निकलते हुए खून के छींटे चेहरे पर अच्छी तरह पड़े हुए हैं। लड़ाई के समय जो तलवार उनके हाथ में थी इस समय भी उसका कब्जा उनके हाथ ही में है।

प्रभाकरसिंह को इस अवस्था में देखते ही इन्दुमति एक दफे चिल्ला उठी और उसकी आंखों में आँसू भर आए, परन्तु तुरत ही उसने अपने दिल को सम्हाल लिया और जमना तथा सरस्वती की तरफ देखा जिनकी आंखों से आंसू की धारा बह रही थी और जो बड़े गौर से प्रभाकरसिंह के चेहरे पर निगाह जमाये हुए थीं।

इन्दु०। (जमना से) बहिन! तुम इनके चेहरे की तरफ क्या देख रही हो? जो बातें देखने लायक हैं पहिले उन्हें देखो इसके बाद रोने धोने का खयाल करना।

जमना० । ( ताज्जुब से ) सो क्या है ?

इन्दु० । पहिले तो यह देखो कि इनके पीठ में भी कोई जख्म लगा है या नहीं जिससे यह मालूम हो कि इन्होंने लड़ाई में पीठ तो नहीं दिखाई है ! इसके बाद इस बात की जांच करो कि इनमें कुछ दम है या नहीं । अगर इन्होंने लड़ाई में बीरता दिखाई और बहादुरी के साथ प्राण त्याग किया है तो कोई चिन्ता नहीं, मैं बड़ी प्रसन्नता से इनके साथ सती होकर अपना कर्तव्य पूरा करूँगी, पर इनके हाथ की तलवार मुझे विश्वास दिलाती है कि इन्होंने लड़ाई में पीठ नहीं दिखाई ।

जमना० । मेरा भी यही खयाल है, और वीर पत्नियों के लिये रोना कैसा ? उन्हें तो हरदम अपने पति के साथ जाने के लिये तैयार रहना चाहिये !!

सरस्वती० । ( प्रभाकरसिंह की नाक पर हाथ रख कर ) जीते हैं ! जख्मी होने के सबब से बेहोश हो गये हैं !!

सरस्वती की बात सुन कर जमना और इन्दुमति ने भी अच्छी तरह देखा और निश्चय कर लिया कि प्रभाकरसिंह मरे नहीं हैं और इलाज करने से बहुत जल्द अच्छे हो जायँगे । अब पुनः इन्दुमति की आँखों से आसू की धारा बहने लगी जमना और सरस्वती ने उसे समझाया और दिलासा दिया । इसके बाद सब कोई मिल जुल कर प्रभाकरसिंह को उठा कर घाटी के अन्दर ले गईं और बंगले के बाहर दालान में एक सुन्दर चारपाई पर लेटा कर उन्हें होश में लाने का उद्योग करने लगीं ।

मुंह पर केवड़ा और वेदमुश्क छिड़क के तथा लखलखा सुंघाने से थोड़ी ही देर में प्रभाकरसिंह चैतन्य हो गये और जमना की तरफ देख कर बोले, "मैं कहाँ हूँ ?"

जमना० । आप उसी घाटी में हैं जहाँ हम दोनों बहिनों तथा इन्दुमति से मुलाकात हुई थी ।

प्रभा० । ( चारो तरफ देख कर ) ठीक है, मगर मैं यहां कैसे आया ?

जमना० । पहिले यह बताइये कि अब आपकी तबियत कैसी है ?

प्रभा० । अब मैं अच्छा हूँ होश में हूँ और सब कुछ समझ सकता हूँ मगर आश्चर्य में हूँ कि यहां कैसे आया !!

जमना० । हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिये गई हुई थीं जहां आपको

बेहोश पड़े हुए देख कर उठा लाईं। उसी जगह एक घोड़ा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोड़ा हो।

प्रभा०। बेशक वह मेरा ही घोड़ा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बड़ी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उठाये हुए ले आया।

इन्दु०। क्या वह घोड़ा लड़ाई में से आपको भगा लाया था।

प्रभा०। हां लड़ाई ऐसी गहरी हो गई थी कि संध्या हो जाने पर भी दोनों तरफ की फौजें बराबर दिल तोड़ कर लड़ती ही रह गईं, यहाँ तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिंह का सेनापति तथा कुंअर बीरेन्द्रसिंह लड़ते हुए दुश्मन की फौज में घुस गये और मारते हुए उस जगह पहुँचे जहां कम्बख्त शिवदत्त खड़ा हुआ अपने सिपाहियों को लड़ने के लिये ललकार रहा था। चाँद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से महताब भी जल रहे थे इसलिये एक दूसरे को पहिचानने में किसी तरह तकलीफ नहीं मालूम हो सकती थी। महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देख कर झिझका और घोड़ा घुमा कर भागने लगा मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नहीं दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोड़े की पीठ पर से लुढ़क कर जमीन पर जा रहा। मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लड़ते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, तिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनों ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारो तरफ से घेर कर मारने लगे मगर मैं हताश न हुआ। दुश्मनों के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मण्डली को चीर कर बाहर निकला। उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनों हाथों से घोड़े का गला थाम उससे चिपट गया। फिर मुझे कुछ भी खबर न रही। मैं नहीं कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ।

इन्दु०। (प्रसन्न हो कर) बेशक आपने बड़ी बहादुरी की! घोड़ा भी उस समय समझ गया कि अब आप बेहोश हो गये हैं और इस लिये आपको वहां से ले भागा।

प्रभा०। बेशक ऐसा ही हुआ होगा।

जमना०। अब आप आज्ञा दीजिये तो कपड़े उतार कर आपके जख्म धोये जाँय।

प्रभा० । जरा और ठहर जाओ क्योंकि मैं उठ कर मैदान जाने का इरादा कर रहा हूँ । जख्म मुझे बहुत गहरे नहीं लगे हैं इस लिये उन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पड़ेगी केवल धो कर साफ कर देना ही काफी होगा । मेरे लिये एक धोती और गमछे का बन्दोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो ।

जमना० । बहुत अच्छा ऐसा ही होगा ।

इतना कह कर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा । वह सामान दुरुस्त करने के लिये वहाँ से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिये जल का लोटा भर कर अलग रख दिया । प्रभाकरसिंह ने उठने का इरादा किया जमना सरस्वती और इन्दु ने सहारा देकर उन्हें उठाया, बल्कि खड़ा कर दिया । जमना और इन्दु का हाथ थामे हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे वहा से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे पीछे कई लौंडियाँ भी जाने लगी । उस समय वहाँ हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आये हैं अस्तु हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकरसिंह के साथ साथ जाने लगी ।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकरसिंह ने कहा, "इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ होती जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर अब और आगे जाऊंगा ।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इन्दु का हाथ छोड़ दिया । हरदेई जल का भरा हुआ लोटा लिये हुए आगे बढ़ आई और अपने दूसरे हाथ से प्रभाकरसिंह का हाथ थाम कर धीरे धीरे आगे की तरफ बढ़ी ।

जमना सरस्वती और इन्दुमति वहा से पीछे हट कर एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गईं और इन्तजार करने लगीं कि प्रभाकरसिंह मैदान से हो कर लौटें और चश्मे पर जाय तो हम लोग भी उनके पास चलें मगर ऐसा न हो सका क्योंकि घण्टे भर से भी कम देर में सब कामों से छुट्टी पाकर हरदेई के हाथ का सहारा लिये हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे चलते हुए उस जगह आ पहुँचे जहा जमना सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुई इनका इन्तजार कर रही थीं । जख्मों के विषय में सवाल करने पर प्रभाकरसिंह ने उत्तर दिया कि नहर के जल से

मैं सब जख्मों को साफ कर चुका हूँ अब उनके विषय में चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।

प्रभाकरसिंह भी उन तीनों के पास बैठ गये और लड़ाई के विषय में तरह तरह की बातें करने लगे। जब संध्या होने में थोड़ी देर रह गई और हवा में सर्दी बढ़ने लगी तब सब कोई वहां से उठ कर बङ्गले के अंदर चले गये। एक कमरे के अंदर जाकर प्रभाकरसिंह चारपाई पर लेट रहे। थोड़ी देर तक वहां सन्नाटा रहा क्योंकि जरूरी कामों से छुट्टी पाने तथा भोजन की तैयारी करने के लिये जमना और सरस्वती वहाँ से चली गई और केवल चारपाई की पाटी पकड़े हुए इंदुमति तथा पैर दबाती हुई हरदेई वहाँ रह गई।

कुछ देर तक प्रभाकरसिंह और इंदुमति में मामूली ढङ्ग पर धीरे धीरे बातचीत होती रही इसके बाद प्रभाकरसिंह ने यह कह कर इन्दुमति को बिदा किया कि 'मैं भूख से बहुत दुःखी हो रहा हूँ, जो कुछ तैयार हो थोड़ा बहुत खाने के लिये जल्द लाओ।

आज्ञानुसार इन्दुमति वहा से उठ कर कमरे के बाहर चली गई और तब प्रभाकरसिंह और हरदेई में धीरे धीरे इस तरह बातचीत होने लगी।

प्रभा०। हां तो तुम्हें दर्वाजा खोलने का ढङ्ग अच्छी तरह मालूम हो चुका है?

हरदेई०। जी हाँ उसके लिये आप कोई चिन्ता न करें।

प्रभा०। मैं तो इसी फिक्र में लगा हुआ था कि पहिले किसी तरह दर्वाजा खोलने की तर्कीब मालूम कर लूं तब दूसरा काम करूं।

हरदेई०। नहीं अब आप अपनी कार्रवाई कीजिये, सुरंग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना अब मेरे लिये कोई कठिन काम नहीं है।

प्रभा०। (अपने जेब में से एक पुड़िया निकाल कर और हरदेई के हाथ में देकर) अच्छा तो अब तुम इस दवा को भोजन के किसी पदार्थ में मिला देने का उद्योग करो फिर मैं समझ लूंगा।

हरदेई०। अब इन्दुमति आ जाय तो मैं जाऊं।

प्रभा०। हां मेरी भी यही राय है।

थोड़ी देर के बाद चाँदी की रकाबी में कुछ मेवा लिये हुए इंदुमति वहाँ आ पहुँची, उसके साथ एक लौंडी चाँदी के लोटे में जल और एक गिलास

लिये हुए थी।

प्रभाकरसिंह ने मेवा खा कर जल पीया और इसी बीच में हरदेई किसी काम के बहाने से उठ कर कमरे के बाहर चली गई।

## पन्द्रहवाँ बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। बङ्गले के अंदर जितने आदमी हैं सभी बेहोशी की नींद सो रहे हैं क्योंकि हरदेई ने जो बेहोशी की दवा खाने की वस्तुओं में मिला दी थी उसके सबब से सभी आदमी ( उस अन्न के खाने से ) बेहोश हो रहे हैं। हरदेई एक विश्वासी लौंडी थी और जमना तथा सरस्वती उसे जी जान से मानती थीं इसलिये कोई आदमी उस पर शक नहीं कर सकता था, परन्तु इस समय हमारे पाठक बखूबी समझ गये होंगे कि यह हरदेई नहीं है, बल्कि जिस तरह भूतनाथ प्रभाकरसिंह का रूप धारण किये हुए है उसी तरह भूतनाथ का शागिर्द रामदास हरदेई की सूरत में काम कर रहा है, असली हरदेई को तो वह गिरफ्तार ही करके ले गया था। और सभों की तरह नकली प्रभाकरसिंह भी अपनी चारपाई पर बेहोश पड़े हुए हैं। हरदेई ने आकर प्रभाकरसिंह को लखलखा सुंघाया और जब वे होश में आ गये तो उन से कहा, "अब उठिये काम करने का समय आ गया।"

प्रभा०। कितनी रात जा चुकी है?

हरदेई०। आधी से ज्यादे।

प्रभा०। सभों के साथ मुझे भी वही अन्न खाना पड़ा, यद्यपि मैंने बहुत कम भोजन किया था तथापि बेहोशी का असर बहुत ज्यादे रहा।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए और सब तरफ घूम कर देखने लगे कि कहाँ कौन सोया हुआ है। जमना सरस्वती और इंदुमति तो उसी कमरे में फर्श के ऊपर सोई हुई थीं जिसमें प्रभाकरसिंह थे और बाकी की सब लौंडियां तथा ऐयारा दूसरे कमरे में पड़ी हुई थीं।

प्रभाकरसिंह ने जमना और सरस्वती की तरफ देख कर हरदेई से कहा, "पहिले तो मुझे यह देखना है कि इन लोगों ने किस ढङ्ग पर अपना चेहरा रंगा हुआ है!!

हरदेई०। मैं आपसे कह चुका हूँ कि इन लोगों ने एक प्रकार की झिल्ली चेहरे पर चढ़ाई हुई है जिस पर पानी का असर नहीं होता।

प्रभा० ( जमना और सरस्वती के चेहरे पर से झिल्ली उतार कर ) बेशक यह एक अनूठी चीज है, इसे मैं अपने पास रक्खूँगा।

हरदेई०। ( अथवा रामदास ) बेशक यह चीज रखने योग्य है!

प्रभा०। इन लोगों ने भी बड़ा ही उत्पात मचा रक्खा था, आज इनकी चालबाजियों का अंत हुआ। अब इन्हें शीघ्र ही दुनिया से उठा देना चाहिये नहीं तो एक न एक दिन इन दोनों की बदौलत बड़ा ही अनर्थ हो जायगा और मैं किसी को अपना मुँह दिखाने लायक न रहूँगा! ( कुछ सोचकर ) मगर मुझसे इनके गले पर छुरी न चलाई जायगी, यद्यपि मैं इनकी जान लेने के लिए तैयार हूँ मगर लाचारी से।

हरदेई०। यदि ऐसी ही दया आती हो तो इन्हे किसी कूँए में ढकेल कर निश्चिन्त हो जाइये। इस बगले के पीछे की तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ के एक कूंआ है जो इस काम के लिए बहुत ही मुनासिब होगा। मैं अच्छी तरह जाँच चुका हूँ कि वह बहुत गहरा और अंधेरा है, उसमें गया हुआ आदमी फिर नहीं निकल सकता।

प्रभा०। अच्छी बात है दोनों को उसी कूयें में ले चल कर डाल दो मगर इन्दुमति को मैं अपने घर अर्थात् लामाघाटी में ले जाऊँगा क्योंकि इसकी जुबानी बहुत सी बातों का पता लगाना है।

हरदेई०। मै इस राय को पसन्द नहीं करता, मैं इन्दुमति को भी उसी कूँए में पहुँचाना मुनासिब समझता हूँ।

प्रभा०। ( कुछ सोच कर ) अच्छा खैर इसे भी उसी में दाखिल करो।

इतना कह कर नकली प्रभाकरसिंह ने जमना को और रामदास ने सरस्वती को उठा कर पीठ पर लाद लिया और उस कूँए पर चले गये जिसका पता रामदास ने दिया था।

वह कूआ बंगले के पश्चिम तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ कर पड़ता था। कूआँ बहुत ही प्रशस्त और गहरा था मगर इसका मुंह इतना छोटा था कि वहां के रहने वालों ने एक मामूली पत्थर की चट्टान से उसे ढाँक रक्खा

था। कदाचित् रामदास को इसका पता अच्छी तरह लग चुका था इसी लिए वह नकली प्रभाकरसिंह को लिए हुए बहुत जल्द वहां जा पहुँचा। जमना और सरस्वती को जमीन पर रख दोनों ने मिल के उस कूँए का मुंह खोला और फिर जमना और सरस्वती को एक एक करके उसके अन्दर फेंक दिया। अफसोस ! अफसोस !! अफसोस !!! भूतनाथ को क्या नतीजा भोगना पड़ेगा इस पर उसने कुछ भी ध्यान न दिया।

दोनों बेचारियों को कूँए मे ढकेल कर भूतनाथ ने ध्यान दे कर और कान लगा कर सुना कि नीचे गिरने की आवाज आती है या नहीं मगर किसी तरह की आवाज उसके कान में न आई जिससे उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

उन दोनों को कूँए में ढकेल देने के बाद रामदास दौड़ा हुआ गया और इन्दुमति को उठा लाया। भूतनाथ ने उसे भी कूँए के अन्दर ढकेल दिया और फिर पत्थर से उसका मुंह उसी तरह ढाँक दिया जैसा पहिले था।

इस काम से छुट्टी पाकर भूतनाथ और रामदास ने यह सोचा कि अब बाकी की औरतें जो इस घाटी में मौजूद हैं उन्हें भी मार कर बखेड़ा तय कर देना चाहिये क्योंकि इनमें से अगर एक भी जीती रह जायगी तो भण्डा फूटने का डर लगा ही रह जायगा, अस्तु यह निश्चय किया गया कि उन सभों के लिए कोई दूसरा कुआँ खोजना चाहिये क्योंकि जिस कूँए से जमना और सरस्वती तथा इन्दु को डाला है उसके अन्दर घुस कर देखना उचित है कि उसमें पानी है या नहीं अथवा उसके अन्दर का क्या हाल है।

आखिर ऐसा ही हुआ। उस कूँए से थोड़ी दूर पर पहाड़ के कुछ ऊपर चढ़ कर एक कूआँ और था जिसका मुंह बहुत चौड़ा था। भूतनाथ और रामदास दोनों आदमी सब बेहोश लौंडियों को बंगले के अन्दर और बाहर से उठा लाये और एक एक करके उस कूँए के अंदर डाल दिया। आह ! भूतनाथ का कैसा कड़ा कलेजा था और यह कैसा घृणित कार्य उसने किया !! अब उस घाटी के अन्दर कोई भी न रहा जो इन दोनों की खबर ले।

अब सवेरा हो गया बल्कि सूर्य्य भगवान भी उदयाचल से निकल कर अपनी आँखों से भूतनाथ और रामदास के काम देखने लगे।

भूतनाथ और रामदास उस कूँए पर आए जिसमें जमना सरस्वती और

इन्दु को ढकेल दिया था। भूतनाथ ने रामदास से कहा कि तू कमन्द के सहारे इस कूंए के अन्दर उतर जा और देख कि इसमें पानी है या नहीं।

भूतनाथ की आज्ञानुसार रामदास कमन्द थाम कर उसके अन्दर उतर गया। कमन्द का दूसरा सिरा भूतनाथ ने एक पत्थर से मजबूती के साथ अड़ा दिया था। रामदास ने नीचे जाकर आवाज दी—"गुरुजी! यह कूंआ इस लायक नहीं था कि इसके अन्दर दुश्मनों को डाला जाय बल्कि यह तो स्वर्ग से भी बढ़ कर सुख के देने वाला है। लीजिये अब कमन्द को छोड़ता हूँ खैंच लीजिये क्योंकि अब मैं बाहर आने की इच्छा नहीं करता!"

रामदास की बात सुन कर भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। और जब उसने कमन्द खैंच कर देखा तो वास्तव में ढीला पाया।

## सोलहवाँ बयान

धीरे धीरे बिल्कुल कमन्द खिंच कर भूतनाथ के हाथ में आ गया और तब वह बड़ी ही बेचैनी के साथ कूंए के अन्दर झांक कर देखने लगा मगर अन्धकार के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं दिया।

रामदास भूतनाथ का बहुत ही प्यारा शागिर्द था और साथ ही इसके भूतनाथ को उस पर विश्वास भी पहले सिरे का था। इस मौके पर हरदेई की सूरत में जो कुछ काम उसने किया था उससे भूतनाथ बहुत प्रसन्न था और समझता था कि मेरा यह होनहार शागिर्द निःसन्देह किसी दिन मेरा ही स्वरूप हो जायगा। केवल इतना ही नहीं, जिस तरह भूतनाथ उसे लड़के के समान मानता था, उसी तरह रामदास भी भूतनाथ को पिता के तुल्य मानता था, अस्तु ऐसे रामदास का इस तरह कूंए के अन्दर जाकर बेमुरौवत हो जाना कोई मामूली बात न थी। इससे भूतनाथ को बड़ा ही सदमा हुआ और उसने ऐसा समझा कि मानों पला पलाया दुनिया में नाम पैदा करने वाला बराबर का लड़का जिसे निधिरूप समझता था हाथ से निकला जा रहा है। भूतनाथ इस सदमें को बरदाश्त नहीं कर सकता था और उससे यह नहीं हो सकता था कि रामदास को ऐसी अवस्था में छोड़कर वहां से चल जाय।

कुछ देर तक सोचने और विचारने बाद भूतनाथ ने कमन्द का एक सिरा उसी पत्थर के साथ अड़ाया और तब खुद भी उसी के सहारे नीचे उतर गया।

भूतनाथ को विश्वास था कि कूंए के नीचे या तो पानी होगा या बिल्कुल सूखे में कला बिमला और इन्दुमति की लाश पावेंगे और वही अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी देखेंगे मगर ये सब कुछ भी बातें न थीं। न तो वह कूंआ सूखा था और न उसमें पानी ही दिखाई दिया इसी तरह कला बिमला इन्दुमति और रामदास का भी वहाँ नामोनिशान न था। कमर बराबर मुलायम और गुदगुदी घास कूंए की तह में जमी हुई थी जिस पर खड़े होकर भूतनाथ ने सोचा कि कोई आदमी ऊपर से इस घास पर चुटीला नहीं हो सकता, अतएव निश्चय है कि कला बिमला और इन्दुमति मरी न होंगी, मगर आश्चर्य है कि यहाँ उनमें से एक भी नजर नहीं आतीं और न रामदास ही का कुछ पता है।

उस कूंए की तह में बिल्कुल ही अन्धकार था इस लिये अच्छी तरह देखने ढूंढ़ने और जाँच करने के लिये भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर रोशनी की और बड़े गौर से चारो तरफ देखने लगा।

अंदर से वह कूंआ बहुत चौड़ा था और उसकी दीवारें सङ्गीन थीं। जब कोई आदमी वहाँ नजर न आया तब भूतनाथ ने उस घास को अदर टटोलना और ढूंढ़ना शुरू किया मगर इससे भी कोई काम न चला, हाँ जरूर दो बातें ताज्जुब की वहाँ दिखाई पड़ीं। एक तो उस कूएं की दीवार में से (चारों तरफ से) थोड़ा थोड़ा पानी टपक कर तह में आ रहा था जिससे सिर्फ वहाँ की घास जो एक अजीब किस्म की थी बराबर तर और ताजी बनी रहती थी, दूसरे छोटे छोटे दो दर्वाजे भी दीवार में दिखाई दिये जो एक दूसरे के मुकाबले में थे। भूतनाथ बड़े ही आश्चर्य से उन दोनों दर्वाजों को देख रहा था क्योंकि जब वह कूयें में इधर उधर घूमता तो कभी कोई दर्वाजा (उन दोनों में से) बंद हो जाता और कभी कोई खुल जाता। मगर जब वह कुछ देर तक एक ही जगह पर स्थिर भाव से खड़ा रह जाता तब वे दर्वाजे भी ज्यों के त्यों एकही ढंग पर कायम रह जाते अर्थात् जो खुल जाता वह खुला ही रह जाता और जो बन्द होता वह बंद ही रह जाता। अस्तु भूतनाथ ने समझा कि इन दर्वाजों के खुलने और बन्द होने के लिये यहाँ की जमीन ही में कदाचित् कोई कमानी लगी हुई है। वह बहुत देर तक इधर उधर घूम घूम कर इन दर्वाजों के खुलने और बंद होने का तमाशा देखता रहा।

इसी बीच में यकायक गाने की सुरीली आवाज भूतनाथ के कानों में पड़ी जो कि किसी औरत की आवाज मालूम पड़ रही थी और उन्हीं दोनों में से एक दर्वाजे के अंदर से आ रही थी और बाद ही में पखावज तथा कई पाजेबों के बजने की भी आवाज आई जो सम और ताल से खाली न थी। कभी कभी गाने की आवाज एकदम बन्द हो जाती और केवल पाजेब ही की आवाज सुनाई देती जिससे मालूम होता कि वे सब औरतें (या जो कोई हों) पखावज की गत के साथ मिल कर नाच रही हैं।

अब भूतनाथ से ज्यादे देर तक ठहरा न गया और वह हाथ में मोमबत्ती लिये हुए उस दर्वाजे के अंदर घुस गया जिसके अंदर से गाने तथा घुंघरू के बजने की आवाज आ रही थी।

दर्वाजे के अंदर पैर रखते ही भूतनाथ को मालूम हो गया कि यहाँ तो खासी लम्बी चौड़ी इमारत बनी हुई है और ताज्जुब नहीं कि कुछ और आगे बढ़ने से बड़े बड़े दालान और कमरे भी दिखाई पड़ें। वास्तव में बात भी ऐसी ही थी।

कुछ दूर आगे बढ़ते ही भूतनाथ ने उजाला पाया और देखा कि एक सुन्दर दालान में चार या पांच औरतें हाथ में मसाल लिये खड़ी हैं और कई औरतें गा बजा तथा कई नाच रही हैं। यद्यपि भूतनाथ के दिल में आगे बढ़ कर देखने और उन लोगों को पहिचानने का उत्साह भरा हुआ था मगर साथ ही इसके वह डरता भी था कि आगे बढ़ने से कहीं मुझ पर कोई आफत न आवे।

भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा कर बटुये में रख ली और हाथ में खञ्जर ले कर दबे कदम धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। ओफ!! यह क्या भूतनाथ के लिये कोई कम आश्चर्य की बात है कि उन औरतों में भूतनाथ ने अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी नाचते हुए देखा और मालूम किया कि वह अपनी धुन में ऐसा मस्त हो रहा है कि उसे किसी बात की मानो परवाह ही नहीं है। सब से ज्यादे आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह (रामदास) भूतनाथ को देख कर बहुत रञ्ज हुआ और कड़े शब्दों की बौछार करते हुए उसने भूतनाथ को वहां से निकल जाने के लिये कहा।

● दूसरा हिस्सा समाप्त ●

मुद्रक—भारतजीवन प्रेस, काशी।

# भूतनाथ

उपन्यास

अथवा

## भूतनाथ की जीवनी

तीसरा हिस्सा

# पहिला बयान

काशी शहर के बाहर उत्तर लाटभैरव का एक प्रसिद्ध स्थान है। पास ही में एक पक्का तालाब है और स्थान के इर्द गिर्द कई पक्के कूएँ भी हैं। वही पक्का तालाब कपालमोचन तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। काशीखण्ड में वहाँ स्नान करने का बड़ा ही महात्म्य लिखा है। इस तालाब के कोने पर (कुछ हट के) एक कूआ है जिसकी जगत बहुत ऊंची है और ऊपर बैठने का स्थान भी बहुत प्रशस्थ है तथा सीढ़ी के दोनों तरफ छोटे छोटे दो दालान भी बने हैं जिससे मुसाफिरों और यात्रियों का बहुत उपकार होता है तथा काशी के मनचले औ आशिकमिजाज लोगों को सैल सपाटे के समय (यदि बरसात का मौसिम हो तो) रोटी बाटी बनाने में भी अच्छी सहायता मिलती है।

इस तालाब या कूएँ के पास में सिवाय जंगल मैदान के किसी गृहस्थ का कोई कच्चा या पक्का मकान नहीं है। अगर यहाँ दस पाँच आदमी आपुस में लड़भिड़ जायँ तो पास से किसी अड़ोसी पड़ोसी की सहायता भी नहीं मिल सकती।

इसी कूएँ पर सन्ध्या होने से कुछ पहिले हम काशी के पाँच सात खुश-

मिजाज आदमियों को बैठे हंसी दिल्लगी करते तथा भंग बूटी के इन्तजाम में व्यग्र देख रहे हैं। कोई भंग धो रहा है, कोई पीसने का चिकना पत्थर धो कर जगह साफ करनेकी धुन में है, कोई बादाम तोड़ रहा है, कोई मिर्च रगड़कर साफ कर रहा है, कोई टिकिया सुलगा रहा है, और कोई गौरिया ( मिट्टी के हुक्के ) में पानी भर रहा है, इत्यादि तरह तरह के काम में सब लगे हुए हैं और साथ ही साथ अपनी बनारसी अधकचरी तथा अक्खड़ भाषा में हंसी दिल्लगी भी करते जाते हैं। इनकी बातें भी सुनने ही के लायक हैं। यद्यपि इनसे किसी तरह का उपकार तो नहीं हो सकता परन्तु मनबहलाव जरूर है और एक प्रकार की जानकारी भी हो सकती है। अस्तु सुनिये तो सही—

एक०। ( जो भंग धो रहा था ) यार! देखो साले दूकानदार ने मुफ्त ही चार पैसे ले लिये, हमें तो यह भाँग दो पैसे की भी जमा नहीं दिखाई देती। यह देखो निचोड़ने पर मुट्ठी भर के भी नहीं होती!

दूसरा०। ( उचक के और देख के ) हाँ यार! यह तो कुछ भी नहीं है। तू हूँ निरे गोखे ही रह्यो! पहिले काहे नहीं कह्यो, सारे की टापी उतार लेते और ऐसी गड्डो देते कि जनम भर याद रखता।

तीसरा०। ऐसे ही तो जमा मार मार से सरवा मुआ गया है। तोंद कैसी निकली हुई है सारे की!

चौथा०। अच्छा अब कल समझेंगे चोधर से।

पाँचवाँ०। कल आती दफे धोर से उसकी डोरी ही उलट देंगे, ज्यादे बोलेगा तो लद जायेंगे और गुल करेंगे कि चार आना पैसा तो ले लिहिस है मगर भाँग देता ही नहीं।

छठाँ०। ( जो भला आदमी और कुछ पैसे वाला भी मालूम होता था क्योंकि उसके गले में सोने की सिकड़ी पड़ी हुई थी ) नहीं नहीं, ऐसा न करना, कोई जान पहिचान का देख लेगा और जा कर कह देगा तो मुफ्त की झाड़ * सुननी पड़ेगी!

दूसरा०। अरे रहो बाबू साहब! हमलोगन के साथ आया करो तो ऐसी भल-

---

* झाड़ अर्थात् डाँट।

नसी घर छोड़ आया करो ! हमलोग ऐसा दबा करें तो दिन दुपहरिये लुट जायँ!

लेखक० । कंगाल बांकड़े भी खूब ही लुटा करते होंगे !

सातवाँ० । ( सुलगी हुई टिकिया हाथ में हिलाते हुए ) अरे यारो ! ये बाबू साहब ठहरे महाजन भला ईलोग ( ये लोग ) लड़ना भिड़ना का ( क्या ) जानें, चाहे कोई धोती ही उतार के ले जाय, ई ( यह ) हमी लोगन ( लोगों ) का काम है कि कोई आँख दिखावे तो कान उपार ( उखाड़ ) लें । हमी लोगन की बदौलत बाबू साहब बचे भी जाते हैं नहीं तो गुदड़ सफरदा सरवा ऐसा रङ्ग बाँधे लगा था कि बस कुछ पूछो नहीं, ओ रोज ( उस दिन ) चिथड़ू न होते गले की सिकरिये उतार लिए होता ।

छठाँ० । (अर्थात् बाबू साहब) हाँ यह बात तो ठीक है और जी में तो उसी रोज आ गया था कि अब आज से इस रास्ते को छोड़ दें और रण्डी मुण्डी का नाम भी न लें बल्कि कसम खाने के लिए भी तैयार हो गया था मगर क्य करें 'नागर' की मुहब्बत ने ऐसा करने नहीं दिया । वह बेशक मुझे प्यार करती है और मुझ पर आशिक है ।

सातवाँ० । ( मुसकराते हुए ) बल्कि तुम पर मरती है ! एक दिन हमसे कहती थी कि बाबू साहब हमें छोड़ देंगे तो हम जहर खा लेंगे ।

इसी तरह ये लोग बेतुकी और अक्खड़पन लिये हुए मिश्रित भाषा में बातचीत कर रहे थे कि यकायक विचित्र ढंग का एक नया मुसाफिर वहां आ पहुँचा और उसने कूएँ के ऊपर चढ़ते इस सातवें आदमी की बात बखूबी सुन ली । इस आदमी की उम्र का पता लगना जरा कठिन था तथापि बाबू साहब की निगाहों में वह पैंतीस वर्ष का मालूम पड़ता था । कद जरा लम्बा और चेहरा रोबदार था । कपड़े की तरफ ध्यान देकर कोई नहीं कह सकता था कि यह किस देश का रहने वाला है । भीतर चाहे कैसी ही पोशाक हो मगर ऊपर एक स्याह अबा डाले हुए था और एक छोटी सी गठड़ी उसके हाथ में थी ।

पहिले से जो लोग उस कुएँ पर बैठे हँसी दिल्लगी कर रहे थे उनके दिल में आया कि इस नये मुसाफिर से कुछ छेड़छाड़ करें और यहाँ से भगा दें क्योंकि वास्तव में काँशी के रहने वाले अक्खड़ मिजाज लोगों की आदत ही ऐसी होती है जहाँ इस मिजाज के चार पाँच आदमी इकट्ठे होते हैं वहाँ वे लोग अपने

आगे किसी को कुछ समझते ही नहीं और दूसरे लोगों से बिना दिल्लगी किये नहीं रहते।

एक०। (नए मुसाफिर से) कहाँ रहते हौ साहब।

मुसा०। गयाजी।

दूसरा०। यहाँ कब आये?

मुसा०। आज ही तो आये हैं।

दूसरा०। तभी आप इस कूएँ पर आये हैं, अगर कोई जानकार होता तो यहाँ कभी न आता।

मुसाफिर०। सो क्यों?

चौथा०। यहाँ शैतान और जिन्न लोग रहते हैं, जो कोई नया मुसाफिर आता है उसे चपत लगाये बिना नहीं रहते।

मुसा०। ठीक है, तो तुमलोगों को भी उन्होंने चपत लगाया ही होगा।

दूसरा०। (चिढ़ कर, जोर से) हम लोगों से वे लोग नहीं बोल सकते क्योंकि हम लोग यहाँ के रहने वाले हैं और उन सभों के दोस्त हैं।

मुसाफिर०। बेशक शैतान के दोस्त शैतान ही होते हैं।

चौथा०। क्यों बे, मुँह सम्हाल के नहीं बोलता?

मुसाफिर०। अबे तबे करोगे बचा तो ठीक करके रख देंगे! हमें कोई मामूली मुसाफिर न समझना!!

पाँचवाँ०। (ललकार कर) मार सारे के, दे अढ़ैया चपत!!

इतना कह कर पाँचवाँ आदमी उठा और मुक्का तान कर उस मुसाफिर की तरफ झपटा! मारना चाहता ही था कि मुसाफिर ने हाथ पकड़ लिया और ऐसा झटका दिया कि वह कूएँ के नीचे जा गिरा और बहुत चुटीला हो गया। यह कैफियत देखते ही बाबू साहब तो डर के मारे कूएँ के नीचे उतर गये और किसी झाड़ी में जाकर छिप रहे, मगर बाकी के आदमी सब उस मुसाफिर पर जा टूटे और एक ने अपनी कमर में से छुरी भी निकाल ली, मगर उस मुसाफिर ने उन सभों की कुछ भी पर्वाह न की। बात की बात में उसने और भी तान आदमियों को कूएँ के नीचे ढकेल दिया और इसके बाद कमर से खंजर निकाल कर मुकाबले को तैयार हो गया। खञ्जर की चमक देखते ही सभों का मिजाज ठण्डा हो

गया और मेल मारफत के ढङ्ग की बातचीत करने लगे, मगर मुसाफिर का गुस्सा कम न हुआ और उसने लात तथा मुक्के से खूब अच्छी तरह सभों की मरम्मत की, इसके बाद एक किनारे हट कर खड़ा हो गया और बोला, "कहो अब क्या इरादा है ?"

मुसाफिर की हिम्मत और मर्दानगी देख कर सभों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उनको इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि यह अकेला आदमी इस तरह हमलोगों को नीचा दिखा देगा। सभों ने समझा कि यह जरूर कोई राक्षस या जिन्न है जो आदमी का रूप धर के हमलोगों को छकाने के लिए आया है, अस्तु किसी ने भी उसकी बातों का जवाब नहीं दिया और डरते हुए अपना अपना सामान और कपड़ा लत्ता उठा कर भागने के लिए तैयार हो गए मगर मुसाफिर ने उन्हें ऐसा करने से रोका और कहा, "देखो तुम लोगों ने जान बूझ कर मुझसे छेड़खानी की और तकलीफ उठाई, अस्तु अब शान्त होकर बैठो और अपना अपना काम करो। तुम्हारे कई साथियों को सख्त चोट आ गई सो उसे धोकर पट्टी बाँधो और कुछ देर आराम कर लेने दो, और हाँ यह तो बताओ कि तुम्हारे वह सुन्दर सलोने बाबू साहब कहाँ गये जिन पर बीबी नागर आशिक हो गई हैं ?"

एक०। न मालूम वह कहाँ चला गया, ऐसा भग्गू आदमी.....

दूसरा०। जाने दो, अगर भाग गया तो जहन्नुम में जाय, उसी के सबब से त हमलोग तकलीफ उठाते हैं।

मुसा०। नहीं नहीं, भागो मत, अपने साथी को आने दो बल्कि खोजो कि वह कहाँ चला गया है। यह कोई भलमनसी की बात नहीं है कि उसे इस तरह छोड़ कर सब कोई चले जाओ, हम तुम लोगों को कभी न जाने देंगे और खास करके तुम्हारे सुन्दर सलोने से तो जरूर ही बातचीत करेंगे।

मुसाफिर की बातों ने उन लोगों को और भी परेशान कर दिया। उसका रोब इन सभों पर ऐसा छा गया था कि उसकी तरफ आँख उठा कर देख नहीं सकते थे और उसे आदमी नहीं बल्कि देवता या राक्षस समझने लग गये थे, अस्तु उसका रोकना इन लोगों को और भी बुरा मालूम हुआ और सभों ने

डरते हुए हाथ जोड़ कर कहा, "बस अब कृपा कीजिये और हम लोगों को जाने दीजिये !"

मुसाफिर० । नहीं नहीं, यह कभी न होगा ! पहिले तुम अपने साथी को तो खोजो ।

एक० । अब हम उसे कहाँ खोजें ?

मुसाफिर० । चलो हम भी तुम लोगों के साथ मिल कर उसे खोजें । वह कहीं दूर न गया होगा इसी जगह किसी झाड़ी में छिपा होगा । तुम लोग डरो मत, अब हमारी तरफ से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न पहुँचेगी ।

यद्यपि मुसाफिर ने उन लोगों को बहुत कुछ दिलासा दिया और समझाया मगर उन लोगों का जी ठिकाने न हुआ और डर उनके दिल से न गया बल्कि इस बात का खयाल हुआ कि यह मुसाफिर बाबू साहब को खोजने के लिये जिद्द करता है तो इसमें कोई भेद जरूर है, बेशक यह बाबू साहब को खोज कर उन्हें कुछ तकलीफ देगा मगर जो हो उन सभों को मुसाफिर की इच्छानुसार रुक कर बाबू साहब को खोजना ही पड़ा ।

उधर बाबू साहब उस कूएँ के पास ही एक झाड़ी में छिपे हुए सब कुछ देख सुन रहे थे और डर के मारे उनका तमाम बदन काँप रहा था । जब उन्होंने देखा कि वह राक्षस सभों को लिये हुए उनकी खोज में कूएँ के नीचे उतरा है तब तो वह एक दम घबड़ा उठे और उनके मुह से हजार कोशिश करके रोकने पर भी एक चीख की आवाज निकल ही पड़ी । आवाज सुनते ही वह मुसाफिर समझ गया कि इसी झाड़ी के अन्दर बाबू साहब छिपे हुए हैं, झपट कर वहाँ जा पहुँचा और झाड़ी के अन्दर से हाथ पकड़ के बाबू साहब को बाहर निकाला । मालूम होता था कि बाबू साहब को इस समय जड़ैया बुखार चढ़ आया है । उनका तमाम बदन तेजी के साथ कांप रहा था । बाबू साहब जल्दी से मुसाफिर के पैरों पर गिर पड़े और आँसू बहाते हुए बोले, 'ईश्वर के लिए मुझे माफ करो। मैं बड़ा ही गरीब हूँ ! किसी के भले बुरे से मुझे कुछ सरोकार नहीं, मैंने आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ा है !!"

मुसाफिर० । डरो मत, मैंने तुम्हें किसी बुरी नीयत से नहीं छेड़ा है, ये लोग तुम्हें वहाँ जंगल में छोड़ कर भागे जाते थे इस लिये मैंने इन सभों को रोक लिया

और कहा कि अपने साथी को खोज कर अपने साथ लिये जाओ। अब तुम बेखौफ हो कर अपने दोस्तों के साथ अपनी प्यारी नागर के पास चले जाओ और मुझसे बिल्कुल मत डरो।

मुसाफिर की बातों से बाबू साहब को कुछ ढाढ़स हुई। वह सम्हल कर उठ खड़े हुए और मुसाफिर से कुछ कहा ही चाहते थे कि पास की दूसरी झाड़ी में से एक दूसरा आदमी निकल कर झपटता हुआ इन सभों के सामने आ पहुँचा और मुसाफिर की तरफ देख के बोला, "तुम क्यों इस बेचारे सूधे और डरपोक आदमी को तंग कर रहे हो, नहीं जानते कि तुम्हारा गुरु चन्द्रशेखर इसी जगह छिपा हुआ तुम्हारी शैतानी का तमाशा देख रहा है!"

इस आदमी की सूरत शक्ल का अन्दाजा नहीं मिल सकता था क्योंकि इसका तमाम बदन स्याह कपड़े से छिपा हुआ था और चेहरे पर भी स्याह नकाब पड़ी हुई थी।

मुसाफिर उसकी बात सुन कर बड़े गौर में पड़ गया और आश्चर्य के साथ उसकी तरफ देखने लगा।

मुसाफिर०। तुम कौन हो! पहिले अपना परिचय दो तब मैं तुमसे कुछ बात करूँ।

नया०। तुम्हारा मुँह इस योग्य नहीं है कि मुझसे बात करो, और परिचय के लिये यही काफी है कि मेरा नाम चन्द्रशेखर है। लेकिन अगर इससे भी कुछ विशेष जानने की इच्छा हो तो मैं और भी कुछ कहने के लिये तैयार हूँ। आह! वह धोखा देने वाली चांदनी रात! बात की बात में चन्द्रमा बादलों में छिप गया और अन्धकार हो जाने के कारण तरह तरह की भयानक सूरतें दिखाई देने लगीं! उसी समय पहिले एक स्याह रंग का ऊँट दिखाई दिया जिसके सिर पर लम्बे लम्बे सींघ बिजली की तरह चमक रहे थे.....

मुसाफिर०। (डर के मारे काँपता और पीछे की तरफ हटता हुआ) बस बस बस! मैं समझ गया कि तुम कौन हो!!

चन्द्रशेखर०। उसके बाद एक सफेद रंग का हाथी दिखाई दिया जिसके ऊपर नागर और मनोरमा हाथ में मशाल लिये चढ़ी हुई थीं और जोर जोर से

श्यामलाल को पुकार रही थीं क्योंकि वे चाहती थीं कि किसी तरह खून से लिखी हुई किताब उनके हाथ लगे।

मुसाफिर०। (हाथ जोड़ कर) मैं कह चुका और फिर भी कहता हूँ कि बस करो, माफ करो, दया करो, मैं तुम्हें पहिचान गया, अगर तुम्हें कुछ कहना ही हो तो किनारे चल कर कहो जिसमें कोई तीसरा न सुनने पावे।

चन्द्रशेखर०। नहीं नहीं, मैं इसी जगह सब के सामने ही कहूँगा क्योंकि इन बाबू साहब का इस मामले से बहुत ही घना सम्बन्ध है और इनके साथी लोग भी इसी जगह आकर इकट्ठे हो गये हैं और आश्चर्य भरी निगाहों से हम दोनों का तमाशा देख रहे हैं। हाँ तो मैं क्या कह रहा था? अच्छा, अब याद आया। उसी अन्धेरी रात में एक बिल्ली भी आ पहुँची जो अपने मुँह में लम्बी गर्दन वाला स्याह रंग का ऊंट दबाये हुए थी और ऊंट के माथे पर लिखा हुआ था...

"सर्वगुण सम्पन्न चांचला सेठ !!"

"बस बस !!! कहता हुआ मुसाफिर पीछे की तरफ हटा और कांपता हुआ जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

नये आये हुए व्यक्ति तथा मुसाफिर की बातचीत से सभों को आश्चर्य तो हुआ ही था परन्तु मुसाफिर की अन्तिम अवस्था देख कर सभों को बड़ा ही विस्मय और आनन्द भी हुआ। इसके बाद मुसाफिर खौफ से बेहोश हो गया और नये आदमी अर्थात् चन्द्रशेखर ने बाबू साहब तथा उनके साथियों को बहुत जल्द वहाँ से चले जाने के लिये कहा। वे लोग इस तरह वहाँ से भागे जैसे बाज के झपेटे से बची हुई चिड़ियाँएं भागती हैं। जब वे लोग तेजी के साथ चल कर घने महल्ले में पहुँचे तब उन लोगों का जी ठिकाने हुआ और उन्होंने समझा कि जान बची।

# दूसरा बयान

पाठक महाशय! अब हम कुछ हाल जमानिया का लिखना मुनासिब समझते हैं और उस समय का हाल लिखते हैं जब राजा गोपालसिंह की कम्बख्ती का जमाना शुरू हो चुका था और जमानिया में तरह तरह की विचित्र घटनायें हो रही थीं।

जमानिया तथा दारोगा और जयपाल वगैरह के सम्बन्ध की बातें जो चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखी जा चुकी हैं उन्हें हम इस ग्रन्थ में बिना कारण लिखना उचित नहीं समझते, उनके अतिरिक्त और जो कुछ बातें हुई हैं उन्हें ही लिखने की इच्छा है, हाँ यदि मजबूरी से कोई जरूरत आ ही पड़ेगी तो बेशक पिछली बातें संक्षेप के साथ दोहराई जायंगी और राजा गोपालसिंह की शादी के पहिले का कुछ हाल लिखा जायगा। इसका कारण यही है कि यह भूतनाथ चन्द्रकान्ता सन्तति का परिशिष्ट भाग समझा जाता है।

अपने संगी साथियों को साथ लिये हुए बाबू साहब जो भागे तो सीधे अपने घर की तरफ नहीं गये बल्कि नागर रंडी के मकान पर चले गये क्योंकि बनिस्बत अपने घर के उन्हें उसी का घर प्यारा था और उसी को वे अपना हमदर्द और दोस्त समझते थे। जिस समय वे उस जगह पहुँचे तो सुना कि नागर अभी तक बैठी हुई उनका इन्तजार कर रही है। बाबू साहब को देखते ही नागर उठ खड़ी हुई और बड़ी खातिरदारी के साथ उनका हाथ पकड़ कर अपने पास एक ऊँची गद्दी पर बैठाया और मामूल के खिलाफ आज देर हो जाने का सबब पूछा। मगर बाबू साहब ऐसे बदहवास हो रहे थे कि उनके मुँह से कोई बात न निकलती थी। उनकी ऐसी अवस्था देख कर नागर को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और उसने लाचार होकर उनके साथियों से उनकी परेशानी और बदहवासी का कारण पूछा।

बाबू साहब कौन हैं और उनका नाम क्या है इसका पता अभी तक नहीं मालूम हुआ, खैर इसके जानने की कुछ विशेष आवश्यकता भी नहीं जान पड़ती इसलिये अभी उन्हें बाबू साहब के नाम ही से सम्बोधन करने दीजिये, आगे चल कर देखा जायगा।

बाबू साहब ने अपनी जुबान से अपनी परेशानी का हाल यद्यपि नागर से कुछ भी नहीं कहा मगर उनके साथियों की जुबानी उसका कुछ हाल नागर को मालूम हो गया और तब नागर ने दिलासा देते हुए बाबू साहब से कहा, "यह तो एक मामूली घटना थी!"

बाबू साहब०। जी हाँ मामूली घटना थी! अगर उस समय आप वहाँ होत तो मालूम हो जाता कि मामूली घटना कैसी होती है!

नागर०। ( मुस्कुराती हुई ) खैर किसी तरह मुँह से बोले तो सही।

बाबू साहब। पहिले यह बताओ कि नीचे का दर्वाजा तो बन्द है ? कहीं कोई आ न जाय और हम लोगों की बातें सुन न ले !

नागर०। आप जानते ही हैं कि आपके आने के साथ ही लौंडियाँ फाटक बन्द कर दिया करती हैं। हमारे यहाँ सिवाय आपके दूसरे किसी ऐसे मर्दार का आना जाना तो है ही नहीं कि जिससे मुझे किसी तरह का लगाव या मुहब्बत हो, हाँ बाजार में बैठा करती हूँ इसलिये कभी कभी कोई मारा पीटा आ ही जाया करता है, सो भी जब आप आते हैं तो उसी वक्त फाटक बन्द कर दिया जाता है।

बाबू साहब इसका कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि एक आदमी यह कहता हुआ कमरे के अन्दर दाखिल हुआ, "झूठ भी बोलना तो मुँह पर !"

इस आदमी की सूरत देखते ही बाबू साहब चौंक पड़े और घबराहट के साथ बोल उठे, "यही तो है !"

यह वही आदमी था जिसे बाबू साहब और उनके संगी साथियों ने कपाल-मोचन के कूएं पर देखा था और जिसके डर से अभी तक बाबू साहब की जान पर सदमा हो रहा था।

बाबू साहब की ऐसी हालत देख कर उस आदमी ने जो अभी अभी आया था कहा "डरो मत मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ बल्कि दोस्त हूँ !" इतना कह कर उस आदमी ने अपने हाथ की गठरी एक किनारे रख दी और मामूली कपड़े उतार कर इस तरह खूंटियों पर सजा दिये कि जैसे यह उसी का घर हो या इस घर पर उसका बहुत बड़ा अधिकार हो और नित्य ही वह यहाँ आता जाता हो।

यह आदमी असल में भूतनाथ ( गदाधरसिंह ) था जिससे नागर से गहरी दोस्ती थी मगर बाबू साहब को इसकी कुछ भी खबर न थी और न कभी ऐसा इत्तफाक ही हुआ था कि इस जगह पर इन दोनों का सामना हुआ हो। हाँ बाबू साहब ने गदाधरसिंह का नाम जरूर सुना था और यह भी सुना था कि वह मामूली आदमी नहीं है।

नागर ने जिस खातिरदारी और आवोभगत के साथ भूतनाथ का सम्मान किया और प्रेम दिखाया उससे बाबू साहब को मालूम हो गया कि नागर बनिस्बत मेरे इस आदमी को बहुत प्यार करती है।

खूँटियों पर कपड़े रख कर भूतनाथ बाबू साहब के पास बैठ गया और बोला, "भला मैंने आपको क्या तकलीफ दी है जो आप इतना डरते हैं ? एक ऐयाश और खुशदिल आदमी को इतना डरपोक न होना चाहिये। आप मुझे शायद पहिचानते नहीं है, मेरा नाम गदाधरसिंह है, आपने अगर मुझे देखा नहीं है तो नाम तो जरूर ही सुना होगा।"

बाबू साहब०। (आश्चर्य और डर के साथ) हाँ मैंने आपका नाम सुना है और अच्छी तरह सुना है।

नागर०। (मुस्कुराती हुई बाबू साहब से) आपके तो अब ये गहरे रिश्तेदार हो गये हैं फिर भी आप इन्हें न पहिचानेंगे !

बाबू साहब०। (कुछ शर्माते हुए) हाँ हाँ मैं बखूबी जानता हूँ मगर पहिचानता नहीं था, अफसोस की बात है कि इतने दिनों तक इनसे कभी मुलाकात नहीं हुई।

नागर०। (बाबू साहब से) आपसे इनसे कुछ नातेदारी भी तो है ?

बाबू साहब०। हाँ, मेरी मौसेरी बहिन रामदेई * इनके साथ ब्याही गई है। आज अगर मुझे इस बात की खबर होती कि आप ही मेरे बहनोई हैं तो मैं उस कूएं पर इतना परेशान न होता बल्कि खुशी के साथ मुलाकात होती। (भूतनाथ से) हाँ यह तो बताइये कि वह चन्द्रशेखर कौन था जिसके खौफ से आप परेशान हो गये थे ?

गदाधरसिंह०। (कुछ डर और संकोचके साथ) वह मेरा बहुत पुराना दुश्मन है। मेरे हाथ से वह कई दफे जक उठा चुका और नीचा देख चुका है अब वह मुझसे बदला लेने की धुन में लगा हुआ है। आज वह बड़े बेमौके मिल गया था क्योंकि मैं बेफिक्र था और वह हर तरह का सामान करके मेरी खोज में निकला था।

बाबू साहब०। आखिर हम लोगों के चले आने बाद क्या हुआ ? आपसे और उससे कैसी निपटी ?

गदाधर०। मैं इस मौके को बचा गया और लपता हुआ धोखा दे कर

* रामदेई—नानक की माँ, जिसका जिक्र चन्द्रकान्ता सन्तति में आ चुका है।

निकल भागा। खैर फिर कभी देखा जायगा, अबकी दफे उस साले को ऐसा छकाऊँगा कि वह भी याद करेगा!

चन्द्रशेखर का नाम सुन कर नागर चौंक पड़ी और उसके चेहरे की रंगत बदल गई। मालूम होता था कि वह भूतनाथ से कुछ पूछने के लिये उतावली हो रही है मगर बाबू साहब के खयाल से चुप है और चाहती है कि किसी तरह बाबू साहब यहाँ से चले जायँ तो बात करे।

बाबू साहब०। (भूतनाथ से) ठीक है, वह बेशक आपका दुश्मन है, आज आठ दस दिन हुए होंगे कि वह मुझसे बरना * के किनारे एकान्त में मिला था। उस समय उसके साथ तीन चार औरतें भी थीं जिनमें से एक का नाम विमला था।

गदाधर०। (चौंक कर) विमला!

बाबू साहब०। हाँ विमला! और एक मर्द भी उसके साथ था जिसे उसने एक दफे प्रभाकरसिंह के नाम से सम्बोधन किया था।

गदाधर०। (घबड़ा कर) क्या तुम उस समय उसके सामने मौजूद थे?

बाबू साहब०। जी नहीं, मैं उन सभों को वहाँ आते देख एक झाड़ी में छिप गया था।

गदाधर०। तब तो तुमने और भी बहुत सी बातें सुनी होंगी?

बाबू साहब०। नहीं, मैं कुछ विशेष बातें न सुन सका, हाँ इतना जरूर मालूम हुआ कि वह मनोरमा से और जमानिया के राजा से मिलने का उद्योग कर रहा है।

गदाधर०। (कुछ सोच कर और बाबू साहब की तरफ खिसक कर) बेशक आपने और भी बहुत सी बातें सुनी होंगी और यह भी मालूम किया होगा कि वे औरतें वास्तव में कौन थीं।

बाबू साहब०। सो मैं कुछ भी न जान सका कि वे औरतें कौन थीं और वहाँ पहुँचने से उन लोगों का क्या मतलब था।

गदाधरसिंह०। खैर मैं थोड़ी देर के लिये आपकी बातें मान लेता हूँ।

---

* काशी के उत्तर बहती हुई नदी का नाम बरना है।

नागर० । ( बाबू साहब से ) मगर मैंने तो सुना था कि आपका और उन लोगों का सामना हो गया था और आप उसी समय उनके साथ कहीं चले भी गये थे ।

बाबू साहब० । ( घबड़ाने से होकर ) नहीं नहीं, मेरा उनका सामना बिल्कुल नहीं हुआ बल्कि मैं उन लोगों को उसी जगह छोड़ कर छिपता हुआ किसी तरह निकल भागा और अपने घर चला आया क्योंकि मुझे उन लोगों से या उन की बातों से कोई सम्बन्ध नहीं था, फिर मुझे जरूरत ही क्या थी कि छिप कर उन लोगों की बात सुनता या उन लोगों के साथ कहीं जाता ?

नागर० । शायद ऐसा ही हो मगर जिसने मुझे यह खबर दी थी उसे झूठ बोलने की आदत नहीं है ।

बाबू साहब० । तो उसने धोखा खाया होगा अथवा किसी दूसरे को उस मौके पर देखा होगा ।

नागर ने इस मौके पर जो कुछ बाबू साहब से कहा वह केवल धोखा देने की नीयत से था और वह चाहती थी कि बातों के हेर फेर में डाल कर बाबू साहब से कुछ और भी पता लगा ले, अस्तु जो कुछ हो मगर इस खबर ने भूतनाथ को बहुत ही परेशान कर दिया और वह सर नीचा कर तरह तरह की बातें सोचने लगा । उसे इस बात का निश्चय हो गया था कि बाबू साहब ने जो कुछ कहा है यह बहुत कम है अथवा जान बूझ कर वे असल बातों को छिपाते हैं ।

कुछ देर तक सिर झुका कर सोचते सोचते भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया और उसने कुछ तीखी आवाज में बाबू साहब से कहा :—

गदाधर० । सुनिये रामलालजी * इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप मेरे नातेदार हैं और इस ख्याल से मुझे आपका मुलाहिजा करना चाहिये मगर ऐसी अवस्था में जब कि आप मुझसे झूठ बोलते और मुझे धोखा देने की कोशिश करते हैं अथवा यों कह सकते हैं कि आप मेरे दुश्मन से मिलकर उसके मददगार बनते हैं तो मैं आपका मुलाहजा कुछ भी न करूंगा । हाँ यदि आप मुझसे सब कुछ साफ साफ कह देंगे तो फिर मैं भी.....

* बाबू साहब का असली नाम रामलाल था ।

रामलाल० । ( अर्थात् बाबू साहब ) ठीक है, अब मुझे मालूम हो गया कि उन औरतों से और प्रभाकरसिंह से आप डरते हैं, यदि यह बात सच है तो डरपोक और कमजोर होने पर भी मैं आप से डरना पसन्द नहीं करता...

रामलाल ने अपनी बात पूरी नहीं की थी कि सीढ़ियों पर से जिसका दर्वाजा इन लोगों के सामने ही था तेजी के साथ एक नकाबपोश आया और एक लिफाफा भूतनाथ के सामने फेंक कर यह कहता हुआ वहाँ से निकल गया—बेशक डरने का कोई जरूरत नहीं है और खास करके ऐसे आदमी से जो पूरा नमकहराम और बेइमान है तथा जिसने अपने मालिक और दोस्त दयाराम को अपने हाथ से जख्मी किया था, मगर ईश्वर की कृपा थी कि वह बेचारा बच गया और जमानिया में बैठा हुआ भूतनाथ के इस्तकबाल की कोशिश कर रहा है।"

इस आवाज ने भूतनाथ को एक दम परेशान कर दिया। उसने लिफाफा खोल कर चिट्ठी पढ़ने का इन्तजार न किया और खञ्जर के कब्जे पर हाथ रखता हुआ तेजी के साथ दर्वाजे पर और फिर सीढ़ियोंपर जा पहुँचा मगर किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी। वह धड़धड़ाता हुआ सीढ़ियों से नीचे उतर आया और फाटक के बाहर निकलने पर उस नकाबपोश को कुछ दूर पर जाते हुए देखा। भूतनाथ ने उसका पीछा किया मगर वह गलियों में घूम फिर ऐसा गायब हुआ कि भूतनाथ को उसकी गन्ध तक न मिली और अन्त में वह लाचार हो कर नागर के मकान में लौट आया। आने पर उसने देखा कि बाबू साहब वहाँ नहीं हैं कहीं चले गये। तब उसने उस लिफाफे की खोज की जो नकाबपोश उसके सामने फेंक गया था और देखना चाहा कि उसमें क्या लिखा हुआ है।

लिफाफा वहाँ मौजूद न देख कर भूतनाथ ने नागर से पूछा, "क्या वह लिफाफा तुम्हारे पास है?"

नागर० । हाँ, तुमको उस नकाबपोश के पीछे जाते देख मैं भी तुम्हारे पीछे पीछे सीढ़ियाँ उतार कर फाटक तक चली गई थी, जब तुम दूर निकल गये तब मैं वापस लौट आई और देखा कि बाबू साहब उस लिफाफे को खोल कर पढ़ रहे हैं। मुझको उसकी ऐसी नालायकी पर क्रोध चढ़ आया

और मैंने उसके हाथ से वह चीठी छीन कर बहुत कुछ बुरा भला कहा जिस पर वह नाराज होकर यहाँ से चला गया।

भूतनाथ०। यह बहुत ही बुरा हुआ कि उसने वह चीठी पढ़ ली। फिर तुमने उसे जाने क्यों दिया? मैं उसे बिना ठीक किये कभी न रहता और बता देता कि इस तरह की बदमाशी का क्या नतीजा होता है।

नागर०। खैर अगर भाग भी गया तो क्या हर्ज है, जब तुम उसे सजा देने पर तैयार ही हो जाओगे तो क्या वह तुम्हारे हाथ न आवेगा?

भूत०। खैर वह चीठी कहाँ है जरा दिखाओ तो सही।

नागर०। (खुला हुआ लिफाफा भूतनाथ के हाथ में देकर) लो यह चीठी है।

भूतनाथ०। (चीठी पढ़ कर) क्या तुमने भी यह चीठी पढ़ी है?

नागर०। नहीं मगर यह सुनने की इच्छा है कि इसमें क्या लिखा है।

भूत०। (पुनः उस चीठी को अच्छी तरह पढ़ के और लिफाफे को गौर से देख के) अन्दाज से मालूम होता है कि इस लिफाफे में केवल यही एक चीठी नहीं बल्कि और भी कोई कागज था।

नागर०। शायद ऐसा ही हो और बाबू साहब ने कोई कागज निकाल लिया हो तो मैं नहीं कह सकती।

भूत०। खैर देखा जायगा, मेरा द्रोही मुझसे बच के कहाँ जा सकता है! आज मैं जिस नीयत से तुम्हारे पास आया था वह न हो सका! अच्छा अब मैं जाता हूँ।

नागर०। नहीं नहीं, मैं तुम्हें इस समय जाने न दूँगी, मुझे बहुत सी बातें पूछनी और कहनी हैं, मुझे इस बात का दिन रात खुटका बना रहता है कि कहीं तुम अपने दुश्मनों के फेर में न पड़ जाओ क्योंकि केवल तुम्हारे ही तक मेरी जिन्दगी है, मुझे सिवाय तुम्हारे इस दुनिया में किसी का भी भरोसा नहीं है और तुम्हारे दुश्मनों की गिनती दिन ब दिन बढ़ती ही जाती है।

भूत०। हाँ ठीक है (कुछ सोच कर) मगर इस समय मैं यहाँ नहीं रह सकता और.....

नागर०। कल मनोरमाजी भी तो तुमसे मिलने के लिए यहाँ आने वाली हैं।

भूत० । खैर देखा जायगा, बन पड़ेगा तो कल मैं आ जाऊँगा।

इतना कह कर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और सीढ़ियों के नीचे उतर कर देखते देखते नजरों से गायब हो गया।

भूतनाथ के चले जाने बाद नागर आधे घण्टे तक चुपचाप बैठी रही, इसके बाद उठ कर अपनी लौंडियों को बुलाया और कुछ बातचीत करने बाद एक लौंडी को साथ लिये हुए वह सीढ़ियों के नीचे उतरी।

चन्द्रकान्ता सन्तति में नागर के जिस मकान का हाल हम लिख आये हैं वह मकान इस समय नागर के कब्जे में नहीं हैं क्योंकि अभी तक जमानिया राज्य की वह हालत नहीं हुई थी और न उस इजत को अभी नागर पहुँची थी। इस समय नागर रण्डियों की सी अवस्था में है और उसके कब्जेमें एक मामूली छोटा सा मकान है फिर भी मकान सुन्दर और मजबूत है तथा उसके सामने एक छोटा सा नजरबाग भी है। यद्यपि अभी तक कमउम्र नागर की हैसियत बड़ी नहीं है फिर भी उसकी चालाकियों का जाल अच्छी तरह फैल चुका है जिसका एक सिरा जमानिया राजधानी में भी जा पहुँचा है क्योंकि उस मनोरमा से इसकी दोस्ती अच्छी तरह हो चुकी है जिसने जमानिया की खराबी में सबसे बड़ा हिस्सा लिया हुआ था।

नागर सीढ़ियों के नीचे उतर कर नजरबाग में होती हुई सदर फाटक पर पहुँची और उसे बन्द करके एक मजबूत ताला उसकी कुंडी में लगा दिया। इसके बाद लौट कर वह मकान की सीढ़ियों पर चढ़ने वाला दर्वाजा अच्छी तरह बन्द करके अपने कमरे में चली आई।

लौंडी को कमरे का फर्श साफ करने की आज्ञा दे कर नागर ऊपर छत पर चढ़ गई जहाँ एक बँगला था और इस समय उसके बाहर ताला लगा हुआ था जिसे खोल कर नागर बँगले के अन्दर चली गई।

यह बँगला बहुत खुलासा और मामूली ढंग पर सजा हुआ था। जमीन पर साफ सुथरा फर्श बिछा हुआ था और एक तरफ सुन्दर मसहरी भी बिछी हुई थी तथा छोटे बड़े कई तकिये भी जमीन पर पड़े हुए थे। यह कमरा खाली न था इसमें इस समय मनोरमा बैठी हुई थी और जमानिया राजधानी का बेईमान

दारोगा ( बाबाजी ) भी उसके साथ था। नागर भी उन दोनों के पास जाकर बैठ गई।

# तीसरा बयान

अब हम अपने पाठकों को पुनः उस घाटी में ले चलते हैं जिसमें कला और बिमला रहती थीं और जिसमें भूतनाथ ने पहुँच कर बड़ी ही संगदिली का काम किया था अर्थात् कला बिमला और इन्दुमति के साथ कई लौंडियों को भी कूएँ में ढकेल कर अपनी जिन्दगी का आईना गंदला किया था।

भूतनाथ यद्यपि अपने शागिर्द रामदीन की मदद से उस घाटी में पहुँच गया था और अपनी इच्छानुसार उसने सब कुछ करके अपने दिल का गुबार निकाल लिया था मगर घाटी के बीच वाले उस बँगले के सिवाय वह वहाँ का और कोई स्थान नहीं देख सका जिसमें कला और बिमला रहती थीं या जहाँ जख्मी इन्दुमति का इलाज किया गया था, और न वहाँ का कोई भेद ही भूतनाथ को मालूम हुआ। वह केवल अपने दुश्मनों को मार कर उसघाटी के बाहर निकल आया और फिर कभी उसके अन्दर नहीं गया। मगर प्रभाकरसिंह को उस घाटी का बहुत ज्यादा हाल मालूम हो गया था। कुछ तो इन्होंने बीच वाले बँगले की तलाशी लेते समय कई तरह के कागजों पुर्जों और किताबों को देखकर मालूम कर लिया था और कुछ कला और बिमला ने बताया था और बाकी का भेद इन्द्रदेव ने बता कर प्रभाकरसिंह को खूब पक्का कर दिया था।

आज प्रातःकाल सूर्योदय के समय हम उस घाटी में प्रभाकरसिंह को एक पत्थर की चट्टान पर बैठे हुए देखते हैं। उनके बगल में ऐयारी का बटुआ लटक रहा है और हाथ में एक छोटी सी किताब है जिसे वे बड़े गौर से देख रहे हैं। यह किताब हाथ की लिखी हुई है और इसके अक्षर बहुत ही बारीक हैं तथा इसमें कई तरह के नक्शे भी दिखाई दे रहे हैं जिन्हें वे बार बार उलट कर देखते हैं और फिर कोई दूसरा मजमून पढ़ने लगते हैं।

इस काम में उन्हें कई घण्टे बीत गये। जब धूप की तेजी ने उन्हें परेशान कर दिया तब वे वहाँ से उठ खड़े हुए तथा बड़े गौर से दक्खिन और पश्चिम कोण की तरफ देखने लगे और कुछ देर तक देखने के बाद उसी तरफ चल

निकले। नीचे उतर कर मैदान खतम करने के बाद जब दक्खिन और पश्चिम कोण वाली पहाड़ी के नीचे पहुँचे तब इधर उधर बड़े गौर से देख कर उन्होंने एक पगडण्डी का पता लगाया और उसी सीध पर चलते हुए पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। करीब करीब पचास या साठ कदम चले जाने के बाद उन्हें एक छोटी सी गुफा मिली और वे लापरवाही के साथ उस गुफा के अन्दर चले गये।

यह गुफा बहुत बड़ी न थी और इसमें केवल दो आदमी एक साथ मिल कर चल सकते थे फिर भी ऊँचाई इसकी ऐसी कम न थी कि इसके अन्दर जाने वाले का सिर छत के साथ टकराये, अस्तु प्रभाकरसिंह धीरे धीरे टटोलते हुए इसके अन्दर जाने लगे। जब लगभग दो सौ कदम के दूर चले गये तब उन्हें एक छोटी सी कोठड़ी मिली जिसके अन्दर जाने के लिये दरवाजे की किस्म से किसी तरह की रुकावट न थी सिर्फ एक चौकठ लाँघने ही के सबब से कह सकते हैं कि वे उस कोठड़ी के अन्दर जा पहुँचे। अन्धकार के सबब से प्रभाकरसिंह को कुछ दिखाई नहीं देता था इसलिये वे बैठ कर वहाँ की जमीन हाथ से टटोलने लगे मानो किसी खास चीज को ढूंढ़ रहे हैं।

एक छोटा सा चबूतरा कोठड़ी के बीचोबीच में मिला जो दो हाथ चौड़ा और इसी कदर लम्बा था। उसके बीच में किसी तरह का खटका था जिसे प्रभाकरसिंह ने दबाया और साथ ही इसके चबूतरे के ऊपर वाला हिस्सा किवाड़ के पल्ले की तरह खुल गया मानो वह पत्थर का नहीं बल्कि किसी धातु या लकड़ी का बना हुआ था।

अब प्रभाकरसिंह ने अपने बटुए में से मोमबत्ती निकाली और इसके बाद चकमक पत्थर निकाल कर रोशनी की। प्रभाकरसिंह ने देखा कि ऊपर का हिस्सा खुल जाने से उस चबूतरे के अन्दर नीचे उतरने के लिये सीढ़ियाँ दिखाई देती हैं। मोमबत्ती की रोशनी में प्रभाकरसिंह ने उस कोठड़ी को बड़े गौर से देखा वहाँ चारो तरफ दीवार में चार आले (ताकचे) थे जिनमें से सिर्फ सामने वाले एक आले में बनावटी गुलाब का पेड़ बना हुआ था जिसमें बेहिसाब कलियाँ लगी हुई थीं और सिर्फ चार फूल खिले हुए थे। बाकी के तीनों आले खाली थे।

प्रभाकरसिंह ने उस गुलाब के पेड़ और फूलों को बड़े गौर से देखा और यह जानने के लिये कि वह पेड़ किस चीज का बना हुआ है उसे हाथ से अच्छी

ह टटोला। मालूम हुआ कि वह पत्थर या किसी और मजबूत चीज का बना आ है।

प्रभाकरसिंह उन खिले हुए चार फूलों को देख कर बहुत ही खुश हुए और त तरह धीरे धीरे बुदबुदाने लगे जैसे कोई अपने मन से दिल खोल कर बातें रता हो उन्होंने ताज्जुब के साथ कहा, "हैं! यह चार फूल कैसे! खैर मेरा रिश्रम तो सुफल हुआ चाहता है। इन्द्रदेवजी का खयाल ठीक निकला कि वे नों औरतें (जमना सरस्वती और इन्दु) जरूर उस तिलिस्म के अन्दर चली ई होंगी। अब इन खिले फूलों को देख कर मुझे भी विश्वास होता है कि उन नों से इस तिलिस्म में मुलाकात होगी और मैं उन्हें खोज निकालूँगा, मगर न्द्रदेवजी ने कहा था कि जितने आदमी इस तिलिस्म के अन्दर जायंगे उस ह के उतने ही फूल खिले हुए दिखाई देंगे और जब तक वे सब तिलिस्म के ाहर न आयेंगे तब तक वे फूल खिले ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त उस कागज भी ऐसा ही लिखा है मगर अब जो मैं देखता हूँ तो तीन की जगह चार फूल ले हुए हैं, अस्तु यह चौथा आदमी इस तिलिस्म में कौन जा पहुँचा! इस ात का तो मुझे विश्वास नहीं होता कि किसी लौंडी को भी वे तीनों अपने साथ ा गई हों क्योंकि ऐसा करने के लिए इन्द्रदेवजी ने उन्हें सख्त मना ही कर दी ी। सम्भव है कि किसी विशेष कारण से वे किसी लौंडी को अपने साथ ले भी ई हों, खैर जो होगा देखा जायगा मगर यदि ऐसा किया है तो यह काम उन्होंने अच्छा नहीं किया।"

इसी तरह की बहुत सी बातें वे देर तक सोचते रहे, साथ ही इसके इस बात र भी गौर करते रहे कि उन तीनों को तिलिस्म के अन्दर जाने की जरूरत ही या पड़ी!

प्रभाकरसिंह बेखटके उन सीढ़ियों के नीचे उतर गये। नीचे उतर जाने के ाद उन्हें पुनः एक सुरङ्ग मिली जिसमें तीस या चालीस हाथ से ज्यादे उन्हें ाना न पड़ा। जब वे उस सुरङ्ग को खतम कर चुके तब उन्हें रोशनी दिखाई दी र्थात् सुरङ्ग के बाहर निकलने पर एक छोटा सा बाग और कुछ इमारतों पर उनकी निगाह पड़ी। आसमान पर निगाह करने से खयाल हुआ कि दोपहर ढल चुकी है और अब दिन का तीसरा पहर बीत रहा है।

इस बाग में मकान बारहदरी कमरे दालान चबूतरे या इसी तरह की इमारतों के अतिरिक्त और कुछ भी न था अर्थात् फूल या फल के अच्छे दरख्त दिखाई नहीं देते थे या अगर कुछ थे भी तो केवल वे जङ्गली पेड़ जो कि वहाँ बहते हुए एक चश्मे के सबब से कदाचित् बराबर ही हरे भरे रहते थे। हाँ केले के दरख्त यहाँ बहुतायत से दिखाई दे रहे थे और उनमें फल भी बहुत लगे हुए थे।

प्रभाकरसिंह थक गये थे इस लिए कुछ आराम करने की नीयत से नहर के किनारे एक चबूतरे पर बैठ गये और वहाँ की इमारतों को बड़े गौर से देखने लगे। कुछ देर बाद उन्होंने अपने बटुए में से मेवा निकाला और उसे खाकर चश्मे का बिल्लौर की तरह साफ बहता हुआ जल पीकर सन्तोष किया।

प्रभाकरसिंह सिपाही और बहादुर आदमी थे कोई ऐयार न थे मगर आज इनके बगल में ऐयारी का बटुआ लटकता हुआ देख रहे हैं। इससे मालूम होता है कि उन्होंने समयानुकूल चलने के लिए कुछ ऐयारी जरूर सीखी है मगर इनका ओस्ताद कौन है सो अभी मालूम नहीं हुआ।

हम कह चुके हैं कि यह बाग नाममात्र का बाग था मगर इसमें इमारतों का हिस्सा बहुत ज्यादे था। बाग के बीचोबीच में एक गोल गुम्बद था जिसके चारो तरफ छोटी छोटी पाँच कोठड़ियाँ थीं और वह गुम्बद इस समय प्रभाकरसिंह की आँखों के सामने था जिसे यह बड़े गौरसे देख रहे थे। बाग के चारो तरफ चार बड़ी बड़ी बारहदरियाँ थीं और उनके ऊपर उतने ही खूबसूरत कमरे बने हुए थे जिनके दर्वाजे इस समय बन्द थे, सिर्फ पूरब तरफ वाले कमरे के दर्वाजों में से एक दर्वाजा खुला हुआ था और वह प्रभाकरसिंह को अच्छी तरह दिखाई दे रहा था।

प्रभाकरसिंह और कमरों तथा दालानों को छोड़ कर उसी बीच वाले गुम्बद को बड़े गौर से देख रहे थे जिसके चारो तरफ वाली कोठड़ियों का दर्वाजा बन्द मालूम होता था। कुछ देर बाद प्रभाकरसिंह उठे और उस गुम्बद के पास चले गये। एक कोठरी के दर्वाजे को हाथ से ढकेला तो वह खुल गया अस्तु वे कोठड़ी के अन्दर चले गये। इस कोठड़ी की जमीन सङ्गमर्मर की थी और बीच में स्याह पत्थर का एक सिंहासन था जिस पर हाथ रखते ही प्रभाकरसिंह का शरीर काँपा

और वे चक्कर खा कर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गये और उसी समय उस कोठड़ी का दर्वाजा भी बन्द हो गया।

दिन बीत गया। आधी रात का समय था जब प्रभाकरसिंह की आँख खुली अन्धेरी रात होने के कारण वे कुछ स्थिर नहीं कर सकते थे कि कहाँ पर हैं। घबराहट में उन्होंने पहिले अपने हर्बों को टटोला और फिर ऐयारी का बटुआ खोजा। ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वे सब चीजें उनके पास मौजूद थीं, इसके बाद वे विचारने लगे कि यह स्थान कैसा है तथा हमको अब क्या करना चाहिये। बहुत देर के बाद उन्हें मालूम हुआ कि वे किसी छोटे दालान में हैं और उसके सामने एक घना जङ्गल है। इस अन्धकार के समय में उनकी हिम्मत न पड़ी की उठ कर इधर उधर घूमें और किसी बात का पता लगावें अस्तु उन्होंने चुपचाप उसी दालान में पड़े रह कर रात बिता दी।

रात बीत गई और सूर्य्य भगवान् का पेशखेमा आस्मान पर अच्छी तरह तन गया। प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए और यह जानने के लिये उस दालान में घूमने और दरोदीवारों को अच्छी तरह देखने लगे कि वे क्योंकर इस स्थान में पहुँचे तथा उनके यहाँ आने का जरिआ क्या है, परन्तु इस बात का उन्हें कुछ भी पता न लगा। उस दालान के सामने जो जङ्गल था वह वास्तव में बहुत घना था और सिर्फ देखने से इस बात का पता नहीं लगता था कि वह कितना बड़ा है तथा उसके बाद किसी तरह की इमारत है या कोई पहाड़, साथ ही इसके उन्हें इस बात की भी फिक्र थी कि अगर कोई पानी का चश्मा दिखाई दे तो स्नान इत्यादि का काम चले।

जंगल में घूम कर क्या करें और किसको ढूँढ़ें इस विचार में वे बहुत देर तक सोचते और इधर उधर घूमते रह गये यहाँ तक कि सूर्य्य भगवान् ने चौथाई आसमान का सफर तै कर लिया और धूप में कुछ गर्मी मालूम होने लगी। उसी समय प्रभाकरसिंह के कान में यह आवाज आई, "हाय! बहुत ही बुरे फँसे! यह मेरे कर्मों का फल है! ईश्वर न करे किसी....."

बस इसके आगे की आवाज इतनी बारीक हो गई थी कि प्रभाकरसिंह उसे अच्छी तरह समझ न सके।

इस आवाज ने प्रभाकरसिंह को परेशान कर दिया और खुटके में डाल

दिया। आवाज जंगल के बीच में से आई थी अतएव वे उसी आवाज की सीध पर चल पड़े और उस घने जंगल में ढूँढ़ने लगे कि वह दुखिया कौन और कहाँ है जिसके मुँह से ऐसी आवाज आई है।

प्रभाकरसिंह को ज्यादा ढूँढ़ना न पड़ा। उस जंगल में थोड़ी ही दूर जाने पर उन्हें पानी का एक सुन्दर चश्मा दिखाई दिया और उसी चश्मे के किनारे उन्होंने एक औरत को देखा जो बदहवास और परेशान जमीन पर पड़ी हुई थी और न मालूम किस तरह की तकलीफ से करवटें बदल रही थी।

प्रभाकरसिंह बड़े गौर से उस औरत को देखने लगे क्योंकि वह कुछ जानी पहिचानी सी मालूम पड़ती थी। उस औरत ने प्रभाकरसिंह को हाथ जोड़ा और कहा, "मेरी जान बचाइये, मैं बेहतर इस आफत में फँस गई हूँ। मुझे उम्मीद थी कि अब कुछ ही देरमें इस दुनिया से कूच कर जाऊँगी, परन्तु आपको देखने से विश्वास हो गया कि अभी कुछ जिन्दगी बाकी है। आप बड़े गौर से मुझे देख रहे हैं। मालूम होता है कि आपने मुझे पहिचाना नहीं। मैं आपकी तावेदार लौंडी हरदेई हूँ, आपकी स्त्री और सालियों की बहुत दिनों तक खिदमत कर चुकी हूँ।

प्रभाकर०। हाँ अब मैंने तुझे पहिचाना, कला और विमला के साथ मैंने तुझे देखा था मगर सामना बहुत कम हुआ था इसलिये पहिचानने में जरा कठिनता हुई, अच्छा यह तो बताओ कि वे तीनों कहाँ हैं?

हरदेई०। मैं उन्हीं की सताई होने पर भी उन्हीं की खोज में तो यहाँ आई थी, एक दफे वे तीनों दिखाई देकर पुनः गायब हो गईं...आह! अब मुझसे बोला नहीं जाता.....

प्रभाकर०। तुझे किस बात की तकलीफ है?

हरदेई०। मैं भूख से परेशान हो रही हूँ। आज कई दिन से मुझे कुछ भी खाने को नहीं मिला...बस...अब प्राण निकला ही.....

प्रभाकर०। तुझे यहाँ कै दिन हुए?

हरदेई०। आज सात.....

बस इससे ज्यादे हरदेई कुछ भी न बोल सकी अस्तु प्रभाकरसिंह ने अपने बटुये में से कुछ मेवा निकाल कर खाने के लिये दिया और हाथ का सहारा

देकर उसे बैठाया। मेवा देख कर हरदेई खुश हो गई, भोजन किया और फिर नहर का जल पीकर सम्हल बैठी और बोली, "अब मेरा जी ठिकाने हुआ, अब मैं बखूबी बातचीत कर सकती हूँ।"

प्रभाकर०। ( उसके पास बैठ कर ) अच्छा अब बता कि तुझे यहाँ आये कितने दिन हुये और तूने कला विमला तथा इन्दु को कहाँ और किस अवस्था में देखा तथा क्योंकिर उनका साथ छूटा। क्या तू भी उन तीनों के साथ ही इस तिलिस्म में आई थी ?

हरदेई०। नहीं मैं तो बेबस और बिना कसूर के मारी गई, मैंने आज तक आपने मालिकों के साथ कोई बुराई नहीं की थी मगर न मालूम उन्होंने क्यों मुझे इस तरह की सजा दी ! यद्यपि उन्होंने अपना धर्म्म बिगाड़ दिया था और जिस तरह सती साध्वी को चलना चाहिये उस तरह नहीं चलती थीं, अपनी सुफेद और साफ चादर में बदनामी के कई धब्बे लगा चुकी थीं, मगर मैंने आपसे भी इस बातकी कभी शिकायत नहीं की और उनका भेद किसी तरह प्रगट होने न दिया फिर भी अन्त में मैं ही कसूरवार समझी गई और मुझी को प्राणदण्ड दिया गया, परन्तु ईश्वर की कृपा से मैं जीती बच गई। अब मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ ? और जो कुछ कहने की बातें हैं वह आपसे.....

प्रभाकर०। ( कुछ घबड़ा कर ) मेरी समझ में नहीं आता कि तू क्या कह रही है ? क्या कला और विमला के सतीत्व में धब्बा लग चुका है ? और क्या उन दोनों ने अपनी चालचलन खराब कर डाली है ?

हरदेई०। बेशक ऐसी ही बात है। आज से नहीं बल्कि आपसे मुलाकात होने के पहिले ही से वे दोनों बिगड़ी हुई हैं और दो आदमियों से अनुचित प्रेम करके अपने धर्म को बिगाड़ चुकी हैं बल्कि बड़े अफसोस की बात है कि इन्दु को भी उन्होंने अपनी पंक्ति में मिला लिया है। ईश्वर ने इसी पाप का फल उन्हें दिया है, मेरी तरह वे भी इस तिलिस्म में कैद कर दी गई हैं और आश्चर्य्य नहीं कि वे भी इसी तरह की तकलीफें उठा रही हों। बस इससे ज्यादे और मैं कुछ भी न कहूँगी क्योंकि.....

प्रभा०। नहीं नहीं, रुक मत, जो कुछ तू जानती है बेशक कहे जा मैं खुशी से सुनने के लिए तैयार हूँ।

हरदेई०। अगर मैं ऐसा करूँगी तो फिर मेरी क्या दशा होगी यही मैं सोच रही हूँ!

हरदेई की बातों ने प्रभाकरसिंह के दिल में एक तरह का दर्द पैदा कर दिया। 'कला और बिमला बदकारा हैं और उन्होंने इन्दु को भी खराब कर दिया!" यह सुनकर उनका क्या हाल हुआ होगा सो वे ही जानते होंगे। नेक और प्रतिव्रत इन्दु को कोई बदनाम करे यह बात प्रभाकरसिंह के दिल में नहीं जम सकती थी मगर कला और बिमला पर उन्हें पहले भी एक दफे शक हो चुका था। जब वे इस घाटी में आये थे तभी उनकी स्वतन्तत्रा देख कर उनका मन आशंकित हो गया था मगर जाँच करने पर उनका दिल साफ हो गया आज हरदेई ने उन्हें फिर उसी चिन्ता में डाल दिया और साथ ही इसके इन्दु का भी आञ्चल गँदला सुनकर उनका कलेजा काँप उठा और वे सोचने लगे कि क्या यह बात सच हो सकती है!!

केवल इतना ही नहीं, प्रभाकरसिंह के चित्त में चिन्ता और घृणा के साथ ही साथ क्रोध की भी उत्पत्ति हो गई और बहुत कुछ विचार करने के बाद उन्होंने सोचा कि यदि वास्तव में हरदेई का कहना सच है तो मुझे फिर उन दुष्टाओं के लिए परिश्रम करने की आवश्यता ही क्या है, परन्तु सत्य असत्य की जाँच तो आवश्यक है, इत्यादि सोचते हुए फिर उन्होंने हरदेई से पूछा:—

प्रभाकर०। हाँ तो जो कुछ असल मामला है तू बेखौफ होकर कह जा, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तेरी रक्षा करूँगा और तुझे इस आफत से बचाऊँगा।

हर०। यदि आप वास्तव में प्रतिज्ञा करते हैं तो फिर मैं सब बातें साफ साफ कह दूँगी।

प्रभाकर०। बेशक मैं प्रतिज्ञा करता हूँ मगर साथ ही इसके यह भी कहता हूँ कि अगर तेरी बात झूठ निकली तो मैं तेरे लिए सब से बुरी मौत का ढंग तजबीज करूँगा।

हर०। बेशक मैं मंजूर करती हूँ।

प्रभा०। अच्छा तो जो कुछ ठीक ठीक मामला है तू कह जा और यह बता कि वह सब कहाँ गईं और क्या हुईं और क्योंकर तू इस दशा को पहुँची।

हरदेई०। अच्छा तो मैं कहती हूँ, सुनिए। कला और बिमला की चाल

चलन अच्छी नहीं है। आप स्वयम् सोच सकते हैं कि जिन्हें ऐसी नौजवानी में इस तरह की स्वतन्त्रता मिल गई हो और रहने तथा आनन्द करने के लिये ऐसा स्वर्ग तुल्य स्थान मिल गया हो तथा दौलत की भी किसी तरह पर कमी न हो तो वे कहाँ तक अपने चित्त को रोक सकती हैं? अस्तु जो कुछ हो, कला और विमला दोनों ही ने अपने लिये दो प्रेमी खोज निकाले और उन दोनों को औरतों के भेष में ठीक करके अपने यहाँ रख छोड़ा तथा नित्य नया आनन्द करने लगीं मगर साथ ही इसके भूतनाथ से बदला लेने का भी ध्यान उनके दिल में बना रहा और उन दोनों मर्दों से भी इस काम में बराबर मदद माँगती रहीं। वे दोनों मर्द कुछ दिन तक इस घाटी में रह आनन्द करते और फिर कुछ दिन के लिये कहीं चले जाया करते थे।

प्रभाकर०। (बात काट कर) उन दोनों का नाम क्या था?

हरदेई०। सो मैं नहीं कह सकती क्योंकि कला और विमला ने बड़ी करीगरी से उन दोनों का भेष बदल दिया था, कभी कभी मर्दाने भेष में रहने पर भी उनकी सूरत दिखाई नहीं देती थी. इसलिये मैं उनके नाम और ग्राम के विषय में ठीक तौर पर कुछ भी नहीं कह सकती, हाँ इतना जरूर है कि अगर मुझे कुछ मदद मिले तो मैं उन दोनों का पता जरूर लगा सकती हूँ क्योंकि एकान्त की अवस्था में छिप लुक कर उन लोगों की बहुत सी बातें सुन भी चुकी हूँ जिनका...

प्रभाकर०। खैर इस बात को जाने दे फिर देखा जायगा, अच्छा तब क्या हुआ?

हरदेई०। बहुत दिनों तक कला और विमला ने उन दोनों से सम्बन्ध रक्खा मगर जब इन्दु इस घाटी में लाई गई और आपका आना भी यहाँ हुआ तब वे दोनों कुछ दिन के लिये गायब कर दिये गये। मैं ठीक नहीं कह सकती कि वे कहाँ चले गये या क्या हुए। मैं इस किस्से को बहुत मुख्तसर में बयान करती हूँ। फिर जब आप विजयगढ़ और चुनार की लड़ाई में चले गये और बहुत दिनों तक आपके आने की उम्मीद न रही तब पुनः वे दोनों इस घाटी में दिखाई देने लगे। संग और कुसंग का असर मनुष्य के ऊपर अवश्य पड़ा करता है। कुछ ही दिनों के बाद इन्दुमति को मैंने उन दोनों में से एक के साथ मुहब्बत करते

देखा और इसी कारण से कला विमला और इन्दुमति में अन्दर ही अन्दर कुछ खिंचाव भी हो गया था।

मैं समझती हूँ कि भूतनाथ को इस विषय का हाल जरूर मालूम हो गया जिसने उन दोनों को रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया और उस घाटी में जाने आने का रास्ता देख लिया। इसी बीच में मैंने आपको उस घाटी में देखा। पहिले तो मुझे विश्वास हो गया कि वास्तव में प्रभाकरसिंहजी ही लड़ाई में नामवरी हासिल करके यहाँ आ गये हैं परन्तु कुछ दिन के बाद मेरा वह ख्याल जाता रहा और विश्वास हो गया कि असल में आपकी सूरत बनकर यहाँ आने वाला कोई दूसरा ही था।

मैं इस विषय में कला और विमला को बार बार टोका करती थी और कहा करती थी कि तुम लोगों के रहन सहन का यह ढंग अच्छा नहीं है। एक न एक दिन इसका नतीजा बहुत ही बुरा निकलेगा मगर वे दोनों इस बात का कुछ खयाल नहीं करती थीं और मुझे यह कह कर टाल दिया करती थीं कि खैर जो कुछ हुआ सो हुआ, अब ऐसा न होगा।

मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि मेरे इस रोक टोक करने से मेरी तरफ से उनके दिल में रंज बैठता जाता है, मैंने अपने काम में और भी कई लौंडियों को शरीक कर लिया मगर इसका नतीजा मेरे लिये अच्छा न निकला।

एक दिन वह आदमी जो आप की सूरत बना हुआ था जब उस घाटी में आया तो उसके साथ और भी दस बारह आदमी आये। जब वे लोग कला विमला और इन्दुमति से मिले तो उनका रंग ढंग देख कर मैं डर गई और एक किनारे हट कर उनका तमाशा देखने लगी। थोड़ी देर के बाद जब सन्ध्या हुई तब कला विमला और इन्दुमति उन सभों को साथ लिये हुए बंगले के अन्दर चली गईं अस्तु इसके बाद क्या हुआ सो मैं कुछ भी न जान सकी, लाचार मैं अपनी हमजोलियों के साथ जा मिली और भोजन इत्यादि की सामग्री जुटाने के काम में लगी।

पहर रात बीत जाने के बाद जब भोजन तैयार हुआ तब सभों ने मिलजुल कर भोजन किया, पश्चात् हम लोगों ने भी भोजन किया मगर भोजन करने के थोड़ी ही देर बाद हम लोगों का सर घूमने लगा जिससे निश्चय हो गया कि

आज के भोजन में बेहोशी की दवा मिलाई गई है खैर जो हो आधी रात जाते जाते तक हम सब की सब बेहोश होकर दीन दुनिया को भूल गईं। प्रातःकाल जब मेरी आँख खुली तो मैंने अपने को इसी स्थान पर पड़े हुए पाया। घबरा कर उठ बैठी और आश्चर्य के साथ चारो तरफ देखने लगी, उस समय मेरे सर में बेहिसाब दर्द हो रहा था।

तीन दिन और रात मैं घबराई हुई इस जंगल में और ( हाथ का इशारा करके ) इसके पास वाली इमारत व दालान में घूमती रही मगर न तो किसी से मुलाकात हुई और न यहाँ से निकल भागने के लिए कोई रास्ता ही दिखाई दिया। चौथे दिन भूख से बेचैन होकर मैं इसी जंगल में घूम रही थी कि यकायक इन्दुमति कुछ दूरी पर दिखाई पड़ी जो कि आपके गले में हाथ डाले हुए धीरे धीरे पूरब तरफ जा रही थी। मैं नहीं कह सकती कि वह वास्तव में आप ही के गले में हाथ डाले हुई थी या किसी दूसरे ऐयार के गले में जो आपकी सूरत बना हुआ था।

उसी के कुछ पीछे मैंने कला और विमला को भी जाते हुए देखा मैं खुशी खुशी लपकती हुई उनकी तरफ बढ़ी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। देखते ही देखते इसी जंगल और झाड़ियों में घूम फिर वे सब न जाने कहाँ गायब हो गईं, तब से आज तक कई दिन हुए मैं उनकी खोज में परेशान हूँ, अन्त में भूख के मारे बदहवास होकर इसी जगह गिर पड़ी और कई पहर तक मुझे तनोबदन की कुछ भी सुध न रही, जब होश में आई तब आपसे मुलाकात हुई। बस यही तो मुख्तसर हाल है।

हरदेई की बात सुन कर प्रभाकरसिंह के तो होश उड़ गये। वे ऐसे बेसुध हो गये कि उन्हें तनोबदन की सुध बिल्कुल ही जाती रही। थोड़ी देर तक तो ऐसा मालूम होता रहा कि वे प्रभाकरसिंह नहीं है बल्कि पत्थर की कोई मूरत है। इसके बाद उन्होंने एक लम्बी साँस ली और बड़े गौर से हरदेई के चेहरे की तरफ देखने लगे। कई क्षण बाद उन्होंने सिर नीचा कर लिया और किसी गहरे चिन्तासागर में डुबियां लगाने लगे। हरदेई मन ही मन प्रसन्न हो कर उनके चेहरे की तरफ देखने लगी जिसका रंग थोड़ी थोड़ी देर पर गिरगिट के रंग की तरह बराबर बदल रहा था।

प्रभाकरसिंह के चेहरे पर कभी तो क्रोध कभी दुःख कभी चिन्ता, कभी घबराहट और कभी घृणा की निशानी दिखाई देने लगी। आह! प्रभाकरसिंह के जिस हृदय में इन्दुमति का अगाध प्रेम भरा हुआ था उसमें इस समय भयानक रस का सञ्चार हो रहा है! जो वीर हृदय सदैव करुणा रस से परिपूरित रहता था वह क्षणमात्र के लिये अद्भुत रस का स्वाद लेकर रौद्र और तत्पश्चात् वीभत्स रस की इच्छा कर रहा है! जिस हृदय में इन्दुमति पर निगाह पड़ते ही शृंगार रस की लहरें उठने लगती थी वह अपने भविष्य जीवन पर हास्य करता हुआ अब सदैव के लिये शान्त हुआ चाहता है। आह, इन्दुमति के विषय में स्वप्न में भी ऐसे शब्दों के सुनने की क्या प्रभाकरसिंह को आशा हो सकती थी? कदापि नहीं, यह प्रभाकरसिंह की भूल है कि हरदेई की जुबान से विष भरी अघटित घटना को सुन कर अनुचित चिन्ता करने लग गये हैं। वह नहीं जानते कि यह हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है, परन्तु हमारे प्रेमी पाठक इस बात को जरूर समझ रहे होंगे कि यह भूतनाथ का शागिर्द रामदास है जिसकी मदद से भूतनाथ ने उस घाटी में पहुँच कर बड़ा ही अनुचित और घृणित व्यवहार किया था। निःसन्देह भूतनाथ ने जमना सरस्वती और इन्दुमति के साथ जो कुछ किया था वह ऐयारी के नियम के बिल्कुल ही बाहर था। ऐयारी का यह मतलब नहीं है कि वह बेकसूरों के खून से अपनी जीवनी की पवित्र चादर में धब्बा लगाये। यदि प्रभाकरसिंह उसकी कार्रवाई का हाल सच्चा सच्चा सुनते तो न मालूम उनकी क्या अवस्था हो जाती परन्तु इस रामदास ने उन्हें बड़ा ही धोखा दिया और ऐसी ऐसी बेढंगी बातें सुनाईं कि उनका पवित्र हृदय काँप उठा और इन्दुमति तथा कला और विमला की तरफ से उन्हें एक दम घृणा उत्पन्न हो गई। तो क्या प्रभाकरसिंह ऐसे बेवकूफ थे कि एक मामूली ऐयार अथवा लौंडी के मुँह से ऐसी अनहोनी बात सुन कर उन्होंने उस पर कुछ विचार न किया और उसे सच्चा मान कर अपने आपे से बाहर हो गये? नहीं, प्रभाकरसिंह तो ऐसे न थे परन्तु प्रेमने उनका हृदय ऐसा बना दिया था कि इन्दु के विषय में ऐसी बातें सुन कर वे अपने चित्त को संभाल नहीं सकते थे। प्रेम का अगाध समुद्र थोड़ी ही सी आँच के लगने से सूख सकता है। और प्रेमी का मन मुकुल जरा ही सी ठेस लगने से चकनाचूर हो जाता है अस्तु जो हो, प्रभाकरसिंह के दिल की उस समय क्या अवस्था थी

इसे वे ही ठीक जानते होंगे या उनको देखकर रामदास कुछ कुछ समझा होगा क्योंकि वह उनके सामने बैठा हुआ उनके चेहरे की तरफ बड़े गौर से देख रहा था।

नकली हरदेई अर्थात् रामदास के दिल की अवस्था भी अच्छी न थी। वह कहने के लिये तो सब कुछ कह गया परन्तु उसका परिमाण क्या होगा यह सोच कर उसका दिल डावाँडोल होने लगा। यद्यपि इस तिलिस्म में फँस कर वह बर्बाद हो चुका था और थोड़े देर पहिले मौत की भयानक सूरत अपनी आँखों के सामने देख रहा था परन्तु प्रभाकरसिंह पर निगाह पड़ते ही उसकी कायापलट हो गई और उसे विश्वास हो गया कि किसी न किसी तरह अब उसकी जान बच जायगी परन्तु इन्दुमति को बदनाम करके उसका चित्त शान्त न रहा और थोड़ी देर बाद वह सोचने लगा कि मैंने यह काम अच्छा नहीं किया। यदि मैं कोई दूसरा ढंग निकालता तो कदाचित् यहाँ से शीघ्र ही छुटकारा मिल जाता परन्तु अब जल्दी छुटकारा मिलना मुश्किल है क्योंकि मेरी बातों का निर्णय किये बिना प्रभाकरसिंह मुझे यहाँ से बाहर न जाने देंगे। अफसोस! भूतनाथ को मदद पहुँचाने के खयाल से मैंने व्यर्थ ही इन्दु को बदनाम किया। इन्दुमति निःसन्देह सती है साध्वी है उस पर कलंक लगाने का नतीजा मुझे अच्छा न मिलेगा। अफसोस! खैर अब क्या करना चाहिये, जुबान से जो बात निकल गई वह तो पुनः लौट नहीं सकती। तब? मुझे अपने बचाव के लिये शीघ्र ही कोई तरकीब सोचना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि इन्दुमति कला और विमला घूमती फिरती इस समय यहाँ आ पहुँचें। यदि ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा होगा, मेरी कलई खुल जायगी और मैं तुरन्त ही जान से मारा जाऊँगा यदि मैं उन सभों को बदनाम न किये होता तो इतना डर न था।

इसी तरह की बातें सोचते हुए रामदास का दिल बड़ी तेजी के साथ उछल रहा था और वह बड़ी बेचैनी से प्रभाकरसिंह की सूरत देख रहा था।

बहुत देर तक तरह तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह ने पुनः नकली हरदेई से सवाल किया :—

प्रभाकर०। अच्छा यह तो बता कि कला और विमला किसी विषय में किसी दिन मुझसे रंज भी हुई थीं?

हरदेई०। (मन में) इस सवाल का क्या मतलब ? (प्रगट) नहीं अगर कभी कुछ रंज भी हुई थीं तो केवल उसी विषय में जो मैं आप से बयान कर चुकी हूँ।

इस जवाब को सुन कर प्रभाकरसिंह चुप हो गये और फिर कुछ गौर करके बोले, "खैर कोई हर्ज नहीं देखा जायगा। यह जगत ही 'कर्मप्रधान' है, जो जैसा करेगा वैसा फल भोगेगा ! यदि वे तीनों इस तिलिस्म के अन्दर हैं तो मैं उन्हें जरूर खोज निकालूंगा, तू सब्र कर और मेरे साथ साथ रह।"

इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने फिर वही छोटी किताब निकाली और पढ़ने लगे जिसे इस तिलिस्म के अन्दर घुसने के पहिले एक दफे पढ़ चुके थे।

प्रभाकरसिंह घण्टे भर से ज्यादे देर तक वह किताब पढ़ते रहे और तब तक रामदास बराबर उनके चेहरे की तरफ गौर से देखता रहा। जब वे उस किताब में अपने मतलब की बात अच्छी तरह देख चुके तब यह कहते हुए उठ खड़े हुए कि कोई चिन्ता नहीं, यहाँ हमारे खाने पीने का सामान बहुत कुछ मिल जायगा और हम उन सभों को जल्द खोज निकालेंगे ! ( नकली हरदेई से ) आ तू भी हमारे साथ चली आ।"

रामदास उस किताब के पढ़ने और उनके इन शब्दों के कहने से समझ गया कि उस किताब में जरूर इस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ है, अगर किसी तरह वह किताब मेरे हाथ लग जाय तो सहज ही में मैं यहाँ से निकल भागूँ बल्कि और भी बहुत सा काम निकाल लूँ।

रामदास अर्थात् नकली हरदई को साथ लिए हुए प्रभाकरसिंह उसी जँगले में घुस गये और दक्षिण झुकते हुए पूरब की तरफ चल निकले। आधे घण्टे तक बराबर चले जाने के बाद उन्हें एक बहुत ऊँची दीवार मिली जिसकी लम्बाई का का ये कुछ अन्दाजा नहीं कर सकते थे और न इसकी जाँच करने की उन्हें कोई जरूरत ही थी। उस दीवार में बहुत दूर तक ढूँढ़ने के बाद उन्हें एक छोटा सा दर्वाजा दिखाई दिया। यह दर्वाजा लोहे का बना हुआ था मगर उसमें ताला या जंजीर वगैरह का कुछ निशान नहीं दिखाई देता था। रामदास का ध्यान किसी दूसरी तरफ था तथापि वह जानना चाहता था कि यह दर्वाजा क्योंकर खुलता है, परन्तु प्रभाकरसिंह ने उसे खोलने के लिए जो कुछ कार्रवाई की वह देख न सका

यकायक वह दर्वाजा खुल गया और प्रभाकरसिंह ने उसके अन्दर कदम रक्खा तथा रामदास को भी अपने साथ आने के लिए कहा।

प्रभाकरसिंह और रामदास दर्वाजे के अन्दर जाकर कुछ ही दूर आगे बढ़े होंगे कि दरवाजा पुनः ज्यों का त्यों बन्द हो गया। अब प्रभाकरसिंह एक ऐसे बाग में पहुँचे जहाँ केले और अनार के पेड़ बहुतायत के साथ लगे हुए थे और पानी का सुन्दर चश्मा भी बड़ी खूबसूरती के साथ चारो तरफ बह रहा था। इस बाग के अन्दर एक छोटा सा बँगला भी बना हुआ था जिसमें कई कोठरियाँ थीं और इस बँगले के चारो तरफ संगमर्मर के चार चबूतरे बने हुए थे। बस इस बाग में इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। प्रभाकरसिंह ने वहाँ के पके हुए स्वादिष्ट केले और अनार से पेट भरा और चश्मे का जल पी कर कुछ शान्त हुए तथा नकली हरदेई से भी ऐसा करने के लिए कहा।

जब आदमी की तबीयत परेशान होती है तो थोड़ी सी भी मेहनत बुरी मालूम होती है और वह बहुत जल्द थक भी जाता है। प्रभाकरसिंह का चित्त बहुत ही व्यग्र हो रहा था और चिंता ने उन्हें उदास और हताश भी कर दिया था अतएव आज थोड़ी ही देर की मेहनत से थक कर वे एक संगमर्मर के चबूतरे पर कुछ आराम करने की नीयत से लेट गये और साथ ही निद्रादेवी ने भी उन पर अपना अधिकार जमा लिया।

यहाँ प्रभाकरसिंह ने बहुत ही बुरा धोखा खाया। नकली हरदेई की बातों ने उन्हें अधमूआ कर ही दिया था और इस दुनिया से वे एक तौर पर विरक्त हो चुके थे, कारण यही था कि उन्होंने नकली हरदेई को पहिचाना न था। अगर इन बातों के हो जाने के बाद भी वे जाँच कर लेते तो कदाचित् सम्हल जाते परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और नकली हरदेई को वास्तव में हरदेई मान कर अपने भाग्य का सब दोष समझ लिया, यही सबब था कि यहाँ पर भी वे रामदास की तरफ से बिल्कुल ही बेफिक्र बने रहे और चबूतरे पर लेट कर बेफिक्री के साथ खुर्राटा लेने लगे।

प्रभाकरसिंह को निद्रा के वशीभूत देख कर रामदास चौकन्ना हो गया। उसने अपने ऐयारी के बटुये में से जिसे वह बड़ी सावधानी से छिपाये हुए था बेहोशी की दवा निकाली और होशियारी से प्रभाकरसिंह को सुंघाया। जब उसे विश्वास

हो गया कि अब ये बेहोश हो गये तब उसने उनके जेब में से वह किताब निकाल ली जिसमें इस तिलिस्म का कुछ हाल लिखा हुआ था और जिसे प्रभाकरसिंह दो दफे पढ़ चुके थे।

किताब निकाल कर उसने बड़े गौर से थोड़ा सा पढ़ा, तब बड़ी प्रसन्नता के साथ सिर हिला कर उठ खड़ा हुआ और दिल्लगी के ढंग पर बेहोश प्रभाकरसिंह को झुक कर सलाम करता हुआ एक तरफ चला गया।

बेहोशी का असर दूर हो जाने पर जब प्रभाकरसिंह की आँखें खुलीं तो वे घबड़ा कर उठ बैठे और बेचैनी से चारो तरफ देखने लगे। आसमान की तरफ निगाह दौड़ाई तो मालूम हुआ कि श्रीसूर्य भगवान का रथ अस्ता चल को प्राप्त कर चुका है परन्तु अभी अन्धकार को मुंह दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ती, वह केवल दूर ही से ताक झाँक कर रहा है। हरदेई को जब देखना चाहा तो निगाहों की दौड़ धूप से उसका कुछ भी पता न लगा, तब वे लाचार हो कर उठ बैठे और उसे इधर उधर ढूंढ़ने लगे, परन्तु बहुत परिश्रम करने पर भी उसका पता न लगा। आखिर वे पुनः उसी चबूतरे पर बैठ कर तरह तरह की बातें सोचने लगे। "हरदेई कहाँ चली गई? इस बाग में जहाँ तक सम्भव था अच्छी तरह खोज चुका मगर उसका कुछ भी पता न लगा। तब वह गई कहाँ? इस बाग के बाहर हो जाना तो उसके लिये बिल्कुल ही असम्भव है! तो क्या उसे किसी तरह की मदद मिल गई? अगर मदद भी मिली होती या कोई उसका दोस्त यहाँ आया होता तो भी बिना मेरी आज्ञा के उसे यहाँ से चले जाना मुनासिब न था। (अपना सर पकड़ के) ओफ! सर में बेहिसाब दर्द हो रहा है। मालूम होता है कि जैसे किसी बेहोशी की दवा का मुझ पर प्रयोग किया गया हो। ठीक है, बेशक यह दर्दसर उसी ढंग का है। तो क्या वह हरदेई की सूरत में कोई ऐयार तो नहीं था जिसने मुझे धोखा दिया हो! (घबराहट के साथ जेब टटोल के) आह! वह किताब तो जेब में है ही नहीं! क्या कोई ले गया? या हरदेई ले गई? (पुनः उस किताब को अच्छी तरह खोज कर) हैं! वह किताब निःसन्देह गायब हो गई और ताज्जुब नहीं कि वही किताब लेने की नीयत से उस ऐयार ने मुझे बेहोशी की दवा दी हो और उसी किताब की मदद पाकर यहाँ से चला गया हो। अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो बहुत बुरा हुआ और मैंने बेढब धोखा खाया!

अगर वह वास्तव में कोई ऐयार था तो कला बिमला और इन्दुमति वाली बात भी उसने झूठ ही कही होगी। ऐसी अवस्था में मैं उसका पता लगाये बिना नहीं रह सकता और इस काम में सुस्ती करना अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना है।"

इत्यादि बातों को सोच कर प्रभाकरसिंह पुनः उठ खड़े हुए और नकली हरदेई को खोजने लगे। अबकी दफे उनका खोजना बड़ी सावधानी के साथ था। यहाँ तक कि एक एक पेड़ के नीचे जा जा खोज कर उसकी टोह लेने लगे। यकायक केलों की झुरमुट में उन्हें कोई कपड़ा दिखाई दिया, जब उसके पास गये और अच्छी तरह देखा तो मालूम हुआ कि यह हरदेई का कपड़ा है, मुलाकात होने के समय वह यही कपड़ा पहिने हुए थी। और भी अच्छी तरह देखने पर मालूम हुआ कि वह साड़ी का एक हिस्सा है और खून से तर हो रहा है। वहाँ जमीन और पेड़ों के निचले हिस्सों पर भी खून के छींटे दिखाई दिये।

अब प्रभाकरसिंह का खयाल फिर बदल गया और वे सोचने लगे कि क्या यहाँ कोई हमारा दुश्मन आ पहुँचा और हरदेई उसके हाथ से मारी गई या जख्मी हुई? ताज्जुब नहीं कि वही हरदेई को गिरफ्तार भी कर ले गया हो! परंतु यहाँ किसी दूसरे आदमी का आना बिल्कुल ही असम्भव है! हाँ हो सकता है कि कला बिमला और इन्दु यहाँ आ पहुँची हों और हरदेई को दुश्मन समझ के उसका काम तमाम कर दिया हो! ईश्वर ही जाने यह क्या मामला है पर वह तिलिस्मी किताब मेरे कब्जे से निकल गई यह बहुत ही बुरा हुआ!!"

इत्यादि बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह बहुत ही परेशान हो गए। वे और भी घूम फिर कर हरदेई के विषय में कुछ पता लगाने का उद्योग करते परन्तु रात की अन्धेरी घिर आने के कारण कुछ भी न कर सके। साथ ही इसके सर्दी भी मालूम होने लगी और आराम करने के लिए वे कोई आड़ की जगह तलाश करने लगे।

आज की रात प्रभाकरसिंह ने उसी बाग के बीच वाले बँगले में बिताई और तरह तरह की चिन्ता में रात भर जागते रहे। तिलिस्मी किताब के चले जाने का दुःख तो उन्हें था ही परन्तु इस बात का खयाल उन्हें बहुत ज्यादे था कि अगर वह किताब किसी दुश्मन के हाथ में पड़ गई होगी तो वह इस तिलिस्म में पहुँच

कर बहुत नुकसान पहुँचा सकेगा और यहाँ की बहुत सी अनमोल चीजें भी ले जायगा।

यद्यपि वह किताब इस तिलिस्म की चाभी न थी और न उसमें यहाँ का पूरा पूरा हाल ही लिखा हुआ था तथापि वह यहाँ के मुख्तसर हाल का गुटका जरूर था और उसमें बहुत सी बातें इन्द्रदेव ने जरूरी समझ कर नोट करा दी थीं। प्रभाकरसिंह उसे कई दफे पढ़ चुके थे परन्तु फिर भी उसके पढ़ने की जरूरत थी। इस समय अपकी भूल से वे शर्मिन्दा हो रहे थे और सोचते थे कि इस विषय में इन्द्रदेव के सामने मुझे बेवकूफ बनना पड़ेगा।

ज्यों त्यों करके रात बीत गई। सवेरा होते ही प्रभाकरसिंह बँगले के बाहर निकले। मालूमी कामों से छुट्टी पाकर चश्मे के जल से स्नान किया और सन्ध्या पूजा करके पुनः बँगले के अन्दर घुस गये। कई कोठड़ियों में घूमते फिरते वे एक ऐसी कोठड़ी में पहुँचे जो लम्बाई चौड़ाई में वहाँ की सब कोठड़ियों से बड़ी थी। यहाँ चारो तरफ की दीवारों में बड़ी बड़ी बारह आलमारियाँ बनी हुई थीं और उन सभों के ऊपर नम्बर लगे हुए थे। सात नम्बर की आलमारी उन्होंने किसी गुप्त रीति से खोली और उसके अन्दर चले गये। नीचे उतर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं अस्तु उसी राह से प्रभाकरसिंह नीचे उतर गये और एक दालान में पहुँचे। बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर रोशनी की तो मालूम हुआ कि यह दालान बहुत लंबा चौड़ा है और यहाँ की जमीन में बहुत सी लोहे की नालियाँ बनी हुई हैं जो सड़क का काम देने के लिए है तथा उन पर छोटी छोटी बहुत सी गाड़ियाँ रक्खी हुई हैं जिन पर सिर्फ एक आदमी के बैठने की जगह है। दालान के चारो तरफ दीवारों में बहुत से रास्ते बने हुए हैं जिनमें से होकर वे लोहे की सड़कें न मालूम कहाँ तक चली गई हैं।

गौर से देखने पर प्रभाकरसिंह को मालूम हुआ कि उन छोटी छोटी गाड़ियों पर पीठ की तरफ नम्बर लगे हुए हैं और उन नम्बरों के नीचे कुछ लिखा हुआ भी है। प्रभाकरसिंह बड़ी उत्कण्ठा से पढ़ने लगे। एक गाड़ी पर लिखा हुआ था 'जमानिया दुर्ग' दूसरी पर लिखा हुआ था 'खास बाग' तीसरी पर लिखा हुआ था "चुनार विक्रमीचन्द्र" चौथी पर लिखा हुआ था 'केन्द्र' इसी तरह किसी पर [illegible]' किसी पर 'सूर्य्य' और किसी पर 'सभा मण्डप' लिखा हुआ था, मतलब

यह कि सभी गाड़ियों पर कुछ न कुछ लिखा हुआ था। प्रभाकरसिंह एक गाड़ी के ऊपर सवार हो गये जिसकी पीठ पर 'केन्द्र' लिखा हुआ था। सवार होने के साथ ही वह गाड़ी चलने लगी। दालान के बाहर हो जाने पर मालूम हुआ कि वह किसी सुरंग के अन्दर जा रही है। जैसे जैसे वह गाड़ी आगे बढ़ती जाती थी तैसे तैसे उसकी चाल भी तेज होती जाती थी और हवा के झपेटे भी अच्छी तरह लग रहे थे यहाँ तक कि उनके हाथ की मोमबत्ती बुझ गई और हवा के झपेटों से मजबूर होकर उन्होंने अपनी दोनों आँखें बन्द कर लीं।

आधे घण्टे तक तेजी के साथ चले जाने के बाद गाड़ी एक ठिकाने पहुँच कर रुक गई। प्रभाकरसिंह ने आँखें खोल कर देखा तो उजाला मालूम हुआ वे गाड़ी से नीचे उतर पड़े और गौर से चारो तरफ देखने लगे। वह स्थान ठीक उसी तरह का था जैसा कि कला और विमला के रहने का स्थान था और इसे देखते ही प्रभाकरसिंह को शक हो गया कि हम पुनः उसी ठिकाने पहुँच गये जहाँ कला और विमला से मुलाकात हुई थी परन्तु वहाँ की जमीन पर पहुँच कर उनका खयाल बदल गया और वे पुनः दूसरी निगाह से उस स्थान को देखने लगे।

यहाँ भी ठीक उसी ढंग का एक बँगला बना हुआ था जैसा कि कला और विमला के रहने वाली घाटी में था मगर इसके पास मौलसिरी ( मालश्री ) के पेड़ न थे। दक्षिण तरफ पहाड़ के ऊपर चढ़ जाने के लिये सीढ़ियाँ दिखाई दे रही थीं और जहाँ पर वह सीढ़ियाँ खतम हुई थीं वहाँ एक सुन्दर मन्दिर बना हुआ था जिसके ऊपर का सुनहरा शिखर ध्वजा और त्रिशूल सूर्य्य की रोशनी पड़ने से बड़ी तेजी के साथ चमक रहा था।

जब प्रभाकरसिंह गाड़ी से नीचे उतर पड़े तो वह गाड़ी पीछे की तरफ उसी तेजी के साथ लौट गई जिस तेजी के साथ यहाँ आई थी। प्रभाकरसिंह चारो तरफ अच्छी तरह देखने के बाद दक्षिण तरफ वाली पहाड़ी के नीचे चले गये और सीढ़ियाँ चढ़ने लगे जब तमाम सीढ़ियाँ खतम कर चुके तब मन्दिर के अन्दर जाने वाला फाटक मिला अस्तु प्रभाकरसिंह उस फाटक के अन्दर चले गये।

इस पहाड़ी के ऊपर चढ़ने वाला इस मन्दिर के अन्दर जाने के सिवाय और कहीं भी नहीं जा सकता था क्योंकि मन्दिर के चारो तरफ बहुत दूर तक फैली हुई ऊँची ऊँची जालीदार चारदीवारी थी जिसके उत्तर तरफ सिर्फ एक फाटक था

जो इन सीढ़ियों के साथ मिला हुआ था अर्थात् इस सिलसिले की कई सीढ़ियाँ फाटके अन्दर तक चली गई थीं। सीढ़ियों के अगल बगल से भी कोई रास्ता या मौका ऐसा न था जिसे नाँघ या कूद कर आदमी दूसरी दरफ निकल जा सके। यह पहाड़ बहुत बड़ा और ऊपर से प्रशस्थ था बल्कि यह कह सकते हैं कि ऊपर से कोसों तक चौड़ा था परन्तु इस मन्दिर में से न तो कोई उस तरफ जा सकता था और न उस तरफ से कोई इस मन्दिर के अन्दर आ सकता था।

प्रभाकरसिंह ने उस मन्दिर और चारदीवारी को बड़े गौर से देखा। मन्दिरके अन्दर किसी देवता की मूर्ति न थी केवल एक फौहारा बीचोबीच में बना हुआ था और दीवारों पर तरह तरह की सुन्दर तस्वीरें लिखी हुई थीं। मन्दिर के आगे सभामण्डप में लोहे के बड़े बड़े सन्दूक रक्खे हुए थे मगर उनमें ताले का स्थान बिल्कुल खाली था अर्थात् यह नहीं जाना जाता था कि इसमें ताली लगाने की भी कोई जगह है या नहीं।

उन लोहे के सन्दूकों को भी अच्छी तरह देखते हुए प्रभाकरसिंह मन्दिर के बाहर निकले और खड़े होकर कुछ सोच ही रहे थे कि उस जालदार चारदीवारी के मैदान में मन्दिर की तरफ से आती हुई कई औरतों पर निगाह पड़ी। प्रभाकरसिंह घबड़ा कर दीवार के पास चले गये और उसके जालदार सूराखों में से उन औरतों को देखने लगे। इस दीवार की जालदार सूराखें बहुत बड़ी बड़ी थीं यहाँ तक कि आदमी का हाथ बखूबी उन सूराखों के अन्दर जा सकता था।

प्रभाकरसिंह ने देखा कला विमला और इन्दुमति धीरे धीरे इस मन्दिर की तरफ चली आ रही हैं और उन तीनों के चेहरों से हद्द दर्जे की उदासी और परेशानी टपक रही है। उसी समय प्रभाकरसिंह को हरदेई वाली बात भी याद आ गई मगर क्रोध आ जाने पर भी उनका दिल उन तीनों के पास गये बिना बहुत बेचैन होने लगा। यद्यपि वे दीवार के पार जाकर उन सभों से मिल नहीं सकते थे तथापि सोचने लगे कि अब इन लोगों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए? हरदेई की जुबानी जो कुछ सुना है उसे साफ साफ कह देना चाहिये या धीरे धीरे सवाल करके उन बातों की जाँच करनी चाहिये।

धीरे धीरे चल कर वे तीनों औरतें भी मन्दिर की दीवार के पास आ पहुँची

और एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगीं—

इन्दु०। ( कला से ) बहिन ! अभी तक समझ में नहीं आया कि हमलोग किस तरह इस तिलिस्म के अन्दर आकर फंस गईं।

कला०। मेरी बुद्धि भी किसी बात पर नहीं जमती और न खयाल ही को आगे बढ़ने का मौका मिलता है। अगर कोई दुश्मन भी हमारी घाटी में आ पहुँचा होता तो समझते कि यह सब उसी की कार्रवाई है, मगर.....

विमला०। भला यह कैसे कह सकते हैं कि कोई दुश्मन वहाँ नहीं आया ! अगर नहीं आया तो यह मुसीबत किसके साथ आई ? हाँ यह जरूर कहेंगे कि प्रकट में सिवाय प्रभाकरसिंह जी के और कोई आया हुआ मालूम नहीं हुआ और न इसी बात का पता लगा कि हमारी लौंडियों में से भी किसी की नीयत खराब हुई या नहीं।

इन्दु०। ( लम्बी साँस लेकर ) हाँ ! इस बात का भी कुछ पता नहीं लगा कि उन पर ( प्रभाकरसिंह पर ) क्या बीती ! एक तो लड़ाई में जख्मी होकर वे स्वयम् कमजोर हो रहे थे, दूसरे यह नई आफत और भी आ पहुँची ! ईश्वर ही कुशल करे !!

विमला०। हाँ बहिन ! मुझे भी जीजाजी के विषय में बड़ी चिंता लगी हुई है परन्तु साथ ही इसके मेरे दिल में इस बात का भी बड़ा ही खटका लगा हुआ है कि उन्होंने बदन खोल कर अपने जख्म जो घोर संग्राम में लगे थे हम लोगों को क्यों नहीं देखने दिये ! इसके अतिरिक्त हम लोगों के भोजन में बेहोशी की दवा देने वाला कौन था इस बात को जब मैं विचारती हूँ.....( चौंक कर) इस चारदीवारी के अन्दर कौन है !!

कला०। अरे यह तो जीजा जी मालूम पड़ते हैं !!

बात करते करते विमला की निगाह मन्दिर की चारदीवारी के अन्दर जा पड़ी जहाँ प्रभाकरसिंह खड़े थे और नजदीक होने के कारण इन सभों की बातें सुन रहे थे। दीवार की जालदार सूराखें बहुत बड़ी होने कारण इनका चेहरा विमला को अच्छी तरह दिखाई दे गया था।

कला विमला और इन्दु लपक कर प्रभाकरसिंह के पास आ गईं। प्रभाकरसिंह भी अपने दिल का भाव छिपा कर इन लोगों से बातचीत करने लगे।

प्रभाकर०। तुम तीनों यहाँ पर किस तरह आ पहुँची? मैं तुम लोगों की खोज में बहुत दिनों से बेतरह परेशान हो रहा हूँ। लड़ाई से लौट कर जब मैं तुम्हारी घाटी में आया तो उसे बिल्कुल ही उजाड़ देख कर मैं हैरान रह गया।

इन्दु०। यही बात मैं आपसे पूछने वाली थी मगर.....

विमला०। ताज्जुब की बात है कि आप कहते हैं कि लड़ाई से आकर जब हम इस घाटी में आये तो उसे बिल्कुल ही उजाड़ पाया। क्या लड़ाई से लौटने के बाद आप हम लोगों से नहीं मिले? और आपके घायल देह का हम लोगों ने इलाज नहीं करना चाहा? या यह कहिये कि आपका जख्मी घोड़ा आपको लड़ाई में से बचा कर भागता हुआ क्या हमारी घाटी के बाहर तक नहीं आया था?

प्रभाकर०। न मालूम तुम क्या कह रही हो? मैं लड़ाई में से भाग कर नहीं आया बल्कि प्रसन्नता के साथ महाराज सुरेन्द्रसिंह से बिदा होकर तुम्हारी तरफ आया था।

इन्दु०। (ऊंची साँस लेकर) हाय, बड़ा ही अनर्थ हुआ! हम लोग बेढब धोखे में डाले गये! हाय! आपका जख्मों को छिपाना हमें खुटके में डाल चुका था, परन्तु प्रेम! तेरा बुरा हो! तू ही ने मुझे सम्हलने न दिया!!

प्रभाकर०। (मन में) मालूम होता है कि हरदेई का कहना ठीक है और कोई दूसरा गैर आदमी मेरी सूरत बन कर इन लोगों के पास जरूर आया था परन्तु इन्दु के भाव से यह नहीं जाना जाता कि इसने जान बूझ कर उसके साथ.....अस्तु जो हो, सम्भव है कि यह अपने बचाव के लिये मुझे बनावटी भाव दिखा रही हो, हाँ यह तो निश्चय हो गया कि हरदेई एकदम झूठी नहीं है कुछ न कुछ दाल में काला अवश्य है। (प्रकट) मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रही हो, खुलासा कहो तो मालूम हो और विचार किया जाय कि मामला क्या है। क्या तुम्हारे कहने का वास्तव में यही मतलब है कि मैं लड़ाई से लौट कर तुम लोगों से मिल चुका हूँ?

इन्दु०। बेशक आपका जख्मी घोड़ा आपके शरीर को बचाता हुआ वहाँ तक ले आया था और हम लोग आपको जब कि आप बिल्कुल ही बेहोश थे उठा कर घाटी के अन्दर ले आये थे।

प्रभाकर० । मगर ऐसा नहीं हुआ । हरदेई ने तुम लोगों का पर्दा खोलते समय मुझसे यह भी कहा था कि कोई गैर आदमी प्रभाकरसिंह बन कर उस घाटी में आया था और बहुत दिनों तक इन्दुमति ने उसके साथ.....

इन्दु० । ( बात काट कर ) क्या यह बात हरदेई ने आप से कही थी ? और उसने हम लोगों की शिकायत आपसे की थी ?

प्रभा० । हाँ बेशक ! साथ ही इसके ( विमला की तरफ देख के ) तुम लोगों के गुप्त प्रेम का हाल भी हरदेई ने मुझसे कह दिया था ।

इन्दु० । हाय ! अब मैं क्या कहूँ ? ( आसमान की तरफ देख के ) हे सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ! तू ही मेरा न्याय करने वाला है !!

इतना कहते कहते इन्दुमति की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी ।

विमला० । मालूम होता है कि हरदेई ने ही मेरे साथ दुश्मनी की ।

प्रभाकर० । बेशक !!

विमला० । और उसी ने घाटी में आपसे मिल कर.....

प्रभाकर० । ( बात काट कर ) नहीं, वह मुझसे घाटी में नहीं मिली बल्कि तुम लोगों की सताई हुई हरदेई इसी तिलिस्म के अन्दर मुझसे मिली थी । बेशक उसने तुम लोगों का भण्डा फोड़ के तुम लोगों के साथ बड़ी दुश्मनी की, मगर वह ऐसा क्यों न करती ? तुम लोगों ने भी तो उसके साथ बड़ी बेदर्दी का बर्ताव किया था ।

प्रभाकरसिंह के मुँह से इतना सुनते ही कला विमला और इन्दुमति ने अपना माथा ठोंका और इसके बाद इन्दुमति ने एक लम्बी साँस लेकर प्रभाकरसिंह से कहा, "अगर मुझमें सामर्थ्य होती तो मैं जरूर अपना कलेजा फाड़ कर आपको दिखाती, हाँ जरूर दिखाती, नहीं नहीं दिखाऊँगी, मेरे में इतनी सामर्थ्य है, परन्तु अफसोस ! हमलोगों के पास इस समय कोई हर्बा नहीं है और आप ऐसी जगह खड़े हैं जहाँ.....

विमला० । अच्छा कोई चिन्ता नहीं, जिसने धर्म को नहीं छोड़ा है ईश्वर उसका मददगार है ! आप पहिले हम लोगों के पास आइये फिर जो कुछ होगा देखा जायगा ।

प्रभाकर० । मैं भी यही चाहता हूँ परन्तु क्योंकर तुम लोगों के पास आ सकता हूँ यह विचारने की बात है ।

विमला० । आप यदि उस सामने वाली पहाड़ी के ऊपर चढ़ते तो ऊपर ही ऊपर यहाँ तक आ जाते जहाँ मैं खड़ी हूँ और अब भी आप ऐसा कर सकते हैं, या आज्ञा कीजिये तो हम लोग स्वयम् उस राह से घूम कर आपके पास.....

विमला और कुछ कहा ही चाहती थी कि राक्षस की तरह की भयानक सूरत का एक आदमी हाथ में नंगी तलवार लिये हुए कला विमला और इन्दुमति की तरफ आता हुआ प्रभाकरसिंह को दिखाई पड़ा क्योंकि वह उन तीनों के पीछे की तरफ से आ रहा था जिधर प्रभाकरसिंह का सामना पड़ता था ।

प्रभाकर० । ( ताज्जुब के साथ विमला से ) क्या बता सकती हो कि वह आदमी कौन है जो तुम लोगों की तरफ आ रहा है ।

विमला कला और इन्दुमति ने घबड़ा कर पीछे की तफर देखा और तीनों एक दम चिल्ला उठीं । विमला मे चिल्लाते और आँसू गिरते हुए प्रभाकरसिंह से कहा, "बचाइये, बचाइये आप जल्दी यहाँ आ कर हम लोगों की रक्षा कीजिये, यही दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है !!"

इतना कह कह कर वे वहाँ से भागने की चेष्टा करने लगीं ही कहाँ परन्तु भाग कर जा सकती थीं ! बात की बात में वह दुष्ट इन तीनों के पास आ पहुँचा और अपनी जलती हुई क्रोध भरी आँखों से विमला की तरफ देख कर बोला, "क्यों कम्बख्त ! अब बता कि तू मेरे हाथ से बच कर कहाँ जा सकती है । आज मैं तुम लोगों के खून से अपनी प्यासी तलवार को सन्तुष्ट करूँगा और....."

बस इससे ज्यादे उसने क्या कहा सो प्रभाकरसिंह सुन न सके और न सुनने के लिये वे वहाँ खड़े रह सके । इस पहाड़ी के नीचे उतर कर और सामने वाले पहाड़ पर चढ़ कर ऊपर ही ऊपर उन लोगों के पास पहुँचने की नीयत से प्रभाकर-सिंह दौड़े और तेजी के साथ सीढ़ियाँ उतरने लगे

प्रभाकरसिंह का मन इस समय बहुत ही व्यग्र हो रहा था और वे सोचते जाते थे कि क्या वहाँ पहुँचते पहुँचते मैं उन तीनों को जीती पाऊँगा और क्या वह दुष्ट मेरा मुकाबला करने के लिये वहाँ मुझे तैयार मिलेगा ?

# चौथा बयान

अब देखना चाहिये कि नागर से बिदा होकर भूतनाथ कहाँ गया और उसने क्या कार्रवाई की।

नागर के मकान से उतर कर भूतनाथ सीधे दक्खिन की तरफ रवाना हुआ और रात भर बराबर चला गया। सुबह होते होते तक वह एक पहाड़ के दामन में पहुँचा जिसके पास एक सुन्दर तालाब था और उस तालाब में नीचे उतर कर छोटी छोटी बारहदरियाँ बनी हुई थीं। उस तालाब पर भूतनाथ ठहर गया और कुछ देर तक आराम करने बाद जरूरी कामों से निपटने के फेर में पड़ा और जब स्नान सन्ध्या इत्यादि से छुट्टी पा चुका तो बटुए में से कुछ मेवा निकाल कर जल खाया और इसके बाद पहाड़ पर चढ़ने लगा।

यहाँ से पहाड़ों का सिलसिला बराबर बहुत दूर तक चला गया था अस्तु भूतनाथ पहाड़ के ऊपर चढ़ कर दोपहर दिन चढ़े तक बराबर चला गया। इस बीच में उसने कई बड़े बड़े और भयानक जङ्गल पार किये और अन्त में वह एक गुफा के मुहाने पर पहुँचा जहाँ साखू और शिशम के बड़े बड़े पेड़ों से अन्धकार हो रहा था। भूतनाथ वहाँ एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और किसी का इन्तजार करने लगा।

भूतनाथ को यहाँ बैठे हुए घण्टे भर से कुछ ज्यादे देर भई होगी कि उसका एक शागिर्द वहाँ आ पहुँचा जो इस समय एक देहाती जमींदार की सूरत बना हुआ था उसने भूतनाथ को ( जो इस समय अपनी असली सूरत में था ) देखते ही प्रणाम किया और बोला, "मैं श्यामदास हूँ आपको खोजने के लिए काशी गया हुआ था।"

भूत०। आओ हमारे पास बैठ जाओ और बोलो कि वहाँ तुमने क्या क्या देखा और किन किन बातों का पता लगाया।

श्यामदास०। वहाँ बहुत कुछ टोह लेने पर मुझे मालूम हुआ कि प्रभाकरसिंह सही सलामत लड़ाई पर से लौट आये और जब वे उस घाटी में गये तो जमना सरस्वती और इन्दुमति को न पाकर बहुत ही परेशान हुए। इसके बाद वे इन्द्रदेवजी के पास गये और अपने दोस्त गुलाबसिंह के साथ कई दिनों तक वहाँ मेहमान रहे।

भूत० । ठीक है, यह खबर मुझे भी वहाँ लगी थी, मैं भी इन्द्रदेव को देखने के लिये वहाँ गया था क्योंकि आजकल वे बीमार पड़े हुए हैं। अच्छा तब क्या हुआ ?

श्याम० । इसके बाद मैं जमानिया चला गया, वहाँ मालूम हुआ कि कुँअर गोपालसिंहजी की शादी के बारे में तरह तरह की खिचड़ी पक रही है जिसका खुलासा हाल मैं फिर किसी समय आपसे बयान करूँगा, इसके अतिरिक्त आज पन्द्रह दिन से भैयाराजा ( गोपालसिंह के चाचा ) कहीं गायब हो गये हैं, बाबाजी ( दारोगा ) वगैरह उनकी खोज में लगे हुए हैं, बहुत से जासूस भी चारो तरफ भेजे गये हैं, मगर अभी तक उनका पता नहीं लगा ।

भूत० । ऐसी अवस्था में कुँअर गोपालसिंह तो बहुत ही परेशान और दुःखी हो रहे होंगे ?

श्याम० । होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर उनके चेहरे पर उदासी और तरद्दुद की कोई निशानी मालूम नहीं पड़ती और इस बात से लोगों को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है । आज तीन चार दिन हुए होंगे कि कुँअर गोपालसिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए 'कैलाश' गये थे, दोपहर तक वहाँ रह कर पुनः जमानिया लौट गये । सुनते हैं कि इन्द्रदेव भी दो चार दिन में जमानिया जाने वाले हैं ।

भूत० । इन्द्रदेव के बारे में जो कुछ सुना करो उसका निश्चय मत माना करो, वह बड़ा ही विचित्र आदमी है और यद्यपि मुझे विश्वास है कि वह मेरे साथ कभी कोई बुराई न करेगा मगर फिर भी मैं उससे डरता हूँ । दूसरी बातों को जाने दो उसके चेहरे से इस बात का पता नहीं लगता कि वह खुश हैं या नाखुश ।

श्याम० । इन्द्रदेवजी चाहे आपके दोस्त हों मगर मुझे इस बात का शक जरूर है कि वे जमना और सरस्वती को मदद दे रहे हैं ।

भूत० । शक क्या मुझे तो इस बात का यकीन सा हो रहा है परन्तु हजार कोशिश करने पर भी मुझे इसका कोई पक्का सबूत नहीं मिलता, अभी तक मैं इस विषय का भेद जानने के लिए बराबर कोशिश कर रहा हूँ ।

श्याम० । ठीक है परन्तु मैं तो इसी बात को एक बहुत बड़ा सबूत समझता हूँ कि जमना और सरस्वती उस अद्भुत घाटी में रहती हैं जो एक छोटा सा

तिलिस्म समझा जा सकता है। क्या इन्द्रदेव के अतिरिक्त किसी दूसरे आदमी ने उन्हें ऐसी सुन्दर घाटी दी होगी ? मुझे तो ऐसा विश्वास नहीं होता।

भूत०। जो हो मगर फिर भी यह एक अनुमान है प्रमाण नहीं। खैर इस विषय पर इस समय बहस करने की कोई जरूरत नहीं, मैं आज किसी दूसरे ही तरद्दुद में पड़ा हुआ हूँ जिसके सबब से मेरी तबीयत बहुत ही बेचैन हो रही है।

श्याम०। वह क्या ?

भूत०। तुम जानते हो कि तुम्हारे भाई रामदास की मदद से मैं जमना सरस्वती इन्दुमति तथा उनकी लौंडियों को उसी घाटी में एक कुएँ के अन्दर ढकेल कर जहन्नुम में पहुँचा चुका हूँ।

श्याम०। जी हाँ, उसी में मेरा भाई भी तो.....

भूत०। बेशक मुझे रामदास के लिए बड़ी चिन्ता लगी हुई है, मगर जिस अवस्था में मैं रामदास को देख कर लौटा हूँ उसे विचारने से खयाल होता है कि जमना सरस्वती और इन्दुमति जीती बच गई हों तो कोई ताज्जुब नहीं।

श्याम०। सम्भव है कि ऐसा ही हुआ हो, परन्तु जीती बच जाने पर भी मैं समझता हूँ कि वे सब कुछ दिन बाद भूख और प्यास की तकलीफ से मर गई होंगी।

भूत०। नहीं ऐसा नहीं हुआ, अभी कल ही मैंने काशी में सुना है कि वे तीनों प्रभाकरसिंह के साथ बरना नदी के किनारे घूमती फिरती देखी गई हैं।

श्याम०। ( चौंक कर ) हैं ! अगर ऐसी बात है तो उन लोगों की तरह मेरा भाई भी बच कर निकल भागा होगा !!

भूतनाथ०। होना तो ऐसा ही चाहिये था मगर रामदास अभी तक मुझ से नहीं मिला।

श्याम०। तो आपने काशी में किसकी जुबानी ऐसा सुना था।

इसके जवाब में भूतनाथ ने बाबू साहब और नागर तथा चन्द्रशेखर का कुछ हाल बयान किया और कहा—

भूत०। जमना सरस्वती और इन्दुमति के विषय में मेरा खयाल है कि रामलाल (बाबू साहब) भी कुछ जानता होगा, मगर उस समय डाँट डपट बताने पर भी उसने मुझसे कुछ नहीं कहा।

श्याम०। अगर आप आज्ञा दें और बुरा न मानें क्योंकि वह आपका साला है तो मैं उसे अपने फन्दे में फँसा कर असल भेद का पता लगा लूँ। मुझे विश्वास है कि अगर जमना और सरस्वती छूट कर आ गई हैं तो मेरा भाई भी उस आफत से जरूर बच गया होगा।

इतने ही में भूतनाथ की निगाह मैदान की तरफ जा पड़ी, एक आदमी को अपनी तरफ आते देख वह चौंका और बोला—

भूत०। देखो देखो वह कौन आ रहा है !!

श्याम०। ( मैदान की तरफ देख कर ) हाँ कोई आ रहा है ! ईश्वर करे मेरा भाई रामदास ही हो !

भूत०। मेरे पक्षपाती के सिवाय दूसरा कोई यहाँ कब आ सकता है।

देखते ही देखते वह आदमी भूतनाथ के पास आ पहुँचा और झुक कर सलाम करने बाद बोला, "मेरा नाम रामदास है, पहिचान के लिए मैं 'चेंचला' शब्द का परिचय देता हूँ। ईश्वर की कृपा से मेरी जान बच गई और मैं राजी-खुशी आपकी खिदमत में हाजिर हो गया, खाली हाथ नहीं बल्कि अपने साथ एक ऐसी चीज लाया हूँ जिसे देख कर आप फड़क उठेंगे और बार बार मेरी पीठ ठोंकेंगे।"

भूत०। ( प्रसन्न होकर ) वाह वाह ! तुम जो कुछ तारीफ का काम करो वह थोड़ा है ! तुम्हारे ऐसा नेक ईमानदार और धूर्त शागिर्द पाकर मैं दुनिया में अपने को धन्य मानता हूँ। आओ मेरे पास बैठ जाओ और कहो किस तरह तुम्हारी जान बची और मेरे लिए क्या तोहफा लाये हो ?

रामदास परिचय लेने बाद अपने भाई श्यामलाल के गले मिला और भूतनाथ के पास बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगा:—

राम०। मेरी जान ऐसी दिल्लगी के साथ और ऐसे अच्छे ढंग से बची है कि उसे याद कर के मैं बार बार खुश हुआ करता हूँ।

श्याम०। मैंने अभी अभी ओस्तादजी से यही बात कही थी कि अगर जमना सरस्वती और इन्दु बच कर निकल आई हैं तो मेरा भाई भी जरूर बचकर निकल आया होगा।

राम० । ( ताज्जुब के ढंग पर ) सो क्या ? जमना सरस्वती और इन्दुमति छूट कर कैसे निकल आईं ?

भूत० । कैसे छूट कर निकल आईं सो तो मैं नहीं जानता मगर इतना सुना है कि वे तीनों प्रभाकरसिंह के साथ काशी में बरना नदी के किनारे टहलती हुई देखी गई हैं ।

राम० । कब देखी गई हैं ?

भूत० । आज आठ दस दिन हुए होंगे ।

राम० । और उन्हें देखा किसने ?

भूत० । मेरे साले रामलाल ने ।

राम० । झूठ, बिल्कुल झूठ ! अगर आपने स्वयं अपनी आँखों से देखा होता तब भी मैं न मानता ।

भूत० । सो क्यों ?

राम० । अभी चौबीस घंटे भी नहीं हुए होंगे कि मैं उन्हें तिलिस्म के अंदर फँसी हुई छोड़ कर आया हूँ ।

भूत० । किस तिलिस्म में ?

राम० । उसी तिलिस्म में जिस कूँए में आपने उन तीनों को फेंक दिया था वह उसी घाटी वाले तिलिस्म का एक रास्ता है । उसके अन्दर गया हुआ आदमी मरता नहीं बल्कि तिलिस्म के अन्दर फँस जाता है, यही सबब है कि उन लोगों के साथ ही साथ मैं भी उस तिलिस्म में जा फँसा । कुछ दिन बाद प्रभाकरसिंह उन तीनों की खोज में उस तिलिस्म के अन्दर गये और वहाँ यकायक मुझसे मुलाकात हो गई । मुझे देख कर वे धोखे में पड़ गये क्योंकि ईश्वर की प्रेरणा से मैं उस समय भी हरदेई की सूरत में था । प्रभाकरसिंह ने मुझसे कई तरह के सवाल किये और मैंने उन्हें खूब ही धोखे में डाला । उनके पास एक छोटी सी किताब थी जिसमें उस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ था । उसी किताब की मदद से वे तिलिस्म के अन्दर गये थे । मैंने धोखा देकर वह किताब उनकी जेब में से निकाल ली और उसी की मदद से मुझे छुटकारा मिला । तिलिस्म के निकलते ही आपसे मिलने के लिए इस तरफ रवाना हुआ और उन सभों को के अन्दर ही छोड़ दिया । ( बटुए में से किताब निकाल कर और भूत-

नाथ के हाथ में देकर ) देखिए यही वह तिलिस्मी किताब है, अब आप इसकी मदद से बखूबी उस तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं।

भूत०। ( किताब देख कर और दो चार पन्ने उलट पुलट कर रामदास की पीठ ठोंकता हुआ ) शाबाश शाबाश, तुमने वह काम किया जो आज मेरे किये भी कदाचित् नहीं हो सकता था ! वाह वाह वाह ! अब मेरे बराबर कौन हो सकता है ! अच्छा अब तुम हमारे साथ इस खोह के अन्दर चलो और कुछ खा पीकर निश्चिन्त होने के बाद मुझसे खुलासे तौर पर कहो कि उस कुएँ में जाने के बाद क्या हुआ और किस तरह यह किताब तुम्हारे हाथ लगी। निःसन्देह तुमने बड़ा काम किया, तुम्हारी जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है। अच्छा यह तो बताओ कि यह तिलिस्मी किताब प्रभाकरसिंह को कहाँ से मिली क्या इस बात का भी कुछ पता लगा ?

राम०। इसके विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता।

भूत०। खैर इसके जाँच करने की कुछ विशेष जरूरत भी नहीं है।

राम०। मैं समझता हूँ कि अब आप उस तिलिस्म के अन्दर जरूर जायँगे और जमना और सरस्वती तथा इन्दुमति को अपने कब्जे में करेंगे ?

भूत०। जरूर, क्या इसमें भी कोई शक है ! अभी घण्टे देढ़ घण्टे में हम और तुम यहाँ से रवाना हो जायंगे और आधी रात बीतने के पहिले ही वहाँ जा पहुँचेंगे। अब तो हमलोग पास आ गये हैं सिर्फ तीन चार घण्टे का ही तो रास्ता है। आज के पहिले जमना और सरस्वती का इतना डर न था जितना अब उनके खयाल से मैं काँप उठता हूँ क्योंकि पहिले तो सिवा दयाराम के मारने के और किसी तरह का इल्जाम वे मुझ पर नहीं लगा सकती थीं और उस बात का कुछ सबूत मिल भी नहीं सकता था क्योंकि मैंने ऐसा किया ही नहीं, परन्तु अब तो वे लोग कई तरह का इल्जाम मुझ पर लगा सकती हैं और बेशक इधर मैंने उन सभों के साथ बड़ी बड़ी बुराइयाँ भी की हैं, ऐसी अवस्था में उनका बच जाना मेरे लिये बड़ा ही अनर्थ-कारक होगा अस्तु जिस तरह हो सकेगा मैं जमना सरस्वती इन्दु प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह को भी जान से मार कर बखेड़ा तै करूँगा। हाँ गुलाबसिंह का कुछ पता है कि वह कहाँ है

और क्या कर रहा है ? क्योंकि तुम्हारी जुबानी जो कुछ सुना है उससे मालूम होता है कि वह प्रभाकरसिंह के साथ तिलिस्म के अन्दर नहीं गया।

राम०। हाँ ठीक है, पर गुलाबसिंह का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं हुआ। अच्छा मैं एक बात आपसे पूछा चाहता हूँ।

भूत०। वह क्या ?

राम०। आपने जो अभी अपना हाल बयान किया है उसमें चन्द्रशेखर का हाल सुनने से मुझे बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है, कृपा कर यह बताइये कि वह चन्द्रशेखर कौन है और आप उससे इतना क्यों डरते हैं ! क्या उसे अपने कब्जे में करने की सामर्थ्य आपमें नहीं है ?

भूत०। ( उसकी याद से काँप कर ) इस दुनिया में मेरा सब से बड़ा दुश्मन वही है, ताज्जुब नहीं कि एक दिन उसी की बदौलत जीते जागते रहने पर भी मुझे यह दुनियाँ छोड़नी पड़े। वह बड़ा ही बेढब आदमी है, बड़ा ही विचित्र है, बड़ा ही भयानक है, तथा ऐयारी में भी बड़ा ही होशियार है। कुश्ती में मैं दो दफे उससे हार चुका हूँ और ऐयारी में वह कई दफे मुझे जक दे चुका है आश्चर्य होता है कि उसके बदन पर कोई हरबा असर नहीं करता। मालूम उसने किसी तरह का कवच पहिर रक्खा है या ईश्वर ने उसका बदन ही ऐसा बनाया है ! उसके बदन पर मेरी दो तलवारें टूट चुकी हैं ! उसकी तो सूरत ही देख कर मैं बदहवास हो जाता हूँ।

राम०। ( आश्चर्य के साथ ) आखिर वह है कौन ?

भूत०। ( कुछ सोच कर ) अच्छा फिर कभी उसका हाल तुमसे कहेंगे, इस समय जो कुछ बातें दिमाग में पैदा हो रही हैं उन्हें पूरा करना चाहिये अर्थात् जमना सरस्वती और इन्दुमति के बखेड़े से तो छुट्टी हो ले फिर चन्द्रशेखर को भी देख लिया जायगा, आखिर वह अमृत पीकर थोड़े ही आया होगा।

इतना कह कर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और अपने दोनों शागिर्दों को साथ लिये हुए खोह में अन्दर चला गया। इस समय रात घण्टे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी।

# पांचवां बयान

दूसरी पहाड़ी पर चढ़ कर ऊपर ही ऊपर जमना सरस्वती और इन्दुमती के पास पहुँचने में जल्दी करने पर भी प्रभाकरसिंह को आधे घण्टे से ज्यादा देर लग गई। क्या इतनी देर तक दुश्मन ठहर सकता है? क्या इतनी देर तक वे नाजुक औरतें ऐसे भयानक दुश्मन के हाथ से अपने को बचा सकती हैं? क्या इस निर्जन स्थान में कोई उन औरतों का मददगार पहुँच सकता है? नहीं ऐसी बात तो नहीं हो सकती!" यही सब कुछ सोचते हुए प्रभाकरसिंह बड़ी तेजी के साथ रास्ता तै करके वहाँ पहुँचे जहाँ जमना सरस्वती और इन्दुमति को छोड़ गये थे। उन्हें यह आशा न थी उन तीनों से मुलाकात होगी, मगर नहीं, ईश्वर बड़ा ही कारसाज है। उसने इस निर्जन स्थान में भी उन औरतों के लिये एक बहुत बड़ा मददगार भेज दिया जिसकी बदौलत प्रभाकरसिंह के पहुँचने तक वे तीनो दुश्मन के हाथ से बची रह गईं।

प्रभाकरसिंह ने वहाँ पहुँच कर देखा कि जमना सरस्वती और इन्दुमति दुश्मन के खौफ से बदहवास होकर मैदान की तरफ भागी जा रही हैं और एक नौजवान बहादुर आदमी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है तलवार से उस दुश्मन का मुकाबला कर रहा है जो उन तीनों औरतों को मारने के लिये वहाँ आया था। यह तमाशा देख कर प्रभाकरसिंह तरद्दुद में पड़ गये और सोचने लगे कि हम उन भागती हुई औरतों को ढाढ़स देकर लौटा लावें या पहिले इस बहादुर की मदद करें जो इस समय हमारे दुश्मन का मुकाबला बड़ी बहादुरी के साथ कर रहा है। उन दोनों बहादुरों की अद्भुत लड़ाई देख कर प्रभाकरसिंह प्रसन्न हो गये। थोड़ी देर के लिये उनके दिल से तमाम कुलफत जाती रही और वे एक टक उन दोनों की लड़ाई का तमाशा देखने लगे। वह शैतान (जो जमना इत्यादि को मारने आया था) यद्यपि बहादुर था और लड़ाई में अपनी तमाम कारीगरी खर्च कर रहा था, मगर उस नकाबपोश के मुकाबले वह बहुत दबा हुआ मालूम पड़ने लगा, यहाँ तक कि उसका दम फूलने लगा और नकाबपोश के मोढ़े पर बैठ कर उसकी तलवार दो टुकड़े हो गई।

कुछ देर के लिये लड़ाई रुक गई और दोनों बहादुर हटकर खड़े हो गये।

उस शैतान दुश्मन को जिसका नाम इस मौके के लिये हम बैताल रख लेते हैं विश्वास था कि तलवार टूट जाने पर नकाबपोश उस पर जरूर हमला करेगा, मगर नकाबपोश ने ऐसा न किया। वह हट कर खड़ा हो गया और बैताल से बोला, "कहो अब किस चीज से लड़ोगे ? मैं उस आदमी पर हर्बा चलाना उचित नहीं समझा जिसका हाथ हर्बे से खाली हो।"

इसका जवाब बैताल ने कुछ न दिया उसी समय नकाबपोश ने प्रभाकरसिंह की तरफ देखा और कहा—"मुझे तुम्हारे मदद की कोई जरूरत नहीं है, तुम (हाथ का इशारा करके) उन औरतों को सम्हालो और ढाढ़स दो जो इस शैतान के डर से बदहवास होकर भागी जा रही हैं या दुश्मन का मुकाबला करो तो मैं उन्हें जाकर समझाऊँ और यहाँ लौटा कर ले आऊँ।"

प्रभाकरसिंह के दिल में यह खयाल बिजली की तरह दौड़ गया कि अगर उन औरतों की तरफ जाता हूँ तो यह नकाबपोश मुझे नामर्द समझेगा और खयाल करेगा कि प्रभाकरसिंह दुश्मन का मुकाबला करने से डर गया और अगर स्वयम् दुश्मन का मुकाबला करके नकाबपोश को औरतों की तरफ जाने के लिये कहता हूँ तो क्या जाने यह भी उन सभों का दुश्मन ही हो और उन औरतों के पास जाकर कोई बुराई का काम कर बैठे। इस खयाल ने क्षणमात्र के लिये प्रभाकरसिंह को चुप कर दिया, इसके बाद प्रभाकरसिंह ने कहा, "जो तुम कहो वही करूँ ?"

नकाबपोश०। बेहतर होगा कि तुम उन्हीं औरतों की तरफ जाओ।

"बहुत अच्छा" कह प्रभाकरसिंह बड़ी तेजी के साथ उनकी तरफ लपक पड़े जो भागती हुई अब कुछ कुछ आँखों की ओट हो चली थीं। वे भागती जाती थीं और पीछे की तरफ फिर फिर कर देखती भी जाती थीं। दौड़ते दौड़ते वे ऐसे स्थान पर पहुँची जिसके आगे एक लम्बी और बहुत ही ऊँची दीवार थी और बीच में उस पार जाने के लिए एक दर्वाजा बना हुआ था जो इस समय खुला था। उन औरतों को इतनी फुर्सत कहाँ कि दीवार की लम्बाई चौड़ाई की जाँच करतीं या दूसरी तरफ भागने की कोशिश करतीं! वे सीधी उस दर्वाजे के अन्दर घुस गईं, खास करके इस खयाल से भी कि अगर इसके अन्दर जाकर दर्वाजा बन्द कर लेंगे तो दुश्मन से बचाव हो जायगा। उसी समय प्रभाकरसिंह

भी नजदीक पहुँच गये और इन्दुमति की निगाह प्रभाकरसिंह के ऊपर जा पड़ी। प्रभाकरसिंह ने हाथ के इशारे से उन्हें रुक जाने के लिये कहा परन्तु उसी समय वह दर्वाजा बन्द हो गया जिसके अन्दर जमना सरस्वती और इन्दुमति घुस गई थीं। प्रभाकरसिंह को यह चिन्ता उत्पन्न हुई कि यह दर्वाजा खुदबखुद बन्द हो गया या इन्दुमति ने जान बूझ कर बन्द कर दिया।

थोड़ी ही देर में प्रभाकरसिंह उस दर्वाजे के पास जा पहुँचे और धक्का देकर उसे खोलना चाहा मगर दर्वाजा न खुला। प्रभाकरसिंह ने चाहा कि आगे बढ़ कर देखें कि यह दीवार कहाँ तक गई है परन्तु उसी समय सरस्वती की आवाज कान में पड़ने से वे रुक गये और ध्यान देकर सुनने लगे। यह आवाज उस दर्वाजे के पास दीवार के अन्दर से आ रही थी मानो सरस्वती किसी दूसरे आदमी से बातचीत कर रही है जैसा कि नीचे लिखा जाता है :—

सरस्वती०। हाय! क्या यहाँ भी दुष्टों से हम लोगों का पिण्ड न छूटेगा? ये लोग इस तिलिस्म के अन्दर आ क्योंकर गये यही ताज्जुब है !!

जवाब०। (जो किसी जानकार आदमी के मुँह से निकली हुई आवाज मालूम पड़ती थी) खैर अब तो आ ही गये, अब तुम लोगों के निकाले हम लोग नहीं निकल सकते, और अब तुम लोग जान बचा ही कर क्या करोगी क्योंकि प्रभाकरसिंह की निगाह में तुम लोगों की कुछ भी इज्जत न रही, उन्हीं को नहीं बल्कि मुझे भी वह सब हाल मालूम हो गया इस समय तुम लोग उसी पाप का फल भोग रही हो, अफसोस मुझे तुम लोगों से ऐसी आशा कदापि न थी! अगर मैं ऐसा जानता तो इस पवित्र घाटी को तुम लोगों के पापमय शरीर से कभी अपवित्र न होने देता।

प्रभाकर०। (ताज्जुब से मन में) हैं! क्या यह आवाज इन्द्रदेव की है?

सरस्वती०। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो! क्या किसी दुष्ट ने हम लोगों को बदनाम किया है? क्या किसी कमीने ने हम लोगों पर कलंक का धब्बा लगाना चाहा है? नहीं, कदापि नहीं, स्वप्न में भी ऐसा नहीं हो सकता! हम लोगों के पवित्र मन को डावांडोल कराने वाला इस संसार में कोई भी नहीं है! मैं इसके लिये खुले दिल से कसम खा सकती हूँ।

जवाब०। दुनिया में जितने बदकार आदमी होते हैं वे कसम खाने में बहुत

तेज होते हैं। मुझ से तुम लोगों की यह चालाकी नहीं लग सकती। मैं जो कुछ इस समय कह रहा हूँ वह केवल किसी से सुनी सुनाई बातों के कारण नहीं है बल्कि मुझे इस बात का बहुत ही पक्का सबूत मिल चुका है जिससे तुम कदापि इन्कार नहीं कर सकती।

प्रभाकर०। (मन में) बेशक वह बात ठीक मालूम होती है जो हरदेई ने मुझ से कही थी।

सरस्वती०। कैसा सबूत और कैसी बदनामी? भला मैं भी तो उसे सुनूं।

जवाब०। तुम तो जरूर ही सुनोगी, अभी नहीं तो और घण्टे भर में सही, प्रभाकरसिंह के सामने ही मैं इस बात को खोलूँगा और इस कहावत को चरितार्थ करके दिखा दूँगा कि "छिपत न दुष्कर पाप, कोटि जतन कीजे तऊ।"

सरस्वती०। कोई चिन्ता नहीं, मैं भी अच्छी तरह उस आदमी का मुँह काला करूँगी जिसने हम लोगों को बदनाम किया है, और अपने को अच्छी तरह निर्दोष साबित कर दिखाऊँगी।

आवाज०। अगर तुम्हारे किये हो सकेगा तो जरूर ऐसा ही करना।

सरस्वती०। हाँ हाँ, जरूर ही ऐसा करूँगी। मेरा दिल उसी समय खटका था जब प्रभाकरसिंहजी ने कुछ व्यंग के साथ बातें की थीं। मैं उस समय उसका मतलब कुछ नहीं समझ सकी थी मगर अब मालूम हो गया कि कोई महापुरुष हम लोगों को बदनाम करके अपना काम निकाला चाहते हैं।

जवाब०। इस तरह की बातें तुम प्रभाकरसिंह को समझाना, मुझ पर इसका कुछ भी असर नहीं हो सकता, यदि मैं तुम्हारा नातेदार न होता तो मुझे इतना कहने की कुछ जरूरत भी न थी, मैं तुम लोगों का मुँह भी न देखता और अब भी ऐसा ही करूँगा। मैं नहीं चाहता कि अपना हाथ औरतों के खून से नापाक करूँ तथापि एक दफे प्रभाकरसिंह के सामने इन बातों को साबित जरूर करूँगा जिसमें कोई यह न कहे कि जमना सरस्वती और इन्दुमति पर किसी ने व्यर्थ ही कलंक लगाया। अच्छा अब मैं जाता हूँ फिर मिलूँगा।

सरस्वती०। अच्छा अच्छा देखा जायगा, इन चालबाजियों से काम नहीं चलेगा!

बस इसके बाद किसी तरह की आवाज न आई, अस्तु कुछ देर तक और

कान लगा कर ध्यान देने के बाद प्रभाकरसिंह पुनः उस दीवार के अन्दर जाने का उद्योग करने लगे। इस ख्याल से कि देखें यह दीवार कहाँ पर खतम हुई है वे दीवार के साथ ही साथ पूरब तरफ रवाना हुए। दीवार बहुत दूर तक नहीं गई थी, केवल चार या पाँच बिगहे के बाद दीवार मुड़ गई थी अस्तु प्रभाकरसिंह भी घूम कर दूसरी तरफ चल पड़े। बीस पचीस कदम आगे जाने बाद उन्हें एक खुला दर्वाजा मिला प्रभाकरसिंह उस दर्वाजे के अन्दर चले गये और दूर से जमना सरस्वती और इन्दुमति को एक पेड़ के नीचे बैठे देखा जो नीचे की तरफ सिर झुकाये हुये आँखों से गरम आँसू गिरा रही थीं।

क्रोध से भरे हुए प्रभाकरसिंह उन तीनों के पास चले गये और सरस्वती की तरफ देख के बोले—"वह कौन आदमी था जो अभी तुमसे बातें कर रहा था?"

सरस्वती०। मुझे नहीं मालूम कि वह कौन था!

प्रभा०। फिर तुमसे इस तरह की बातें करने की उसे जरूरत ही क्या थी?

सरस्वती०। सो भी मैं कुछ कह नहीं सकती!

प्रभाकर०। हाँ ठीक है, मुझसे कहने की तुम्हें जरूरत ही क्या है! खैर जाने दो, मुझे भी विशेष सुनने की कोई आवश्यकता नहीं है, मैं तो पहिले ही हरदेई की जुबानी तुम लोगों की बदकारियों का हाल सुन कर अपना दिल ठंडा कर चुका था, अब इस आदमी की बातें सुन कर और भी रहा सहा शक जाता रहा। यद्यपि तुम लोग इस योग्य थी कि इस दुनिया से उठा दी जाती और यह पृथ्वी तुम्हारे असह्य बोझ से हलकी कर दी जाती, परन्तु नहीं उस आदमी की तरह जो अभी तुम से बातें कर रहा था मैं भी तुम लोगों के खून से अपना हाथ अपवित्र नहीं किया चाहता, खैर तुम दोनों बहिनों से तो मुझे कुछ विशेष कहना नहीं है, रही इन्दुमति, सो इसे मैं इस समय से सदैव के लिये त्याग करता हूँ। शास्त्र में लिखा हुआ है कि 'किसी का त्याग कर देना मार डालने ही के बराबर है'।

इन्दु०। (रोती हुई हाथ जोड़ कर) प्राणनाथ! क्या तुम दुश्मनों की जुबानी गढ़ी गढ़ाई बातें सुन कर मुझे त्याग कर दोगे!!

प्रभा०। हाँ त्याग कर दूँगा क्योंकि जो कुछ बातें तुम्हारे विषय में मैंने सुनी है उन्हें यह दूसरा सबूत मिल जाने के कारण मैं सत्य मानता हूँ, केवल इतना

ही नहीं, तुम्हारी ही जुबान से उन बातों की पुष्टि हो चुकी है। अब इसकी भी कोई जरूरत नहीं कि तुम लोगों को इस तिलिस्म के बाहर ले जाने का उद्योग करूँ अस्तु अब मैं जाता हूँ। (छाती पर हाथ रख कर) मैं इस वज्र सी चोट को इसी छाती पर सहन करूँगा और फिर जो कुछ ईश्वर दिखावेगा देखूँगा, मुझे विश्वास हो गया कि बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह वहाँ से रवाना हो गए। इन्दुमति रो रो कर पुकारती रह गई मगर उन्होंने उसकी कुछ भी न सुनी। जिस खिड़की की राह वे इस दीवार के अन्दर गये थे उसी राह से बाहर चले आये और उस तरफ रवाना हुए जहाँ नकाबपोश और बैताल को लड़ते हुए छोड़ आये थे।

वहाँ पहुँच कर प्रभाकरसिंह ने दोनोंमें से एक को भी न पाया, न तो बैताल ही पर निगाह पड़ी और न नकाबपोश ही की सूरत दिखाई दी। ताज्जुब के साथ प्रभाकरसिंह चारो तरफ देखने और सोचने लगे कि कहीं मैं जगह तो नहीं भूल गया! या दोनों ही तो आपुस में फैसला करके कहीं नहीं चले गये?

कुछ देर तक इधर उधर ढूँढ़ने के बाद प्रभाकरसिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये और झुकी हुई गर्दन को हाथ का सहारा देकर तरह तरह की बातें सोचने लगे। उन्हें इन्दुमति को त्याग देने का बहुत ही रञ्ज था और वे अपनी जल्दबाजी पर कुछ देर के बाद पछताने लग गये थे। वे अपने दिल से कहने लगे कि अफसोस! मैंने इस काम में जल्दबाजी की। यद्यपि इन्दुमति की बदकारी का हाल सुन कर मेरे सिर से पैर तक आग लग गई थी मगर मुझे उसका कुछ सबूत भी तो ढूँढ़ लेना चाहिये था! सम्भव है कि हरदेई इन सभों की दुश्मन बन गई हो और उसने हम लोगो को रञ्ज पहुँचाने के खयाल से ऐसी मनगढ़न्त कहानी कह कर और इन्दुमति पर इलजाम लगा कर अपना कलेजा ठण्ढा किया हो! अगर वास्तव में यही बात हो तो कोई ताज्जुब नहीं क्योंकि हरदेई का उन तीनों के साथ न रह कर अलग ही तिलिस्म के अन्दर दिखाई देना कोई मामूली बात नहीं है बल्कि इसका कोई खास सबब जरूर है। अच्छा तो वह दूसरा आदमी कौन हो सकता है जिसने उस दीवार के अन्दर सरस्वती से बातचीत की थी? सम्भव है कि बैताल की तरह वह भी इन्दुमति जमना और सरस्वती का दुश्मन हो और मुझे सुनाने और धोखे में डालने के लिए उसने यह

ढङ्ग रचा हो ! हो सकता है, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। साथ ही इसके यह भी तो सोचना चाहिये कि अगर जमना और सरस्वती को ऐसा ही बुरा काम करना होता तो वे मुझे और इन्दुमति को अपने घर क्यों लातीं और मेरे साथ ऐसा अच्छा सलूक क्यों करतीं ? नहीं नहीं इन्दुमति से मुझे ऐसी आशा नहीं हो सकती। वह इन्दुमति जो लड़कपनसे आज तक अपने विशुद्ध आचरणसे बराबर अच्छी और नेक गिनी गई है आज ऐसा कर्म करे यह कब सम्भव है ! और हो भी तो क्या आश्चर्य है, आदमी के दिल को बदलते क्या देर लगती है ? जो हो मगर मुझे ऐसी जल्दी न करनी चाहिये थी। और कुछ नहीं तो इन्दुमति से हरदेई वाली बात खुलासे तौर पर कह कर उसका जवाब भी तो सुन लेना उचित था। आह ! मैंने जो कुछ किया वह कर्तव्य के विरुद्ध था। हरदेई ने जरूर मुझे धोखे में डाला, वह दगाबाज थी, अगर ऐसा न होता तो मेरे जेब से तिलिस्मी किताब चुरा कर क्यों भाग जाती ? परन्तु उसके भाग जाने का भी तो कोई सबूत नहीं है। उसका खून से भरा हुआ कपड़ा केलों की झुरमुट में मिला था जिससे खयाल हो सकता है कि वह दुश्मनों के हाथ पड़ गई। लेकिन अगर ऐसा ही था और दुश्मन उसके सर पर आ गया था तो उसने चिल्ला कर मुझे जगा क्यों न दिया। क्या सम्भव है कि वह खून से भरा हुआ कपड़ा भी हरदेई के हाथ का रक्खा हो !"

इसी तरह की बातें थोड़ी देर तक प्रभाकरसिंह सोचते और दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने से बेचैन होते रहे, इस बात का ठीक ठीक निश्चय नहीं कर सकते थे कि उन्होंने जो कुछ बर्ताव इन्दुमति के साथ किया वह उचित था या अनुचित।

इसी तरह की चिन्ता करते करते सन्ध्या हो गई। सूर्य भगवान इस दुनिया को छोड़ किसी दूसरी ही दुनियाको अपनी चमक दमक से प्रफुल्लित करने के लिये चले गये। यह बात औरों को चाहे बुरी मालूम हो परन्तु खुले दिल से मुँह दिखाने वालों में आस्मान के सितारों को बहुत भली मालूम हुई, अस्तु वे दुनिया के विचित्र मामले को लापरवाही के साथ देखने के लिये निकल आये और औरों के साथ ही प्रभाकरसिंह की अवस्था पर अफसोस करने लगे। प्रभाकरसिंह अपने विचारों में ऐसा डूबे हुए थे कि उनको इस बात की कुछ खबर ही न थी।

जब रात कुछ ज्यादे बीत गई और सर्दी लगने लगी तब प्रभाकरसिंह चैतन्य हुए और आस्मान की तरफ देखकर आश्चर्य करने लगे तथा अपने ही आप बोल उठे, "आह ! बहुत देर हो गई। मैंने इस तरफ कुछ ध्यान नहीं दिया और न अपने लिये कुछ बन्दोबस्त ही किया ! अस्तु अब तो रात इसी जंगल मैदान में बिता देनी पड़ेगी।"

अपनी चिन्ता में निमग्न प्रभाकरसिंह को खाने पीने की तथा और किसी जरूरी काम की भी फिक्र न रही और वे पुनः उसी तरह सिर नीचा करके सोचने लग गये। ऐसी अवस्था में निद्रादेवी ने भी उनका साथ छोड़ दिया और उन्हें अपने खयाल में डूबे रहने दिया।

आधी रात बीत जाने के बाद अपनी बाईं तरफ कुछ उजाला देख प्रभाकरसिंह चौंक पड़े और उसी उजाले की तरफ देखने लगे। यह रोशनी उसी दीवार के अन्दर से आ रही थी जिसके अन्दर जाकर प्रभाकरसिंह ने जमना सरस्वती और इन्दुमति से मुलाकात की थी और अनुचित अवस्था में उनका तिरस्कार किया था।

यह रोशनी मामूली नहीं थी बल्कि बहुत ज्यादे और दिल में खुटका पैदा करने वाली थी, मालूम होता था कि कई मन लकड़ियाँ बटोर कर उसमें किसी ने आग लगा दी हो। प्रभाकरसिंह का दिल धड़कने लगा और वे घबराहट के साथ उस पल पल में बढ़ती हुई रोशनी को बड़े गौर से देखते हुए उठ खड़े हुए।

प्रभाकरसिंह के दिल की इस समय क्या अवस्था थी इसका कहना बड़ा कठिन है। यद्यपि वे उस दीवार के अन्दर जाकर उस रोशनी का कारण जानने के लिये उत्कण्ठित हो रहे थे परन्तु दिल की परेशानी और घबराहट ने मानों उनकी ताकत छीन ली थी और पैर उठाना कठिन हो गया था, तथापि उन्होंने बड़ी कठिनता से अपने दिल को सम्हाला और धीरे धीरे कदम उठा कर उसी दीवार की तरफ जाने लगे। जब उस दीवार के पास पहुँचे तो उसी खिड़की की राह उसके अन्दर घुसे जिस राह से पहिले गये थे। इस समय वह रोशनी जो एक दफे बड़ी तेजी के साथ बढ़ चुकी थी धीरे धीरे कम होने लगी थी।

जहाँ पर जमना सरस्वती और इन्दुमति से मुलाकात हुई थी वहाँ पहुँच कर प्रभाकरसिंह ने देखा कि एक बहुत बड़ी चिता सुलग रही है और बहुत ध्यान देने

पर मालूम होता है कि उसके अन्दर कोई लाश भी जल रही है जो अब अन्तिम अवस्था को पहुँच कर भस्म हुआ ही चाहती है। धूएँ में बदबू होने से भी इस बात की पुष्टि होती थी।

प्रभाकरसिंह का दिल बड़ी तेजी के साथ उछल रहा था और वे बड़ी बेचैनी और घबराहट के साथ उस चिता को देख रहे थे। यकायक उनकी आँखें डबडबा आईं और गरम गरम आँसू उनके गुलाबी गालों पर मोतियों की तरह लुढ़कने लगे। इससे भी उनके दिल की हालत न सम्हली और वे बड़े जोर से पुकार उठे, "हाय! इन्दे! क्या इस धधकती हुई अग्नि के अन्दर तू ही तो नहीं है?" इतना कह कर प्रभाकरसिंह जमीन पर बैठ गये और सर पर हाथ रख कर अपने बेचैन दिल को काबू में लाने की कोशिश करने लगे।

घण्टे भर तक अपने को सम्हालने का उद्योग करने पर भी वे कृतकार्य्य न हुए और फिर उठ कर बड़ी बेदिली के साथ पुनः उस चिता की तरफ देखने लगे जो अब लगभग निर्धूम सी हो रही थी परन्तु उसकी रोशनी अभी तक दूर दूर फैल रही थी।

यकायक प्रभाकरसिंह की निगाह किसी चीज पर पड़ी जो उस चिता से कुछ दूरी पर थी परन्तु आग की रोशनी के कारण अच्छी तरह दिखाई दे रही थी। प्रभाकरसिंह उसके पास चले गये और बिना कुछ सोचे विचारे उसे उठा कर बड़े गौर से देखने लगे। वह कपड़े का एक टुकड़ा था जो हाथ भर से कुछ ज्यादे था प्रभाकरसिंहने पहिचाना कि यह इन्दुमति की उसी साड़ीमें का एक टुकड़ा है जिसे पहिरे हुए आज उन्होंने उसे उसी जगह पर देखा था। इस टुकड़े ने उनके दिल को चकनाचूर कर दिया और उस समय तो उनकी अजीब हालत हो गई जब उस टुकड़े के एक कोने में कुछ बँधा हुआ उन्होंने देखा। खोलने पर मालूम हुआ कि वह एक चीठी है जिसकी लिखावट ठीक इन्दुमति के हाथ की लिखावट सी है, परन्तु अफसोस कि इस रोशनी में तो वह पढ़ी ही नहीं जाती और चिता की आँच अपने पास आने की इजाजत ही नहीं देती। अब उस चिता में इतनी रोशनी भी नहीं रह गई थी कि दूर ही से इस लिखावट को पढ़ सकें।

इस समय कोई दुश्मन भी प्रभाकरसिंह की बेचैनी को देखता तो कदाचित् उनके साथ हमदर्दी का बर्ताव करता।

धीरे धीरे चिता ठंढी हो गई मगर प्रभाकरसिंह ने उसका पीछा न छोड़ा; उसी के पास ही बैठ कर रात बिता दी। हाथ में वह कागज लिये हुए घण्टों तक प्रभाकरसिंह सुबह की सुफेदी का इन्तजार करते रहे और जब पत्र पढ़ने योग्य चाँदना हो गया तब उसे बड़ी बेचैनी के साथ पढ़ने लगे। यह लिखा हुआ था :—

"प्राणनाथ ! बस हो चुका, दुनिया इतनी ही थी, मैं अब जाती हूँ और तुम्हें दयामय परमात्मा के सुपुर्द करती हूँ। मैं जब तक इस दुनिया में रही बहुत ही सुखी रही, तरह तरह के दुःख भोगने पर भी मुझे विशेष कष्ट न हुआ क्योंकि तुम्हारे प्रेम का सहारा हरदम मेरे साथ था, इसके अतिरिक्त आशा-लता की हरियाली जिसका सब कुछ सम्बन्ध तुम्हारे ही शरीर के साथ था मुझे सदैव प्रसन्न रखती थी, परन्तु अब इस दुनिया में मेरे लिये कुछ भी नहीं है और मेरी वह आशा-लता भी बिल्कुल ही सूख गई। तुम्हारे अतिरिक्त यदि और कुछ इस दुनिया में मुझे देखना होता तो मैं अवश्य जीती रहती परन्तु नहीं, जब तुम्हीं ने मुझे त्याग दिया तो अब क्यों और किसके लिये जीऊँ ? मैं इस विचार से बहुत सन्तुष्ट हूँ कि तुम्हें मेरे लिये दुःख न होगा क्योंकि किसी दुष्ट की कृपा से तुम मुझसे रुष्ट हो चुके हो इसीलिये तुमने मुझे त्याग दिया और तुम्हें मेरे मरने का कुछ भी दुःख न होगा, परन्तु यदि कदाचित् किसी समय इस जालसाजी का भण्डा फूट जाय और तुम्हारे विचार से मैं बेकसूर समझी जाऊँ तो यही प्रार्थना है कि तुम मेरे लिये कदापि दुःखित न होना, बस....."

इस पत्र को पढ़ कर प्रभाकरसिंह बहुत ही बेचैन हुए। मालूम होता था कि किसी ने अन्दर घुस कर हाथ से पकड़ के उनका कलेजा ऐंठ दिया है। यद्यपि उन्होंने इन्दुमति का तिरस्कार कर दिया था परन्तु इस समय उनके दिल ने गवाही दे दी कि "हाय ! तूने व्यर्थ इन्दुमति को त्याग दिया ! वह वास्तव में निर्दोष थी इसी कारण तेरे उन शब्दों को बर्दास्त न कर सकी जो उसके सतीत्व में धब्बा लगाने के लिये तूने कहे थे। हाय इन्दु ! अब मुझे मालूम हो गया कि तू वास्तव में निर्दोष थी, आज नहीं तो कल इस बात का पता लग ही जायगा।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने पुनः उस चिता की तरफ देखा और कुछ सोचने के बाद गरम गरम आँसू बहाते हुए वहाँ से रवाना हुए। मगर उनकी भृकुटी, उनके

फड़कते हुए होंठ, और उनकी लाल लाल आँखों से जाना जाता है कि इस समय किसी से बदला लेने का ध्यान उनके दिल में जोश मार रहा है।

उस दीवार के बाहर हो जाने पर प्रभाकरसिंह को यकायक यह खयाल पैदा हुआ कि इन्दुमति का हाल तो जो कुछ हुआ मालूम हो गया परन्तु जमना और सरस्वती के विषय में कुछ मालूम न हुआ, सम्भव है कि वहाँ उन लोगों ने भी इसी तरह कुछ लिख कर रख दिया हो कि जिसके देखने से उन लोगों का कुछ हाल मालूम हो जाय; यदि उन लोगों से मुलाकात हो गई तो उनकी जुबानी इन्दुमति की अन्तिम अवस्था का ठीक ठीक हाल मालूम हो जायगा। यह सोच कर प्रभाकरसिंह पुनः पलट पड़े और उस चिता के पास जाकर इधर उधर देखने लगे परन्तु और किसी बात का पता न लगा, लाचार प्रभाकरसिंह लौट कर उस दीवार के बाहर निकल आये।

अब दिन घण्टे भर से ज्यादे चढ़ चुका था। दीवार के बाहर निकल कर प्रभाकरसिंह कुछ सोचने लगे और इधर उधर देखने के बाद कुछ सोच कर एक पेड़ के ऊपर चढ़ गये और दूर दूर तक निगाह दौड़ा कर देखने लगे यकायक उनकी निगाह हरदेई के ऊपर पड़ी जो उसी दीवार की तरफ बढ़ी जा रही थी जिसके अन्दर जमना सरस्वती और इन्दुमति को प्रभाकरसिंह ने छोड़ा था। हरदेई को देखते ही प्रभाकरसिंह पेड़ से नीचे उतरे और बड़ी तेजी के साथ उसकी तरफ जाने लगे।

हरदेई वास्तव में वही नकली हरदेई थी जो एक दफे प्रभाकरसिंह को बेतरह धोखे में डाल चुकी थी अर्थात् भूतनाथ का शागिर्द रामदास इस समय भी हरदेई की सूरत बना हुआ भूतनाथ के साथ ही इस तिलिस्म के अन्दर आया हुआ था और पुनः जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को धोखे में डाल कर या अपने ओस्ताद का कुछ काम निकालना चाहता था, मगर इस समय उसे यह खबर न थी कि प्रभाकरसिंह मुझे देख रहे हैं और न वह प्रभाकरसिंह से मिला ही चाहता था।

रामदास ने जो आशा के विरुद्ध प्रभाकरसिंह को अपनी तरफ आते देखा तो ताज्जुब में आ कर चौंक पड़ा और भाग जाना मुनासिब न समझ कर खड़ा हो कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये।

प्रभाकर० । ( नकली हरदेई के पास पहुँच कर ) हरदेई ! तू यहाँ कैसे आई ?

हरदेई० । मेरी किस्मत मुझे यहाँ ले आई । मैं तो उसी समय अपनी जान से हाथ धो चुकी थी जिस समय आपसे अलग हुई थी, मगर मेरी किस्मत में अभी कुछ दिन और जीना था इस लिए एक महापुरुष की मदद से बच गई ।

प्रभाकर० आखिर तुझ पर क्या आफत आई थी सो तो सुनूँ ?

हरदेई० । आप जब थकावट मिटाने के लिये उस चबूतरे पर लेट गये तो उसी समय आपकी आँख लग गई । मैं बड़ी देर तक चुपचाप बैठी बैठी घबड़ा गई थी इस लिये उठ कर इधर उधर टहलने लगी । घूमती फिरती मैं कुछ दूर निकल गई । उसी समय यकायक पत्तों की झुरमुट में से एक आदमी निकल आया जो स्याह कपड़े और नकाब से अपने बदन और चेहरे को छिपाये हुए था । मैं उसे देखकर घबड़ा गई और दौड़कर आपकी तरफ आने लगी मगर उसने झपट कर मुझे पकड़ लिया और एक मुक्का मेरी पीठ पर इस जोर से मारा कि मैं तल-मला कर बैठ गई । उसने मुझे जबरदस्ती कोई दवा सुँघा दी जिससे मैं बेहोश हो गई और तनोबदन की सुध जाती रही, दूसरे दिन जब मैं होश में आई तो अपने को मैदान और जङ्गल में पड़े हुए पाया, तब से मैं आपको बराबर खोज रही हूँ ।

प्रभाकर० । ( हरदेई की बेतुकी बातों को ताज्जुब से सुन कर ) आखिर उसने तुझे इस तरह सता कर क्या फायदा उठाया ?

हरदेई० । ( कुछ घबड़ानी सी हो कर ) सो तो मैं कुछ भी नहीं जानती ।

प्रभाकर० । उसने छुरी या खञ्जर से तुझे जख्मी तो नहीं किया था ?

हरदेई० । जी नहीं ।

प्रभा० । मैं जब सो कर उठा तो तुझे ढूँढ़ने लगा । एक जगह केले की झुरमुट में तेरे कपड़े का टुकड़ा खून से भीगा हुआ देखा था जिससे मुझे खयाल हुआ कि हरदेई को किसी ने खञ्जर या छुरी से जख्मी किया है ।

हरदेई० । जी नहीं मुझे तो इस बात की कुछ भी खबर नहीं ।

प्रभा० । और वह महात्मा पुरुष कौन थे जिन्होंने तुझे बचाया ?

अभी अभी तू कह चुकी है कि 'बेहोशी के बाद जब मैं होश में आई तो अपनो को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया, अस्तु कैसे समझा जाय कि किसी महापुरुष ने तुझे बचाया ?

नकली हरदेई के चेहरे पर घबराहट की निशानी छा गई और वह इस भाव को छिपाने के लिये मुड़ कर पीछे की तरफ देखने लगी मगर प्रभाकरसिंह इस ढंग को अच्छी तरह समझ गये और जरा तीखी आवाज में बोले, "बस मुझे ज्यादे देर तक ठहरने की फुरसत नहीं है, मेरी बातों का जवाब जल्दी जल्दी देती जा!"

हर०। जो हाँ, जब मैं खुलासे तौर पर अपना हाल कहूँगी तब आपको मालूम हो जायगा कि वह महात्मा कौन था और अब कहाँ है जिसने मुझे बचाया था, अभी मैंने संक्षेप ही में अपना हाल आपसे कहा था।

प्रभा०। खैर तो वह खुलासा हाल कहने में देर क्या है? अच्छा जाने दे, खुलासा हाल भी मैं सुन लूँगा, पहिले मैं तेरी तलाशी लिया चाहता हूँ।

हर०। (घबड़ा कर) तलाशी कैसी और क्यों?

प्रभाकर०। इसका जवाब मैं तलाशी ले लेने के बाद दूँगा।

हर०। आखिर मुझ पर आपको किस तरह का शक हुआ?

प्रभाकर०। मुझे कई बातों का शक हुआ जो मैं अभी कहना नहीं चाहता।

इतना कहते ही प्रभाकरसिंह ने हरदेई का हाथ पकड़ लिया क्योंकि उसके रंग ढंग से मालूम होता था कि वह भागना चाहती है। हरदेई ने पहिले चाहा कि झटका देकर अपने को प्रभाकरसिंह के कब्जे से छुड़ा ले मगर ऐसा न हो सका। प्रभाकरसिंह ने जब देखा कि यह धोखा देकर भाग जाने की फिक्र में है तब उन्हें बेहिसाब क्रोध चढ़ आया और एक मुक्का उसकी गरदन पर मार कर जबरदस्ती उन्होंने उसके ऊपर का कपड़ा खींच लिया।

रामदास यद्यपि ऐयार था मगर उसमें इतनी ताकत न थी कि वह प्रभाकरसिंह का मुकाबला कर सकता। प्रभाकरसिंह के हाथ का मुक्का खा कर वह बेचैन हो गया और उसकी आँखों के आगे अन्धेरा छा गया, फिर उसको हिम्मत न पड़ी कि वह भाग जाने के लिये उद्योग करे। प्रभाकरसिंह को भी विश्वास हो गया कि यह हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है। मामूली कपड़ा उतार लेने के साथ ही प्रभाकरसिंह का बचा बचाया शक भी जाता रहा, साथ ही इसके उन्होंने यह भी निश्चय कर लिया कि उनकी तिलिस्मी किताब जरूर इसी ऐयार ने चुराई है।

तिलिस्मी किताब पा जाने की उम्मीद में प्रभाकरसिंह ने जहाँ तक हो सका बड़ी होशियारी के साथ उसकी तलाशी ली और उसके ऐयारी के बटुए में भी जिसे वह छिपा कर रक्खे हुए था देखा मगर वह किताब हाथ न लगी। तलाशी में केवल ऐयारी का बटुआ खञ्जर और एक कटार उसके पास से मिला जिसे प्रभाकरसिंह ने अपने कब्जे में कर लिया और पूछा, 'बस अब तो तेरा भेद अच्छी तरह खुल गया खैर यह बता कि तेरा क्या नाम है और मेरे साथ तूने इस तरह की दगाबाजी क्यों की?"

राम०। क्या जो कुछ मैं बताऊँगा उस पर विश्वास कर लेंगे।

प्रभाकर०। नहीं।

राम०। फिर इसे पूछने से फायदा ही क्या?

प्रभाकरसिंह ने क्रोध भरी आँखों से उसे सिर से पैर तक देखा और कहा, "बेशक कोई फायदा नहीं, मगर तूने मेरे साथ बड़ी दगाबाजी की और व्यर्थ ही बेचारी इन्दुमति पर झूठा कलंक लगा के उसे और साथ ही इसके मुझे भी बर्बाद कर दिया!"

राम०। बेशक मैंने किया तो बहुत बुरा मगर मैं तो ऐयार हूँ, मालिक की भलाई के लिये उद्योग करना मेरा धर्म है, जो कुछ मुझसे बन पड़ा किया अब आपके कब्जे में हूँ, जो उचित और धर्म समझिये कीजिये।

प्रभाकर०। (क्रोध को दबाते हुए) तू किसका ऐयार है।

राम०। मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि मेरी बातों पर आपको विश्वास न होगा, फिर इन सब बातों को पूछने से क्या फायदा ही क्या है।

प्रभाकरसिंह का दिल पहिले ही से जख्मी हो रहा था, अब जो मालूम हुआ कि हरदेई वास्तव में हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है और इनसे धोखा देकर अपना काम निकालने के लिये इन्दुमति जमना और सरस्वती को बदनाम किया था तो उनके दुःख और क्रोध की सीमा न रही, तिस पर रामदास की ढिठाई ने क्रोधाग्नि को और भड़का दिया, अस्तु वे उचित अनुचित का कुछ भी विचार न कर सके। उन्होंने रामदास की कमर में एक लात मारी कि वह सम्हल न सका जमीन पर गिर पड़ा, इसके बाद लात और जूते से उसकी ऐसी खातिरदारी की कि वह बेहोश हो गया और उसके मुँह से खून भी बहने लगा। इतने पर भी

प्रभाकरसिंह का क्रोध शान्त न हुआ और वे उसे कुछ और भी सजा दिया ही चाहते थे कि सामने से आवाज आई ‘,हाँ हाँ, बस जाने दो, हो चुका बहुत हुआ !”

प्रभाकरसिंह ने आँख उठा कर सामने की तरफ देखा तो एक वृद्ध महात्मा पर उनकी निगाह पड़ी जो तेजी के साथ प्रभाकरसिंह की तरफ बढ़े आ रहे थे।

## छठवां बयान

वृद्ध महात्मा का ठाट कुछ अजब ही ढंग का था, सिर से पैर तक तमाम बदन में भस्म लगे रहने के कारण उनके रंग रूप का बयान करना चाहे कठिन हो परन्तु फिर भी इतना जरूर कहेंगे कि लगभग सत्तर वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी उनके खूबसूरत और सुडौल बदन में अभी तक कहीं झुर्री नहीं पड़ी थी और न उनके सीधे कद में कोई झुकाव आया था। बड़ी बड़ी आँखों में अभी तक गुलाबी डोरियाँ दिखाई दे रही थीं और उनके कटाक्ष से जाना जाता था कि अभी तक उनकी रोशनी और ताकत में किसी तरह की कमी नहीं हुई है। रोआबदार चेहरे चौड़ी छाती तथा मजबूत और गठीले हाथ पैरों की तरफ ध्यान देने से यही कहने को जी चाहता है कि यह शरीर तो छत्र और मुकुट धारण करने योग्य है न कि जटा और कम्बल की कफनी के योग्य !

महात्मा के सिर पर लम्बी लम्बी जटा थी जो खुली हुई पीठ की तरफ लहरा रही थी, मोटे और मुलायम कम्बल का झगा बदन में और लोहे का एक डण्डा हाथ में था, बस इसके अतिरिक्त उनके पास और कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

महात्मा को देखते ही प्रभाकरसिंह ने झुक के प्रणाम किया, बाबा जी ने भी पास आकर आशीर्वाद दिया और कहा, “प्रभाकरसिंह ! बस जाने दो, बहादुर लोग ऐयारों की जान नहीं मारते और ऐयार लोग भी जान से मारने के योग्य नहीं होते बल्कि कैद करने के योग्य होते हैं, तुम इस समय यद्यपि इस योग्य नहीं हो कि इसे कैद करके कहीं रख सको तथापि यदि कहो तो हम इसका प्रबन्ध कर दें क्योंकि इस तिलिस्म के अन्दर हम इस बात को बखूबी कर सकते हैं .....

प्रभाकर० । ( बात काट कर ) आपकी आज्ञा के विरुद्ध मैं कदापि न करूँगा । आप बड़े हैं, मेरा दिल गवाही देता है और कहता है कि यदि आप वास्तव में साधू न भी हों तौ भी मेरे पूज्य और बड़े हैं, जो कुछ आज्ञा कीजिये मैं करने को तैयार हूँ पर आपको कदाचित् यह न मालूम हुआ होगा कि इसने मुझे कैसी कैसी तकलीफें दी हैं और किस तरह मेरा सर्वनाश किया है , और इस समय भी यह कैसी ढिठाई के साथ बातें कर रहा है, अपना नाम तक नहीं बताता ।

बाबा० । मैं सब कुछ जानता हूँ तुमने स्वयम् भूल कर अपने को इसके हाथ में फँसा दिया है, अगर वह किताब जिसमें इस तिलिस्म का कुछ थोड़ा सा हाल लिखा हुआ था और जो इन्द्रदेव ने तुमको दी थी इसने तुम्हारी जेब से न निकाल ली होती तो वह कदापि यहाँ तक पहुँच न सकता मगर अफसोस ! तुमने पूरा धोखा खाया और उस किताब की भी बखूबी हिफाजत न कर सके ।

प्रभाकर० । बेशक ऐसा ही है, मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई, अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि वास्तव में यह कौन है ।

बाबा० । हाँ तुम इसे नहीं जानते, हरदेई समझ कर तुम इसके हाथ से बर्बाद हो गये, यह असल में गदाधरसिंह का शागिर्द रामदास है, इसी ने असली हरदेई को धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया और स्वयम् हरदेई की सूरत बन कर जमना और सरस्वती को धोखे में डाला, इस तिलिस्मी घाटी का रास्ता देख लिया और भूतनाथ को इस घाटी के अन्दर लाकर जमना सरस्वती और इन्दुमति को आफत में फंसा दिया । भूतनाथ ने अपने हिसाब से तो उन तीनों को मार ही डाला था परन्तु ईश्वर ने उन्हें बचा लिया, सुनो हम इसका खुलासा हाल तुमसे बयान करते हैं ।

इतना कह कर बाबाजी ने भूतनाथ और रामदास का पूरा पूरा हाल जो हम ऊपर के बयानों में लिख आये हैं कह सुनाया अर्थात् जिस तरह रामदास ने हरदेई को गिरफ्तार किया, स्वयम् हरदेई की सूरत बन कर कई दिनों तक जमना और सरस्वती के साथ रहा, घाटी में आने जाने का रास्ता देख कर भूतनाथ को इस घाटी के अन्दर लाया और जमना सरस्वती इन्दुमति तथा और लौंडियों को भी कूँए के अन्दर फेंक खुद भी उसमें जाकर फंस गया आदि आदि रक्की

रत्ती बयान किया जिसे सुन कर प्रभाकरसिंह हैरान हो गये और ताज्जुब करने लगे।

प्रभाकर०। (आश्चर्य से) यह सब हाल आपको कैसे मालूम हुआ?

बाबा०। इसके पूछने की कोई जरूरत नहीं है, जब हमको तुम पहिचान जाओगे तब स्वयम् तुम्हें इसका सबब मालूम हो जायगा (रामदास की तरफ देख के) क्यों रामदास! जो कुछ हमने कहा सब सच है या नहीं?

रामदास०। बेशक आपने जो कुछ कहा सब सच है।

बाबा०। (रामदास से) अब बताओ कि तुम्हारा गुरू भूतनाथ कहाँ है?

रामदास०। मुझे नहीं मालूम।

बाबा०। (हंस कर) अगर तुम्हें मालूम नहीं है तो मुझे जरूर मालूम है!

बाबा०। (प्रभाकरसिंह से) अच्छा अब हम जाते हैं, जरूरत होगी तो फिर मुलाकात करेंगे। हम केवल इसलिये तुम्हारे पास आये थे कि इस रामदास और भूतनाथ की चालबाजी से तुम्हें होशियार कर दें जिसमें इन लोगों के बहकाने में पड़ कर तुम जमना सरस्वती और इन्दुमति के साथ किसी तरह की बेमुरौवती न कर जाओ मगर अफसोस हमारे पहुँचने के पहिले ही तुमने इन लोगों के धोखे में पड़ कर इन्दुमति और साथ ही उसके जमना सरस्वती का तिरस्कार कर दिया और उन लोगों के साथ ऐसा बर्ताव किया जो तुम्हारे ऐसा बुद्धिमान के योग्य न था।

प्रभाकर०। (डबडबाई हुई आँखों से और लम्बी साँस लेकर) बेशक मैंने बहुत बुरा धोखा खाया, मेरी किस्मत ने मुझे डुबा दिया और कहीं का न रक्खा! (आस्मान की तरफ देख कर) हे सर्व शक्तिमान जगदीश्वर! क्या मैं इसी लिए इस दुनिया में आया था कि तरह की तकलीफें उठाऊँ? जब से मैंने होश सम्हाला तब से आज तक साल भर भी सुख से बैठना नसीब न हुआ! किस किस दुःख को रोऊँ और किस किस को याद करूँ? हाय माता पिता की अवस्था पर ध्यान देता हूँ तो कलेजा मुँह को आता है, अपनी दुर्दशा पर विचार करता हूँ तो दुनिया अन्धकारमय दिखाई पड़ती है, तो फिर क्या बात है? क्या मैं ऐसा ही बदकिस्मत बनाया गया हूँ? क्या यह मेरे कर्म ही का फल है? कदाचित् ऐसा भी हो तो फिर दुनिया में जितने आदमी हैं सभी तो अपने अपने

कर्म का फल भोग रहे हैं। फिर मुझमें और अन्य अभागों में भेद ही किस बात का ठहरा ? और जब अपने ही कर्मों का फल भोगना ठहरा तो तुम्हारा भरोसा ही करके क्या किया ? अगर यह कहो कि इस भरोसे का फल किसी और समय मिलेगा, तो यह भी कोई बात न ठहरी, जब मेरे समय पर तुम्हारा भरोसा काम न आया तो 'खेत सूखे पर वर्षा' वाली कहावत सिद्ध हुई.....

बाबा०। ( बात काट कर ) बेटा घबराओ मत और परमेश्वर का भरोसा मत छोड़ो, वह तुम्हारे सभी दुखों को दूर करेगा, उसकी कृपा के आगे कोई बात कठिन नहीं है। वह यदि दयालु होगा तो तुम्हें तुम्हारे माता पिता से भी मिला देगा और तुम्हारी स्त्री इन्दुमति भी पुनः तुम्हारी सेवा में दिखाई दे जायगी। बस अब मैं जाता हूँ, ईश्वर तुम्हारा भला करे।

प्रभाकर०। ( बाबाजी को रोक कर ) कृपा कर और भी मेरी दो एक बातों का जवाब देते जाइये।

बाबा०। पूछो क्या पूछना चाहते हो ?

प्रभाकर०। जिस मनुष्य के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह पञ्चतत्व में मिल गया भला उससे पुनः क्योंकर मुलाकात हो सकती है ?

बाबा०। ईश्वर की माया बड़ी प्रबल है, जिसे आज 'नहीं' समझते हैं वही कल 'हाँ' के स्वरूप में दिखाई देता है, मैं यह नहीं कहता कि अवश्य ही ऐसा होगा परन्तु यह जरूर कहूँगा कि ईश्वर पर भरोसा रखने वाले के लिये कोई भी बात असम्भव नहीं। अच्छा पूछो और क्या पूछते हो ?

प्रभाकर०। मैं यह जानना चाहता हूँ कि आज के बाद यदि मैं आप से मिलना चाहूँ तो क्योंकर मिल सकता हूँ ?

बाबा०। तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे नहीं मिल सकते।

प्रभाकर०। आपका परिचय जान सकता हूँ ?

बाबा०। नहीं।

इतना कह कर बाबाजी वहाँ से रवाना हो गये और देखते देखते प्रभाकरसिंह की नजरों से गायब हो गये।

बाबाजी के चले जाने बाद कुछ देर तक प्रभाकरसिंह खड़े खड़े कुछ सोचते रहे, इसके बाद क्रोध भरी आँखों से रामदास की तरफ देखा और कहा, "राम-

दास ! यद्यपि लोग कहते हैं कि ऐयारों को मारना न चाहिये बल्कि कैद कर रखना चाहिये परन्तु यह काम ऐयारों का और राजा लोगों का है, मैं न तो ऐयार हूँ और न राजा ही हूँ, इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई ऐसी जगह भी नहीं है जहाँ तुझे कैद करके रखूँ अतएव मैं तुझ पर किसी तरह रहम नहीं कर सकता। ( रामदास का खंजर उसके आगे फेंक कर ) ले अपना खंजर उठा ले और मेरा मुकाबला कर क्योंकि मैं उस आदमी पर वार करना पसन्द नहीं करता जिसके हाथ में किसी तरह का हर्बा नहीं है, साथ ही तूने मुझ पर जो जुल्म किया है उसे मैं बर्दास्त भी नहीं कर सकता।

रामदास०। ( खंजर उठा कर ) तो क्या मैं किसी तरह भी माफी पाने लायक नहीं हूँ ?

प्रभाकर०। नहीं, अगर इन्दुमति इस दुनिया से न उठ गई होती तो कदाचित् मैं तेरा अपराध क्षमा कर सकता मगर इन्दुमति का वियोग जो केवल तेरी ही दुष्टता के कारण हुआ है मैं सह नहीं सकता।

रामदास०। अगर तुम्हारी इन्दुमति को तुमसे मिला दूँ तो ?

प्रभाकर०। अरे दुष्ट ! क्या अब भी तू मुझे धोखा दे सकेगा ? जिसकी चिता मैं अपनी आँखों से देख चुका हूँ उसके विषय में तू इस तरह की बातें करता है मानों ब्रह्मा तू ही है !!

रामदास०। नहीं नहीं, आपने मेरा मतलब नहीं समझा।

प्रभाकर०। तेरा मतलब मैं खूब समझ चुका अब समझने की जरूरत नहीं है, बस अब तू सम्हल जा और अपनी हिफाजत कर।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने म्यान से तलवार खैंच ली और रामदास को ललकारा। रामदास ने जब देखा कि अब वह भाग कर भी अपने को प्रभाकरसिंह के हाथ से नहीं बचा सकता तब उसने खंजर सम्हाल कर प्रभाकरसिंह का मुकाबला किया।

प्रभाकरसिंह ऐसे बहादुर आदमी से मुकाबला करना रामदास का काम न था, दो ही चार हाथ लेने देने के बाद प्रभाकरसिंह की तलवारसे रामदास दो टुकड़े हो जमीन पर गिर पड़ा और वहाँ की मिट्टीसे अपनी तलवार साफ करके प्रभाकरसिंह पुनः उसी दीवार की तरफ रवाना हुए जिसके अन्दर इन्दुमति की सुलगती हुई चिता देख चुके थे।

तरह तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे चल कर उसी चिता के पास पहुँचे जो अभी तक निर्धूम हो जाने पर भी बड़े बड़े अंगारों के कारण धधक रही थी और जिसके बीच में हड्डियों के छोटे टुकड़े भी दिखाई दे रहे थे।

# सातवां बयान

यद्यपि सूर्य भगवान अभी उदय नहीं हुये थे तथापि उनके आने का समय निकट जान अन्धकार पहिले ही से अपना दखल छोड़ना आरम्भ कर दिया था और धीरे धीरे भाग कर पहाड़ की कन्दराओं और गुफाओं में अपने शरीर को सुकड़ाता या समेटता हुआ घुसा चला जा रहा था।

एक छोटे से मैदान में जिसे चारो तरफ से ऊँचे ऊँचे पहाड़ों ने घेर रक्खा है हम एक विचित्र तमाशा देख रहे हैं। वह मैदान चार या पाँच बिगहे से ज्यादे न होगा जिसके बीचोबीच में स्याह पत्थर का पुरसे भर ऊँचा बहुत बड़ा और खूबसूरत चबूतरा बना हुआ था जिसके ऊपर जाने के लिये चारों तरफ पाँच पाँच सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। चबूतरे के ऊपर चढ़ जाने पर देखा कि एक बहुत ही सुन्दर हौज बना हुआ है जिसमें बिल्लौर की तरफ साफ और सुथरा जल भरा हुआ था और जिसमें उतरने के लिये संगमरमर की छोटी छोटी सीढ़ियाँ भी बनी हुई थीं

हौज के चारों कोनों पर चार हंस इस कारीगरी से बनाये और बैठाये हुए थे कि जिन्हें देख कर कोई भी न कह सकेगा कि ये हंस असली नहीं बल्कि नकली हैं। देखने वाला जब तक उन्हें अच्छी तरह टटोल न लेगा तब तक उसके दिल से असली हंस होने का शक न मिटेगा। इसी तरह हौज के अन्दर उतरने वाली सीढ़ियों पर भी मोर और सारस इत्यादि कई जानवर दिखाई दे रहे थे और वे भी उन्हीं हंसों की तरह नकली किसी धातु के बने हुए थे मगर देखने में ठीक असली जान पड़ते थे। इनके अतिरिक्त उसी हौज के अन्दर संगमर्मर की सीढ़ी पर एक नेहायत हसीन और खूबसूरत औरत भी बेहोश पड़ी हुई दिखाई दे रही थी जिसके खुले हुए बाल सुफेद पत्थर की चट्टान पर बिखरे हुए थे बल्कि बालों का कुछ हिस्सा जल के अन्दर भी गिरा हुआ था जो जल की हलकी

लहरों के कारण हिलता हुआ बहुत ही भला मालूम होता था। पहिले तो मेरे दिल में आया कि मैं और जानवरों की तरह इस औरत को भी नकली और बनावटी समझूँ मगर उसकी खूबसूरती और नजाकत को देख कर मैं सहम गया। अहा! क्या ही खूबसूरत चेहरा, बड़ी बड़ी मगर इस समय पलकों से ढकी हुई आखें, चौड़ी पेशानी में सिन्दूरकी केवल एक बिन्दी कैसी अच्छी मालूम होती थी कि हजार रोकने पर भी मुँह से निकल ही पड़ा कि, "यह जरूर स्वर्ग की कोई देवी है।" चाहे उसके हाथों में सिवाय दस बारह पतली पतली स्याह चूड़ियों के और कुछ भी न हो, किसी तरह का कोई भी गहना दिखाई देता न हो, परन्तु उसकी खूबसूरती किसी गहने की मुहताज भी न थी।

मैं खड़ा खड़ा यही सोच रहा था कि यह औरत असली है या बनावटी और यह इरादा भी हो चुका था कि जिस तरह ऊपर वाले हंस को टटोल कर देख चुका हूँ उसी तरह नीचे की सीढ़ियों पर बैठे हुए जानवरों के साथ ही साथ इस औरत को भी टटोल कर देखूँ और मालूम करूँ कि असली है या नकली इतने ही में उस औरत ने गर्दन हिलाई और अपना चेहरा जल की तरफ से घुमा कर सीढ़ी की तरफ कर दिया। बस फिर क्या था! मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, मुझे बिश्वास हो गया कि और जानवरोंकी तरह यह औरत बनावटी नहीं है। फिर मैं सोचने लगा कि इसे किसी तरह जगाना चाहिये अस्तु मैंने जोर से कई तालियाँ बजाई मगर इसका असर कुछ भी न हुआ, उस समय मुझे पुनः उसकी सचाई पर शक हुआ और मैं यह जाँचने के लिये कि देखूँ इस औरत की साँस चलती है या नहीं उसके पेट की तरफ गौर से देखने लगा जिसके आधे हिस्से का कपड़ा खिसक जाने के कारण खुला हुआ था मगर साँस चलने की आहट मालूम न हुई। इतने ही में हवा का एक बहुत कड़ा झपेटा आया, मैंने तो समझा कि इस झपेटे के लगते ही वह जाग जायगी और उसके बदन का कपड़ा भी जो लापरवाही के साथ हर तरफसे ढीला पड़ा हुआ है जरूर खिसक जायगा और उसका सुन्दर तथा सुडौल बदन मुझे अच्छी तरह देखने का मौका मिलेगा मगर अफसोस ऐसा न हुआ। न तो उसकी निद्रा ही भंग हुई और न उसके बदन पर से कपड़ा ही खिसका।

मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ और अन्त में मैंने निश्चय कर लिया कि स्वयम्

हौज के अन्दर उतर कर उस औरत की निद्रा भंग करूँगा क्योंकि उसकी खूबसूरती और उसके अंग की सुडौली मेरे दिल को बेहतर मसोस रही थी।

मैं दिल कड़ा करके हौज के अन्दर उतरने लगा। एक सीढ़ी उतरा, दूसरी सीढ़ी उतरा, तसरी सीढ़ी पर पैर रक्खा ही था कि मैं डर कर चौंक उठा और मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा क्योंकि यकायक वे चारों हंस जो हौज के ऊपर चारो कोनों पर खड़े थे और जिन्हें मैं अच्छी तरह देख भाल कर निश्चय कर चुका था कि वे असली नहीं बनावटी हैं, अपनी जगह छोड़ और गरदन उँची कर इधर उधर घूमने और बड़ी बेचैनी के साथ मेरी तरफ देखने लगे मानों मेरा हौज के अन्दर उतरना उन्हें बहुत बुरा मालूम हुआ। यह बात सिर्फ दस बाहर सायत तक रही, इसके बाद वे अपने बड़े बड़े परों को फैला कर बे तरह मुझपर टूट पड़े जिसे देख मैं डर गया और अपना दाहिना हाथ (जिसमें खञ्जर था) आगे की तरफ बढ़ाये हुए पीछे हट कर चौथी सीढ़ी पर उतर गया!

हौज के अन्दर चौथी सीढ़ी पर उतर जाना तो मेरे लिये बड़ा ही भयानक हुआ। हौज के अन्दर सीढ़ियों पर जो बहुत से बनावटी जानवर (परिन्द) थे वे भी ऊपर वाले हसों की तरह अपनी क्रोध वाली अवस्था दिखाते हुए पर फैला फैला कर इस तरह मुझ पर झपट पड़े मानों ये सब बात की बात में नोच कर खा जायंगे। केवल इतना ही नहीं वह औरत भी उठ कर बैठ गई और गर्दन ऊंची करके क्रोध भरी आंखों से मेरी तरफ देखने लगी।

दृश्य बड़ा ही भयंकर था, जानवरों के बेतरह झपट पड़ने से मैं कदापि न डरता यदि वे वास्तव में सच्चे होते और मैं उन्हें अपने खञ्जर से काट सकता, परन्तु मैं तो अच्छी तरह जांच कर समझ चुका था कि वे सब असली नहीं हैं फिर भी जब उन्होंने हमला किया तब मैंने अपने खंजर से उन्हें रोकना चाहा परन्तु खंजर ने भी उनके बदन पर कुछ असर न किया मानों उनका बदन फौलाद का बना हुआ था। ऐसी अवस्था में उन सभों का एक साथ मिल कर हमला करना मुझे जरूर नुकसान पहुँचा सकता था अस्तु आश्चर्य के साथ ही साथ भय ने भी मुझ पर अपना असर जमा लिया। इसके अतिरिक्त उस औरत का एक अजीब ढंग से मेरी तरफ देखना और भी घबराहट पैदा करने लगा।

पहिले तो मैंने चाहा कि जिस तरह हो सके इस बावली के बाहर निकल जाऊँ मगर ऐसा न हो सका, लाचार पीछे की तरफ हट कर मैं और भी दो सीढ़ी नीचे उतर गया मगर वहाँ भी ठहरने की हिम्मत न पड़ी क्योंकि उन जानवरों का हमला और भी तेज हो गया तथा वह औरत भी इस जोर से चिल्ला उठी कि मैं घबड़ा गया तथा और भी कई सीढ़ी नीचे उतर कर उस औरत के पास जा पहुँचा। बस उसी समय उस औरत ने मेरा पैर पकड़ लिया और एक ऐसा झटका दिया कि मैं जल के अन्दर जा पड़ा और बेहोश हो गया! इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नहीं है।

छोटी छोटी चार पहाड़ियों के अन्दर एक खुशनुमा बाग है। इसमें सुन्दर सुन्दर बहुत सी क्यारियाँ बनी हुई हैं, हर तरफ छोटी छोटी नहरें जारी हैं, और पेड़ों के ऊपर बैठ कर बोलने वाली तरह तरह की चिड़ियाओं की सुरीली आवाजों से वह सुबह का सुहावना समय और भी मजेदार मालूम हो रहा है।

इस बाग के पूरब तरफ बहुत बड़ी इमारत है जिसमें सैकड़ों आदमियों का खुशी से गुजारा हो सकता है। यह इमारत तिमञ्जली है। नीचे के हिस्से में एक बहुत बड़ा दीवानखाना है और दीवानखाने के दोनों तरफ चार बारहदरियाँ हैं। ऊपर के मंजिलों में छोटे बड़े बहुत से खूबसूरत दर्वाजे दिखाई दे रहे हैं उनके अन्दर क्या है सो तो इस समय नहीं कह सकते मगर अन्दाज से मालूम होता है कि ऊपर भी कई कमरे कोठड़ियाँ दालान शहनशीन और बारहदरियाँ जरूर होंगी।

नीचे वाला दीवानखाना मामूली नहीं बल्कि राजशाही ढंग का बना हुआ है। छः पहले चालीस खम्भों पर इसकी छत कायम है। खंम्भे स्याह पत्थर के हैं और उन पर सोने से पच्चीकारी का काम किया हुआ है। बाहर के रुख पर बड़े बड़े पाँच महराब हैं और उन महराबों पर भी नेहायत खूबसूरत पच्चीकारी का काम किया हुआ है। अन्दर की तरफ अर्थात् पिछली दीवार पर भी जहाँ एक जड़ाऊ सिंहासन रक्खा हुआ है जड़ाऊ तथा मीनाकारी का काम बना हुआ है जिसमें कारीगर ने जंगली सीन और शिकारगाह की तस्वीरें बहुत ही बारीकी के साथ बनाई हैं। बाईं ओर दाहिनी तरफ की दीवारों पर कुछ ऐसा मसाला चढ़ा हुआ है कि जिससे मालूम होता है कि ये दोनों दीवारें बिल्लौरी शीशे की बनी हुई हैं। सिंहासन पिछली दीवार के साथ मध्य में रक्खा हुआ है और उस सिंहासन से चार

हाथ ऊपर एक खूबसूरत दरीची ( खिड़की ) है जिसमें एक नफीस चिक पड़ी हुई है और उस चिक के अन्दर कदाचित् कोई औरत बैठी हुई हैं, और आवाज से यही जान पड़ता है बेशक वह औरत ही है। सिंहासन के ऊपर एक खूबसूरत बहादुर नौजवान खड़ा चिक की तरफ गर्दन ऊँची करके ऊपर लिखी बातें बयान कर रहा है अर्थात् जो कुछ हम इस बयान में ऊपर लिख आये हैं वह सब इसी नौजवान ने ऊपर खिड़की की तरफ मुँह करके बयान किया है। जब उस जवान ने यह कहा कि 'इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नहीं है।' तब उस चिक के अन्दर से यह बारीक आवाज आई, "आखिर तुम यहाँ तक क्यों कर पहुँचे ?"

नौजवान०। जब मेरी आँखें खुलीं और मैं होश में आया तो अपने को इसी बाग में एक रविश के ऊपर पड़े हुए पाया। उस समय वहाँ कई औरतें मौजूद थीं जिन्होंने मुझसे तरह तरह के सवाल किये और इसके बाद मुझे इस दीवान-खाने में सहुँचा कर वे सब न मालूम कहाँ चली गईं।

चिक के अन्दर से०। अच्छा अब तुम क्या चाहते हो सो बताओ ?

नौजवान०। पहिले तो मैं यहाँ के मालिक का परिचय लिया चाहता हूँ।

चिक के०। समझ लो यहाँ की मालिक मैं ही हूँ।

नौजवान०। मगर यह मालूम होना चाहिये कि आप कौन हैं ?

चिक के०। मैं एक स्वतन्त्र औरत हूँ, लोग यहाँ की रानी कह मुझे सम्बोधन करते हैं।

नौजवान०। आपका कोई मालिक या अफसर भी यहाँ नहीं है ?

चिक के०। मैं एक राजा की लड़की हूँ, मेरा बाप मौजूद है और अपनी रियासत में है, मुझे उसने इस तिलिस्म के अन्दर कैद कर रक्खा है मगर मैं अपने को यहाँ स्वतन्त्र समझती हूँ और खुश हूँ, दुःख इतना ही है कि इस तिलिस्म के बाहर मैं नहीं जा सकती।

नौजवान०। आपके पिता ने आपको कैद क्यों कर रक्खा है ?

चिक के०। इस लिये कि मैं शादी करना मंजूर नहीं करती और इसमें वह अपनी बेइज्जती समझता है।

नौजवान०। क्या आपका और आपके पिता का नाम मैं सुन सकता हूँ ?

चिक के०। नहीं पहिले मैं आपका नाम सुना चाहती हूँ।

नौजवान०। मेरा नाम प्रभाकरसिंह है।

चिक के०। हैं! क्या आप सच कहते हैं? मुझे विश्वास नहीं होता!!

प्रभाकर०। बेशक मैं सच कहता हूँ, झूठ बोलने की मुझे जरूर ही क्या है!

चिक के०। और आपके बाप का नाम क्या है?

प्रभाकर०। दिवाकरसिंह जी।

चिक के०। आह, क्या यह सम्भव है! फिर भी मैं कहती हूँ कि मुझे विश्वास नहीं होता!!

प्रभाकर०। अगर आपको मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता तो लाचारी है, मुझे कोई ऐसी तर्कीब नहीं सूझती जिससे मैं आपको विश्वास दिला सकूँ।

चिक के०। हाँ, मुझे एक तर्कीब याद आई है।

प्रभाकर०। वह क्या?

चिक के०। लड़कपन में गेंद खेलते समय जो आपको चोट लगी थी उसे अगर मैं देखूँगी तो जरूर विश्वास कर लूँगी।

प्रभाकर०। (आश्चर्य) यह बात आपको कैसे मालूम हुई?

चिक के०। सो मैं पीछे बताऊँगी।

इतना सुनते ही प्रभाकरसिंह ने अपना कपड़ा उतार दिया और दाहिने मोढ़े के नीचे पीठ पर एक बड़े जख्म का निशान चिक की तरफ दिखा कर कहा, "यही वह निशान है।"

इसके जवाब में चिक का पर्दा उठ गया और एक बहुत ही हसीन औरत उस खिड़की में बैठी हुई प्रभाकरसिंह को दिखाई दी। उसे देखने के साथ ही प्रभाकरसिंह बदहवास से हो गये और उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा।

## आठवां बयान

अब हम थोड़ा हाल जमना सरस्वती और इन्दुमति का बयान करते हैं। नकली रहदेई अर्थात् रामदास ने जमना सरस्वती और इन्दुमति की तरफ से प्रभाकरसिंह का दिल जिस तरफ खट्टा करा दिया था उसे हमारे प्रेमी पाठक अच्छी तरह पढ़ ही चुके हैं, इसके बाद बाबाजी ने जब रामदास का असली

भेद खोल कर सच्चा सच्चा हाल प्रभाकरसिंह को बता दिया तब प्रभाकरसिंह चैतन्य हो गये और समझ गये कि जमना सरस्वती और इन्दुमति वास्तव में निर्दोष हैं और उनके बारे में जो कुछ हमने सोचा समझा और किया वह सब अनुचित था अस्तु प्रभाकरसिंह को अपनी कार्रवाई पर बड़ा ही खेद हुआ। यह सब कुछ था परन्तु जमना सरस्वती और इन्दुमति के दिल पर जो गहरी चोट बैठ चुकी थी उसकी तकलीफ किसी तरह कम न हुई और न उन तीनों को इस बात का पता ही लगा कि किसी बाबाजी ने पहुँच कर हमारी तरफ से प्रभाकरसिंह का दिल साफ कर दिया।

अपने शागिर्द की मदद से प्रभाकरसिंह वाली तिलिस्मी किताब पाकर भूतनाथ वहाँ की बहुत सी बातों से जानकार हो चुका था जो सिर्फ काम चलाने और कार्रवाई करने के लिए इन्द्रदेव ने तैयार करके प्रभाकरसिंह को दे दी थी परन्तु भूतनाथ ऐसे धूर्त और शैतान के लिए वही बहुत थी, उसी की मदद से भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दों के साथ उस तिलिस्म के अंदर पहुँच कर जमना सरस्ती और इन्दुमति को बेतरह सताया और दुःख दिया जिसका हाल हम खुलासे तौर पर नीचे लिखते हैं।

ग्रहदशा की सताई हुई जमना सरस्ती और इन्दुमति को जब भूतनाथ ने तिलिस्मी कूएँ में ढकेल दिया तो वहाँ उन्हें एक मददगार मिल गया जिसके सबब से उन तीनों की जान बच गई और उसी आदमी की मदद से वे तिलिस्म के अन्दर किसी कार्यवश स्वतन्त्रता के साथ घूम रही थीं। वह मददगार कौन था और उस कूएँ के अन्दर ढकेल देने के बाद उनकी जान क्योंकर बची इसका हाल फिर किसी मौके पर बयान किया जायगा। इस समय हम उस समय से उन तीनों का हाल बयान करते हैं जहाँ से तिलिस्म के अन्दर प्रभाकरसिंह ने उन तीनों को देखा था।

जमना सरस्वती और इन्दुमति का जो मददगार था वह बराबर अपने चेहरे पर नकाब डाले रहता था इससे उन तीनों ने उसकी सूरत नहीं देखी थी और कुछ भी नहीं समझ सकती कि उनका मदनगार किस सूरत का और कैसा आदमी है। यही सबब था कि जब भूतनाथ उस तिलिस्म के अन्दर गया तो उसने भी

जमना और सरस्वती के मददगार को नहीं पहिचाना 'हाँ पहिचानने के लिए उद्योग बराबर करता रहा।

एक दफे जमना ने अपने मददगार से प्रार्थना की थी कि अपनी सूरत दिखा दे या अपना परिचय दे परन्तु नकाबपोश ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की थी, हाँ इतना जरूर कह दिया था कि तुम लोग मुझे अपने बाप के बराबर समझो और जब कभी सम्बोधन करने की जरूरत पड़े तो नारायण के नाम से सम्बोधन किया करो, अस्तु अब हम भी आगे चलकर मौका पड़ने पर उसे नारायण ही के नाम से सम्बोधन किया करेंगे।

जब मन्दिर की जालदार दीवार के अन्दर से प्रभाकरसिंह ने जमना सरस्वती और इन्दुमति को देखा था और कुछ रूखी सूखी बातचीत भी की थी उस समय जो आदमी उन तीनों को मारने के लिए आया था और जिसे हम बैताल के नाम से सम्बोधन कर चुके हैं वह वास्तव में भूतनाथ ही था। प्रभाकरसिंह को तो उसके हाथ से उन तीनों की रक्षा करने के लिए वहाँ तक पहुँचने में देर लगी परन्तु नारायण ने बहुत जल्द वहाँ पहुँच कर उस शैतान के हाथ से उन तीनों को बचा लिया। नारायण जानते थे कि वह वास्तव में भूतनाथ है और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को भी शक हो चुका था कि वह भूतनाथ है क्योंकि उसके घण्टे ही भर पहिले वह उन तीनों से मिल चुका था और अपना विचित्र ढङ्ग दिखला कर अच्छी तरह धमका चुका था मगर उस समय उसे वार करने का मौका नहीं मिला था। यही सबब था कि उसकी सूरत देखते ही वे तीनों चिल्ला उठी थीं और विमला ( जमना ) ने आँसू गिराते हुए चिल्ला कर प्रभाकरसिंह से कहा था—"बचाइये बचाइये, आप जल्दी यहाँ आकर हम लोगों की रक्षा कीजिये, यह दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है !!"

इसके बाद जब प्रभाकरसिंह दूसरी पहाड़ी पर चढ़ कर ऊपर ही ऊपर वहाँ पहुँचे तो देखा कि बैताल अर्थात् भूतनाथ से एक नकाबपोश मुकाबला कर रहा है। वही नकाबपोश नारायण था। नारायण ने वहाँ पहुँच कर उन तीनों औरतों को भाग जाने का इशारा करके भूतनाथ का मुकाबला किया और बड़ी खूबी के साथ लड़ा। जब प्रभाकरसिंह वहाँ पहुँचे और नारायण के कहे मुताबिक जमना सरस्वती और इन्दुमति के पीछे चले तब पुनः भूतनाथ और नारायण में लड़ाई होने

लगी। भूतनाथ का कोई हर्बा नारायण के बदन पर कारगर नहीं होता था बल्कि नारायण के मोढ़े पर बैठ कर भूतनाथ की तलवार टूट चुकी थी, अन्त में नारायण के हाथ से जख्मी होकर भूतनाथ ने मुकाबले से मुँह फेर लिया। उसे विश्वास हो गया कि अगर थोड़ी देर तक और मुकाबला करूँगा तो बेशक मारा जाऊँगा, अस्तु वह धोखा देकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ और नारायण ने भी उसका पीछा किया।

नारायण यद्यपि लड़ाई में भूतनाथ से ज्यादा तेज ताकतवर और होशियार था मगर दौड़ने में उसका मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता था इसलिए भूतनाथ को पकड़ न सका और वह भागकर नारायण की आँखों की ओट हो गया।

प्रभाकरसिंह ने जमना सरस्वती और इन्दुमति का पीछा किया, वे तीनों दीवार के दूसरी तरफ चली गईं मगर दर्वाजा बंद हो जाने के कारण प्रभाकरसिंह उसके अंदर न जा सके। उसी समय उन्होंने बाहर ही से खड़े खड़े सुना कि सरस्वती से और किसी गैर आदमी से बातचीत हो रही है, गैर आदमी जमना सरस्वती और इन्दुमति की बदकारी साबित किया चाहता था और उसकी बातों से प्रभाकरसिंह के दिल की खटाई और भी बढ़ गई थी, मगर वास्तव में मामला दूसरा ही था। वह आदमी जो प्रभाकरसिंह को सुना सुना कर सरस्वती से बातें कर रहा था असल में भूतनाथ का एक शागिर्द था और उसका मतलब यही था कि अपनी बातों से प्रभाकरसिंह का दिल जमना सरस्वती और इन्दुमति की तरफ से फेर दे, साथ ही इसके उस ऐयार ने यह भी चालाकी की थी कि अपनी असली सूरत में उन औरतों के पास न जाकर उसने एक जमींदार की सूरत बना ली थी और बातचीत करने बाद बिना किसी तरह की तकलीफ दिए जमना सरस्वती और इन्दुमति के सामने से चला गया था। इसके बाद प्रभाकरसिंह स्वयम् जमना सरस्वती और इन्दुमति से जाकर मिले और जिस तरह से बातचीत करके इन्दु का परित्याग किया आप लोग पढ़ ही चुके हैं। अब हमें इस जगह केवल उन तीनों औरतों ही का हाल लिखना है।

जब प्रभाकरसिंह इन्दुमति को त्याग कर उन तीनों के सामने से चले गये तब इन्दुमति बहुत उदास हुई और देर तक बिलख बिलख कर रोती रही। अंत में उसने जमना से कहा—"बहिन! अब मेरे लिये जिंदगी अपार हो गई, जब कि पति ने मुझे त्याग दिया तब इस पापमय शरीर को लेकर इस दुनिया में रहना

और चारो तरफ मारे मारे फिरना मुझे पसन्द नहीं, अस्तु मैं इस शरीर को इसी जगह त्याग कर बखेड़ा तय करूँगी।"

जमना०। नहीं बहिन! तुम इस काम में जल्दी मत करो और इस तरह बकायक हताश मत हो जाओ। मालूम होता है कि किसी दुश्मन ने उन्हें भड़का दिया है और इसी से उनका मिजाज बदल गया है मगर यह बात बहुत दिनों तक कायम नहीं रह सकती, धर्म हमारी सहायता करेगा और एक न एक दिन असल भेद खुल जाने से वे अपने किये पर पश्चात्ताप करेंगे।

इन्दुमति०। मगर बहिन! मैं कब तक उस दिन का इन्तजार करूँगी!!

जमना०। इन बातों का फैसला बहुत जल्द हो जायगा, हम लोगों को ज्यादे इन्तजार करना न पड़ेगा।

इन्दुमति०। खैर अगर तुम्हारी बात मान भी ली जाय तो उस दुश्मन के हाथ से बचे रहने की क्या तर्कीब हो सकती है जो बार बार हम लोगों का पीछा करके भी शान्त नहीं होता, अगर नारायणजी की मदद न होती तो वह....

इन्दुमति इसके आगे कुछ कहने ही को थी कि सामने से अपने मददगार नारायण को आते हुए देखा। इस समय नारायण की पीठ पर एक गठरी थी जिसमें कोई आदमी बँधा हुआ था।

नारायण तेजी के साथ कदम बढ़ाता हुआ जमना सरस्वती और इन्दुमति के के पास आया और गठरी जमीन पर रख कर तथा अपना परिचय देकर इन्दुमति से बोला, 'इन्दु! मुझे मालूम हो गया है कि तेरे दुश्मनों ने तुझे बल्कि जमना और सरस्वती को भी व्यर्थ बदनाम किया है और तुम लोगों की तरफ से प्रभाकरसिंह का दिल फेर दिया है। यह काम खास भूतनाथ के एक ऐयार का है जिसने हरदेई की सूरत बन कर तुमको और प्रभाकरसिंह को धोखा दिया है। आज कल में मैं जरूर उसकी खबर लूँगा। इस समय मैं तुम्हारे जिस दुश्मन से लड़ रहा था वह वास्तव में भूतनाथ था।"

इन्दु०। (ताज्जुब से बात काट कर) क्या वह भूतनाथ है! मगर इस तिलिस्म के अन्दर वह क्योंकर आ पहुँचा!

नारायण०। हाँ वह भूतनाथ ही है। इन्द्रदेव ने प्रभाकरसिंह को हाथ की लिखी हुई एक छोटी सी किताब दी थी, उसी किताब को पढ़ कर प्रभाकरसिंह इस

तिलिस्म के अन्दर आये थे, भूतनाथ के उसी ऐयार ने जो हरदेई बना हुआ था धोखा देकर वह किताब प्रभाकरसिंह की जेब से निकाल ली और अपने गुरु भूतनाथ को दे आया। उसी की मदद से भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आ पहुँचा है और तुम तीनों को तथा प्रभाकरसिंह को मारने का उद्योग कर रहा है। खैर कोई चिन्ता नहीं, जहाँ तक हो सकेगा मैं तुम लोगों की मदद करूँगा। अफसोस इस बात का है कि मैं इस समय यहाँ अकेला हूँ मगर भूतनाथ अपने कई ऐयारों को साथ ले कर यहाँ आया हुआ है और तुम लोगों की मदद करते हुए इस समय मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि घर जाकर अपने आदमियों को ले आऊँ या इन्द्रदेव को इस मामले की खबर करूँ, अगर चार पहर की भी मोहलत मिल जाय तो मैं इन्द्रदेव को खबर पहुँचा सकता हूँ, वह अगर यहाँ आ जायंगे तो फिर किसी दुश्मन के किये कुछ न हो सकेगा।

इन्दु०। तो हम लोगों को आप अपने साथ इन्द्रदेव के पास क्यों नहीं ले चलते?

नारायण०। हाँ तुम लोगों को मैं अपने साथ वहाँ ले जा सकता हूँ मगर प्रभाकरसिंह की भी मदद करनी है! अगर उन्हें इसी अवस्था में छोड़ कर तुम लोगों को साथ ले कर चला जाऊँ तो भूतनाथ का ऐयार उन्हें जरूर मार डालेगा क्योंकि वह अभी तक हरदेई की सूरत में है और प्रभाकरसिंह उस पर विश्वास करते हैं।

जमना०। तो उन्हें इस मामले की खबर कर देनी चाहिये।

नारायण०। मैं इसी फिक्र में हूँ। तुम्हारे जिस दुश्मन से मैं लड़ रहा था वह अर्थात् भूतनाथ जख्मी होकर मेरे सामने से भाग गया। मैं उसी के पीछे दौड़ा हुआ चला गया था मगर उसे पकड़ न सका क्योंकि बीच में उसका एक शागिर्द पहुँच गया और उसने मेरा मुकाबिला किया। अन्त में वह मेरे हाथ से मारा गया, मैं उसी को इस गठरी में बाँध कर उठा लाया हूँ, अब इसी जगह चिता बना कर इसे फूँक दूगा, इसके बाद तुम लोगों को यहाँ से ले चलूँगा। और किसी अच्छे ठिकाने बैठाल कर प्रभाकरसिंह के पास जाऊँगा। अब ज्यादे देर तक बातचीत करना मैं मुनासिब नहीं समझता क्योंकि काम बहुत करना है

और समय कम है, तुम लोग मेरी मदद करो और जल्दी से लकड़ी बटोर चिता बनाओ।

बात की बात में चिता तैयार हो गई और नारायण ने उस ऐयार की लाश को चिता पर रख कर आग लगा दी। थोड़ी देर तक इन्दुमति खड़ी उस चिता की तरफ देखती और कुछ सोचती रही, इसके बाद नारायण से बोली, "आपके बगल में बटुआ लटक रहा है, इससे मालूम होता है कि आप भी कोई ऐयार हैं, अगर मेरा खयाल ठीक है तो आपके पास लिखने का सामान भी जरूर होगा।"

नारायण०। हाँ हाँ, मेरे पास लिखने का सामान है, क्या तुमको चाहिये?

इन्दुमति०। जी हाँ, कागज का एक टुकड़ा और कलम दावात चाहिये।

नारायण ने अपने बटुये में से कागज का टुकड़ा और स्याही से भरी हुई एक सोने की जड़ाऊ कलम निकाल कर इन्दु को दी। इन्दु ने उस कागज पर कुछ लिखा और अपने आंचल में से कपड़े का एक टुकड़ा फाड़ कर और उसी में उस कागज को बाँध कर एक तरफ फेंक दिया। यही वह चीठी थी जो प्रभाकरसिंह को उस चिता के पास मिली थी।

इन्दुमति ने उस पुर्जे में क्या लिखा सो इस समय उसने किसी से नहीं बताया और न किसी ने उससे पूछा ही, हाँ कुछ देर बाद उसने यह भेद कला और विमला पर खोल दिया।

जमना सरस्वती और इन्दुमति को साथ लिए हुए नारायण वहाँ से रवाना हुए। वे उस तरफ नहीं गये जिस तरफ दीवार थी बल्कि उसके विपरीत दूसरी तरफ रवाना हुए। थोड़ी दूर जाने बाद उन लोगों को जंगल मिला, वे लोग बराबर उस जंगल में चले गये। क्रमशः वह जंगल घना मिलता गया यहाँ तक कि लगभग दो कोस के जाते जाते वे लोग एक ऐसी भयानक जगह में जा पहुँचे जहाँ बारीक बारीक सैकड़ों पगडण्डियाँ थीं और उनमें से अपने मतलब का रास्ता निकाल लेना बड़ा ही कठिन था मगर तीनों औरतों को लिये हुए नारायण अपने रास्ते पर इस तरह चला जाता था मानों उसे सिवाय एक रास्ते या पगडण्डी के दूसरी पगडण्डी दिखाई देती ही नहीं थी।

इस भयानक जंगल में भी थोड़ी दूर चले जाने के बाद उन्हें दालवीं जमीन

मिली और वे लोग पहाड़ी के नीचे उतरने लगे। जंगल पतला होता गया और वे लोग क्रमशः मैदान की हवा खाते हुए नीचे की तरफ उतरने लगे।

लगभग आध घण्टे के और चले जाने के बाद वे लोग एक खूबसूरत मकान के पास पहुँचे जो बड़ी चारदीवारी से घिरा हुआ था और अन्दर जाने के लिये सिर्फ पूरब तरफ एक बहुत बड़ा लोहे का फाटक था।

वह मकान यद्यपि बाहर से देखने में खूबसूरत और शानदार मालूम होता था मगर उसके अन्दर एक सहन और दस बारह कमरे तथा कोठड़ियों के सिवाय और कुछ भी न था; मकान क्या मानों कोई महाराजी धर्मशाला था।

मकान के चारो तरफ बाग था मगर इस समय उसकी अवस्था जंगल की सी दिखाई दे रही थी। उसके चारो तरफ ऊंची चारदीवारी थी मगर वह भी कई जगह से मरम्मत के लायक हो रही थी।

तीनों औरतों को साथ लिये हुए नारायण उस चारदीवारी के अन्दर घुसे और इधर उधर देखते हुए उस इमारत के अन्दर चले गये जहाँ एक कमरे में अन्दर जाकर वे जमना से बोले, "देखो जमना! यह कमरा एक बाग के अन्दर जाने का दरवाजा है इस इमारत में जितने कमरे हैं उन सभों को कहीं न कहीं जाने का रास्ता समझना चाहिये! मैं तुम लोगों को जिस स्थान में ले जाना चाहता हूँ वहाँ का रास्ता यही है। मैं इस दर्वाजे का भेद तुमको दिखा और समझा देना चाहता हूँ जिसमें यहाँ से आने जाने के लिये तुम किसी की मुहताज न रहो। भूतनाथ जिस किताब को पाकर फूल रहा है और जिसकी मदद से इस तिलिस्म के अन्दर चला आया है उस किताब में इस इमारत का हाल कुछ भी नहीं लिखा है इस लिये समझ रखना कि भूतनाथ इसके अन्दर आकर तुम लोगों को सता नहीं सकता। (सामने की दीवार की तरफ इशारा करके) देखो दीवार में जो यह आलमारी दिखाई देती है वही यहाँ से जाने का रास्ता है, इसमें एक ही पल्ला है और पल्ला खैंचने के लिए एक मुट्ठा लगा हुआ है इसी मुट्ठे को चाभी समझना चाहिए और देखो उस आलमारी के ऊपर क्या लिखा हुआ है?"

इतना कह कर नारायण ठहर गया और जमना का मुह देखने लगा जो उन बड़े हरफों को गौर से देख रही थी। इन्दुमति आगे बढ़ गई और उसने उन अक्षरों को पढ़ कर नारायण को सुनाया। यह लिखा हुआ था :—

"दक्षिण ऋषि वसु वाम, पुनरपि चन्दादित्य इमि।
पुनि इमि गनहु सुजान, जौलों वेद न पूरहीं।।"

नारायण०। ठीक है, यही लिखा हुआ है, अच्छा बताओ इसका मतलब क्या है?

इन्दु०। मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आया, चाहे शब्दों का अर्थ कुछ लगा सकूँ मगर यह लिखा क्या है सो आप ही जानिये।

नारायण०। यह इस दर्वाजे को खोलने के विषय में लिखा है। इसका मतलब यह है कि इस मुट्ठे को ( जो दर्वाजे में लगा हुआ है ) सात दफे दाहिने, आठ दफे बायें, फिर एक दफे दाहिने और बारह दफे बायें घुमाओ, इस तरह चार दफे करो तो दर्वाजा खुल जायगा।

जमना०। ( कुछ देर तक उस लेख पर गौर कर के ) ठीक है, इस लेख का यही मतलब है, मगर पढ़ने वाला यह कैसे जान सकेगा कि यह लेख इसी मुट्ठे को घुमाने के विषय में लिखा है?

नारा०। यह बात होशियार आदमी अपनी अक्ल से समझ सकता है, तिलिस्म बनाने वाले बिल्कुल साफ साफ तो लिखेंगे नहीं।

जमना०। ठीक है।

नारायण०। अच्छा तो अब आगे बढ़ो और अपने हाथ से दर्वाजा खोलो।

नारायण की आज्ञानुसार जमना ने ऊपर लिखे ढङ्ग से उस मुट्ठे को घुमाया। दर्वाजा खुल गया और नीचे उतरने के लिये सीढ़ियाँ दिखाई दीं। सामने एक आला था और उसमें एक छोटा सा पीतल का सन्दूक रक्खा हुआ था जिसमें किसी तरह का ताला लगा हुआ था। नारायण ने वह सन्दूक खोल कर सभों को दिखाया कि इसमें रोशनी करने का काफी सामान मौजूद है अर्थात् कई मोमबत्तियाँ और चकमक पत्थर वगैरह उसमें मौजूद हैं।

एक मोमबत्ती जलाई गई और उसी की रोशनी के सहारे दर्वाजा बन्द करने के बाद सब कोई नीचे उतरे। जिस तरह दर्वाजा खुलता था उसी ढङ्ग से बन्द भी होता था और यह बात दर्वाजे के पिछली तरफ लिखी हुई थी।

कई सीढ़ियाँ नीचे उतर जाने के बाद एक सुरंग मिली। ये चारो आदमी उसके अन्दर चले गये और जब सुरंग खतम हुई तो सब कोई एक सरसब्ज

मैदान में पहुँचे जहाँ दूर तक खुशनुमा पहाड़ी में गुल बूटे लगे हुए थे और एक छोटा सा सुन्दर मकान भी मौजूद था जिसके आगे छोटा सा झरना बह रहा था और झरने के किनारे बहुत से केले के दरख्त लगे हुए थे जिसमें कच्चे और पक्के सभी तरह के फल मौजूद थे।

नारायण ने जमना सरस्वती और इन्दुमति से कहा, "अब दो तीन दिन तक तुम लोग इस मकान में रहो, तब तक मैं जाकर देखता हूँ कि नकली हरदेई और प्रभाकरसिंह में क्योंकर निपटी! नकली हरदेई की तरफ से उन्हें होशियार कर देना बहुत जरूरी है। (एक छोटी सी किताब जमना के हाथ में देकर) लो इस किताब को तुम तीनों अच्छी तरह पढ़ जाओ और जहाँ तक हो सके खूब याद कर लो, इसमें उससे ज्यादा हाल लिखा हुआ है जो इन्द्रदेव ने तुम्हें बताया है या उस किताब में जितना लिखा हुआ है जो प्रभाकरसिंह के कब्जे से निकल कर भूतनाथ के कब्जे में चली गई है।"

इतना कह कर नारायण वहाँ से चले गए।

## नौवां बायन

जमानिया में आधी रात के समय तिलिस्मी दारोगा * अपने मकान में बैठा किसी विषय पर विचार कर रहा है। उसके सामने कई तरह के कागज और चीठियों के लिफाफे फैले हुए हैं जिनमें से एक चीठी को वह बार बार उठाकर गौर से देखता और फिर जमीन पर रख कर कुछ सोचता है। दारोगा के बगल में हट कर एक कमसिन खूबसूरत और हसीन औरत बैठी हुई है। उसके कपड़े और गहने के ढंग तथा भाव से मालूम होता है कि वह बाबाजी (दारोगा) की स्त्री या गृहस्थ औरत नहीं है बल्कि कोई बेश्या है जो कि तिलिस्मी दारोगा अर्थात् बाबाजी से कोई घना सम्बन्ध रखती है।

एक चीठी पर कुछ देर तक विचार करने के बाद दारोगा ने उस औरत की तरफ देखा और कहा—"बीबी मनोरमा! वास्तव में यह चीठी गदाधरसिंह

* तिलिस्मी दारोगा का परिचय चन्द्रकान्ता सन्तति में दिया जा चुका है, इस समय यह बेईमान कुँअर गोपालसिंह के बाप राजा गिरधरसिंह का खास मुसाहब था

के हाथ की लिखी हुई है ! इस चीठी को देकर तुमने मुझ पर बड़ा ही अहसान किया, अब वह जरूर मेरे कब्जे में आ जायगा। मैं उसे अपना साथी बनाने के लिये बहुत दिनों से उद्योग कर रहा हूँ मगर वह मेरे कब्जे में नहीं आता था अब उसे भागने की जगह न रहेगी।

मनोरमा०। ( मुस्कराती हुई ) ठीक है, मगर मैं अफ़सोस के साथ कहती हूँ कि इस चीठी को जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है बल्कि उसकी लिखी हुई और चीठियों को भी जो आपके सामने पड़ी हुई हैं और जिन्हें मैं जबर्दस्ती नागर से ले आई हूँ आज ही वापस ले जाऊँगी क्योंकि नागर से तुरत ही वापसकर देनेका वादा करके ये चीठियाँ आपको दिखाने के लिये मैं लाई थी।

दारोगा०। ( कुछ उदास चेहरा बना के ) ऐसा करने से तो मेरा काम नहीं चलेगा।

मनोरमा०। चाहे जो कुछ हो, आपने भी तो तुरत ही वापस कर देने का वादा किया था।

दारोगा०। ठीक है, मगर अब जो मैं देखाता हूँ तो इन चीठियों की बदौलत मेरा बहुत काम निकलता दिखाई देता है।

मनो०। तो क्या आप चाहते हैं कि मैं नागर से झूठी बनूँ और वह मुझे दगाबाज कहके दुश्मनी की निगाह से देखे जिसे मैं अपनी बहिन से भी ज्यादा बढ़कर मानती हूँ।

दारो०। नहीं नहीं, ऐसा क्यों होने लगा, जब तुम उसे बहिन से बढ़कर मानती हो और वह भी तुम्हें ऐसा ही मानती है तो क्या वह दो तीन चीठियाँ तुम्हारी खुशी के लिये नहीं दे सकती और तुम मेरी खुशी के लिये उन्हें मेरे पास नहीं छोड़ सकतीं ?

मनो०। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। गदाधरसिंह और नागर में बहुत गहरी मुहब्बत का बर्ताव हो रहा है, क्या उसे आप मेरे ही हाथ से खराब करना चाहते हैं !

दारो०। नहीं नहीं, मैं ऐसा नहीं चाहता। अगर तुम और नागर चाहोगी तो गदाधरसिंह को इन चीठियों के बारे में कुछ भी खबर न होने पावेगी और उन दोनों की मुहब्बत का सिलसिला ज्यों का त्यों कायम रहेगा।

मनोरमा० । क्या खूब आप भी कैसी भोली भाली बातें करते हैं इन्हीं चिठियों को दिखाकर तो आप गदाधरसिंह को अपने कब्जे में किया चाहते हैं और फिर कहते हैं कि इन चीठियों के बारे में गदाधरसिंह को कुछ भी खबर न होगी कि वही आपके कब्जे में आ गई हैं !!

दारो० । ( शर्मिन्दा होकर ) तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ और किस तरह तुम्हारे लिये जान तक देने को तैयार हूँ ।

मनोरमा० । मैं खूब जानती हूँ । और इसी लिये आपकी खातिर इन चीठियों को थोड़ी देर के लिये नागर से माँग लाई हूँ नहीं तो क्या मैं गदाधरसिंह की शैतानी और उद्दंडता को नहीं जानती ! वह बात की बात में बिगड़ खड़ा होगा और मुझको तथा नागर को जहन्नुम में मिला देगा, बल्कि मैं जहाँ तक समझती हूँ इन चीठियों का भेद खुलने से वह आपका भी दुश्मन हो जायगा ।

दारोगा० । नहीं ऐसा नहीं है । इन चीठियों का भेद खुलने से यद्यपि वह हम लोगों का दुश्मन हो जायगा मगर वह महलोगों को तब तक तकलीफ न दे सकेगा जब तक ये चीठियाँ पुनः लौट कर उसके कब्जे में न चली जायँ, मगर ऐसा होना बिल्कुल ही असम्भव है । उन चीठियों की नकल दिखा कर मैं उसे धमकाऊँगा सही मगर इन असल चीठियों को ऐसी जगह रक्खूँगा कि उसके देवता को भी पता न लगने पावेगा ?

मनोरमा० । यह सब आपका खयाल है । आपने सुना नहीं है कि जब बिल्ली मजबूर होती है तब कुत्ते के ऊपर हमला करती है । न मालूम नागर के ऊपर गदाधरसिंह को कितना भरोसा है कि ये सब खबरें गदाधरसिंह ने नागर को लिखीं, नहीं तो भूतनाथ ऐसे होशियार आदमी को ऐसी भूल न करनी चाहिये थी । इन चीठियों को पढ़ कर एक अदना आदमी भी समझ सकता है कि दयाराम का घातक गदाधरसिंह ही है और वही अब उनकी जमना सरस्वती नाम की दोनों स्त्रियों को मारना चाहता है । क्या ऐसी चीठी का प्रगट हो जाना गदाधरसिंह के लिये कोई साधारण बात है ? और ऐसा होने पर क्या वह नागर को जीता छोड़ देगा ? कदापि नहीं । इसके अतिरिक्त अभी तो चीठियों का सिलसिला जारी ही है और वह जमना और सरस्वती को मारने के लिये तिलिस्म के अन्दर घुसा ही है, आगे चल कर देखिये तो सही कि कैसी कैसी चीठियाँ

आती हैं और उनमें क्या क्या खबरें वह लिखता है। सिर्फ इन्हीं दो चार चीठियों पर अभी आप क्यों इतना फूल रहे हैं!

दारोगा इसका जवाब कुछ दिया ही चाहता था कि दर्वाजे की तरफ घण्टी बजने की आवाज आई और उसके जवाब में दारोगा ने भी एक घन्टी बजाई जो उसके पास पहिले ही से रक्खी हुई थी। एक लड़का लपकता हुआ दारोगा के सामने आया और बोला, "गदाधरसिंह आये हैं, दरवाजे पर खड़े हैं।"

लड़के की बात सुन कर दारोगा ने मनोरमा की तरफ देखा और कहा, "आया तो है बड़े मौके पर!"

"मौके पर नहीं बल्कि बे मौके।" इतना कह कर मनोरमा ने वे चीठियाँ दारोगा के सामने से उठा लीं जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई थीं या जिनके बारे में बड़ी देर से बहस हो रही थी और यह कह कर उठ खड़ी हुई कि 'मैं दूसरे कमरे में जाती हूँ, उसे बुलाइये मगर मेरे यहाँ रहने की उसे खबर न होने पावे।'

# दसवां बयान

गदाधरसिंह को लेने के लिये दारोगा खुद दर्वाजे तक गया और बड़े आव-भगत के साथ अपनी बैठक में ले आया। मामूली बातचीत और कुशल मंगल पूछने के बाद दोनों में इस तरह की बातचीत होने लगी :—

दारोगा०। मैंने आपके घर आदमी भेजा था मगर वह मुलाकात न होने के कारण सूखा ही लौट आया और उसकी जबानी मालूम हुआ कि आप कई दिनों से किसी कार्य्यवश बाहर गये हुए हैं।

गदाधर०। ठीक है, मैं कई दिनों से अपने घर पर नहीं हूँ मगर आपको आदमी भेजने की जरूरत क्यों पड़ी?

दारोगा०। आप जानते हैं कि मैं जब किसी तरद्दुद में पड़ जाता हूँ तब सब के पहिले आपको याद करता हूँ क्योंकि मेरे दोस्तों में सिवाय आपके कोई भी ऐसा लायक और हिम्मतवर नहीं है जो समय पड़ने पर मेरी मदद कर सके।

गदा०। कहिये क्या काम है? मैं आपके लिए हर वक्त तैयार रहता हूँ और आपसे भी बहुत उम्मीद रखता हूँ। मैं सच कहता हूँ कि आपकी दोस्ती का मुझे

बहुत बड़ा घमण्ड है और यही सबब है कि मैं इस समय आपके पास आया हूँ क्योंकि इधर महीनों से मैं सख्त मुसीबत में गिरफ्तार हो रहा हूँ। अगर मेरी इस मुसीबत का शीघ्र ही अन्त न होगा तो मुझे इस दुनिया से एक दम अन्तर-ध्यान हो जाना पड़ेगा।

दारोगा०। आपने तो बड़े ही तरद्दुद की बात सुनाई! कहिये तो सही क्या मामला है!

गदाधरसिंह०। पहिले आप ही कहिये मुझे क्यों याद किया था।

दारोगा०। नहीं पहिले मैं आपका हाल सुन लूंगा तो कुछ कहूँगा।

गदाधर०। नहीं नहीं, पहिले आपका हाल सुने बिना मैं कुछ भी नहीं बताऊँगा।

दारो०। अच्छा पहिले मेरी ही रामकहानी सुन लीजिये। आप जानते ही हैं कि शहर के आस पास ही में कोई कुमेटी * है जिसके स्थान का और सभासदों का कुछ भी पता नहीं लगता।

गदाधर०। हाँ मैं सुन चुका हूँ, (मुस्कुरा कर) मगर मेरा तो खयाल है कि आप भी उस कुमेटी के मेम्बर हैं।

दारो०। हरे हरे! आप भी अच्छी दिल्लगी करते हैं, भला जिस राजा को बदौलत मैं इस दर्जे को पहुँच रहा हूँ और इतना सुख भोग रहा हूँ उसी के विपक्ष में हुई भई किसी कमेटी का मेम्बर हो सकता हूँ! आज भी अगर मुझे उस कमेटी का पता लग जाय और उसके सभासदों का नाम मालूम हो जाय तो मैं एक एक को चुन चुन कर कुत्ते की मौत मारूँ और कलेजा ठण्डा करूँ!!

गदाधर०। (मुस्कुराता हुआ) कदाचित् ऐसा ही हो, मगर इस विषय पर आप मुझसे बहस न कीजिये, जाने दीजिये, अपना हाल कहिये। मैं उस कुमेटी का हाल अच्छी तरह जानता हूँ।

दारो०। (जिसका चेहरा गदाधरसिंह की बातों से कुछ फीका पड़ गया था) आप ही की तरह हमारे महाराज के छोटे भाई शंकरसिंहजी को भी उस कमेटी के विषय में मुझ पर शक पड़ गया है। उनका भी यही कथन है कि मैं उस कुमेटी का मेम्बर हूँ!

* इस कुमेटी का हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है। इसी कुमेटी का हाल इन्दिरा ने अपने किस्से में दोनों कुमारों से बयान किया था।

गदाधर०। ठीक है, शंकरसिंहजी बड़े ही होशियार और बुद्धिमान आदमी हैं, आपके महाराज की तरह बोदे और बेवकूफ नहीं हैं जिन्हें आप मदारी के बन्दर की तरह जिस तरह चाहते हैं नचाया करते हैं।

दारोगा०। बेशक वे बहुत होशियार और तेज आदमी हैं मगर मुझे विश्वास हो गया है कि वे मेरी जड़ खोदने के लिये तैयार हैं। यद्यपि मैं अपने को चालाक और धूर्त लगाता हूँ मगर सच कहता हूँ कि शंकरसिंहजी का मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता। तिलिस्म के विषय में भी जितनी जानकारी उनको है उतनी हमारे महाराज को नहीं है। कुँअर गोपालसिंह जी को भी वह हद्द से ज्यादा प्यार करते हैं। अभी थोड़े दिन का जिक्र है कि वे मुझे स्वयम् लाल लाल आँखें करके धमका चुके हैं और कह चुके हैं कि 'देख दारोगा, होशियार हो जा, अपने राजा के भरोसे पर भूला न रहियो। मैं बहुत जल्द साबित कर दूँगा कि तू उस कुमेटी का मेम्बर है और इसके बाद तुझे सूअर के गलीज में रख कर फुँकवा दूँगा। खबरदार, मेरे धमकाने का हाल भाई साहब से कदापि न कहियो नहीं तो तेरी दुर्दशा का दिन....."

गदाधर०। इससे मालूम होता है कि आपकी उस गुप्त कुमेटी का हाल उन्हें मुझसे ज्यादा मालूम हो चुका है। ऐसी अवस्था में आपको चाहिये कि उन्हें इस दुनियाँ से उठा कर हमेशा के लिये निश्चिन्त हो जाइये नहीं तो उनका जीते रहना आपके लिये सुखदाई न रहेगा।

दारोगा०। (कुछ देर तक आश्चर्य से भूतनाथ का मुँह देख कर) क्या यह बात आप हमदर्दी के साथ कह रहे हैं?

गदाधर०। बेशक, मैं आपसे दिल्लगी नहीं करता।

दारोगा०। अगर मैं ऐसा करने के लिये तैयार हो जाऊँ तो जरूरत पड़ने पर क्या आप मेरी मदद करेंगे?

गदाधर०। जरूर मदद करूँगा मगर शर्त यह है कि आप अपना कोई भेद मुझसे छिपाया न करें?

दारोगा०। मैं तो अपना कोई भेद आपसे नहीं छिपाता और भविष्य के लिये भी कहता हूँ कि न छिपाऊँगा।

गदाधर०। बेशक आप छिपाते हैं।

दारोगा०। नमूने के तौर पर कोई बात कहिये?

गदाधर०। पहिले तो इस कुमेटी के विषय में ही देख लीजिये, आज तक आपने इस विषय में मुझसे कुछ कहा?

दारोगा०। (कुछ देर तक सिर नीचा करके और सोच के) अच्छा मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ और कसम खाकर एकरार करता हूँ कि इस कुमेटी का भेद और स्थान तुमको बता दूँगा।

गदाधर०। मैं भी कसम खाकर एकरार करता हूँ कि हर एक काम में आपकी मदद तब तक बराबर करता रहूँगा जब तक आप मेरे साथ या मेरे दोस्त इन्द्रदेव के साथ किसी तरह की दगाबाजी न करेंगे।

दारोगा०। मैं आपके इस एकरार से बहुत ही प्रसन्न हुआ मगर आश्चर्य की बात है कि आपने साथ ही साथ इन्द्रदेव को शरीक कर लिया! मैं खूब जानता हूँ कि आजकल इन्द्रदेव आपके साथ दोस्ती का बर्ताव नहीं करता। यद्यपि वह मेरा गुरुभाई है और मैं भी उसका भरोसा करता हूँ मगर बात जो वाजिब है वह कहने में आती ही है।

गदाधर०। इन्द्रदेव की बातों को आप नहीं समझ सकते खास करके मेरे सम्बन्ध में, यों तो आपने जो कुछ देखा या सुना हो मगर मैं इन्द्रदेव पर भरोस रखता हूँ। मेरी और उसकी दोस्ती का अन्त सिवाय मौत के और कोई नहीं कर सकता।

दारोगा०। खैर इस बहस से कोई मतलब नहीं, आप जानिये और वह जानें मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि वह मेरा गुरुभाई है और मैं उसका भरोसा रखता हूँ। ऐसी अवस्था में भला मैं उसके साथ क्या दुश्मनी कर सकता हूँ। अच्छा अब आप अपने तरद्दुद का हाल बयान करिये कि आजकल आप किस मुसीबत में फँसे हुए हैं।

गदाधर०। मेरी मुसीबत के बढ़ाने वाले भी आपके शंकरसिंह ही हैं और कुछ कुछ इन्द्रदेव ने भी चोट लगा रक्खी है, मगर मैं इसके लिये इन्द्रदेव को बदनाम नहीं कर सकता क्योंकि जिनकी मदद वे कर रहे हैं वे उनके खास रिश्तेदार और आपुस वाले लोग हैं।

दारोगा० । अगर यह बात है तो आपको भी जरूर शंकरसिंह से दुश्मनी हो गई होगी ?

गदाधर० । निःसन्देह ।

दारोगा० । अच्छा खुलासा तो कहिये ।

गदाधर० । बात वही पुरानी है—दयाराम वाली ।

दारोगा० । ( आश्चर्य से ) क्या यह बात प्रसिद्ध हो गई कि आप दयाराम के घातक हैं ?

गदा० । अगर प्रसिद्ध नहीं हो गई तो अब कुछ दिन बाद प्रसिद्ध हो जाने में कुछ सन्देह भी नहीं रहा, क्योंकि दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जिन्हें तमाम जामना मुर्दा समझे हुए था जीती जागती पाई गई हैं और उन्हें इस बात का विश्वास है कि उनके पति को गदाधरसिंह ही ने मारा है यद्यपि यह बिल्कुल ही निर्मूल है.....

दारोगा० । ( बात काट कर, आश्चर्य से ) क्या वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियाँ अभी तक जीती हैं ? फिर उनके मरने की गप्प किसने और क्यों उड़ाई ?

गदाधर० । यह सब तिलिस्म इन्द्रदेव ही के बाँधे हुए हैं और अब उन दोनों की मदद भी इन्द्रदेव ही कुछ कुछ कर रहे हैं, मगर बीच में शंकरसिंह का कूद पड़ना मेरे लिये बड़ा ही दुखदाई हो रहा है । इन्द्रदेव की मदद तो नाम, मात्र ही के लिये थी मगर ये हजरत जी छोड़ कर उन दोनों की मदद कर रहे हैं और मुझे जहन्नुम में मिलाने के लिये तैयार हैं । क्या करें तिलिस्म के अन्दर की बात है नहीं तो मैं दिखा देता कि गदाधरसिंह के साथ दुश्मनी करने का नतीजा कैसा होता है ।

दारोगा० । यह तो बड़ा ही नाजुक मामला निकला.....!

इसके बाद कुछ कहता कहता दारोगा रुक गया क्योंकि उसे यह बात याद आ गई कि मनोरमा इसी जगह दूसरी कोठड़ी में छिपी हुई हम लोगों की बातें सुन रही है । सम्भव है कि दारोगा इसके आगे की बातचीत मनोरमा से छिपाना चाहता हो, अस्तु धीरे से गदाधरसिंह से कुछ कह कर आँख का इशारा करने बाद वह उठ खड़ा हुआ और गदाधरसिंह का हाथ पकड़े हुए दूसरे कमरे में चला गया ।

# ग्यारहवां बयान

जमना सरस्वती और इन्दुमति तिलिस्म के अन्दर ( जहाँ नागवण उन्हें रख गये थे ) बैठी हुई आपुस में कुछ बातें कर रही हैं। यद्यपि रात आधी से कुछ ज्यादे ढल चुकी है परन्तु चन्द्रमा की किरणों द्वारा फैली हुई चाँदनी के कारण दूर दूर तक की चीजें बखूबी दिखाई दे रही हैं और पहाड़ी छटा का एक अपूर्व आनन्द मिल रहा है। बातें करती हुई जमना की निगाह उस तरफ जा पड़ी जिधर से झरने का पानी बड़ी सफाई के साथ बहता हुआ आ रहा था और ऐसा मालूम होता था कि तिलिस्मी करीगर ने इस पानी के ऊपर भी चाँदी की कलई चढ़ा दी है। किसी आदमी की आहट पाकर जमना चौंकी और बोली, "बहिन देखो तो सही वह क्या है ! मैं तो समझती हूँ कि कोई आदमी है।"

इन्दु०। मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है।

सरस्वती०। यद्यपि किसी आदमी का यहाँ तक आ पहुँचना असम्भव है परन्तु मैं यह भी नहीं कह सकती कि यह आदमी नहीं कोई जानवर है।

जमना०। ( जोर देकर ) बेशक आदमी है !!

इन्दु०। देखो इसी तरफ चला आ रहा है, कुछ और इधर आ जाने से अब साफ मालूम होता है कि आदमी है। वह रुक कर दबकता और आहट लेता हुआ आ रहा है इससे गुमान होता है कि हमारा दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन है। देखो यह मेरी दाहिनी आँख फड़की, ईश्वर ही कुशल करे ! ( चौंक कर ) बहिन ! वह देखो उसके पीछे और भी एक आदमी मालूम पड़ता है !

सरस्वती०। ( अच्छी तरह देख कर ) हाँ ठीक तो है, दूसरा आदमी भी साफ मालूम पड़ता है; आश्चर्य नहीं कि कोई और भी दिखाई दे ! बहिन, मुझे भी खुटका होता है और दिल गवाही देता है कि ये आने वाले हमारे दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन हैं।

जमना०। बेशक ऐसा ही है, अब इनके मुकाबले के लिये तैयार हो जाना चाहिये।

इन्दु०। इनसे मुकाबला करना मुनासिब होगा या भाग कर अपने को छिपा लेना ! लो अब तो वे लोग बहुत नजदीक आ गये और मालूम होता है कि उन्होंने हम लोगों को देख भी लिया।

जमना० । बेशक उन लोगों ने हमें देख लिया, चलो हम लोग भाग कर मकान के अन्दर चलें और दर्वाजों को बन्द कर लें, मुकाबला करना ठीक न होगा। इतना कह कर जमना मकान की तरफ तेजी के साथ चल पड़ी और सरस्वती तथा इन्दुमति ने भी उसका साथ दिया।

यह मकान देखने में यद्यपि बहुत छोटा था मगर इसके अन्दर गुञ्जायश बहुत ज्यादे थी और बनिस्बत ऊपर के इसका बहुत बड़ा हिस्सा जमीन के अन्दर था। इसके रास्तों का पता लगाना अज्ञान आदमी के लिये कठिन ही नहीं बल्कि बिल्कुल ही असम्भव था। दो चार आदमी क्या पचासों आदमी इसके अन्दर छिप कर रह सकते थे जिनका पता सिवाय जानकर के कोई दूसरा नहीं लगा सकता था। इस मकान के अन्दर कैसी कैसी कोठड़ियाँ कैसे कैसे तहखाने और कैसी कैसी सुरंगे या रास्ते थे इसे उस तिलिस्म से सम्बन्ध रखने वाला भी हर एक आदमी नहीं जान सकता था परन्तु नारायण ने जो किताब जमना को दी थी उसमें वहाँ का कुल हाल अच्छी तरह लिखा हुआ था।

अब हम यह लिखते हैं कि वे दोनों आने वाले कौन थे जिन्हें देख कर जमना सरस्वती और इन्दुमति भाग कर घर में चली गई थीं।

वे दोनों भूतनाथ और तिलिस्मी दारोगा साहब थे। दारोगा भूतनाथ की मदद पर तैयार हो गया था और उसने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हें तिलिस्म के अन्दर ले चल कर जमना सरस्वती और इन्दुमति को गिफ्तार करा दूँगा तथा प्रभाकरसिंह को दूसरी दुनिया में पहुँचा दूँगा। इसी तरह भूतनाथ ने भी दारोगा से वादा किया था कि महाराज जमानिया के भाई शंकरसिंह के मारने में मैं तुम्हारी मदद करूँगा और यह कार्रवाई इस ढङ्ग से की जायगी कि किसी को इस बात का गुमान भी न होगा कि शंकरसिंह कब और कहाँ मारे गये या उन्हें किसने मारा, इत्यादि।

यही सबब था कि ये दोनों इस समय तिलिस्म के अन्दर दिखाई दिये। यहाँ का बहुत कुछ हाल दारोगा को मालूम था मगर शंकरसिंह को यह आशा न थी कि दारोगा उनके साथ यहाँ तक बुरा बर्ताव कर गुजरेगा, अस्तु वे दारोगा की तरफ से बिल्कुल ही बेखबर थे।

दारोगा और भूतनाथ दोनों आदमी सूरत बदलने के अतिरिक्त चेहरे पर नकाब भी डाले हुये थे इसलिये उन्हें कोई पहिचान नहीं सकता था।

जिस समय वे तीनों औरतें भाग कर मकान के अन्दर चली गईं उसके थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ और दारोगा मकान के दरवाजे पर आ पहुँचे। इन्होंने तीनों औरतों को भगा कर मकान के अन्दर जाते हुए देख लिया था तिलिस्मी ढङ्ग से दर्वाजा खोलने के लिये दारोगा साहब ने हाथ बढ़ाया ही था कि पीछे से किसी ने आवाज दी "कौन है ?"

दारोगा और भूतनाथ को इस बात का निश्चय नहीं था कि जमना सरस्वती और इन्दुमति तिलिस्म के अन्दर किस ठिकाने पर हैं परन्तु भूतनाथ ने अपने कई शागिर्द इस तिलिस्म के अन्दर पहुँचा दिये थे जो कि नारायण की कार्रवाई पर बराबर ध्यान रखते थे जब भूतनाथ और दारोगा तिलिस्म के अन्दर आये तब भूतनाथ का एक शागिर्द उन्हें मिला जिसके माथे पर अपना खास निशान देख कर भूतनाथ ने पहिचान लिया और उससे वहाँ का हाल पूछा। उस शागिर्द ने बता दिया कि जमना सरस्वती और इन्दुमति को नारायण ने फलाने मकान में रक्खा है, उसी के बताये निशान के अन्दाजे पर भूतनाथ और दारोगा वहाँ आये थे और उन्होंने जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को अपनी आँखों से उस मकान के अन्दर जाते देख लिया था।

जब दारोगा ने मकान का दर्वाजा खोलने के लिये हाथ बढ़ाया उसी समय पीछे से आवाज आई कि कौन है ? दारोगा ने अपना हाथ खैंच लिया और पीछे फिर कर देखा। एक आदमी पर निगाह पड़ी जिसने सिर से पैर तक अपने को स्याह लबादे से ढाँक रक्खा था। भूतनाथ हाथ में खञ्जर लिये हुए उस आदमी के पास चला गया और डपट कर बोला—"तू कौन है ?"

उस आदमी ने भूतनाथ की बात का कुछ जवाब न दिया पीछे की तरफ हटने लगा। भूतनाथ भी उसी के साथ उसकी तरफ आगे बढ़ता गया और उसने कई दफे डपट डपट कर उस आदमी से तरह तरह के सवाल किये और कटुवचन भी कहे परन्तु भूतनाथ की किसी बात का भी उसने जवाब न दिया और बराबर पीछे की तरफ हटता ही गया। भूतनाथ भी उसके साथ ही साथ आगे बढ़ता गया, यहाँ तक कि एक झाड़ी के पास पहुँच कर वह आदमी रुक गया और उसने अपने

दोनों हाथ लबादे के बाहर निकाले जिनमें से एक में ढाल और दूसरे में तलवार थी। यहाँ पर घनी झाड़ी होने के कारण चन्द्रमा की चाँदनी नहीं पहुँचती थी। अस्तु अपने लिये उत्तम स्थान समझ कर उस आदमी ने जुबान खोली और भूतनाथ से कहा, "हाँ अब तुझको बताना पड़ेगा कि तू कौन है और इस तिलिस्म के अन्दर क्योंकर आया ?" पाठक थोड़ी देर के लिये हम इस आदमी का नाम 'भीम' रख देते हैं।

भीम की बात सुन कर पहिले तो भूतनाथ चुप हो गया मगर फिर कुछ सोच कर बोला, "मैं तुम्हारी बात का जवाब क्योंकर दे सकता हूँ जब कि तुमने खुद मेरी बात का जवाब नहीं दिया ?"

भीम०। यद्यपि मैंने वहाँ पर तुम्हारी बातों का कुछ भी जवाब नहीं दिया परन्तु अब तुम्हारी हर एक बातों का जवाब देने के लिये तैयार हूँ मगर शर्त यह है कि तुम ठीक ठीक ईमानदारी के साथ अपना परिचय दो।

भूत०। बेशक मैं ईमानदारी के साथ अपना परिचय दूँगा, मेरा नाम रङ्गनाथ ऐयार है, मैं मिर्जापूर का रहने वाला हूँ।

भीम०। ( खिलखिला कर हँसने के बाद ) वाह वाह ! खूब ही ईमानदारी के साथ अपना परिचय दिया ! रङ्गनाथ तो आज कल हमारे यहाँ मेहमान है, यह दूसरा रंगनाथ कहाँ से आया ?

भूत०। ( कुछ सकपकाना सा हो कर ) नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, अगर कोई आदमी रङ्गनाथ के नाम का तुम्हारे पास आया है तो बेशक उसने तुमको धोखा दिया. असल रङ्गनाथ मैं ही हूँ और प्रभाकरसिंह को इस कैद से छुड़ाने के लिये यहाँ आया हूँ।

भीम०। अगर तुम्हारा कहना सच है और रङ्गनाथ के नाम से किसी दूसरे आदमी ने मेरे यहाँ आकर मुझे धोखा दिया है तो तुम उसे जरूर पहिचान सकते हो, उसकी तस्वीर मेरे पास है, तुम देखो और पहिचानो। उसका कथन है कि भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आया और कई आदमियों को धोखा दिया चाहता है।

भूत०। ( बड़ी चाह के साथ ) मैं जरूर उसकी तस्वीर देखूँगा और पहिचानूँगा।

भीम ने अपने जेब से निकाल कर एक पीतल की डिबिया भूतनाथ के हाथ में दी और कहा, "देखो हिफाजत से खोलो, इसी के अन्दर उसकी तस्वीर है।"

भूतनाथ ने भीम के हाथ से डिबिया ले ली और दो कदम बढ़ कर चन्द्रमा की चाँदनी में वह डिबिया खोलने लगा। डिबिया बड़ी मजबूती के साथ बन्द थी और हलके हाथों से उसका खुलना कठिन था अस्तु गर्दन झुका कर और दोनों हाथों से जोर लगा कर भूतनाथ ने वह डिबिया खोली। उसके अन्दर बहुत हलकी और गर्द के समान बारीक बुकनी भरी हुई थी जो कि झटके के साथ डिबिया खुलने के कारण उसमें से उछली और उड़ कर भूतनाथ की आँख और नाम में पड़ गई वह बहुत ही तेज बेहोशी की बुकनी थी जिसने भूतनाथ को बात करने की भी मोहलत न दी। वह तुरत चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया भीम ने झपट कर अपनी डिबिया सम्हाली और भूतनाथ के हाथ से लेकर अपनी जेब में रख ली, इसके बाद अपने लबादे में भूतनाथ की गठड़ी बाँधी और उसे पीठ पर लाद एक तरफ का रास्ता लिया।

अब उधर का हाल सुनिये। भीम के साथ ही साथ जाकर भूतनाथ तो बहुत दूर निकल गया मगर दारोगा अपनी जगह से न हिला। उसने मकान का दर्वाजा खोला और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगा। दर्वाजा खोलता हुआ वह एक दालान में पहुँचा जिसके दोनों तरफ दो कोठड़ियाँ थीं और उन दोनों कोठड़ियो के दर्वाजे किस तरह खुलते थे इसका पता केवल देखने से नहीं लग सकता था। किसी खास तर्कीब से दारोगा ने बाईं तरफ वाली कोठड़ी का दर्वाजा खोला और हाथ में नङ्गी तलवार लिये हुए उसके अन्दर घुसा। एक छोटी सी सुरङ्ग थी जिसमें दस बारह हाथ चल कर दारोगा एक बारहदरी में पहुँचा जहाँ बिल्कुल ही अन्धकार था, सिर्फ दो तीन जगह किसी सूराख की राह से चन्द्रमा की रोशनी पड़ रही थी मगर उससे वहाँ का अन्धकार दूर नहीं हो सकता था।

दारोगा को विश्वास था कि जमना सरस्वती और इन्दुमति जरूर इसी दालान में होंगी और उनके हाथ में किसी तरहका कोई हर्बा भी जरूर होगा, इसी खयाल से उसकी हिम्मत न पड़ी कि वह इस अन्धकार में आगे की तरफ बढ़े अस्तु वह चुपचाप खड़ा रह कर वहाँ की आहट लेने लगा। कुछ ही देर बाद किसी के धीरे

धीरे बोलने की आवाज उसके कान में आई और उसके बाद यह मालूम हुआ कि कई आदमी आपस में धीरे धीरे बातें कर रहे हैं आवाज हल्की और नाजुक थी इसीलिए दारोगा समझ गया कि जरूर यह जमना सरस्वती और इन्दुमति हैं। दारोगा ऐयारी का छोटा सा बटुआ अपने कपड़ों के अन्दर छिपाये हुए था जिसमें से उसने टटोल कर एक छोटी सी डिबिया निकाली। उस डिबया में कई तरह के खटके और पुरजे लगे हुए थे। दारोगा ने एक खटका दबाया जिससे वह डिबिया चमकने लगी और उसकी रोशनी ने वहाँ के अन्धकार को अच्छी तरह दूर कर दिया। अब दारोगा ने देख लिया कि उसके सामने दालान में तीन औरतें हाथ में खञ्जर लिए खड़ी हैं।

जमना सरस्वती और इन्दुमति को दारोगा अच्छी तरह पहिचानता न था मगर सुनी सुनाई बातों से वह अनुमान जरूर कर सकता था। इस मौके पर तो उसे यह मालूम ही था कि यहाँ पर जमना सरस्वती और इन्दुमति विराज रही हैं और वे तीनों औरतें अपनी असल सूरत में भी थीं इसलिए दारोगा को विश्वास हो गया कि जमना सरस्वती और इन्दुमति ये ही हैं। दारोगा ने उसी जगह खड़े रह कर जमना की तरफ देखा और कहा; "तुम लोग मुझसे व्यर्थ ही डर कर भाग रही हो! मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ और न तुम्हारे किसी दुश्मन का भेजा हुआ हूँ।"

जमना०। फिर तुम कौन हो और हम लोगों का पीछा क्यों कर रहे हो?

दारोगा०। मैं इस तिलिस्म का पहरेदार हूँ और प्रभाकरसिंह का भेजा हुआ तुमलोगों के पास आया हूँ। उनका हुक्म है कि तुम तीनों को अपने साथ ले जा कर उनके पास पहुँचा दूँ!

जमना०। तुम्हारी बातों का हमें क्योंकर विश्वास हो? क्या उनके हाथ की कोई चीठी भी लाए हो?

दारोगा०। हाँ मैं चीठी लाया हूँ। उन्होंने खुद ही खयाल करके एक चीठी भी अपने हाथ से लिख दी है।

जमना०। अगर ऐसा है तो लाओ वह चीठी मुझे दो, मैं पहिले उसे पढ़ लूँ तब तुम्हारी बातों पर विचार करूँ।

दारोगा०। हाँ, लो मैं चीठी देता हूँ, यह रोशनी जो मेरे हाथ में है ज्यादे

देर तक ठहर नहीं सकती इसलिए पहिले मैं दूसरी रोशनी का इन्तजाम कर लूँ तब चीठी तलाश कर दूँ।

इतना कह कर दारोगा ने वह डिबिया जमीन पर रख दी और उसी की रोशनी में उसने अपना बटुआ खोल कर एक खाकी रङ्ग की मोमबत्ती निकाली और चकमक से आग पैदा करके उसे रौशन करने बाद वह डिबिया बन्द करके अपने बटुए में रख ली। अब दालान भर में उसी मोमबत्ती की रोशनी फैली हुई थी। वह मोमबत्ती एक खास तर्कीब और कई दवाइयों के योग से तैयार की हुई थी। उसका रङ्ग खाकी था और बलने पर उसमें से बेहोशी पैदा करने वाला बहुत ज्यादा धूँआ निकालता था। दारोगा ने यह सोच कर कि शायद आज की कार्रवाई में इस मोमबत्ती की जरूरत पड़े, पहिले ही से अपने बचाव का बन्दोबस्त कर लिया था अर्थात् किसी तरह की दवा खा या सूँघ ली थी मगर जमना सरस्वती और इन्दुमति अपने को इस धूँए से बचा नहीं सकती थीं और न इस बात का उन्हें गुमान ही हुआ कि इस बेहिसाब धूँआ पैदा करने वाली मोमबत्ती में कोई खास बात है।

दारोगा ने मोमबत्ती बाल कर जमीन पर जमा दी और उसकी रोशनी में प्रभाकरसिंह के हाथ की चीठी खोजने के बहाने से अपना बटुआ टटोलने लगा।

कभी बटुए की तलाशी लेता कभी अपने जेबों को टटोलता और कभी अपनी कमर में देख कर बनावटी ताज्जुब से हाथ पटकता और कहता कि न मालूम चीठी कहाँ रख दी है! मेरे ऐसा बेवकूफ भी कोई न होगा! भला ऐसी जरूरी चीठी को इस तरह रखना चाहिये कि समय पर जल्दी मिल ही न सके!

चीठी की खोज और कपड़ों की तलाशी में दारोगा ने बहुत देर लगा दी और तब तक उस मोमबत्ती का धूँआँ तमाम कमरे में गूँज गया। बेचारी जमना सरस्वती और इन्दुमति चीठी की चाह में बड़ी उत्कण्ठा से दारोगा की हरकतों को खड़ी खड़ी देख रही थीं मगर उन लोगों को यह नहीं मालूम होता था कि इस धूँए की बदौलत हम लोगों की हालत बदलती चली जा रही है।

थोड़ी ही देर में वे तीनों बेचारी औरतें बेहोश हो कर जमीन पर लेट गईं और तब दारोगा ने बड़ी फतहमन्दी और खुशी की निगाह से उन तीनों की तरफ देखा।

# बारहवां बयान

यह नहीं मालूम होता कि कृष्णपक्ष है या शुक्लपक्ष अथवा रात है या दिन, क्योंकि हम इस समय जिस स्थान पर पहुँचते हैं वहाँ चिराग या इसी तरह की किसी और रोशनी के सिवाय और किसी सच्चे उजाले या चाँदनी का गुजर नहीं हो सकता। हम यह भी नहीं कह सकते कि यह कोई तहखाना है या सुरङ्ग, अंधकारमयी कोई कोठरी है या बालाखाना, सिर्फ इतना ही देख रहे हैं कि एक मामूली कोठरी में जिसमें सिवाय एक मद्धिम चिराग के और किसी तरह की रोशनी नहीं है, जमना सरस्वती और इन्दुमति बैठी गर्म गर्म आँसू गिरा रही हैं जिसका विशेष पता उनकी हिचकियों से लग रहा है। उन तीनों के पैर बँधे हुए हैं और किसी मोटी रस्सी के सहारे वे एक लकड़ी के खम्भे के साथ भी बँधी हुई हैं जिसमें पैर से चलना तो असम्भव ही है घिसक कर भी दो कदम इधर उधर न जा सकें। उन तीनों के सामने बैठे हुए तिलिस्मी दारोगा पर निगाह पड़ने ही से विश्वास होता है कि इन तीनों पर इतनी सख्ती होने का कारण यही बेईमान दारोगा है।

पहिले क्या क्या हो चुका है सो तो हम कुछ नहीं कह सकते परन्तु इस समय हम देखते हैं कि वे तीनों अपनी बेकसी और मजबूरी पर जमीन की तरफ देखती हुई गर्म गर्म आँसू गिरा रही हैं और इसी अवस्था में कभी कोई सर उठा कर दारोगा की तरफ देख भी लेती है।

कुछ देर तक सन्नाटा रहने के बाद जमना ने एक लम्बी साँस ली और सर उठा कर दारोगा की तरफ देख धीमी आवाज में कहा – "बहुत देर तक सोचने के बाद अब मैं आपको पहिचान गई और जान गई कि आप जमानिया राज के कर्ताधर्ता दारोगा साहब हैं।"

दारोगा०। बेशक मैं वही हूँ, इस समय अपने को छिपाना नहीं चाहता इस लिए असली सूरत में तुम लोगों के सामने बैठा हुआ हूँ।

जमना०। ठीक है, तो मैं समझती हूँ कि उस तिलिस्म के अन्दर से हम लोगों को बेहोश करके यहाँ ले आने वाले भी आप ही हैं।

दारोगा०। बेशक!

जमना० । आखिर इसका कारण क्या है ! हम लोगों ने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप हमारे साथ इतनी सख्ती का बर्ताव कर रहे हैं ?

दारोगा० । मेरा तो तुम लोगों ने कुछ भी नहीं बिगाड़ा है मगर मेरे दोस्त भूतनाथ को व्यर्थ सता रही हो, इसी लिए मुझे मजबूर होकर तुम लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करना पड़ा ।

जमना० । ( क्रोध में आकर कुछ तेजी से ) क्या भूतनाथ को हम लोग सता रही हैं ! या वह हम लोगों को मिट्टी में मिला कर भी अभी तक बाज नहीं आता और बराबर जख्म पर जख्म लगाता ही जा रहा है !!

दारोगा० । कदाचित् ऐसा ही हो परन्तु उसका कहना तो यही है कि तुम लोग व्यर्थ ही उसे कलंकित करके दुनिया में रहने के अयोग्य बनाने की चेष्टा कर रही हो ।

जमना० । आह !! बड़े अफसोस की बात है कि आप अपने मुँह से ऐसे शब्द निकाल रहे हैं और अपने को उन बातों से पूरा पूरा अनजान साबित किया चाहते हैं ।

दारोगा० । सो क्या ? मुझे इन बातों से क्या सम्बन्ध ?

जमना० । अगर कुछ सम्बन्ध नहीं है तो हम लोगों को वहाँ से क्यों कैद कर लाये ?

दारोगा० । केवल अपने दोस्त की मदद कर रहा हूँ ।

जमना० । और आप इस बात को नहीं जानते कि हमारा पति इसी दुष्ट के हाथों से मारा गया है ? और क्या आपकी मण्डली में यह बात मशहूर नहीं है ।

दारोगा० । हाँ दो चार आदमी ऐसा कहते तो हैं परन्तु भूतनाथ का कथन है कि इसका कारण तुम ही हो अर्थात् केवल तुम ही लोगों ने यह बात व्यर्थ मशहूर कर रक्खी है । मुझे स्वयम् इस विषय में कुछ भी नहीं मालूम है ।

जमना० । ( ताने के ढङ्ग पर ) सच्च ! बहुत सच्च ! अगर यह बात आप को मालूम नहीं है तो भूतनाथ आपका दोस्त भी नहीं है ।

दारोगा० । भूतनाथ मेरा दोस्त जरूर है और वह मुझ से कोई बात छिपा नहीं रखता । खैर थोड़ी देर के लिए अगर यह भी मान लिया जाय कि तुम्हारा ही कहना ठीक है तो मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम भूतनाथ को बदनाम करके क्या फायदा उठा सकती हो ? भूतनाथ इस समय स्वतन्त्र है, किसी रियासत का ताबे-

दार नहीं है जो उस पर नालिश कर सकोगी, फिर ऐसी अवस्था में उससे दुश्मनी करके तुम अपना ही नुकसान कर रही हो, इसके अतिरिक्त मैं खूब जानता हूँ कि भूतनाथ तुम्हारे पति का सच्चा और दिली दोस्त था और तुम्हारे पति भी उसको ऐसा ही मानते थे, ऐसी अवस्था में यह कब सम्भव है कि स्वयं भूतनाथ अपने ही हाथ से तुम्हारे पति को मारे। ऐसा करके वह क्या फायदा उठा सकता था? तुमको विश्वास है कि भूतनाथ ने तुम्हारे पति को मारा अच्छा तुम ही बताओ कि ऐसा करके उसने क्या फायदा उठाया?

जमना०। हम लोगों ने एक तौर पर इस दुनिया ही को छोड़ा हुआ है और बिल्कुल मुर्दे की सी हालत में पहाड़ी खोह और कन्दराओं में रहकर जिंदगी के दिन बिता रही हैं इसलिये आज कलकी दुनिया का हाल कुछ मालूम नहीं है अस्तु मैं नहीं कह सकती कि उसने मेरे पति को मार कर क्या फायदा उठाया परन्तु इतना मैं जरूर जानती हूँ कि मेरे पति की मौत भूतनाथ के ही हथा से हुई है।

दारो०। यह बात तुम से किसने कही?

जमना०। सो मैं आपसे नहीं कह सकती।

दारोगा०। खैर न कहो तुम्हें अख्तियार है मगर मैं फिर भी इतना जरूर कहूँगा कि तुम्हारा खयाल गलत है, भूतनाथ ने तुम्हारे पति को कदापि नहीं मारा और कदाचित् धोखे में ऐसा हो भी गया हो तो धोखे की बात पर सिवाय अफसोस करने के और कुछ भी उचित नहीं है। कई दफे ऐसा होता है कि धोखे में माँ का पैर बच्चे के ऊपर पड़ जाता है तो क्या इसका बदला बच्चे को माँ से लेना चाहिये? कभी नहीं, तुम खुद जानती हो कि भूतनाथ से जो वास्तव में गदाधरसिंह है तुम्हारे पति की कैसी दोस्ती थी।

जमना०। बेशक मैं इस बात को जानती हूँ और यह भी मानती हूँ कि कदाचित् धोखे ही में भूतनाथ से यह काम हो गया परन्तु आप ही बताइये कि क्या इस अधर्म को छिपाने के लिए भूतनाथ को हम लोगों का पीछा करना चाहिए था?

दारोगा०। हाँ, यह बेशक उसकी भूल है इसके लिये मैं उसे ताना दूँगा परन्तु मैं तुम्हें सच्चे दिल और हमदर्दी के साथ राय देता हूँ कि तुम भूतनाथ के साथ दुश्मनी का खयाल छोड़ दो नहीं तो पछताओगी और तुम्हारा सख्त नुक-

सान होगा क्योंकि तुम भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकतीं, तुम अबला और निर्बला ठहरीं और वह होशियार ऐयार, तिस पर उसके दोस्त भी बहुत गहरे गहरे लोग हैं।

जमना०। मैं माननी हूँ कि उसके और हमारे हाथी और चिउंटी का सा फर्क है और आप ऐसे सामर्थी लोग उसके दोस्त भी हैं और इस बात को भी मानती हूँ कि मैं उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती परन्तु आप ही बताइये कि ऐसी अवस्था में वह हम अबलाओं से डरता ही क्यों है?

दारोगा०। सिर्फ बदनामी के खयाल से डरता है क्योंकि अगर यह झूठा कलंक उस पर लग जायगा और दयाराम का घाती मशहूर हो जायगा तो फिर वह दुनिया में किसी को मुँह न दिखा सकेगा और अगर तुम उसे माफ कर दोगी तो वह खुशी से किसी रियासत में रह कर अपनी जिन्दगी बिता सकेगा और जन्म भर तुम्हारा मददगार भी बना रहेगा।

जमना०। मुझे उसके मदद की कोई जरूरत नहीं है और न मेरे दिल का वह बहुत बड़ा जख्म जो उसके हाथों में पहुँचा है आराम हो सकता है। समझ लीजिये कि अब चूहे और बिल्ली में दोस्ती कायम नहीं हो सकती।

दारोगा०। यह समझना तुम्हारी नादानी है। मैं कह चुका हूँ कि ऐसा करने से तुम्हें सख्त तकलीफ पहुँचेगी।

जमना०। बेशक ऐसा ही है, तभी तो मैं कैद करके यहाँ लाई गई हूँ।

दारोगा०। तुम खुद ही सोच लो कि यह कैसी बात है, अगर तुम मार ही डाली जाओगी तो फिर दुनिया में इसके लिये उससे बदला लेने वाला कौन रह जायगा?

जमना०। मेरे पीछे उसका पाप उससे बदला लेगा या इस बात के मशहूर हो जाने ही से वह दीन दुनियाँ के लायक न रहेगा और यही उस बात का बदला समझा जायगा। आपने उसकी मदद की है और इसलिये हम लोगों को यहाँ कैद कर लाये हैं तो बेशक हम लोगों को मार कर अपना कलेजा ठण्डा कर लीजिये हम लोग तो खुद अपने को मुर्दा समझे हुए हैं, मगर इस बात को समझ रखियेगा कि हम लोगों के मारे जाने से उसकी बदनामी का झण्डा जो

बड़ी मजबूती के साथ गाड़ा जा चुका है गिर न पड़ेगा और उस झण्डे के उड़ाने वाले तथा उससे बदला लेने वाले कई जबर्दस्त आदमी कायम रह जायँगे।

दारोगा०। यह तुम्हारा खयाल ही खयाल है, जिस तरह तुम उसकी केवल इच्छामात्र से गिरफ्तार कर ली गई हो उसी तरह उसके और दुश्मन भी बात की बात में गिरफ्तार हो जायँगे।

जमना०। इस बात को मैं नहीं मान सकती।

दारोगा०। नहीं मानोगी तो मैं मना दूँगा क्योंकि इसका काफी सबूत मेरे पास मौजूद है।

जमना०। हाँ, अगर मेरा दिल भर जाने के लायक कोई सबूत मिल जायगा तो मैं जरूर मान जाऊँगी।

दारोगा०। अच्छा पहिले मैं तुमको इस बात का सबूत दे लूँगा तब तुमसे बात करूँगा।

इतना कह कर दारोगा अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और उस जगह गया जहाँ खम्भे के साथ ये तीनों औरतें बँधी हुई थीं। उस खम्भे में से जमना सरस्वती और इन्दुमति को खोला मगर उनकी हथकड़ी तथा बेड़ी नहीं उतारी हाँ बेड़ी की जञ्जीर जरा ढीली कर दी जिसमें वे धीरे धीरे कुछ दूर तक चल सकें। इसके बाद उन तीनों को लिये सामने की दीवार के पास गया जहाँ एक छोटा सा दर्वाजा था और उसमें मजबूत ताला लगा हुआ था। दारोगा ने कमर में से ताली निकाल कर दर्वाजा खोला और उन तीनों को लिये हुये उसके अन्दर घुसा। रास्ता सुरङ्ग की तरह था जो कि दस बारह कदम जाने बाद खतम हो जाता था अस्तु उसी अन्धकारमय रास्ते में उन तीनों को लिये हुए दारोगा चला गया। जब रास्ता खतम हुआ तब उसने एक खिड़की खोली जो कि जमीन से छाती बराबर ऊँची थी। उस खिड़की के खुलने से वहाँ उजाला हो गया और तब दारोगा ने उन औरतों को नीचे की तरफ झाँक कर देखने के लिये कहा।

उस समय जमना सरस्वती और इन्दुमति को मालूम हुआ कि वे तीनों जमीन के अन्दर किसी तहखाने में कैद नहीं हैं बल्कि उनका कैदखाना मकान के किसी ऊपरी हिस्से पर है।

खिड़की की राह से नीचे की तरफ झाँक कर उन्होंने देखा कि एक छोटा सा

मामूली नजरबाग है जिसमें चारो तरफ की दीवारें बहुत ऊँची ऊँची हैं; उस बाग में एक टूटे पेड़ के साथ हथकड़ी बेड़ी से मजबूर प्रभाकरसिंह बंधे हुए हैं। उन्हें देखते ही इन्दुमति का कलेजा काँप गया और जमना तथा सरस्वती के रोंगटे खड़े हो गये। उस समय दारोगा ने जमना की तरफ देख कर कहा :—

दारोगा०। तुम लोगों ने अच्छी तरह देख लिया कि तुम्हारे प्यारे प्रभाकरसिंह जो तुम लोगों के बाद भूतनाथ पर कलंक लगा सकते थे तुम लोगों के साथ ही गिफ्तार कर लिये गए बताओ अब तुम्हें किस पर भरोसा है?

जमना०। भरोसा तो हमें केवल ईश्वर ही पर है मगर फिर भी इतना जरूर कहूँगी कि मेरे मददगार कोई और ही लोग हैं जिनका नाम तुम्हें किसी तरह भी मालूम नहीं हो सकता!

दारोगा०। तुम्हारा यह कहना भी व्यर्थ ही है, मुझसे और भूतनाथ से कुछ भी छिपा नहीं है।

इतना कह कर दारोगा ने खिड़की बन्द कर दी और वहाँ पुनः अन्धकार हो गया। इसके बाद उन तीनों को लिये हुए उसी पहिले स्थान पर चला आया और उसी खम्भे के साथ पुनः उन तीनों को बाँध कर पैर की जञ्जीर कस दी।

प्रभाकरसिंह को कैद की हालत में देख कर वे तीनों बहुत ही परेशान हुईं और उनके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। दारोगा ने पुनः जमना की तरफ देख कर कहा :—

दारोगा०। मैं फिर कहता हूँ कि भूतनाथ से दुश्मनी रख कर तुम लोग इस दुनिया में सुखी नहीं रह सकतीं।

जमना०। (ऊची साँस लेकर) अब मेरे लिये इस दुनिया में क्या रक्खा है? किस सुख के लिये मैं जीने की लालसा कर सकती हूँ। दुनिया में अगर लालसा है तो केवल इस बात की कि भूतनाथ से बदला लूं।

दारोगा०। सो हो नहीं सकता और न भूतनाथ ने वास्तव में तुम्हारा कुछ बिगाड़ा ही है। तुम खुद सोच लो और समझ लो, मैं सच कहता हूँ कि भूतनाथ अब तुम्हारी खिदमत करने के लिये हाजिर है। अगर तुम उसे अपना ताबेदार मान लोगी तो थोड़े ही दिनों में वह उद्योग करके तुम्हारे पति के घातक को भी पता निकालेगा, नहीं तो अब तुम लोग उसके पंजे में आही चुकी हो, तुम लोग

मुझ में पड़ जान दोगी, और ... इन्दुमति और प्रभाकरसिं को भी बर्बाद करोगी क्योंकि इन दोनों की जान का सम्बन्ध भी तुम्हारी ही के साथ है। मैं तुमको दो घण्टे की मोहलत देता हूँ तब तक तुम अपने बुरे को अच्छी तरह सोच लो, दो घण्टे के बाद जब मै आऊँगा तो भूतनाथ मेरे साथ होगा, उस समय या तो तुम लोग भूतनाथ को अपना सच्चा दो समझ कर उसके निर्दोष होने का एक पत्र उसे लिख दोगी और या फिर दूसरी अवस्था में तुम तीनों ठंढे ठंढे दूसरी दुनिया की तरफ रवाना हो जाओगी और प्रभाकरसिंह भी तुम तीनों के साथ ही साथ खबरदारी के लिये रवाना कर दिये जायंगे।

इतना कह कर दारोगा वहाँ से रवाना हो गया और जब वह बाहर हो गया तो पुनः उस जहन्नुमी कैदखाने का दवाजा बन्द हो गया और बाहर से भारी जञ्जीर के खड़कने की आवाज आई।

## ॥ तीसरा हिस्सा समाप्त ॥